

जैन श्वेताम्बर गच्छों का संक्षिप्त इतिहास

ले. डॉ. शीवप्रसाद

खंड-१

ॐकारसूरि ज्ञानमंदिर ग्रंथावली क्रमांक-५३

जैन श्वेताम्बर गच्छों का संक्षिप्त इतिहास

भाग-१

: लेखक :

डॉ० शिवप्रसाद

: प्रकाशक :

आ० ॐकारसूरि ज्ञानमंदिर

सुभाषचौक, गोपीपुरा, सूरत

जैन श्वेताम्बर गच्छों का संक्षिप्त इतिहास (खंड - १)

ले. डॉ० शिवप्रसाद

JAIN SWETAMBAR GACHCHHO KA SAMKSHIPTA ITIHAS

By : Dr. Sivaprasad

मूल्य : २०० रूपये

प्रत : ५००

प्राप्ति स्थान : ● आ० उ०कारसूरि ज्ञानमंदिर
सुभाष चौक, गोपीपुरा,
सूरत-३९५००१
E-mail : omkarsuri@rediffmail.com
mehta_sevantilal@yahoo.co.in
(मो.) ९८२४१५२७२७ (सेवंतीभाई महेता)

● उ०कार साहित्य निधि
विजयभद्र चेरिटेबल ट्रस्ट
हाईवे, भीलडीयाजी (बनासकांठा)
फोन : ०२७४४-२३३१२९, २३४१२९

● सरस्वती पुस्तक भंडार
हाथीखाना, रतनपोल,
अहमदाबाद-३८० ००१

● मोतीलाल बनारसीदास
40-UA, नेहरूनगर,
नई दिल्ली.

मुद्रक : किरिट ग्राफिक्स - अहमदाबाद (मो०) ९८९८४९००९९
E-mail : kiritgraphics@yahoo.com

ग्रंथप्रकाशन सौजन्य

वि.सं. २०६५ में
पू.आ.भ. मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के
सुंदरबा आराधनाभवन रांदेर रोड संघ में
हुए आराधना सभर चातुर्मास की
अनुमोदना हेतु

इस ग्रंथ प्रकाशन का
संपूर्ण लाभ
श्री रांदेर रोड जैन श्वेताम्बरमूर्तिपूजक संघ ने
ज्ञानद्रव्य से लिया है ।

श्री संघ की श्रुतभक्ति की भूरि-भूरि
अनुमोदना

प्रकाशकीय

गच्छों के इतिहास का अपने आप में एक खास महत्त्व है। डॉ० शिवप्रसादजी कई वर्षों से गच्छों के इतिहास के बारे में कार्य कर रहे हैं। आप के 'तपागच्छ का इतिहास', 'अंचलगच्छ का इतिहास' आदि स्वतंत्र पुस्तक के रूप में प्रगट हो चुके हैं। अन्यान्य गच्छों के छोटे-बड़े लेख विविध पत्र-पत्रिकाओं में प्रगट हुए हैं। इन विविध गच्छों के विषय के भिन्न-भिन्न लेख यहाँ ग्रंथस्थ होकर प्रगट हो रहे हैं। गच्छों के इतिहास की सामग्री ग्रंथस्थ होकर एक साथ ही उपलब्ध होने से अध्येताओं को बड़ी सरलता रहेगी।

इसका अध्ययन करके अतीत के इतिहास को समझने की कोशिश करें।

इस ग्रंथ के प्रकाशन का संपूर्ण लाभ श्री रंदेर रोड जैन संघ सूरत ने पू०आ०भ०श्री मुनिचन्द्रसूरि म०सा० के वि०सं० २०६५ में संघ में हुए चातुर्मास की विविध आराधनाओं की अनुमोदना हेतु लिया है। श्री संघ की श्रुतभक्ति की भूरि-भूरि अनुमोदना।

—प्रकाशक



समर्पण

इतिहासरसिक, साहित्यसर्जक मुनिजनों और
उनके सुकृत्यों को विश्वपटल पर उपस्थित करने वाले
वर्तमान युग के मनीषियों तथा
इस रचना के प्रेरणास्रोत
स्व. अगरचन्दजी नाहटा एवं स्व. भंवरलालजी नाहटा
की
पुण्य स्मृति में
इसके शिल्पकार
सुप्रसिद्ध कलाविद् एवं इतिहासमर्मज्ञ
प्रो. एम. ए. ढांकी
को
सादर समर्पित

मेरा मुझमें कुछ नहीं, जो कुछ है सब तोर ।
तेरा तुझको सोंपते, क्या लागे है मोर ॥

दो शब्द

विश्व के सभी धर्म समय-समय पर विभिन्न शाखाओं - उपशाखाओं में विभाजित होते रहे हैं। जैनधर्म भी इसका अपवाद नहीं है। इसके दोनों प्रमुख सम्प्रदाय-श्वेताम्बर और दिगम्बर भी विभिन्न उपसम्प्रदायों में विभक्त हैं। मूर्तिपूजक और अमूर्तिपूजक विभाग दोनों ही सम्प्रदायों में विद्यमान हैं। श्वेताम्बर मूर्तिपूजक सम्प्रदाय में १६वीं शताब्दी में लोंकाशाह द्वारा मूर्तिपूजा विरोधी उपदेश प्रारंभ हुआ जिसके फलस्वरूप स्थानकवासी सम्प्रदाय की स्थापना हुई। इसी सम्प्रदाय में १८वीं शताब्दी में आचार्य भिक्षु द्वारा तेरापंथ की स्थापना की गयी। दिगम्बर परम्परा में भी १९वीं शताब्दी में तारणस्वामी द्वारा मूर्तिपूजा विरोधी पंथ की स्थापना की गयी जो तारणपंथ के नाम से प्रसिद्ध है।

श्वेताम्बर मूर्तिपूजक समुदाय ईस्वीसन् की प्रारम्भिक शताब्दियों में विभिन्न गण-कुल और शाखाओं में विभक्त रहा। कल्पसूत्र की 'स्थविरावली' में इसका विस्तृत विवरण पाया जाता है। इस में से अधिकांश का उल्लेख मथुरा के कंकालीटीला के उत्खनन से प्राप्त विभिन्न पुरावशेषों पर उत्कीर्ण अभिलेखीय साक्ष्यों में भी पाया जाता है, अतः इसकी प्रामाणिकता सिद्ध होती है। साहित्य और पुरातत्त्व का यह मेल अपने आप में अद्वितीय है।

कल्पसूत्र 'स्थविरावली' में उल्लिखित कोटिक गण, नाइली शाखा और विद्याधरी शाखा को छोड़कर शेष गण-कुल और शाखाओं का आगे की शताब्दियों में कोई भी उल्लेख प्राप्त नहीं होता। नाइलीशाखा और विद्याधरी शाखा आकोटा से प्राप्त ईस्वीसन् की ६ठी शताब्दी और उसके बाद की शताब्दियों के पुरावलेखों में नाइलकुल और विद्याधर कुल के रूप में दिखाई देते हैं। ईस्वीसन् की ६ठी शताब्दी में ही दो नये कुलों चन्द्र और निवृत्ति का भी उल्लेख आकोटा से प्राप्त होता है। चूँकि कल्पसूत्र 'स्थविरावली' में इनका उल्लेख नहीं है अतः यह सुनिश्चित है कि ये कुल बाद में अस्तित्व में आये। आठवीं-दसवीं शताब्दी से श्वेताम्बर श्रमणसंघ का इतिहास इन्हीं चार कुलों और उनसे अस्तित्व में

आये विभिन्न गच्छों का ही इतिहास है। इन में चन्द्रकुल और उससे निष्पन्न विभिन्न गच्छों का प्राधान्य रहा। वर्तमान में श्वेताम्बर परम्परा में जो भी गच्छ प्रवर्तमान हैं वे सभी स्वयं को चन्द्रकुलीन ही कहते हैं।

श्वेताम्बर श्रमणसंघ विभिन्न कारणों से समय-समय पर विभिन्न गच्छों में विभाजित होता रहा है। अनेक गच्छों का नामकरण विभिन्न नगरों अथवा ग्रामों के आधार पर हुआ, जैसे कोरटा से कोरंटगच्छ, चैत्रपुर (चित्तौड़) से चैत्रगच्छ, खंडाला से खंडिलगच्छ, काशहद से काशहदगच्छ, अडालजा से अडालजीयगच्छ, नागपुर (नागौर) से नागपुरीतपागच्छ, वरमाण से ब्रह्माणगच्छ, वायड से वायडीयगच्छ, सांडेराव से संडेरगच्छ, हर्षपुर (हरसोर) से हर्षपुरीयगच्छ आदि। इसी प्रकार घटना विशेष से भी विभिन्न गच्छ अस्तित्व में आये और उनका नामकरण भी उसी आधार पर हुआ, जैसे आचार्य सर्वदेवसूरि द्वारा आबू पर्वत के तलहटी में अपने आठ शिष्यों को वट वृक्ष के नीचे एक साथ आचार्य पद प्रदान करने के कारण उनका शिष्य समुदाय वटगच्छीय कहलाया। चूँकि वटगच्छ से वटवृक्ष के समय अनेक शाखायें-प्रशाखायें अस्तित्व में आयीं इसी लिये इसका एक नाम बृहद्गच्छ भी प्रचलित हो गया। इसी गच्छ के आचार्य चन्द्रप्रभसूरि द्वारा वि.सं. ११५६ में पाक्षिकपर्व पूर्णिमा को मनायी जाये या चतुर्दशी को; इस प्रश्न पर पूर्णिमा का पक्ष ग्रहण करने के कारण उनकी शिष्य संतति पूर्णिमापक्षीय या पूर्णिमगच्छीय कहलायी। इसी प्रकार बृहद्गच्छीय वादिदेवसूरि के एक शिष्य पद्मप्रभसूरि द्वारा नागपुर (वर्तमान नागौर) में उग्रतप करने के कारण वहां के शासक द्वारा उन्हें 'तपा' विरुद्ध प्राप्त हुआ, इस आधार पर उनकी शिष्यसंतति नागपुरीय-तपागच्छीय कहलायी। इसी गच्छ में विक्रम की १६वीं शती में पार्श्वचन्द्रसूरि नामक एक प्रभावक आचार्य हुए अतः उनकी शिष्यसंतति पार्श्वचन्द्रगच्छीय कहलायी। यह गच्छ आज भी प्रवर्तमान है। इसी प्रकार सुविहितमार्गीय आचार्य वर्धमानसूरि के शिष्य जिनेश्वरसूरि द्वारा चौलुक्यनरेश दुर्लभराज की राजसभा में चैत्यवासियों को शास्त्रार्थ में परास्त कर सुविहितमार्ग का प्रबल समर्थन किया। इस आधार पर उनकी शिष्यसंतति सुविहितमार्गीय कहलायी जो बाद में खरतरगच्छ के नाम से विख्यात हुई और आज भी प्रवर्तमान है।

चैत्रपुर (वर्तमान चितौड़) से अस्तित्व में आये चैत्रगच्छ के उपाध्याय देवचन्द्र के शिष्य जगच्चन्द्रसूरि के आघाटपुर में उग्रतप करने से प्रभावित हो कर वहाँ के शासक जैत्रसिंह ने वि.सं. १२८५ में उन्हें 'तपा' विरुद्ध से सम्मानित किया। इस घटना के आधार पर उनकी शिष्यसंतति तपागच्छीय कहलायी। अनेक शाखाओं में विभक्त यह गच्छ आज भी संख्या की दृष्टि से श्वेताम्बर श्रमण परम्परा में सबसे बड़ा और प्रभावशाली रूप में विद्यमान है।

इसी प्रकार बृहद्गच्छीय आचार्य जयसिंहसूरि के शिष्य आर्यरक्षितसूरि द्वारा वि.सं. ११६८ में विधिमार्ग की प्ररूपणा और उसके पालन के कारण विधिपक्ष अस्तित्व में आया। घटना विशेष के कारण इसका नाम अंचलगच्छ और अचलगच्छ भी प्रचलित हुआ। वर्तमान में यह गच्छ अचलगच्छ के नाम से जाना जाता है।

आज खरतरगच्छ, अचलगच्छ, तपागच्छ और पार्श्वचन्द्रगच्छ (तपागच्छ के ही अंतर्गत) को छोड़कर सभी गच्छ नामशेष हो चुके हैं। इन में से पार्श्वचन्द्रगच्छ को छोड़कर प्रथम तीन गच्छों का विस्तृत इतिहास स्वतंत्र पुस्तकों के रूप में प्रकाशित हो चुका है। अतः उनके सम्बन्ध में इस पुस्तक में कोई चर्चा नहीं की गयी है। इस पुस्तक में जिन गच्छों का वर्णक्रमानुसार संक्षिप्त इतिहास दिया गया है वे प्रायः देश की विभिन्न शोधपत्रिकाओं 'श्रमण'-वाराणसी, 'तुलसीप्रज्ञा'-लाडनू; 'शोधदर्श'-लखनऊ; 'सामीप्य'-अहमदाबाद; 'संस्कृति-सन्धान'-वाराणसी; 'कलासरोवर'-वाराणसी, 'तिथ्यर'-कलकत्ता आदि के विभिन्न अंकों में समय-समय पर प्रकाशित होते रहे हैं। इस प्रकार सम्पूर्ण सामग्री अत्यन्त बिखरी हुई थी। आचार्य श्री मुनिचन्द्रसूरिजी महाराज की महती कृपा से इस सम्पूर्ण सामग्री का एक पुस्तक के रूप में प्रकाशन संभव हो सका।

अब से लगभग ५० वर्ष पूर्व अगरचन्द्रजी नाहटा एवं भंवरलालजी नाहटा ने यतीन्द्रसूरी अभिनन्दन ग्रंथ में प्रकाशित "श्वेताम्बर श्रमणों के गच्छों का संक्षिप्त इतिहास" नामक अपने लेख में विद्वानों से इस महत्वपूर्ण विषय पर शोधकार्य करने का आह्वान किया था साथ ही यह शंका भी प्रकट की थी

कि जैन धर्म में इतिहास पर शोध कार्य करने वालों की संख्या नगण्य होने से शायद ही कोई इस कार्य को आगे बढ़ाये । लगभग आधी शताब्दी बीत जाने पर भी इस दिशा में कोई कार्य न हो सका, यह आश्चर्य का विषय है ।

प्रो. एम. ए. ढांकी के निर्देशन में मैंने उन्हीं के सुझाव पर यह कार्य प्रारंभ किया । उन्होंने अपना अमूल्य समय निकाल कर इस में मुझे हर प्रकार का सहयोग दिया । इसी प्रकार महोपाध्याय विनयसागरजी-जयपुर और प्रो. सागरमलजी, वाराणसी (अब शाजापुर - मध्यप्रदेश) द्वारा समय-समय पर अमूल्य सहयोग और सुझाव प्रदान किया गया । इन सभी विद्वानों द्वारा प्राप्त सहयोग के लिये उनके प्रति आभार प्रकट करने के लिये मेरे पास शब्द नहीं हैं ।

स्व. प्रो. जगदीश नारायण तिवारी, प्रोफेसर एवं पूर्व अध्यक्ष, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति और पुरातत्त्व विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, प्रो. विनोदचन्द्र श्रीवास्तव, प्रोफेसर एवं पूर्व अध्यक्ष, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति और पुरातत्त्व विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी एवं पूर्व निर्देशक, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला द्वारा समय-समय पर विभिन्न मार्गदर्शन एवं सहयोग प्राप्त होता रहा, जिसके लिये लेखक उनका हृदय से आभारी है । महोपाध्याय विनयसागरजी ने प्रस्तुत कृति का प्राक्कथन लिखने की महती कृपा की है । जिसके लिये लेखक उसका सदैव ऋणी रहेगा ।

इस पुस्तक में जो भी अच्छाइयां हैं, उसका सम्पूर्ण श्रेय इन विद्वानों को ही है और जो भी त्रुटियां हैं, वे मेरी हैं । अन्त में मैं उन सभी विद्वानों के प्रति हृदय से आभार प्रकट करता हूँ, जिनकी कृतियों से मुझे प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहायता प्राप्त हुई है ।

चैत्र सुदि नवमी, बुधवार

—शिवप्रसाद

वि.सं. २०६६



विषय सूची

प्राक्कथन

दो शब्द

अध्याय एक	गच्छों के इतिहास के मूल स्रोत	१-६
अध्याय दो	श्वेताम्बर श्रमण संघ का प्रारम्भिक स्वरूप	७-२५
अध्याय तीन	श्वेताम्बर सम्प्रदाय के गच्छों का सामान्य परिचय	२६-५०
अध्याय चार	श्वेताम्बर गच्छों का संक्षिप्त इतिहास	
	अड्डाजलीय गच्छ का संक्षिप्त इतिहास	५१-५३
	आगमिक गच्छ/प्राचीन त्रिस्तुतिक गच्छ का संक्षिप्त इतिहास	५४-१४०
	उपकेशगच्छ का संक्षिप्त इतिहास	१४१-२९०
	काम्यकगच्छ का संक्षिप्त इतिहास	२९१-२९४
	काशहदगच्छ का संक्षिप्त इतिहास	२९५-३०४
	कोरंटगच्छ का संक्षिप्त इतिहास	३०५-३४९
	कृष्णार्षिगच्छ का संक्षिप्त इतिहास	३५०-३७२
	खंडिलगच्छ का संक्षिप्त इतिहास	३७३-३९८

चन्द्रकुल (चन्द्रगच्छ) का संक्षिप्त इतिहास	३१९-४३६
चैत्रगच्छ का संक्षिप्त इतिहास	४३७-५०३
जालिहरगच्छ का संक्षिप्त इतिहास	५०४-५१०
जीरापल्लीगच्छ का संक्षिप्त इतिहास	५११-५२४
थारापद्रगच्छ का संक्षिप्त इतिहास	५२५-५५१
धर्मघोषगच्छ का संक्षिप्त इतिहास	५५२-६२३
नाणकीयगच्छ का संक्षिप्त इतिहास	६२४-६७१
नागपुरीयतपागच्छ का संक्षिप्त इतिहास	६७२-६९२
नागेन्द्रगच्छ का संक्षिप्त इतिहास	६९३-७६८
निवृत्तिकुल का संक्षिप्त इतिहास	७६९-७७९
पल्लीवालगच्छ का संक्षिप्त इतिहास	७८०-८१०
पार्श्वचन्द्रगच्छ का संक्षिप्त इतिहास	८११-८३५
पिप्पलगच्छ का संक्षिप्त इतिहास	८३६-९१०
पूर्णतल्लगच्छ का संक्षिप्त इतिहास	९११-९३०
पूर्णमागच्छ का संक्षिप्त इतिहास	९३१-९६५
पूर्णमागच्छ - प्रधानशाखा अपरनाम	
ढंढेरियाशाखा का संक्षिप्त इतिहास	९६६-९९७
सार्धपूर्णमागच्छ का संक्षिप्त इतिहास	९९८-१०२२
पूर्णमापक्ष-भीमपल्लीयाशाखा का	
संक्षिप्त इतिहास	१०२३-१०४३
ब्रह्माणगच्छ का संक्षिप्त इतिहास	१०४४-११२०

बृहद्गच्छ का संक्षिप्त इतिहास	११२१-११३९
मडाहडागच्छ का संक्षिप्त इतिहास	११४०-११७४
मोढगच्छ और मौढचैत्य	११७५-११८०
यशोभद्रसूरिगच्छ का संक्षिप्त इतिहास	११८१-११८४
राजगच्छ का संक्षिप्त इतिहास	११८५-१२०९
वायडगच्छ का संक्षिप्त इतिहास	१२१०-१२२६
विद्याधरकुल / विद्याधरगच्छ	१२२७-१२३८
संडेरगच्छ का संक्षिप्त इतिहास	१२३९-१२७१
सरवालगच्छ का संक्षिप्त इतिहास	१२७२-१२८१
हर्षपुरीयगच्छ अपरनाम मलधारीगच्छ	
गच्छ का संक्षिप्त इतिहास	१२८२-१३४२
हारीजगच्छ का संक्षिप्त इतिहास	१३४३-१३५४
सहायक ग्रन्थसूची	१३५५-१३६५



આચાર્યશ્રી ઝંકારસૂરિ જ્ઞાન મંદિર ગ્રંથાવલી

પ્રભુવાણી પ્રસાર સ્થંભ યોજના - ૧,૧૧,૧૧૧

૧. શ્રી સમસ્ત વાવ પથક જૈન. મૂર્તિ પૂ. સંઘ-ગુરુમૂર્તિ પ્રતિષ્ઠા- સ્મૃતિ
૨. શેઠશ્રી ચંદુલાલ કકલચંદ પરીખ પરિવાર-વાવ (બનાસકાંઠા)
૩. શ્રી સિદ્ધગિરિ ચાતુર્માસ આરાધના (સં.૨૦૫૭) દરમ્યાન થયેલ જ્ઞાનખાતાની આવકમાંથી હસ્તે : શેઠશ્રી ઘુડાલાલ પુનમચંદભાઈ હેક્કડ પરિવાર-ડીસા (બનાસકાંઠા)
૪. શ્રી ધર્મોત્તેજક પાઠશાળા શ્રી ઝીંઝુવાડા જૈન સંઘ, ઝીંઝુવાડા.
૫. શ્રી સુઈગામ જૈન સંઘ. સુઈગામ (વાવ પથક) બનાસકાંઠા
૬. શ્રી વાંકડિયા વડગામ જૈન સંઘ. વાંકડિયા વડગામ
૭. શ્રી ગરાંબડી જૈન સંઘ. ગરાંબડી (વાવપથક) બનાસકાંઠા.
૮. શ્રી રાંદેરરોડ જૈન સંઘ - અડાજણ પાટીયા, રાંદેર રોડ, સૂરત.
૯. શ્રી ચિંતામણી પાર્શ્વનાથ જૈન સંઘ-પાર્લા (ઈસ્ટ)-મુંબઈ
૧૦. શ્રી આદિનાથ તપાગચ્છ શ્વેતાંબર મૂ.પૂ. જૈન સંઘ, કતારગામ, સૂરત.
૧૧. શ્રી કૈલાસનગર જૈન સંઘ, કૈલાસનગર, સૂરત.
૧૨. શ્રી ઉચોસણ જૈન સંઘ, સમુબા શ્રાવિકા આ.ભવન સૂરત (જ્ઞાનદ્રવ્ય)
૧૩. શ્રી વાવપથક જૈન સંઘ, અમદાવાદ

પ્રભુવાણી પ્રસારક યોજના ૬૧,૧૧૧

૧. શ્રી દિપા શ્વેતાંબર મૂ. પૂ. જૈન સંઘ રાંદેરરોડ, સૂરત
૨. શ્રી સીમંધરસ્વામી મહિલા મંડળ પ્રતિષ્ઠા કોમ્પ્લેક્સ, સૂરત

પ્રભુવાણી પ્રસાર અનુમોદક - યોજના - ૩૧,૧૧૧

૧. મોરવાડા જૈન સંઘ-મોરવાડા (બનાસકાંઠા)
૨. શ્રી ઉમરા જૈન સંઘ - સૂરત
૩. શ્રી શત્રુંજય ટાવર જૈન સંઘ - સૂરત
૪. શ્રી ચૌમુખજી પાર્શ્વનાથ જૈન મંદિર ટ્રસ્ટ
શ્રી જૈન શ્વેતાંબર તપાગચ્છ સંઘ-ગઢ સિવાના (રાજ.)
૫. શ્રીમતી તારાબેન ગગલદાસ વડેયા - ઉયોસણા
૬. સુખસાગર અને મલ્હાર એપાર્ટમેન્ટ સૂરતની શ્રાવિકાઓ તરફથી.
૭. રવિજયોત એપાર્ટમેન્ટ, સૂરતની શ્રાવિકાઓ તરફથી.
૮. અઠવાલાઈન્સ જૈન સંઘ, પાંડવ બંગલો, સૂરતની શ્રાવિકાઓ તરફથી.
૯. શ્રી આદિનાથ તપાગચ્છ શ્વે. મૂર્તિપૂજક જૈન સંઘ, કતારગામ, સૂરત
૧૦. શ્રીમતિ વર્ષાબેન કર્ણાવત-પાલનપુર

પ્રભુવાણી પ્રસાર ભક્ત - યોજના - ૧૫,૧૧૧

૧. શ્રી દેસલપુર (કંઠી) શ્રી પાર્શ્વચંદ્રગચ્છ
(ઉપા. શ્રી ભુવનચંદ્રજીની પ્રેરણાથી)
૨. શ્રી ધ્રાંગધ્રા શ્રી પાર્શ્વચંદ્રસૂરીશ્વર ગચ્છ
(ઉપા. શ્રી ભુવનચંદ્રજીની પ્રેરણાથી)
૩. શ્રી અઠવાલાઈન્સ જૈન સંઘ, સૂરત શ્રાવિકા ઉપાશ્રય, સૂરત.



भूमिका

श्रमण भगवान् महावीर ने तीव्र एवं कठोरतम साधना कर, केवलज्ञान और केवलदर्शन प्राप्त किया। ज्ञान-प्राप्ति के पश्चात् सर्वजनहिताय उन्होंने सदुपदेश दिया। स्वानुभूति के आलोक में कथित उनकी वाणी को सुनकर अनेक लोक प्रभावित हुए। अनेक राजा, महाराजा, उनकी रानियाँ, राजकुमारियाँ, राजकुमार, सार्थवाह, श्रेष्ठि, विद्वद्वर्ग तथा सभी वर्गों एवं वर्णों के नारी-पुरुष उनके शिष्य बने, गणधर आदि बने। अपने विशाल शिष्य समुदाय को दीक्षित कर उन्होंने अपने तीर्थ की स्थापना की। इन तीर्थ को अनुशासित और सुव्यवस्थित रखने के लिये उन्होंने चतुर्विध संघ की व्यवस्था प्रदान की। इसी संघ की पावनता की परख कर ही आप शास्त्रकारों ने इसे तीर्थ, महातीर्थ, धर्मतीर्थ, सर्वोदय तीर्थ, अभ्युदयकारी शासन आदि गरिमा मण्डित संज्ञाओं/नामों से अभिहित किया है।

चतुर्विध संघ/तीर्थ की सुव्यवस्था एवं उत्कर्ष के लिये परवर्ती श्रुतधर तथा आप आचार्यों ने गच्छ, कुल, गण व संघ के नाम से उपविभाग भी किये हैं। जितने श्रमण एवं श्रमणियों की सुविधापूर्वक देख-रेख, शिक्षा-दीक्षा व व्यवस्था सम्पन्न की जा सकती हो, ऐसे समूह को 'गच्छ' कहा जाता है और उसके नायक या व्यवस्थापक को 'गच्छाचार्य' कहा जाता है। अनेक गच्छों में विभक्त इस समुदाय को 'कुल' कहा गया है, अर्थात् अनेक गच्छों का एक कुल होता है। कुल के प्रमुख नायक को 'कुलाचार्य' कहा गया है। इसी प्रकार अनेक कुलों के समूह को 'गण' और उसके अधिपति को 'गणाचार्य' तथा अनेक गणों के समुदाय को 'संघ' एवं संघाधिपति आचार्य को 'गणधर', 'संघाचार्य' के गौरव से विभूषित किया गया है। यही संघाचार्य चतुर्विध संघ की सुव्यवस्था एवं कार्य-संचालन करता है।

कल्प-सूत्रगत स्थविरावली के अनुसार देवर्धिगणि क्षमाश्रमण के समय तक इस तीर्थ में ८ गण, २७ कुल और ४५ शाखाओं का प्रचलन था और इनके अधिकारी/शासक/व्यवस्थापक वर्ग को क्रमशः गणधर, आचार्य, उपाध्याय, स्थविर, प्रवर्तक, गणि और गणादच्छेदक पदों से संबोधित किया गया है।

वर्तमान समय में श्वेताम्बर मूर्तिपूजक समाज में जो भी खरतरगच्छ, तपागच्छ, अंचलगच्छ आदि गच्छों के नाम से प्रचलित/प्रसिद्ध है, वे सब कोटिक गण, चन्द्रकुल और वज्रशाखा के अन्तर्गत आते हैं और खरतर, तपा आदि 'बिरुद/उपाधि' के धारक हैं। वस्तुतः ये पृथक्-पृथक् गच्छ नहीं हैं। उनका तो सुस्थितसूरि का कोटिक गण, चन्द्रसूरि का चन्द्रकुल एवं आर्यवज्र से निसृत वज्रशाखा ही गण, कुल एवं शाखा है। ये बिरुद तो उन उन आचार्यों की उत्कृष्ट संयम-साधना को देखकर तत्कालीन नरेशों ने प्रदान किये थे अथवा उनके विशिष्ट गुणों या क्रिया-कलापों से उनकी परम्परा उक्त बिरुदों से प्रसिद्ध हुई थी। (निष्कर्ष यह है कि वर्तमान के समस्त गच्छ ही उन्हीं आचार्य की संतानें हैं और इन सबका एक ही गण है और वह है, कोटिक गण।)

अधुना गच्छों के व्यवस्थापक नेता भी आचार्य, महोपाध्याय, उपाध्याय स्थविर, प्रवर्तक, पन्यास एवं गणि पद को सुशोभित करते हैं। महिला-श्रमणी वर्ग में सुसंचालिका अधिकारिणी पूर्वकाल के समान ही आज भी 'महत्तरा, प्रवर्तिणी, स्थविरा और गणिनी' पद को विभूषित करने वाली होती है।

गण शब्द का अर्थ - गण शब्द की व्युत्पत्ति करते हुए पाइयसदमहण्णवो में लिखा गया है कि-

गण पुं [गण] १ समूह, समुदाय, यूथ, थोक; (जी ३४; कुमा; प्रासू ४; ७५; १५१)। २ गच्छ, समान आचार व्यवहार वाले साधुओं का समूह; (कप्प)।

गम शब्द 'गम्लृ गतौ' इस धातु से गच्छ शब्द निष्पन्न हुआ है। जिसका धातु के अनुसार अर्थ गमन होता है। 'ये गत्यर्थाः ते ज्ञानार्थाः' व्युत्पत्ति से गच्छ शब्द निष्पन्न होता है।

८४ गच्छों की मान्यता परम्परानुसार रही है। विक्रम संवत् ९९४ में (तपागच्छ पट्टावली पृष्ठ ५३) उद्योतनसूरि ने अर्बुदाचल के समीप टेली ग्राम की सीमा में रात्रि के समय शुभ योग देखकर सर्वदेवसूरि आदि आठ आचार्यों की पदस्थापना की। वहीं से वटगच्छ, बृहद्गच्छ चला। तभी से ८४ गच्छों की परम्परा चल पड़ी।

खरतरगच्छ की परम्परा के अनुसार श्री वर्द्धमानाचार्य जो कि ८४ मठों के अधिपति थे, चैत्यवासी आचार्य रहे। उन्होंने चैत्यवास से विरक्त होकर उद्योतनसूरि के समीप दीक्षा ग्रहण की। ८४ मठों की मान्यता ही ८४ गच्छों के रूप में प्रचलित हो गई। श्री वर्द्धमानसूरि के शिष्य श्री जिनेश्वरसूरि प्रथम हुए। तभी से ८४ गच्छों की परम्परा सभी को मान्य हो गई किन्तु कोई ऐतिहासिक प्रमाणों के अभाव में ऐसा नहीं कहा जा सकता। दसवीं शताब्दी से लेकर सत्रहवीं शती तक में जितने भी गच्छ उपलब्ध थे वे सब ८४ गच्छों में सम्मिलित होते गए और ८४ की मान्यता दृढ़ होती गई।

योगनिष्ठ आचार्य बुद्धिसागरसूरि ने गच्छमत प्रबन्ध नामक पुस्तक में इन प्राप्त गच्छों का उल्लेख और इतिवृत्त दिया है।

डॉ. शिवप्रसाद ने इस पुस्तक विविध गच्छ पट्टावली संग्रह में ३८ गच्छों का विवरण दिया है। अध्याय १, गच्छों के इतिहास के मूल स्रोत में गच्छों की प्रारम्भिक स्थिति का अवलोकन करते हुए प्रारंभिक स्वरूप का विवेचन किया गया है।

१. पट्टावली - पट्टावलियों में पट्टधर आचार्यों का ही वर्णन किया जाता है अन्य आचार्यों अथवा उपाध्यायों का वर्णन नहीं रहता है।

२. **प्राचीन उल्लेख** - प्राचीन प्रतिष्ठापित मूर्तियों, शिलालेखों एवं पादुकाओं के लेखों का आधार मुद्रित से लिया गया है।

३. प्राचीन ताम्रपत्रादि लेखों के उल्लेखों का आधार लिया गया है।

४. ग्रन्थ रचनाओं की प्रशस्ति का आधार मुद्रित से लिया गया है और लेखन प्रशस्तियों का भी आधार लिया गया है।

द्वितीय अध्याय में कल्पसूत्र की द्वितीय वाचना स्थिविरावली का आधार दिया है और इसमें इस स्थिविरावली के अनुसार श्रमण भगवान महावीर के शिष्य गौतम से लेकर देवर्धिगणि क्षमाश्रमण तक पूर्ण परम्परा दी है। पूर्ण परम्परा देते हुए इसमें उल्लिखित गण, संघ और कुलों का पूर्ण विवरण दिया है। तृतीय अध्याय में श्वेताम्बर सम्प्रदाय के गच्छों का सामान्य परिचय दिया गया है।

इन लेखों के आधार पर लेखक ने इस ग्रन्थ का निर्माण किया है। लेखक स्वयं स्वीकार करता है कि कोटिकगण, चन्द्रकुल, वज्रशाखा सबसे प्राचीन परम्परा रही। किन्तु अन्य गच्छों के साथ इस कोटिकगण का या वज्रशाखा का क्या संबंध रहा है इस पर कोई प्रकाश नहीं डाला गया है। लेखक ने तपागच्छ, अंचलगच्छ और खरतरगच्छ के संबंध में इस ग्रन्थ में विचार नहीं किया है क्योंकि **तपागच्छ का इतिहास और अंचलगच्छ का इतिहास** लेखक ने स्वयं ने लिखा है और **खरतरगच्छ का बृहद् इतिहास** स्वयं (महोपाध्याय विनयसागर) ने लिखा है अतः इन तीन गच्छों को छोड़ दिया गया है। चन्द्रकुल के संबंध में विचार अवश्य किया गया है और चन्द्रकुल से संबंधित गच्छों का भी उल्लेख किया गया है। जो कि आगे वर्णित है।

गच्छों के नामकरण के सम्बन्ध में अलग-अलग उल्लेख प्राप्त होते हैं। कई गच्छ ग्रामों के नाम से सम्बद्ध है, कई गच्छ आचार्यों के नाम से सम्बद्ध है और कई गच्छ मान्यता भेद से सम्बद्ध है। उसमें ग्रामों के नाम से जो गच्छ प्रचलित हुए हैं, वे निम्न हैं:-

१. अङ्गुलिजीय गच्छ - अहमदाबाद के निकट अडालज स्थान।
२. उपकेश गच्छ - उपकेशपुर (ओसियां)।
३. काम्यक गच्छ - भरतपुर के निकट कामा प्रदेश।
४. काशहद गच्छ - कासीन्द्रा।
५. कोरंट गच्छ - कोरटा।
६. खंडिलगच्छ - खंडेला।
७. चैत्रगच्छ - चित्तौड़ के निकट।
८. जालिहरगच्छ - जाल्योधर।
९. जीरापल्लीगच्छ - जीरावला।
१०. थारापद्रगच्छ - थराद।
११. नाणकीयगच्छ - नाणा।
१२. ब्रह्माणगच्छ - ब्रह्माण।
१३. संडेरकगच्छ - संडेर।
१४. हर्षपुरगच्छ - हरसोर।
१५. चैत्रगच्छ - चैत्रपुर।
१६. नागपुरीयतपागच्छ - नागौर।
१७. पल्लीवालगच्छ - पाली।
१८. पार्श्वचन्द्रगच्छ - नागौर।
१९. पिप्पलगच्छ - वरमाण के निकट, पीपल वृक्ष के नीचे।
२०. पूर्णतल्लगच्छ - संभवतः पुन्ताला (जोधपुर प्रदेश)।
२१. भीमपल्लीयाशाखा - भीमपल्ली
२२. भृगुकच्छशाखा - भडौच
२३. ब्रह्माणगच्छ - ब्रह्माण (वरमाण, आबू के निकट)
२४. वटगच्छ / बृहद्गच्छ - वटवृक्ष के नीचे।
२५. मडाहडागच्छ - मडार।

२६. मोढगच्छ - मोढेरक।

२७. वायडगच्छ - वायड।

२९. हारीजगच्छ - हारीज, शंखेश्वर के पास।

कई गच्छ संस्थापक आचार्यों के नाम से प्रसिद्ध हुए जैसे- यशोभद्रसूरि से यशोभद्रगच्छ।

सैद्धान्तिक मतभेद यह वैचारिक मतभेद के कारण जो गच्छ उत्पन्न हुए हैं उनमें पूर्णिमापक्ष (सार्द्धपूर्णिमा पक्ष) आदि।

इसके पश्चात् लेखक द्वारा लिखित गच्छों का वर्णन अकारानुक्रम से प्राप्त होता है।

१. अड्डालिजीय गच्छ - इसके केवल १२वीं शताब्दी के ४ प्रतिष्ठा लेख ही प्राप्त होते हैं।

२. आगमिक गच्छ - यह वडगच्छ की शाखा मानी जाती है और यहीं से संवत् ११४९ में पूर्णिमागच्छ का प्रारम्भ हुआ। पूर्णिमागच्छ की एक शाखा तेरहवीं शताब्दी में आगमिक गच्छ के नाम से प्रसिद्ध हुई। आगमिक गच्छ का यह अपरनाम त्रिस्तुतिकमत हुआ। आगमिक गच्छ की शाखाओं में धन्धूकीया शाखा और विडालंबीया शाखा भी प्राप्त होती है। मुनिसागरसूरि रचित आगमिकगच्छीय पट्टावली में शीलगुणसूरि से लेकर मुनिसागरसूरि तक पट्टावली प्राप्त होती है और दूसरी पट्टावली शीलगुणसूरि से लेकर मेघरत्नसूरि तक प्राप्त होती है। साहित्यिक साक्ष्यों में हेमरत्नसूरि के शिष्य साधुमेरु द्वारा पुण्यसार रास और अन्य रचनाओं में अमररत्नसूरि फागु प्राप्त होता है। क्षमाकलश द्वारा १५५१ में रचित ललितांगकुमार रास, मतिसागरसूरि द्वारा १५९४ में रचित लघुक्षेत्रसमास चौपई, उदयधर्मसूरि ने मलयसुन्दरी रास, मुनिसुन्दरसूरि ने १४९९ में रचित धर्मकल्पद्रुम, शीलसिंहसूरि रचित कोष्ठकचिन्तामणि स्वोपज्ञ टीका और वरसिंहसूरि संवत् १६८१ में रचित आवश्यक बालावबोधवृत्ति आदि भी प्राप्त हैं। आगमिक गच्छ के संवत् १४२० से लेकर १६८३ तक २१८ मूर्तिलेख प्राप्त हैं।

३. उपकेशगच्छ - कहा जाता है कि भगवान महावीर के ७०वें वर्ष श्री रत्नप्रभसूरि ने उपकेशपुर (ओसिया) में ओसवाल जाति की स्थापना की थी। लेखक लिखता है कि- परम्परानुसार इस गच्छ के आदिम आचार्य रत्नप्रभसूरि ने वीर संवत् ७० में ओसवाल जाति की स्थापना की, परन्तु किसी भी ऐतिहासिक साक्ष्य से इस तथ्य की पुष्टि नहीं होती। ऐतिहासिक साक्ष्यों के आधार पर ओसवालों की स्थापना और इस गच्छ की उत्पत्ति का समय ईस्वी सन् की आठवीं शती के पूर्व नहीं माना जा सकता। (पृष्ठ ४६)। उपकेशगच्छ चैत्यवासी आमनाय का था। इसकी आवान्तर शाखाओं का भी जन्म हुआ। १२६६ में द्विवन्दनीक शाखा, १३०८ में खरतपाशाखा और १४९८ में खादिर शाखा अस्तित्व में आयी। इस परम्परा में कक्कसूरि, देवगुप्तसूरि और सिद्धसूरि इन तीन नामों की पुनरावृत्ति होती रहती थी। मेरे देखते-देखते श्री प्रेमसुन्दरजी फलोदी और मुकुन्दसुन्दरजी नागौर में विद्यमान थे और अभी पद्मसुन्दर नामक यति विद्यमान है। आचार्यों में अन्तिम देवगुप्तसूरि २०वीं सदी में विद्यमान थे।

देवगुप्तसूरि नवपदप्रकरणबृहद्वृत्ति (१०७४), सिद्धसूरि (११९२) क्षेत्रसमासटीका, कक्कसूरि; नाभिनन्दनजिनोद्धरप्रबन्ध अपरनाम शत्रुञ्जयतीर्थोद्धारप्रबन्ध (१३९३), कक्कसूरि-उपकेशगच्छप्रबन्ध (१३९३)। उपकेशगच्छपट्टावली- (१५वीं सदी का अन्त) उपकेशगच्छपट्टावली २०वीं शताब्दी। श्री देवगुप्तसूरि (ज्ञानसुन्दरजी) ने भगवान पार्श्वनाथ की परम्परा का इतिहास दो भागों में लिखा है, जो वस्तुतः वह इतिहास भाटों की बिरुदावलियों के आधार पर लिखा गया है।

कहा जाता है कि वीर निर्वाण संवत् ८४ में श्री रत्नप्रभसूरि द्वारा उपकेशपुर और कोरण्टगच्छ के मन्दिरों की प्रतिष्ठा एक साथ करवाई थी। संवत् १०११ से १९१८ तक १२९ मूर्ति लेख प्राप्त होते हैं। लेखन प्रशस्तियों में उत्तराध्ययनसूत्र, सुखबोधावृत्ति (१४८९), धर्मरुचि-अजापुत्रचौपई प्राप्त हैं।

इस शाखा के अन्तिम आचार्य २०वीं शताब्दी के प्रारम्भ तक बीकानेर में विद्यमान थे और वे कैवलागच्छ के अधिपति माने जाते थे। बीकानेर में चौदह गवाड़ कैवलागच्छ की ही मानी जाती है।

४. काम्यकगच्छ - यह शाखा राजस्थान प्रान्त के भरतपुर जिले में अवस्थित कामा नामक स्थान से हुई है। बयाना में ११३० का एक शिलालेख प्राप्त होता है। जिसमें कि निवृत्तिकुल का उल्लेख किया गया है और महेश्वरसूरि से सम्बन्ध रखता है। इसका कोई विशेष उल्लेख प्राप्त नहीं होता है।

५. काशहृदगच्छ - आबू पर्वत की तलहटी में कासीन्द्रा या कायंद्रा विद्यमान है उसी से इस गच्छ की उत्पत्ति मानी जाती है। जालिहरगच्छीय देवप्रभसूरि रचित पद्मप्रभचरित्र (१२५४) में इस गच्छ का उल्लेख मिलता है। ११९२ से लेकर १३०० तक कुछ लेख प्राप्त होते हैं। इसी गच्छ के नरचन्द्रोपाध्याय की प्रश्नशतकज्ञानदीपिका टीकासह (१३२४), जन्मसमुद्रसटीक और ज्योतिषचतुर्विंशतिका आदि कृतियाँ प्राप्त होती हैं।

६. कोरंटगच्छ - राजस्थान के कोरटा नामक स्थान से इस गच्छ की उत्पत्ति हुई है। यह गच्छ चैत्यवासी आम्नाय का है। इसमें भी कक्कसूरि, सावदेवसूरि (सर्वदेवसूरि) और नन्नसूरि आचार्यों के नाम क्रमशः प्राप्त होते रहते हैं। इस गच्छ के संवत् १२०१ से १६५२ तक के १४२ लेख प्राप्त होते हैं। कोरंटगच्छ की पट्टावली भी प्राप्त होती है।

७. कृष्णर्षिगच्छ - प्राक्मध्ययुगीन और मध्ययुगीन निर्ग्रन्थों में एक कृष्णर्षिगच्छ भी प्राप्त होता है। कृष्ण मुनि के अनुयायी होने से यह कृष्णर्षि गच्छ कहलाया। जयसिंहसूरि, प्रसन्नचन्द्रसूरि और नयचन्द्रसूरि ये नाम क्रमशः प्राप्त होते रहते हैं। संभवतः आगे जाकर यह सम्प्रदाय चैत्यवास से सम्बन्ध रखने लग गया। संवत् १२८७ से १६१६ तक इस गच्छ के लेख प्राप्त होते हैं। जयसिंहसूरि-धर्मोपदेशमालाविवरण (र.सं. ९१५), शीलोपदेशमाला के कर्ता जयकीर्ति भी जयसिंहसूरि के शिष्य थे। दाक्षिण्यचिह्न

उद्योतनसूरि ने कुवलयमाला (र.सं. ७००), प्रभानन्दसूरि-जंबूद्वीपसंग्रहणीप्रकरण टीका, जयसिंहसूरि कृत न्यायसार टीका न्यायतात्पर्यदीपिका, नयचन्द्रसूरि-हम्मीर महाकाव्य (संवत् १४४४), रंभामंजरी नाटिका भी प्राप्त होती है। इस गच्छ के १२८७ से १६१६ तक ३१ लेख प्राप्त होते हैं। विभिन्न ग्रन्थों के आधार से इसमें कई ग्रन्थ प्रशस्तियों के आचार्यों के नाम दिए गए हैं। इसमें एक शाखा कृष्णर्षितपा नाम के संवत् १४५० से १४७४ तक के लेख मिलते हैं।

८. खंडिलगच्छ - यह गच्छ खंडेला, सीकर से ४५ कि.मी. दूर नाम से प्रसिद्ध हुआ। खंडेला को जैन तीर्थों की गणना में सिद्धसेनसूरि ने सकलतीर्थ स्तोत्र में और धर्मरत्नाकर की प्रशस्ति में उल्लेख किया है। भावदेवसूरि इस गच्छ के प्रथम आचार्य माने जाते हैं। इसीलिए भावदेवाचार्य गच्छ भी इसका नाम मिलता है। इस गच्छ के आचार्य स्वयं को **कालकाचार्य** संतानीय कहते हैं। प्रतिमा लेखों में इस गच्छ का नाम भावडार गच्छ और भावडगच्छ भी मिलता है। इस गच्छ के पट्टधर आचार्यों में भावदेवसूरि, विजयसिंहसूरि, वीरसूरि और जिनदेवसूरि इन चारों नामों की पुनरावृत्ति दृष्टिगत होती है। वीरसूरि चालुक्य नरेश सिद्धराज जयसिंह के मित्र माने जाते थे और उन्होंने संवत् ११०७ में बौद्धाचार्य, दिगम्बर आचार्य कमलकीर्ति और सांख्यवादी वादीसिंह को शास्त्रार्थ में पराजित किया था।

भावदेवसूरि की प्रमुख रचनाओं में पार्श्वनाथ चरित्र (संवत् १४१२), कालिकाचार्य कथा, यतिदिनचर्या और अलंकारसार, शान्तिसूरि की भक्तामर रचना, हर्षमूर्ति की गौतमपृच्छा चौपई, चन्द्रलेखा चौपई और पद्मावती चौपई, कनकसुन्दर कृत हरिश्चन्द्रराजा रास की रचना भी प्राप्त होती है। संवत् १०८० का इसका प्राचीन लेख भी प्राप्त होता है। संवत् ११९६ में प्राचीन प्रतिमा लेख पर भावडार गच्छ का उल्लेख प्राप्त होता है। संवत् ११९६ से १६९७ तक इस गच्छ के यत्र-तत्र उल्लेख प्राप्त होते हैं।

९. चन्द्रकुलगच्छ (चन्द्रगच्छ) - यह वस्तुतः चन्द्रगच्छ हि प्रतीत होता है। क्योंकि चन्द्रकुलीय आचार्यों में उद्योतनसूरि के शिष्य सर्वदेवसूरि ने वडगच्छ की स्थापना की थी और वर्द्धमानसूरि ८४ मठों के अधिपति थे। इस दृष्टि से लेखक ने धनेश्वरसूरि रचित सुरसुंदरीचरियं, जिनचन्द्रसूरि रचित संवेगारंगशाला, अभयदेवसूरि रचित व्याख्याप्रज्ञसिवृत्ति को ये दोनों चन्द्रकुलीय थे। चन्द्रकुलीय मानकर यहाँ उल्लेख किया है किन्तु वह गलत है। क्योंकि जिनेश्वरसूरि के शिष्य धनेश्वरसूरि (जिनभद्रसूरि) और अभयदेवसूरि-कौटिकगण, वज्रशाखा, चन्द्रकुलीय माने जाते हैं और उन्होंने अपना विशेषण सुविहित पक्षीय लिखा है। अतएव यह गच्छ अलग से ही प्रतीत होता है। इसमें धनेश्वरसूरि आदि आचार्यों को सम्मिलित करना उपयुक्त नहीं है।

जयसिंहसूरि के शिष्य चन्द्रप्रभसूरि से पूर्णिमागच्छ अस्तित्व में आया। चन्द्रगच्छीय परम्परा में श्रीचन्द्रसूरि रचित सणंककुमारचरित। बालचन्द्रसूरि रचित उपदेशकंदलीटीका, वसन्तविलासमहाकाव्य, विवेकमंजरीटीका, करुणावज्रायुधनाटक आदि कृतियाँ प्राप्त हैं। चन्द्रगच्छीय देवेन्द्रसूरि ने ही उपमितिभवप्रपंचकथासारोद्धार (संवत् ९६२), विनयचन्द्रसूरि कृत पार्श्वनाथचरित्र, प्रद्युम्नसूरि कृत समरादित्यसंक्षेप (संवत् १३२४), उदयप्रभसूरि कृत शीलवतिकथा (संवत् १४०० की लिखित) प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त कई लेखन प्रशस्तियाँ भी प्राप्त होती हैं। अभिलेखीय साक्ष्यों में अंकोटा से प्राप्त मूर्तियों पर इस गच्छ के प्राचीन लेख प्राप्त होते हैं। मूर्तिलेखों में १०३२ से १५५२ तक २३ लेख प्राप्त होते हैं।

१०. चैत्रगच्छ - संभवतः चैत्रपुर (चित्तौड़) से इस गच्छ की उत्पत्ति हुई है। इस गच्छ के चैत्रगच्छ, चित्रवालगच्छ, चैत्रवालगच्छ, चित्रपल्लीगच्छ और चित्रगच्छ नामकरण भी प्राप्त होते हैं। इस गच्छ के आदिमाचार्य धनेश्वरसूरि हुए। इन्हीं के पट्टधर भुवनचन्द्रसूरि, प्रशिष्य देवभद्रसूरि और जगच्चन्द्रसूरि हुए। आचार्य जगच्चन्द्रसूरि ने क्रियोद्धार किया और महाराजा

जैत्रसिंह चित्तौड़ से तपाबिरुद प्राप्त किया। तब से यह गच्छ पृथक् गच्छ कहलाता है। इस गच्छ के अभिलेखीय और साहित्यिक साक्ष्यों के आधार पर भर्तृपुरीयशाखा, धारणपद्रीयशाखा, चतुर्दशीपक्षशाखा, चन्द्रसामीयशाखा, सलषणपुराशाखा, कम्बोइयाशाखा, अष्टापदशाखा, सार्दूलशाखा आदि का भी पता चलता है। अनेक लेखन प्रशस्तियाँ भी प्राप्त होती हैं। संवत् १२२५ से १५९१ तक ११९ मूर्तिलेख तथा शाखाओं के संवत् १४०० से लेकर १५८२ तक २५ लेख प्राप्त होते हैं।

चतुर्दशीयपक्ष भी चैत्रगच्छ की ही एक शाखा है। जिसके १५१० से लेकर १५४७ तक २५ लेख प्राप्त होते हैं। सलषणपुराशाखा भी इसकी शाखा मानी जाती है।

११. जालिहरगच्छ - विद्याधरकुल की द्वितीय शाखा जालिहर शाखा मानी जाती है। जो कि जाल्योधर स्थान से विकसित हुई है। बालचन्द्रसूरि-नन्दीदुर्गवृत्ति (संवत् १२२६), देवप्रभसूरि-पद्मप्रभचरित्र (संवत् १५२४) भी प्राप्त हैं। विक्रम संवत् १२१३ से १३९३ तक के प्रतिमालेख प्राप्त होते हैं।

१२. जीरापल्लीगच्छ - लेखक की मान्यतानुसार इससे ही पूर्णिमागच्छ, आगमिकगच्छ, अंचलगच्छ, पिप्पलगच्छ और बृहद्गच्छ अस्तित्व में आए। बृहद्गच्छ गुर्वावली (१६वीं सदी) के अनुसार बृहद्गच्छ से उद्भूत २५ शाखाओं में से जीरापल्लीगच्छ भी अस्तित्व में आया। जीरापल्लीगच्छ, जीरावला नामक राजस्थान के गाँव से उत्पन्न हुआ और देवचन्द्रसूरि के प्रशिष्य श्री रामचन्द्रसूरि इस गच्छ के प्रवर्तक आचार्य माने जाते हैं। साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों में १५वीं शताब्दी से १७वीं शताब्दी तक इनके उल्लेख प्राप्त होते रहते हैं। संवत् १४०३ से १५७२ तक २७ लेख प्राप्त होते हैं।

१३. थारापद्रगच्छ - इस गच्छ का उद्भव थारापद्र (थराद, बनासकांठा) नामक गाँव से हुआ। इस गच्छ के प्रवर्तक कौन थे? इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता है। किन्तु, ११वीं सदी के प्रारम्भ में पूर्णभद्रसूरि ने चन्द्रकुल

के वटेश्वर क्षमाश्रमण को अपना पूर्वज बताया है। इस ग्रन्थ का सर्वप्रथम अभिलेखीय साक्ष्य संवत् १०८४ का है। नमिसाधु षडावश्यकसूत्रवृत्ति (संवत् ११२२), काव्यलंकारटिप्पण (संवत् ११२५), शालिभद्रसूरि-सटीक बृहद्संग्रहणीप्रकरण (संवत् ११३९), वादीवेताल शान्तिसूरि-उत्तराध्ययनसूत्र पाइयटीका। इन्हीं की जीवविचार प्रकरण, चैत्यवन्दन महाभाष्य, बृहद्शान्तिस्तवन, जिनस्त्रात्रविधि प्राप्त होती है। इन्होंने महाकवि धनपाल कृत तिलकमंजरी का संशोधन किया था और विक्रम संवत् १०४० में उज्जयन्तगिरि पर संलेखना द्वारा अपना शरीर त्याग किया था। इस गच्छ में सर्वदेवसूरि, विजयसिंहसूरि और विजयशान्तिसूरि इन तीन नामों की पुनरावृत्ति होती रहती है। वटेश्वर क्षमाश्रमण का समय ई.सन् ६७५ से ७२५ माना जाता है। संवत् १०८४ से १५६३ तक २१ लेख और १११८ से १३३४ तक १३ लेख प्राप्त होते हैं।

१४. धर्मघोषगच्छ - चन्द्रकुलीय परम्परा में इस गच्छ का राजगच्छ के नाम से उल्लेख मिलता है। श्री धर्मघोषसूरि से यह गच्छ धर्मघोषगच्छ कहलाया। मैंने देखा है कि धर्मघोषगच्छ के अन्तिम यति गोपजी करके नागोर में रहते थे। यशोभद्रसूरि-आगमिकवस्तुविचारसारवृत्ति, रविप्रभसूरि-धर्मघोषसूरि स्तुति, प्रद्युम्नसूरि-विचारसारविवरण, पृथ्वीचन्द्रसूरि-कल्पसूत्रटिप्पणक प्राप्त होते हैं। पुस्तक प्रशस्तियों में १५५० की लघुक्षेत्रसमासवृत्ति आदि प्राप्त होती हैं। संवत् १३०४ से १६९१ कल्याणसागरसूरि तक २१० लेख प्राप्त होते हैं।

१५. नाणकीयगच्छ - चैत्यवासी गच्छों में नाणकीयगच्छ का प्रमुख स्थान है। अर्बुदमण्डल के अन्तर्गत नाणा स्थान से यह गच्छ ११वीं शती में अस्तित्व में आया है। इस गच्छ के शान्तिसूरि पुरातन आचार्य माने गए हैं। शान्तिसूरि, सिद्धसेनसूरि, धनेश्वरसूरि और महेन्द्रसूरि इन चार पट्टधर आचार्यों की पुनरावृत्ति होती गई है। लेखन प्रशस्तियों में १२७२ की

बृहद्संग्रहणी पुस्तिका, षट्कर्मअवचूरि भी प्राप्त होती है। मूर्तिलेखों में संवत् ११०२ से लेकर १५९९ महेन्द्रसूरि तक १५३ लेख प्राप्त होते हैं।

१६. नागपुरीयतपागच्छ - संभवतः तपागच्छ की एक शाखा के रूप में यह गच्छ का अस्तित्व आया होगा। किन्तु, मान्यतानुसार बृहद्गच्छीय वादीदेवसूरि के शिष्य पद्मप्रभसूरि से इस गच्छ का उद्भव माना जाता है। पद्मप्रभसूरि को नागोर में उग्रतप करने के कारण वहाँ के शासक ने नागोरीतपा यह बिरुद दिया था जो कि परम्परागत शिष्य सन्तति ने स्वीकार किया। इसका उद्भव ११७३ में माना जाता है। किन्तु इसके मूर्तिलेख १६वीं-१७वीं शताब्दी के पूर्व के नहीं हैं। इस गच्छ का अन्तिम मूर्तिलेख १६६७ का प्राप्त है। चन्द्रकीर्तिसूरि ने १६२३ में सारस्वर व्याकरण दीपिका धातुपाठ विवरण, छन्दकोशटीका, हर्षकीर्ति रचित सारस्वरव्याकरण धातुपाठ (संवत् १६६३), योगचिन्तामणि, शारदीय नाममाला, लघुशांतिस्तोत्र, सिन्दूरप्रकर आदि प्राप्त होते हैं। लेखन प्रशस्तियों में १६५६ की प्राप्त होती है। १४५३ से लेकर १५४२ तक ३३ लेख प्राप्त होते हैं। श्री रत्नशेखरसूरि रचित **सिरिवालचरियं** प्राकृत भाषा में (१४२८) का प्राप्त होता है और इनकी कई अन्य कृतियाँ भी प्राप्त होती हैं। अन्य पट्टावलियों के अनुसार पद्मप्रभसूरि रचित भुवनदीपक ग्रन्थ भी इस गच्छ का माना गया है।

१७. नागेन्द्रगच्छ - यह गच्छ कोटिकगण के नाइला शाखा से माना जाता है। नाइलशाखा का उद्भव ई.सन् १०० वर्ष के पश्चात् माना गया है। गुप्तकाल ई.सन् ४७३ में विमलसूरि रचित पउमचरियं ग्रन्थ भी इस परम्परा का माना जाता है। एक प्रशस्ति के अनुसार नाइलकुल में प्रद्युम्नसूरि हुए जिनके शिष्य का नाम वीरभद्र था। वीरभद्र के शिष्य प्रद्युम्नसूरि के शिष्य गुणपाल ने जंबूचरियं की रचना की। जंबूमुनि रचित जिनशतक (१०२५) का भी प्राप्त है। १०८८ की प्रतिमा के उल्लेख के आधार पर नागेन्द्रकुल नागेन्द्रगच्छ का नाम मिलता है। महामात्य वस्तुपाल-तेजपाल के पितृपक्ष

के कुलगुरु विजयसेनसूरि भी नागेन्द्रगच्छ के थे। उनके शिष्य उदयप्रभसूरि ने धर्माभ्युदय महाकाव्य (१२४०), उनके शिष्य शान्तिसूरि ने दिगम्बरों को शास्त्रार्थ में हराया था। उनके शिष्य आनन्दसूरि और अमरचन्द्रसूरि नामक दो शिष्य हुए उन्होंने ने सिद्धराज जयसिंह के कार्यकाल में व्याघ्रशिशुक एवं सिंहशिशुक की उपाधि प्राप्त की थी। अमरचन्द्रसूरि ने सिद्धान्तार्णव ग्रन्थ की रचना की। इनके शिष्य हरिभद्रसूरि कलिकाल गौतम कहलाते थे। इस गच्छ की एक अन्य शाखा का भी उल्लेख प्राप्त होता है। उसमें देवेन्द्रसूरि कृत वासुपूज्य चरित्र (१२६४) की कृति प्राप्त होती है। मल्लिषेणसूरि-स्याद्वादमंजरी टीका के रचयिता (संवत् १३४८), मुनिधर्मकुमार-शालिभद्रचरित्र (संवत् १३३४) भी इनका प्राप्त होता है। इसी परम्परा में गुणरत्नसूरि-ऋषभरास और भरतबाहुबलि रास, सोमरत्नसूरि-कामदेवरास (संवत् १५२० के आसपास), ज्ञानसागर-जीवभवस्थितिरास (संवत् १४६७) और सिद्धचक्र-श्रीपाल चौपई (संवत् १५३१) की प्राप्त होती है। संवत् १०८८ वासुदेवसूरि से लेकर संवत् १७१५ रत्नाकरसूरि तक १४८ लेख प्राप्त होते हैं।

१८. निवृत्तिकुल - कल्पसूत्र स्थविरावली में इसका उल्लेख मिलता है। इसके अभिलेखीय साक्ष्य संवत् ५७२ से प्राप्त होते हैं। इस कुल में जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण-विशेषावश्यकभाष्य, शीलाचार्य (शीलांकाचार्य)-आचारांगसूत्र टीका, सूत्रकृतांगटीका, चउपन्नमहापुरुष चरियं, सिद्धर्षि-न्यायावतारटीका, उपदेशमाला टीका और उपमितिभव प्रपंच कथा, गर्गर्षि-कर्मविपाक और पंचसंग्रह, द्रोणाचार्य-ओघनिर्युक्ति टीका, सूरार्य-दानादिप्रकरण आदि प्रसिद्ध विद्वान् हुए हैं। १२वीं शताब्दी के चार लेख प्राप्त होते हैं और बाकी के लेख बाद के हैं।

१९. पल्लीवालगच्छ - संभवतः पाली से इसका उद्भव हुआ है। इस गच्छ में महेश्वरसूरि प्रथम, अभयदेवसूरि, महेश्वरसूरि द्वितीय, नन्नसूरि, अजितदेवसूरि,

हीरानन्दसूरि आदि कई रचनाकार हो चुके हैं। अभिलेखीय साक्ष्य १२५७ से लेकर १६८१ तक के प्राप्त हैं। पट्टावलियों के आधार पर प्रभुचन्द्रसूरि संवत् १६७६ से विद्यमान थे। इसी प्रकार दूसरी पट्टावलियों के अनुसार उद्योतनसूरि १७२७ तक का उल्लेख प्राप्त होता है। इस गच्छ के १२५७ से लेकर १६८१ तक के ५३ लेख प्राप्त होते हैं।

२०. पार्श्वचन्द्रगच्छ - इस गच्छ की पट्टावलियों के अनुसार वडगच्छीय वादीदेवसूरि के शिष्य पद्मप्रभसूरि से नागोर में तपाबिरुद मिला था। इसीलिए उस समय नागोरीतपा नाम से इस परम्परा की प्रसिद्धि हुई। १६वीं शताब्दी में पार्श्वचन्द्रसूरि प्रखर विद्वान् हुए। उनकी कई कृतियाँ भी मिलती हैं। उनकी शिष्य सन्तति पार्श्वचन्द्रगच्छ के नाम से प्रसिद्ध हुई और आज भी इसके साधु विद्यमान हैं। पार्श्वचन्द्रसूरि के विनयदेवसूरि शिष्य हुए जिनसे सुधर्मगच्छ की प्रसिद्धि हुई। पूंजाऋषि-आरामशोभाचरित्र, अंजनासुन्दरी रास इत्यादि प्रसिद्ध हैं। मेघराज ने नलदमयन्ती रास की संवत् १४६४ में रचना की। पार्श्वचन्द्रसूरि से सम्बन्धित कई पट्टावलियाँ प्राप्त होती हैं जिनका सक्षिप्त परिचय दिया गया है। वर्तमान में इस परम्परा में महोपाध्याय भुवनचन्द्रगणि विद्यमान हैं। इनके यति भी आज विद्यमान हैं।

२१. पिप्पलगच्छ - चन्द्रकुल तथा बाद में चन्द्रगच्छ से यह संबंधित रहा है। १२वीं शताब्दी के मध्य में शान्तिसूरि और विजयसिंहसूरि इसके प्रमुख आचार्य माने गए हैं। इसके मूर्तिलेख विजयसिंहसूरि १२०८ से लेकर धर्मप्रभसूरि १७७८ तक के १६८ लेख प्राप्त होते हैं। सागरचन्द्रसूरि के बाद नरशेखरसूरि आदि की साहित्यिक कृतियाँ भी प्राप्त होती हैं। इसी गच्छ के त्रिभवीयाशाखा के मूर्ति लेख भी संवत् १४१३ से लेकर १५६१ तक के प्राप्त होते हैं। त्रिभवीयाशाखा की सर्वदेवसूरि से उत्पत्ति मानकर धर्मवल्लभसूरि तक का उल्लेख मिलता है। संवत् १५२८ के लेख के तालध्वजीयाशाखा का भी उल्लेख मिलता है।

२२. पूर्णतल्लगच्छ - प्राचीन नाम पूर्णतल्लक या पूर्णतल्ल, वर्तमान पुंताला, राजस्थान से इसका उद्भव हुआ है। इस शाखा में आप्रदेवसूरि, श्रीदत्तसूरि, यशोभद्रसूरि, प्रद्युम्नसूरि, गुणसेनसूरि, देवचन्द्रसूरि, कलिकालसर्वज्ञ हेमचन्द्रसूरि, रामचन्द्र, गुणचन्द्र आदि प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य हुए हैं। इस गच्छ के प्रद्युम्नसूरि द्वारा प्राकृत भाषा में रचित मूलशुद्धि प्रकरण, देवचन्द्रसूरि रचित इसी प्रकरण की टीका (संवत् ११४६) भी प्राप्त होती है। देवचन्द्रसूरि की दूसरी कृति शान्तिनाथ चरित्र-प्राकृत भाषा में संवत् ११६० की प्राप्त की है। आचार्य देवचन्द्रसूरि के शिष्य कलिकालसर्वज्ञ विश्व प्रसिद्ध आचार्य हुए हैं। उनकी प्रमुख कृतियों में त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र महाकाव्य, सिद्धहेमशब्दानुशासन, योगशास्त्र आदि प्रमुख हैं। हेमचन्द्र के शिष्य रामचन्द्र शतप्रबन्ध के कर्ता माने गए हैं और गुणचन्द्रसूरि की नाट्यदर्पण और द्रव्यलंकार प्रसिद्ध कृति है। इसी प्रकार महेन्द्रसूरि ने अनेकार्थसंग्रह कोश पर अनेकार्थकैरवाकरकौमुदी की रचना की है और देवचन्द्र ने चन्द्रलेखाविजयप्रकरण नाटक की रचना की है। किसी शांत्याचार्य रचित न्यायावतार वार्तिक वृत्ति, तिलकमंजरी टिप्पण और पंचकाव्य लघु टीका आदि भी प्राप्त होते हैं। इन ग्रन्थों की रचना प्रशस्तियों में स्वयं को पूर्णतल्लगच्छीय और वर्द्धमान सूरि का शिष्य बतलाया है।

२३. पूर्णिमागच्छ - चन्द्रगच्छ की परम्परा में पाक्षिकपर्व पूर्णिमा को माना जाने से इस गच्छ की स्थापना हुई है। विक्रम संवत् ११४९/११५९ में इसका आविर्भाव चन्द्रप्रभसूरि से हुआ। इस गच्छ में धर्मघोषसूरि, देवसूरि, चक्रेश्वरसूरि, समुद्रघोषसूरि, विमलगणि, देवभद्रसूरि, तिलकाचार्य, मुनिरत्नसूरि, कमलप्रभसूरि आदि प्रभावकाचार्य हुए हैं। इस शाखा से कई शाखाएँ उद्भव हुईं। ढंढेरियाशाखा, साधुपूर्णिमा शाखा, कच्छोलीवालशाखा, भीमपल्लीयाशाखा, बटपट्टीयाशाखा, बोरसिद्धीयाशाखा, भृगुकच्छीयाशाखा और छापरियाशाखा आदि। चन्द्रप्रभसूरि की प्रमेयरत्नकोश, हेमप्रभसूरि की

प्रश्नोत्तररत्नमालावृत्ति, समुद्रघोषसूरि के शिष्य मुनिरत्नसूरि कृत अममस्वामिचरित महाकाव्य, मलयसुन्दरसूरि का प्रश्नोत्तरसंग्रहवृत्ति, तिलकाचार्य का प्रत्येकबुद्धचरित, रत्नप्रभसूरि का पुण्डरीकचरित, देवानन्दसूरि कृत क्षेत्रसमासवृत्ति (संवत् १४५५), गुणसमुद्रसूरि के शिष्य सत्यराजगणि कृत श्रीपालचरित्र (संवत् १५७५), उदयसमुद्रसूरि कृत पूर्णिमागच्छ पट्टावली (संवत् १५८०) प्राप्त हैं। रचना प्रशस्ति के आधार पर कई परम्पराओं के आचार्यों की इस ग्रन्थ में तालिका दी गई है।

२४. पूर्णिमागच्छ-ढंढेरिया शाखा - यह पूर्णिमागच्छ की प्रधान शाखा है। इस शाखा के प्रथम आचार्य समुद्रघोषसूरि के द्वितीय शिष्य सूरप्रभसूरि माने गए हैं। इस शाखा में आचार्य जयसिंहसूरि, जयप्रभसूरि, भुवनप्रभसूरि, यशतिलकसूरि, कमलप्रभसूरि, पुण्यप्रभसूरि और ललितप्रभसूरि आदि कई प्रमुख विद्वान् आचार्य हो चुके हैं। इस शाखा के १५२० जयप्रभसूरि से लेकर १७९८ भावप्रभसूरि तक ५५ लेख प्राप्त होते हैं। श्री मोहनलाल दलीचन्द देसाई ने ढंढेरिया शाखा की एक पट्टावली दी है जिसके अनुसार लेखक ने वंशावली भी दी है।

२५. सार्धपूर्णमागच्छ - चन्द्रकुल (चन्द्रगच्छ) की एक शाखा का वडगच्छ से ११५९ में उत्पन्न पूर्णिमागच्छ की शाखा के रूप में यह सार्धपूर्णमागच्छ माना जाता है। विभिन्न पट्टावलियों के अनुसार पूर्णिमागच्छीय आचार्य सुमतिसिंहसूरि द्वारा विक्रम संवत् १२३६ में पाटण में इस शाखा का उदय माना गया है। महाराजा कुमारपाल ने नये गच्छों के मुनिजनों का अपने राज्य में प्रवेश निषेध करा दिया था। वहीं विक्रम संवत् १२३६ में पूर्णिमागच्छीय आचार्य सुमतिसिंहसूरि विहार करते हुए पाटण पहुँचे और वहाँ स्वयं को सार्धपूर्णमागच्छीय बतलाकर प्रवेश किया। यह शाखा भी संडेरगच्छ, भावदेवाचार्यगच्छ, राजगच्छ, चैत्रगच्छ, नाणकीयगच्छ, वडगच्छ के समान चतुर्दशी को ही पाक्षिक पर्व मानता था। इसका उद्भव १२३६

से माना जाता है किन्तु १४वीं शताब्दी के पूर्व इसके अभिलेखीय साक्ष्य प्राप्त नहीं होते हैं। संवत् १४१२ में श्री शांतिनाथचरित्र की प्रतिलिपि करवाई गई, उसमें अभयचन्द्रसूरि का उल्लेख है। गुणचन्द्रसूरि ने ११८१ रत्नकरावतारिकाटिप्पण लिखा है एवं आचार्य सिद्धसेन दिवाकर के न्यायावतार सूत्र पर निवृत्तिकुलीय सिद्धर्षि द्वारा वृत्ति की १४५३ में प्रतिलिपि करवाई। इसमें रामचन्द्रसूरि का उल्लेख है। पूर्णिमागच्छ के प्रवर्तक आचार्य चन्द्रप्रभसूरि कृत सम्यक्त्वरत्न महोदधि की तिलकाचार्य द्वारा रची गई टीका पुण्यप्रभसूरि को प्रदत्त की गई। इसी प्रकार विजयचन्द्रसूरि के शिष्य (श्रावक) कीर्ति द्वारा रचित आरामशोभा चौपई (संवत् १५३५) रचना की। इस गच्छ के संवत् १४३३ से १६२४ तक ५३ लेख प्राप्त होते हैं।

२६. भीमपल्लीयाशाखा-पूर्णिमापक्ष - चन्द्रकुल/चन्द्रगच्छ में उद्भूत गच्छों में पूर्णिमागच्छ भी एक है। यह गच्छ पाक्षिक पर्व पूर्णिमा को मनाए जाने का आधार रखता है। संवत् ११४९ या संवत् ११५९ में जयसिंहसूरि के शिष्य चन्द्रप्रभसूरि इस गच्छ के प्रवर्तक माने जाते हैं। इस शाखा में देवचन्द्रसूरि, पार्श्वचन्द्रसूरि, जयचन्द्रसूरि, भावचन्द्रसूरि, मुनिचन्द्रसूरि, विनयचन्द्रसूरि आदि महत्त्वपूर्ण आचार्य हुए हैं। १५वीं शताब्दी से लेकर १८वीं शताब्दी तक इनके मूर्तिलेख प्राप्त होते हैं। संवत् १४५९ पार्श्वचन्द्रसूरि से लेकर १५९८ विनयचन्द्रसूरि तक ५३ लेख प्राप्त होते हैं। जयचन्द्रसूरि ने १५०४ में पार्श्वनाथ चरित्र की प्रतिलिपि करवाई थी। पूर्णिमागच्छीय किन्ही जयरजसूरि ने मत्स्योदर रास (संवत् १५५३), विद्यारत्नसूरि के कुर्मापुत्र संवत् १५७७ प्राप्त होते हैं।

२७. ब्रह्माणगच्छ - चैत्यवासी गच्छों से संबंधित ब्रह्माणगच्छ भी एक है। संवत् ११२४ प्रद्युम्नसूरि से लेकर संवत् १५९२ श्रीसूरि तक २३४ लेख प्राप्त होते हैं। देवचन्द्रसूरि के शिष्य मुनिचन्द्रसूरि को भवभावनाप्रकरण की प्रथम बार वाचना की थी। संवत् १५२७ की नेमिनाथ चरित्र की प्रतिलिपि भी

प्राप्त होती है। संवत् १५९८ की रसरत्नाकर की दाताप्रशस्ति प्राप्त होती है। अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर कई छोटी-मोटी गुरु-परम्परा की तालिकाएँ भी दी गई हैं।

२८. बृहद्गच्छ - इस गच्छ के उल्लेख वाली प्राचीनतम प्रशस्तियाँ १२वीं शताब्दी के मध्य की हैं। इस गच्छ की उत्पत्ति के सम्बन्ध में चर्चा करने वाली सर्वप्रथम प्रशस्ति १२३८ रत्नप्रभसूरि द्वारा रचित उपदेशमालाप्रकरणवृत्ति में प्राप्त होती है। जिसके अनुसार उद्योतनसूरि ने वटवृक्ष के नीचे शुभ लग्न पर सर्वदेवसूरि सहित ८ मुनिजनों को आचार्यपद प्रदान संवत् ९९४ में किया था। नेमिचन्द्रसूरि ने आख्यानकमणिकोश ११वीं शती का प्रारम्भिक चरण में विद्यावंशावली का उल्लेख किया है। नेमिचन्द्रसूरि ने उत्तराध्ययनसूत्र सुखबोधाटीका संवत् १२२९ में रचना की थी। मुनिचन्द्रसूरि का परिवार विशाल था। वादीदेवसूरि के परिवार में भद्रेश्वरसूरि, रत्नप्रभसूरि, विजयसिंहसूरि आदि शिष्य-प्रशिष्यों का विशेष उल्लेख मिलता है। यहाँ भी लेखक ने चन्द्रकुलीय आचार्य वर्द्धमान, आचार्य जिनेश्वर, आचार्य जिनचन्द्र, अभयदेवसूरि का उल्लेख किया है जो कि चन्द्रकुलीय के कारण है। लेखक ने यहाँ स्वीकार किया है कि जिनवल्लभगणि वास्तव में एक चैत्यवासी आचार्य के शिष्य थे और बाद में अभयदेवसूरि से उपसम्पदा ग्रहण की थी। अभयदेवसूरि के शिष्य वर्द्धमानसूरि ने मनोरमाकहा (संवत् ११४०) आदिनाथ चरित्र (संवत् ११६०) में रचना की। उसमें विक्रम संवत् ११८७ के अभिलेख में वडगच्छीय चक्रेश्वरसूरि को वर्द्धमानसूरि का शिष्य लिखा है। संवत् १२१४ के एक अभिलेख में चक्रेश्वरसूरि के दादागुरु वर्द्धमानसूरि का उल्लेख है। विद्याध्ययन की दृष्टि से यह प्रतिकूल नहीं माना जाता। मुनिचन्द्रसूरि के अनेकान्त-जयपताका टिप्पणक, उपदेशपद सुखबोधावृत्ति, धर्मबिन्दुवृत्ति, योगबिन्दुवृत्ति आदि अनेकों ग्रन्थ प्राप्त हैं। वादीदेवसूरि ने संवत् ११८१/८२ में सिद्धराज जयसिंह की सभा में कर्णाटकीय विद्वान् आचार्य कुमुदचन्द्र को

पराजित किया था और प्रमाणनयतत्वलोकालंकार एवं उसकी स्वोपज्ञ टीका स्याद्वादरत्नाकर की रचना की थी। हरिभद्रसूरि ने आगमिकवस्तुविचारसार प्रकरण की टीका एवं प्रशमरतिप्रकरण टीका एवं रत्नप्रभसूरि ने रत्नकरावतारिका, उपदेशमाला टीका, नेमिनाथ चरित्र आदि की रचना की। हेमचन्द्रसूरि ने नाभेयनेमिद्विसंधानकाव्य की रचना की जिसका संशोधन श्रीपाल महाकवि ने किया था। इस शाखा की कई गुरु परम्परागत तालिकाएँ दी गई हैं।

२९. महाहडागच्छ - चन्द्रकुल से उद्भूत गच्छों में मडाहडागच्छ भी आता है। वर्तमान मडार नामक ग्राम से इसका उद्भव हुआ था। चक्रेश्वरसूरि इस गच्छ के मुख्य आचार्य माने जाते हैं। इस गच्छ की रत्नपुरीय शाखा, जागड़ियाशाखा, जालोराशाखा आदि प्रसिद्ध है। संवत् १२८७ से लेकर १७८७ चक्रेश्वरसूरि पर्यन्त ८९ लेख प्राप्त होते हैं। लींबड़ी के हस्तलिखित जैन ग्रन्थ भंडार में संवत् १५१७ की लिखित कल्पसूत्र स्तबक और कालिकाचार्य कथा रामचन्द्रसूरि की मानी गई है। श्री पद्मसागरसूरि रचित १५वीं शताब्दी की कयवन्ना चौपई आदि प्राप्त है। १७वीं शताब्दी में सारंग नामक विद्वान् ने कवि विल्हण पंचाशिका चौपई संवत् १६३९ और कृष्ण रुक्मणीवेलि की संस्कृत टीका (संवत् १६७८) रचना की। इसकी रत्नपुरीयाशाखा के १४ लेख प्राप्त होते हैं। जिसमें धर्मघोषसूरि, सोमदेवसूरि, धनचन्द्रसूरि, धर्मचन्द्रसूरि, कमलसूरि आदि मुख्य हैं। रत्नपुरीयशाखा के प्रतिमा लेखों में संवत् १३५० का उल्लेख मिलता है। मडाहडागच्छ की एक शाखा जाखडिया शाखा के पाँच लेख प्राप्त होते हैं। जिसमें कमलचन्द्रसूरि, आनन्दसूरि और गुणचन्द्रसूरि प्रमुख हैं।

३०. मोढगच्छ और मोढचैत्य - चन्द्रकुल से निष्पन्न यह गच्छ माना गया है। मोढेरा उत्तर गुजरात से इसका उद्भव माना जाता है। संवत् १३२५ कालिकाचार्य कथा की प्रतिलिपि और १३३४ प्रभावक चरित्र की प्रतिलिपि

आदि प्राप्त होते हैं। प्रो. एम.ए.ढांकी के मतानुसार इस गच्छ के मुनिजन चैत्यवासी थे और पाटला, धंधुका, अणहिलपुर पाटण और मांडल में इनके चैत्य थे। पाटला स्थित मोढचैत्य भी मोढेरा के महावीर मंदिर के समान प्राचीन रहा है। जिनप्रभसूरि रचित कल्पप्रदीप के अनुसार ८४ तीर्थस्थानों में इसकी गणना की जाती है। खरतरगच्छीय विनयप्रभसूरि ई.सन् १३७५ और जिनतिलकसूरि ने १५वीं शताब्दी में यहाँ स्थित नेमिनाथ जिनालय का उल्लेख किया है। प्रभावकचरित्र के अनुसार पाटण में भी एक मोढचैत्य था जिसकी प्रतिष्ठा बप्पभट्टसूरि ने करवाई थी। मण्डली वर्तमान मांडल में वस्तुपाल के समय एक मोढचैत्य था। मोढवणिक की जाति यहीं से उत्पन्न हुई थी।

३१. यशोभद्रसूरिगच्छ - चन्द्रकुलीय परम्परा में यशोभद्रसूरिगच्छ भी माना जाता है और यशोभद्रसूरि ही इसके संस्थापक थे। साधारणकवि की विलासवई संवत् ११२३ की प्रशस्ति में इसको चन्द्रकुलीय माना है। इस गच्छ के कतिपय ही लेख प्राप्त होते हैं।

३२. राजगच्छ - चन्द्रकुलीय परम्परा में राजगच्छ भी एक प्रमुख गच्छ रहा है। इसमें प्रद्युम्नसूरि, अभयदेवसूरि, धनेश्वरसूरि, श्रीचन्द्रसूरि, देवभद्रसूरि, सिद्धसेनसूरि, माणिक्यचन्द्रसूरि, मानतुंगसूरि और प्रभाचन्द्रसूरि आदि प्रसिद्ध आचार्य हुए हैं। इसके अभिलेखीय साक्ष्य बहुत कम प्राप्त होते हैं। धनेश्वरसूरि (द्वितीय)-सूक्ष्मार्थविचारसारोद्धारटीका (संवत् ११७१), सिद्धसेनसूरि-प्रवचनसारोद्धारटीका (संवत् १२७८), मानतुंगसूरि-श्रेयांसचरित्र (संवत् १३३२), प्रभाचन्द्रसूरि-प्रभावक चरित्र (संवत् १३३४), अभयदेवसूरि-सन्मतितर्क की तत्त्वबोधविधायिनी टीका की रचना की। श्रीचन्द्रसूरि का दीक्षा नाम पार्श्वदेवगणि था। अज्ञात कर्तृक राजगच्छीय पट्टावली में नन्नसूरि को इसका आदिम आचार्य माना गया है। प्रो. एम.ए.ढांकी के मतानुसार राजगच्छीय पट्टावली में उल्लिखित अजित-यशो-वादी वस्तुतः उत्तराध्ययनसूत्र सुखबोधा टीका के अनुसार वादीदेवसूरि ही होना चाहिए। संवत् ११२८

से लेकर १५१० तक इनके अभिलेखीय साक्ष्य प्राप्त होते हैं। प्रद्युम्नसूरि जो कि प्रथम आचार्य धनेश्वरसूरि के दादागुरु थे, समरादित्य संक्षेप आदि में इनकी चर्चा मिलती है। सन्मतितर्कटीकाकार अभयदेवसूरि का समय ११वीं शताब्दी निश्चित किया गया है। सिद्धसेनसूरि ने प्रवचनसारोद्धार टीका संवत् १२७८, माणिकचन्द्रसूरि ने पार्श्वनाथचरित्र संवत् १२७६, श्रीचन्द्रसूरि (पार्श्वदेवगणि) की न्यायप्रवेशवृत्ति पंजिका संवत् ११७९ आदि कई कृतियाँ प्राप्त हैं। ये श्रीचन्द्रसूरि आबू पर मन्त्रीश्वर पृथ्वीपाल द्वारा कराई गई प्रतिष्ठा के समय संवत् १२०६ में विद्यमान थे। देवप्रभसूरि ने श्रेयांसनाथ चरित्र संवत् १२४२ में रचना की। इन्हीं का तत्त्वबिन्दु और प्रमाणप्रकाश भी अनुपलब्ध है। माणिकचन्द्रसूरि-पार्श्वनाथचरित्र, शांतिनाथचरित्र, काव्यप्रकाशटीका आदि प्राप्त हैं। प्रभाचन्द्रसूरि ने प्रभावकचरित्र की संवत् १३३४ में रचना की।

३३ वायडगच्छ - थारापद्र और मोढगच्छ के बाद वायडगच्छ का नाम उल्लेखनीय है। वायट स्थान से इसकी उत्पत्ति हुई है। इसीलिए वायड का पर्याय वायटीय भी मिलता है। संवत् ११३९ से १३४९ तक ११ लेख प्राप्त होते हैं। किन्तु इसके पूर्व भी १०८६ का अभिलेख साक्ष्य प्राप्त है। वायड नगर में जीवन्त स्वामी का एक मन्दिर था। प्रभावकचरित्र के अनुसार विक्रमादित्य के मन्त्री लिम्बा द्वारा महावीर जिनालय का जीर्णोद्धार करवाया गया था। प्रभावकचरित्र के अनुसार वायडगच्छीय जीवदेवसूरि ने रुष्ट ब्राह्मणों द्वारा मृतगाय को महावीर मन्दिर के सन्मुख रखा, जिसको उन्होंने अपने चमत्कार से दूर किया। हर्षपुरीयगच्छ के लक्ष्मणगणि ने सुपार्श्वनाथचरित्र में (संवत् ११९४) इस गच्छ के साहित्यिक क्रियाकलापों का वर्णन किया है। अमरचन्द्रसूरि के पद्मानन्दमहाकाव्य, काव्यकल्पलतावृत्ति आदि ग्रन्थ प्राप्त हैं। जिनदत्तसूरि रचित विवेकविलास और शकुनशास्त्र ये दो ग्रन्थ प्राप्त हैं।

३४. विद्याधरकुल / विद्याधरगच्छ - यह कुल स्थविरावली से सम्बन्ध रखता है। डॉ. उमाकान्त प्रेमानन्द शाह ने अम्बिका प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

६वीं शताब्दी का माना है। आठवीं शताब्दी में आचार्य हरिभद्रसूरि हुए हैं जिनकी आवश्यक टीका आदि अनेकों ग्रन्थ आज भी प्राप्त हैं। पादलिप्तसूरि-निर्वाणकलिका संवत् ९५० में उल्लेख है। जालिहरगच्छीय देवप्रभसूरि पद्मप्रभचरित्र की प्रशस्ति में काशहृद और जालिहरगच्छ को विद्याधरकुलीय मानते हैं। संवत् १४०८ उदयदेवसूरि से लेकर १५३४ हेमप्रभसूरि तक १३ लेख प्राप्त होते हैं।

३५. संडेरगच्छ - सांडेराव में उत्पन्न यह संडेरगच्छ १०वीं शताब्दी में प्रसिद्धि में आया। यह संडेरगच्छ चैत्यवासी आमनाय के अन्तर्गत था। इसके प्रमुख आचार्य यशोभद्रसूरि हुए। यशोभद्रसूरि, शालिसूरि, सुमतिसूरि, शांतिसूरि, ईश्वरसूरि इसी नाम की पट्ट-परम्परा प्राप्त होती है। दानदाता प्रशस्तियों में षड्विधावश्यकविवरण संवत् १२९५, त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र के अन्तर्गत महावीरचरित्र संवत् १३२४, कालपुरुष एवं कालिकाचार्यकथा के प्रतिलिपियों के भी उल्लेख मिलते हैं। १०३९ से लेकर १७३२ तक शताधिक लेख प्राप्त होते हैं।

३६. सरवालगच्छ - यह गच्छ चैत्यवासियों से सम्बद्ध माना जाता है। बाद में चन्द्रकुलीय (चन्द्रगच्छीय) शाखा के रूप में इसका विकास हुआ। संवत् १११० से लेकर १२८३ तक कुछ ही लेख प्राप्त होते हैं। सरवालगच्छीय समुद्रघोषसूरि ने पिण्डनिर्युक्ति शिष्यहितावृत्ति का लेखन संवत् ११६० में करवाया था।

३७. हर्षपुरगच्छ / मलधारीगच्छ - सुविहितमार्गीय गच्छों में हर्षपुरीयगच्छ अपरनाम मलधारीगच्छ का विशिष्ट स्थान है। हर्षपुर वर्तमान हरसोर नामक स्थान से इसका उद्भव हुआ है। ग्रन्थ की गुर्वावली में जयसिंहसूरि का नाम आदिम आचार्यों में मिलता है। उनके शिष्य अभयदेवसूरि को जिन्हें चालुक्य नरेश कर्ण संवत् ११२०-११५० से मलधारी बिरुद प्राप्त हुआ। यही बिरुद इस गच्छ के नाम के रूप में प्रचलित हो गया। सिद्धराज जयसिंह

भी इनका सम्मान करता था। इन्हीं के उपदेश से शाकम्भरी चाहमान नरेश पृथ्वीराज प्रथम ने रणथम्भौर के जैन मंदिर पर स्वर्ण कलश चढ़ाया था। ग्वालियर का राजा भुवनपाल और सौराष्ट्र का राजा खेंगार इनके प्रभाव में था। इन्हीं के शिष्य हेमचन्द्रसूरि हुए। इनके परिवार में विजयसिंहसूरि, श्रीचन्द्रसूरि, विभूतिचन्द्रसूरि, लक्ष्मणगणि, मुनिचन्द्रसूरि, देवभद्रसूरि, देवप्रभसूरि, यशोभद्रसूरि, नरचन्द्रसूरि, नरेन्द्रप्रभसूरि, पद्मप्रभसूरि, श्रीतिलकसूरि, राजशेखरसूरि, वाचनाचार्य सुधाकलश आदि विद्वान् आचार्य हुए हैं। मलधारी हेमचन्द्रसूरि द्वारा अनुयोगद्वारसूत्रवृत्ति टीका, विशेषावश्यकभाष्यबृहद्वृत्ति, शतकविवरण, उपदेशमालावृत्ति आदि, विजयसिंहसूरि द्वारा धर्मोपदेशमालावृत्ति (संवत् ११९१), श्रीचन्द्रसूरि रचित मुनिसुव्रतचरित्र (संवत् ११९३), लक्ष्मणगणि रचित सुपार्श्वनाथचरियं (संवत् ११९९), देवभद्रसूरि रचित संग्रहणीवृत्ति, देवप्रभसूरि रचित पाण्डवचरित्र महाकाव्य, नरचन्द्रसूरि रचित कथारत्नसागर और अलंकारमहोदधि (संवत् १२८०) टीका (संवत् १२८२), राजशेखरसूरि रचित न्यायकंदलीपंजिका (संवत् १३८५), सुधाकलश रचित संगीतोपनिषत्सारोद्धार (संवत् १४०६) रचनाएँ प्राप्त होती हैं। संवत् ११९० से १६९९ तक ११६ मूर्तिलेख प्राप्त होते हैं। एक पट्टावली से श्रीचन्द्रसूरि के हरिभद्रसूरि, सिद्धसूरि और मानदेवसूरि शिष्य थे।

३८. हारीजगच्छ - पाटण और शंखेश्वर के मध्य हारीज स्थान से इसका उद्भव माना जाता है। कातन्त्र व्याकरण पर दुर्गसिंहवृत्ति पर अवचूर्णि संवत् १५५६ की कृति प्राप्त होती है। संवत् १३३० से लेकर १५७७ तक २१ लेख प्राप्त होते हैं।

इस प्रकार इस विविधगच्छीय पट्टावली संग्रह में ३८ गच्छों का विवरण दिया गया है जिनमें से काम्यकगच्छ, कृष्णर्षिगच्छ, चन्द्रकुलगच्छ, नागेन्द्रगच्छ, निवृत्तिकुल और विद्याधरकुल यह छः प्राचीन परम्पराएँ हैं। और शाखाओं में आगमिकगच्छ, कंवलागच्छ, चैत्रगच्छ, सलखणपुराशाखा,

नागपुरीयतपागच्छ, त्रिभवीयाशाखा, पूर्णिमागच्छ, ढंढेरियाशाखा, सार्धपूर्णिमागच्छ, भीमपल्लीयाशाखा और रत्नपुरीयाशाखा कुल ११ शाखाएँ गच्छों की शाखा के रूप में हैं। इस प्रकार शाखाओं को यदि पृथक् किया जाए तो २७ गच्छ रहते हैं।

धन्यवाद

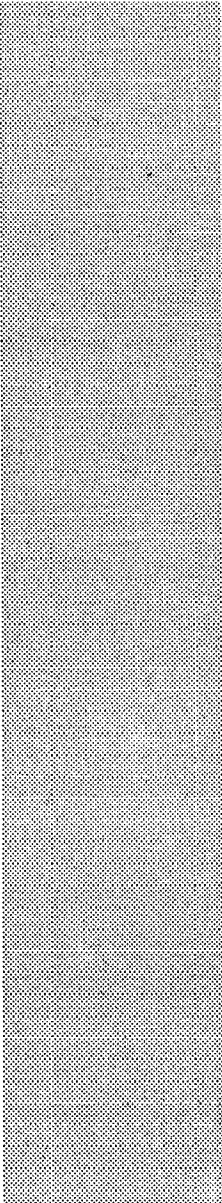
“जैन श्वेताम्बर गच्छों का संक्षिप्त इतिहास” के लेखक साहित्योपासक डॉ. शिवप्रसाद इस विषय के सुनिष्णात एवं विद्वान् लेखक हैं, उन्होंने प्राचीन साक्ष्यों एवं विविधगच्छीय पट्टावलियों के आधार पर गच्छों का संक्षिप्त इतिहास लिखा है। इसके पहले इस प्रकार का कोई प्रयत्न हुआ हो, ऐसा प्रतीत भी नहीं होता है। वस्तुतः इसके लेखक ने इन गच्छों का इतिहास लिखकर गच्छ सम्बन्धी साहित्य पर प्रकाश डालकर एक अभूतपूर्व एवं सराहनीय कार्य किया है। यह मेरे साहित्यिक कार्यों के सहयोगी हैं। भविष्य में भी इस प्रकार का प्रयत्न करते रहेंगे, इसी आशा के साथ...!

समय-समय पर इसके लेखक ने अपने विविध लेखों के द्वारा इस गच्छ का इतिहास लिखना प्रारम्भ किया था जो श्रमण आदि में प्रकाशित होते रहे हैं। पुस्तक रूप में उसके प्रकाशन में श्रुतवारिधि अनुसंधित्सुओं को निरन्तर सहयोग देने वाले प.पू. आचार्य श्री विजयमुनिचन्द्रसूरिजी महाराज ने रस लेकर जो सहयोग प्रदान किया है इसके लिए वे भी साधुवाद के पात्र हैं।

संवत् २०६७

जयपुर

सा. वा. महोपाध्याय विनयसागर



जैन श्वेताम्बर
गच्छों का संक्षिप्त
इतिहास

अध्याय-१

गच्छों के इतिहास के मूल स्रोत

किसी भी धर्म अथवा सम्प्रदाय के इतिहास के स्रोत के रूप में भी साहित्यिक और पुरातात्विक साक्ष्यों का अध्ययन अपरिहार्य है। प्राक् मध्ययुग में निर्ग्रन्थ दर्शन के श्वेताम्बर आम्नाय में समय-समय पर उद्धृत विभिन्न गच्छों और उनसे निःश्रुत (उत्पन्न) शाखाओं-उपशाखाओं के इतिहास के अध्ययन के सम्बन्ध में भी ठीक यही बात कही जा सकती है।

साहित्यिक साक्ष्य

गच्छों के इतिहास से सम्बद्ध साहित्यिक साक्ष्यों को मुख्य रूप से दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है, प्रथम ग्रन्थ या पुस्तक प्रशस्तियाँ और द्वितीय विभिन्न गच्छों के मुनिजनों द्वारा रची गयी अपने-अपने गच्छों की पट्टावलियाँ।

प्रशस्तियाँ

पुस्तकों के साथ सम्बन्ध रखनेवाली प्रशस्तियाँ दो प्रकार की होती हैं। इनमें से एक तो वे हैं जो ग्रन्थों के अन्त में उनके रचयिताओं द्वारा बनायी गयी होती हैं। इनमें मुख्य रूप से रचनाकार द्वारा गण-गच्छ तथा अपने गुरु-प्रगुरु आदि का उल्लेख होता है। किन्हीं-किन्हीं प्रशस्तियों में रचनाकाल और रचनास्थान का भी निर्देश होता है। किसी-किसी प्रशस्ति में तत्कालीन शासक या किसी बड़े राज्याधिकारी का नाम और अन्य ऐतिहासिक सूचनायें भी मिल जाती हैं। कुछ प्रशस्तियाँ छोटी दो-चार पंक्तियों की और कुछ बड़ी होती हैं। इन प्रशस्तियों द्वारा भिन्न-भिन्न गण-गच्छों के जैनाचार्यों की गुरु-परम्परा, उनका समय, उनका कार्यक्षेत्र और उनके द्वारा की गयी समाजोत्थान एवं साहित्य सेवा का संकलन कर उनकी परम्पराओं का अत्यन्त प्रामाणिक इतिहास तैयार किया जा सकता है।

दूसरे प्रकार की प्रशस्तियाँ वे हैं जो प्रतिलिपि किये गये ग्रन्थों के अन्त

में लिखी होती हैं। ये भी दो प्रकार की होती हैं। प्रथम वे जो किन्हीं मुनिजनों या श्रावक द्वारा स्वयं के अध्ययनार्थ लिखी गयी होती हैं और दूसरी वे जो श्रावकों द्वारा स्वयं के अध्ययनार्थ या किन्हीं मुनिजनों को भेंट देने हेतु दूसरों से (लेहिया से) द्रव्य देकर लिखवाई जाती हैं।

गच्छों के इतिहास की सामग्री की दृष्टि से प्रशस्तियाँ राजाओं के दानपत्रों और मन्दिरों के शिलालेखों के समान ही महत्वपूर्ण हैं। तथ्य की दृष्टि से इनमें कोई अन्तर नहीं होता; अन्तर यही है कि एक पाषाण या ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण होता है तो दूसरा ताड़पत्र या कागजों पर।

गुजरात के पाटण, खंभात, अहमदाबाद, बड़ौदा और लिम्बडी; राजस्थान के जैसलमेर, बीकानेर, जोधपुर, जयपुर, कोटा आदि तथा भण्डारकर ओरिएण्टल रिसर्च इन्स्टिट्यूट, पुणे के ग्रन्थ भण्डारों में जैन ग्रन्थों का विशाल संग्रह विद्यमान है। पीटर पीटर्सन, मुनि जिनविजयजी, मुनि पुण्यविजयजी, श्री चिमनलाल डाह्याभाई दलाल, पण्डित लालचन्द्र भगवान गांधी, प्रो. हीरालाल रसिकलाल कापड़िया, पण्डित अम्बालाल प्रेमचन्द्र शाह, डॉ. विधात्री वोरा, श्री जौहरीमल पारेख आदि विद्वानों के अथक परिश्रम से उक्त भण्डारों के विस्तृत सूचिपत्र प्रकाशित हो चुके हैं। इनका विवरण इस प्रकार है।

1. P. Peterson, *Operation in Search of Sanskrit Mss in the Bombay Circle*, Vol. I-VI, Bombay 1882-1898 A.D.

2. C.D. Dalal, *A Descriptive Catalogue of Manuscripts in the Jain Bhandaras at Pattan*, Vol. 1, G.O.S. No. LXXVI, Baroda 1937.

3. H.R. Kapadia, *Descriptive Catalogue of the Government Collections of Manuscripts deposited at the Bhandarkar Oriental Research Institute*, Vol. XVII-XIX, Poona 1935-1977.

4. Muni Punya Vijaya, *Catalogue of Palm-Leaf Mss. in the Shanti Natha Jain Bhandar, Cambay*. Vol. I, II, G.O.S.,

No. 139, 149, Baroda 1961-1966 A.D.

5. A.P. Shah, *Catalogue of Sanskrit & Prakrit Mss. Muni Shree Punya Vijayjis collection*, Vol. I, II, III, L.D. Series No. 2, 6, 16. Ahmedabad 1962, 1965, 1968 A.D.

6. A.P. Shah, *Catalogue of Sanskrit & Prakrit Mss. Ac. Vijaydevsuris and Ac. Ksantisuris collection*, Vol. IV., L.D. Series, No. 20, Ahmedabad 1968 A.D.

7. Muni Pujya Vijaya, *New Catalogue of Sanskrit & Prakrit Mss. Jesalmer collection*, L.D. Series No. 36, Ahmedabad 1972 A.D.

8. Vidhatri Vora, *Catalogue of Gujarati Mss in the Muniraj Shree Punya Vijayji's collection*, L.D. Series No. 70, Ahmedabad 1978 A.D.

९. अमृतलाल मगनलाल शाह, सम्पा० श्रीप्रशस्तिसंग्रह, श्री जैन साहित्य प्रदर्शन, श्री देशविरति धर्मारोपक समाज, अहमदाबाद वि.सं. १९९३.

१०. मुनि जिनविजय, सम्पा० जैनपुस्तकप्रशस्तिसंग्रह, सिंधी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक-१८, भारतीय विद्याभवन, मुंबई १९४३ ई०.

पट्टावलियाँ

श्वेताम्बर गच्छों के इतिहास लेखन में उपरोक्त साक्ष्यों की भाँति पट्टावलियों का भी महत्वपूर्ण स्थान है। श्वेताम्बर जैन मुनिजनों ने इनके माध्यम से इतिहास की महत्वपूर्ण सामग्री प्रस्तुत की है। शिलालेख, प्रतिमा लेख और ग्रन्थ-प्रशस्तियों से केवल हम इतना ही ज्ञात कर पाते हैं कि किस काल में किस मुनि ने क्या कार्य किया। अधिक से अधिक उस समय के शासक एवं मुनि के गुरु-परम्परा का ही परिचय मिल पाता है। किन्तु पट्टावली में अपनी परम्परा से सम्बन्धित पट्ट परम्परा का पूर्ण परिचय होता है। फिर भी इनमें किसी घटना विशेष के सम्बन्ध में अथवा किसी आचार विशेष के सम्बन्ध में प्रायः अतिशयोक्तिपूर्ण विवरण ही मिलते हैं। अतः ऐतिहासिक महत्व की दृष्टि से इनकी उपयोगिता पर

पूर्णरूपेण विश्वास नहीं किया जा सकता। चूँकि इनके संकलन या रचना में किंवदन्तियों एवं अनुश्रुतियों के साथ-साथ कदाचित् तत्कालीन रास-गीत-सज्जाय आदि का भी उपयोग किया जाता है इसीलिए इनके विवरणों पर पूर्णतः अविश्वास भी नहीं किया जा सकता है और इनके उपयोग में अत्यधिक सावधानी की आवश्यकता पड़ती है।

पट्टावलियाँ मुख्य रूप से दो प्रकार की होती हैं। प्रथम शास्त्रीय पट्टावली और दूसरी विशिष्ट पट्टावली। प्रथम प्रकार में सुधर्मास्वामी से लेकर देवर्धिगणि क्षमाश्रमण तक का विवरण मिलता है। कल्पसूत्र और नन्दीसूत्र की पट्टावलियाँ इसी कोटि में आती हैं। गच्छ-भेद के बाद विविध पट्टावलियाँ विशिष्ट पट्टावली की कोटि में रखी जा सकती हैं। इनकी अपनी-अपनी विशिष्टताएँ होती हैं।

पट्टावलियों में मुख्य रूप से पट्टधर आचार्यों का ही विवरण मिलता है। अन्य आचार्यों का नहीं। कहीं-कहीं प्रसंगवश उनके गुरुभ्राताओं का भी नामोल्लेख मिल जाता है। इनके द्वारा ही आचार्य परम्परा अथवा गच्छ का क्रमबद्ध पूर्ण विवरण प्राप्त होता है, जो इतिहास की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। श्वेताम्बर परम्परा में विभिन्न गच्छों की जो पट्टपरम्परा मिलती है, उसका श्रेय पट्टावलियों को ही है।

पट्टावलियों के कई संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं, इनमें मुनिदर्शनविजयजी द्वारा सम्पादित पट्टावलीसमुच्चय, भाग १-२, मुनि जिनविजयजी द्वारा सम्पादित विविधगच्छीयपट्टावलीसंग्रह, मुनि कल्याणविजय गणि द्वारा सम्पादित पट्टावलीपरागसंग्रह उल्लेखनीय हैं। स्व. मोहनलाल दलीचंद देसाई ने जैन गूर्जर कविओ (नवीन संस्करण संपा. डॉ. जयन्त कोठारी,) भाग ९ में भी विभिन्न गच्छों की पट्टावलियों प्रकाशित की हैं। प्रस्तुत पुस्तक में उन सभी का यथास्थान उपयोग किया गया है।

अभिलेखीय साक्ष्य

श्वेताम्बर सम्प्रदाय के विभिन्न गच्छों से सम्बद्ध अभिलेखीय साक्ष्य मुख्य रूप से दो प्रकार के हैं - १. प्रतिमालेख, २. शिलालेख।

धातु या पाषाण की अनेक जिनप्रतिमाओं के पृष्ठ भाग या आसनों पर लेख उत्कीर्ण होते हैं। इसी प्रकार विभिन्न तीर्थस्थलों पर निर्मित जिनालयों से अनेक शिलालेख भी प्राप्त हुए हैं। इन लेखों में प्रतिमा प्रतिष्ठापक या प्रतिमा के प्रतिष्ठा हेतु प्रेरणा देनेवाले मुनि का नाम होता है तो किन्हीं-किन्हीं लेखों में उनके पूर्ववर्ती दो-चार मुनिजनों के भी नाम मिल जाते हैं। किन्हीं-किन्हीं लेखों में तत्कालीन शासक का भी नाम मिल जाता है। इतिहास लेखन में उक्त साक्ष्यों का बड़ा महत्व है।

शिलालेखों में सामान्य रूप से जिनालयों के निर्माण, पुनर्निर्माण, जीर्णोद्धार आदि कराने वाले श्रावक का नाम, उसके कुटुम्ब एवं जाति आदि का परिचय, प्रेरणा देनेवाले मुनिराज का नाम, उनके गच्छ का नाम, उनकी गुरु-परम्परा में हुए पूर्ववर्ती दो-चार मुनिजनों का नाम, शासक का नाम, तिथि आदि का सविस्तार परिचय दिया हुआ होता है।

श्वेताम्बर सम्प्रदाय से सम्बद्ध अभिलेखों के विभिन्न संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इनका विवरण इस प्रकार है -

जैनलेखसंग्रह, भाग-१-३; संपा० पूरनचंद नाहर, कलकत्ता १९१८, १९२७, १९२९ ई०।

प्राचीनजैनलेखसंग्रह, भाग-१-२; संपा० मुनि जिनविजय, जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर १९२१ ई०।

जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह, भाग-१-२; संपा० आचार्य बुद्धिसागरसूरि, श्री अध्यात्म ज्ञानप्रसारक मंडल, पादरा १९२४ ई०।

प्राचीनलेखसंग्रह, संग्रा० आचार्य विजयधर्मसूरि, संपा० मुनि विद्याविजय, यशोविजय जैन ग्रन्थमाला, भावनगर १९२९ ई०।

अर्बुद प्राचीनजैनलेखसंदोह, (आबू, भाग-२), संपा० मुनि जयन्तविजय, विजयधर्मसूरि ज्ञानमंदिर, उज्जैन वि० सं० १९९४।

अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेखसंदोह, (आबू, भाग-५), संपा० मुनि जयन्तविजय, यशोविजय जैनग्रन्थमाला, भावनगर वि० सं० २००५।

जैनधातुप्रतिमालेख, संपा० मुनि कान्तिसागर, श्रीजिनदत्तसूरि ज्ञानभंडार, सुरत १९५० ई० ।

प्रतिष्ठालेखसंग्रह, भाग-१, संपा० महोपाध्याय विनयसागर, सुमतिसदन, कोटा १९५३ ई०, भाग-२, जयपुर २००३ ई० ।

बीकानेरजैनलेखसंग्रह, संपा० अगरचंद नाहटा एवं भंवरलाल नाहटा, नाहटा ब्रदर्स, ४, जगमोहन मल्लिक लेन, कलकत्ता १९५५ ई० ।

श्रीप्रतिमालेखसंग्रह, संपा० श्री दौलतसिंह लोढा “अरविन्द” धामणिया, मेवाड़ १९५५ ई० ।

राधनपुरप्रतिमालेखसंग्रह, संपा० मुनि विशालविजय, यशोविजय जैन ग्रन्थमाला, भावनगर १९६० ई० ।

शत्रुंजयगिरिराजदर्शन, संपा० मुनि कंचनसागर, कपडवज १९८३ ई०।

नाकोड़ापार्श्वनार्थतीर्थ - संपा० महो० विनयसागर, कुशलसंस्थान, पुष्प-१, जयपुर १९८८ ई० ।

बाड़मेर जिले के प्राचीन जैनशिलालेख, संग्रा० संपा० - चम्पालाल सालेचा, प्रकाशक-जैन श्वे० नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ, पो० मेवानगर, जिला-बाड़मेर १९८७ ई० ।

शत्रुंजयवैभव, संपा० मुनि कान्तिसागर, कुशलसंस्थान, पुष्प-४, जयपुर १९९० ई० ।

पाटणजैनप्रतिमालेखसंग्रह, संपा० लक्ष्मण भोजक, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली २००० ई०

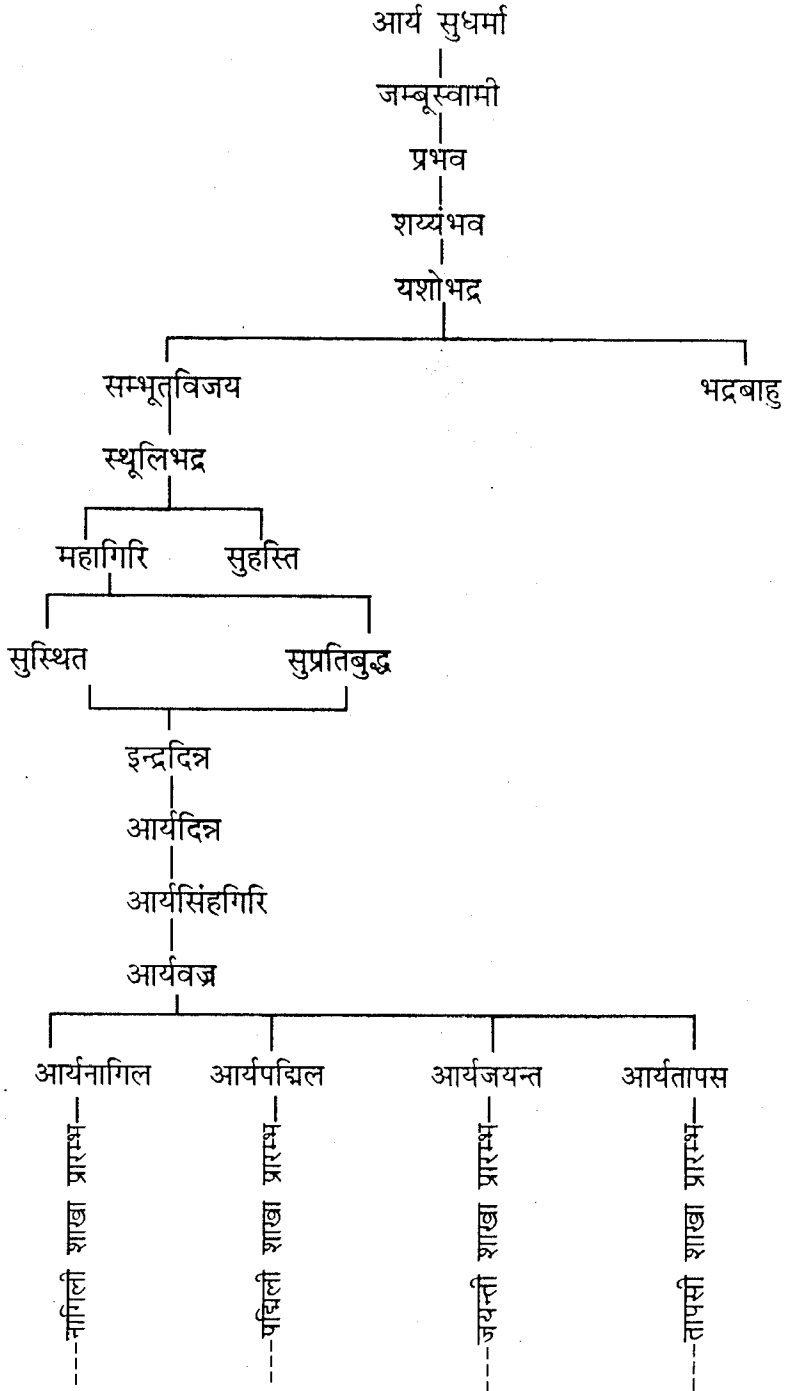
अर्बुद परिमंडल की जैन धातु प्रतिमायें एवं मंदिरावलि, संग्राहक-संपा० सोहनलाल पटनी, सिरोही २००२ ई० ।

Jain image inscriptions of Ahmedabad, Ed. Praveen Chandra C. Parikh And Bharti Shelat, B. J. Institute of Learning and Research, Ahmedabad 1997 A.D.

अध्याय-२

श्वेताम्बर श्रमण संघ का प्रारम्भिक स्वरूप

भगवान् महावीर के निर्वाण के उपरान्त जैन संघ का नायकत्व उनके गणधर सुधर्मास्वामी ने किया। सुधर्मास्वामी के पश्चात् क्रमशः जम्बूस्वामी, प्रभव, शय्यंभव, यशोभद्र, सम्भूतविजय, भद्रबाहु, स्थूलिभद्र, आर्यमहागिरि, सुहस्ती आदि विभिन्न स्थविरों ने क्रमशः निर्ग्रन्थ संघ का नेतृत्व किया। पर्युषणाकल्प की 'स्थविरावली'^१, जिसका प्रारम्भिक भाग ईस्वी सन् की प्रथम शताब्दी का माना जाता है,^२ में इस सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है। इस स्थविरावली में भी दो प्रकार का विवरण है, प्रथम तो संक्षिप्त और द्वितीय अपेक्षाकृत विस्तृत। संक्षिप्त स्थविरावली में सर्वप्रथम सुधर्मास्वामी का नाम आता है, उनके पश्चात् क्रमशः जम्बूस्वामी, प्रभव, शय्यंभवसूरि और यशोभद्रसूरि का नाम दिया गया है। यशोभद्रसूरि के दो शिष्य हुए, प्रथम सम्भूतविजय और द्वितीय भद्रबाहु। सम्भूतविजय के पट्टधर स्थूलिभद्र हुए। स्थूलिभद्र के दो शिष्यों-आर्य महागिरि और आर्य सुहस्ति का नाम मिलता है। सुहस्ति के शिष्य सुस्थित और सुप्रतिबुद्ध हुए। इनके पश्चात् क्रमशः आर्यइन्द्रदिन, आर्यदिन, आर्यसिंहगिरि और आर्यवज्र हुए। आर्यवज्र के ४ शिष्य-नागिल, पद्मिल, जयन्त और तापस हुए जिनसे क्रमशः नागिली, पद्मिली, जयन्ती और तापसी शाखायें अस्तित्व में आयी^३। उक्त संक्षिप्त स्थविरावली को एक तालिका के रूप में इस प्रकार प्रदर्शित किया जा सकता है :



पर्युषणाकल्प की विस्तृत 'स्थविरावली'^४ में भी सुधर्मा से लेकर यशोभद्र तक वही नाम आये हैं, जो संक्षिप्त स्थविरावली में हम ऊपर देख चुके हैं। यशोभद्र के दो शिष्यों भद्रबाहु और संभूतविजय का इसमें भी नाम मिलता है।

भद्रबाहु के ४ शिष्य हुए - १. गोडास, २. अग्निदत्त, ३. यज्ञदत्त, ४. सोमदत्त। गोडास से गोडासगण अस्तित्व में आया। इस गण की ४ शाखायें हुई -

१. ताम्रलिसिका
२. कोटिवर्षीया
३. पौण्ड्रवर्धनिका
४. दासीकर्पटिका

सम्भूतविजय के १२ शिष्यों का नाम मिलता है, जो इस प्रकार है :-

१. नन्दनभद्र	७. पूर्णभद्र
२. उपनन्द	८. स्थूलिभद्र
३. तिष्यभद्र	९. ऋजुमति
४. यशोभद्र (द्वितीय)	१०. जम्बू
५. सुमनोभद्र	११. दीर्घभद्र
६. मणिभद्र	१२. पाण्डुभद्र

इसके पश्चात् सम्भूतिविजय की ६ शिष्याओं का भी नाम मिलता है, जो इस प्रकार हैं :-

१. यक्षा	५. सेणा
२. यक्षदत्ता	६. वेणा
३. भूता	७. रेणा
४. भूतदत्ता	

स्थूलिभद्र के दो शिष्य हुए - १. आर्यमहागिरि और २. आर्यसुहस्ति।

आर्यमहागिरि के ८ शिष्यों का नाम मिलता है :-

१. उत्तर	५. कौडिन्य
२. बल्लिसह	६. नाग
३. धनद्धि	७. नागमित्र
४. शिरद्धि	८. षड्लूक रोहगुप्त

स्थविर उत्तर और बल्लिसह से उत्तरबल्लिसहगण निकला। इस गण की ४ शाखायें हुई ।

१. कौशाम्बिका
२. सौमित्रिका
३. कोटुम्बिनी
४. चन्द्रनागरी

आर्यस्थूलिभद्र के दूसरे शिष्य आर्यसुहस्ति के १२ शिष्यों का नाम मिलता है :-

१. आर्यरोहण
२. भद्रयश
३. मेघगणि
४. कामर्धि
५. सुस्थित
६. सुप्रतिबुद्ध
७. रक्षित
८. रोहगुप्त
९. ऋषिगुप्त
१०. श्रीगुप्त
११. ब्रह्मगणि
१२. सोमगणि

आर्यरोहण से उद्देहगण अस्तित्व में आया । इस गण से ४ शाखायें व ६ कुल अस्तित्व में आये :-

उद्देहगण

४ शाखायें

१. औदुम्बरीया
२. मासपूरिका
३. मतिपत्रिका
४. सुवर्णपत्रिका

६ कुल

१. नागभूतिक
२. सोमभूतिक
३. आर्द्रकच्छ
४. हस्तलीय
५. नान्दिक
६. पारिहासक

श्रीगुप्त से चारणगण निकला । इस गण से ४ शाखायें व ७ कुल अस्तित्व में आये जो इस प्रकार हैं :-

४ शाखायें

१. हारितमालागारिक
२. संकाशिका
३. गवेधुका
४. वज्रनागरी

७ कुल

१. वत्सलीय
२. प्रीतिधर्मक
३. हरिद्रक
४. पुष्पमित्रक
५. माल्यक
६. आर्यचेटक
७. कृष्णसखा

आर्यभद्रयश से उडुवाडिय (ऋतुवाटिक) गण निकला । इस गण से ४ शाखायें व ३ कुल अस्तित्व में आये :-

ऋतुवाटिक गण

४ शाखायें

१. चम्पार्जिका
२. भद्रार्जिका

३ कुल

१. भद्रयशिक
२. भद्रगौसिक

३. काकन्दिका

३. यशोभद्रीय

४. मेखलर्जिका

आर्यकामर्द्धि से वेशवाटिक गण अस्तित्व में आया । इस गण से ४ शाखायें व ४ कुल निकले -

वेशवाटिक गण

४ शाखायें

४ कुल

१. श्रावस्तिका

१. गणिक

२. राजपालिका

२. मेधिक

३. अन्तरंजिका

३. कामर्द्धिक

४. सेमलिया

४. वेशवाडिय

आर्यऋषिगुप्त से मानवगण निकला । इस गण से ४ शाखायें व ३ कुल अस्तित्व में आये :-

मानवगण

४ शाखायें

३ कुल

१. काश्यवर्जिका

१. ऋषिगोत्रक

२. गौतमीया

२. ऋषिदत्तिक

३. वाशिष्ठिया

३. अभिजयन्त

४. सौराष्ट्रिका

सुहस्ति-सुप्रतिबुद्ध से कोटिकगण अस्तित्व में आया । इस गण से ४ शाखायें व ४ कुल अस्तित्व में आये :-

कोटिकगण

४ शाखायें

४ कुल

१. उच्चनागरी

१. ब्रह्मलिसिक

२. विद्याधरी

२. वत्सलिसिक

३. वज्री

३. वाणिज्य

४. मध्यमिका

४. प्रश्नवाहन

सुस्थित-सुप्रतिबुद्ध के ५ शिष्य विख्यात हुए, जिनके नाम इस प्रकार हैं :-

१. आर्यइन्द्रदिन
२. स्थविर प्रियग्रन्थ
३. विद्याधर गोपाल
४. स्थविर ऋषिदत्त
५. स्थविर अर्हदत्त

स्थविर प्रियग्रन्थ से मध्यमिका शाखा और स्थविर विद्याधर गोपाल से विद्याधरी शाखा अस्तित्व में आयी ।

आर्यइन्द्रदिन के शिष्य आर्यदिन हुए । आर्यदिन के दो शिष्य हुए :-

१. शांतिश्रेणिक
२. सिंहगिरि

आर्य शांतिश्रेणिक (शांतिसेन) से उच्चैर्नागर शाखा प्रारम्भ हुई ।

शांतिसेन के ४ शिष्य हुए ।

१. आर्यश्रेणिक
२. आर्य तापस
३. आर्य कुबेर
४. आर्य ऋषिपालित

उक्त चारों शिष्यों से उन्हीं के नामों वाली शाखायें अस्तित्व में आयीं ।

आर्य सिंहगिरि के ४ शिष्य हुए :-

१. धनगिरि
२. आर्यवज्र
३. आर्यसमित
४. आर्यअर्हदत्त

आर्यवज्र से वज्रीशाखा और आर्यसमित से ब्रह्मदीपिका शाखा अस्तित्व में आयी ।

आर्यवज्र के ३ शिष्य हुए -

१. आर्य वज्रसेन
२. आर्य पद्म
३. आर्य रथ

इनसे क्रमशः नागिली, पद्मा और जयन्ती शाखा प्रारम्भ हुई^५

उक्त स्थविरावली में आर्य रथ के पश्चात् जिन आचार्यों के नाम मिलते हैं, वे इस प्रकार हैं :-^६

(१) पुष्पगिरि	(२) फल्गुमित्र
(३) धनगिरि	(४) शिवभूति
(५) आर्य भद्र 'प्रथम'	(६) आर्य नक्षत्र
(७) आर्य रक्ष	(८) आर्य जेष्ठिल
(९) आर्य विष्णु	(१०) आर्य कालक
(११) आर्य सम्पालित	(१२) आर्य भद्र 'द्वितीय'
(१३) आर्य वृद्ध	(१४) आर्य संघपालित
(१५) आर्य हस्ति	(१६) आर्य धर्म 'प्रथम'
(१७) आर्य सिंह	(१८) आर्य धर्म 'द्वितीय'
(१९) आर्य शाण्डिल्य	

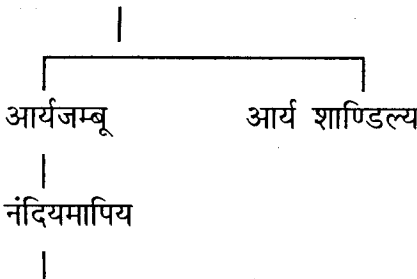
इसी स्थविरावली में आगे १४ गाथाओं में विभिन्न आचार्यों का नाम देते हुए उनकी वन्दना की गयी है और अन्त में देवर्धगणि क्षमाश्रमण को प्रणाम किया गया है ।^७ इसे कल्पसूत्रगत स्थविरावली का तृतीय खंड मान सकते हैं । इसमें उल्लिखित आचार्यों का क्रम निम्नानुसार है :

१. फल्गुमित्र	१४. आर्य भद्र
२. धनगिरि	१५. आर्य वृद्ध

३. शिवभूति	१६. संघ पालित
४. दुर्जयन्त कृष्ण	१७. आर्य हस्ति
५. भद्र	१८. आर्य धर्म
६. नक्षत्र	१९. आर्य सिंह
७. रथ	२०. आर्य धर्म
८. नाग	२१. आर्य जम्बू
९. जेष्ठिल	२२. आर्य नंदियमापिय
१०. विष्णु	२३. दूष्यगणि
११. कालक	२४. स्थिरगुप्त
१२. कुमारभद्र	२५. कुमारधर्म
१३. संपलित	२६. देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण

स्थविरों की उक्त तालिका में दुर्जयन्त कृष्ण और कुमारभद्र को छोड़कर शेष नाम वही हैं, जो पूर्व में हम कल्पसूत्र की 'स्थविरावली' के द्वितीय खंड में देख चुके हैं। इस विस्तृत 'स्थविरावली' अर्थात् 'स्थविरावली' के द्वितीय खंड में आये शाण्डिल्य के गुरु का नाम धर्म आया है, जब कि ऊपर हम देख चुके हैं, 'स्थविरावली' के तृतीय खंड में आर्यजम्बू के गुरु का नाम धर्म मिलता है। इस प्रकार आर्य शाण्डिल्य और आर्य जम्बू परस्पर गुरुभ्राता सिद्ध होते हैं। आर्य धर्म के पश्चात् दो अलग-अलग शाखायें हो जाती हैं, जिन्हें निम्न रूप में रखा जा सकता है।

आर्यधर्म



दूष्यगणि

|

स्थिरगुप्त

|

कुमारधर्म

|

देवर्धि

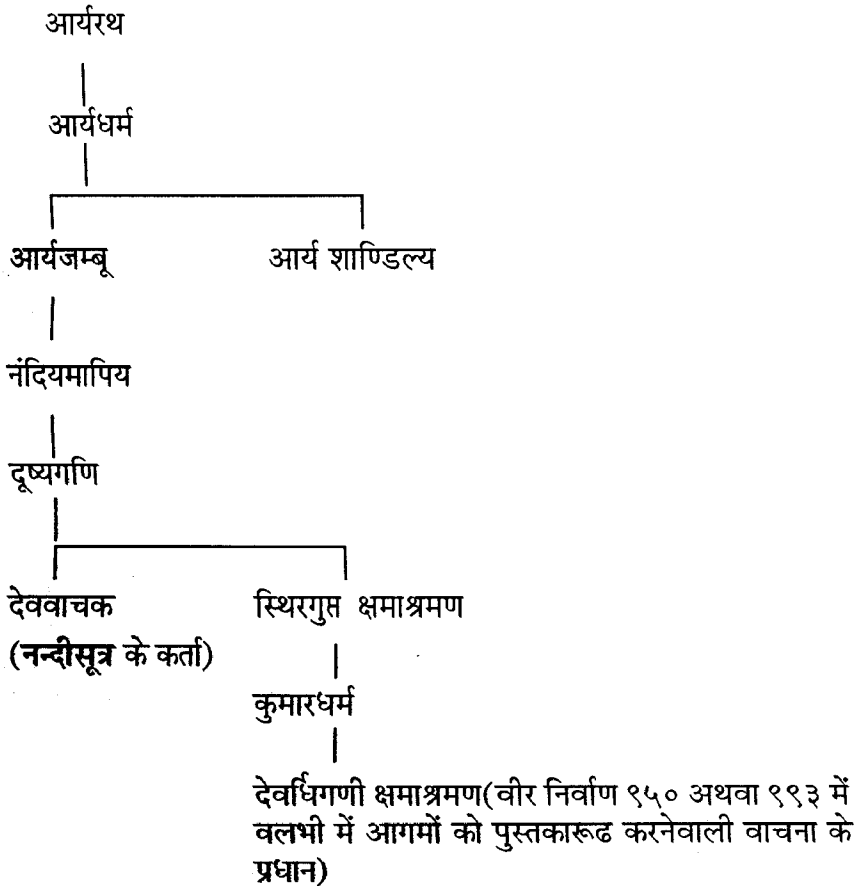
देववाचक कृत नन्दीसूत्र^१ में वाचक वंश की 'स्थविरावली' मिलती है, जो इस प्रकार है :-

१. सुधर्मा	१५. समुद्र
२. जम्बूस्वामी	१६. मंगु
३. प्रभव	१७. नंदिल
४. शय्यंभव	१८. नागहस्ति
५. यशोभद्र	१९. रेवतीमित्र
६. सम्भूतविजय	२०. ब्रह्मदीपिकासिंह
७. भद्रबाहु	२१. स्कन्दिलाचार्य
८. स्थूलभद्र	२२. हिमवन्त
९. महागिरि	२३. नागार्जुन
१०. सुहस्ति	२४. गोविंद
११. वल्लिसह	२५. भूतदिन्न
१२. स्वाति	२६. लौहित्य
१३. श्यामाचार्य	२७. दूष्यगणि
१४. शाण्डिल्य	

नन्दीसूत्र की उक्त 'स्थविरावली' में आर्यसुहस्ति के पश्चात् जिन-जिन वाचकों के नाम मिलते हैं, उनके क्रम में न तो उनके समय का ध्यान रखा गया है और

न ही उनके गुरु-परम्परा का वस्तुतः यह एक ऐसी तालिका है, जिसमें देववाचक ने अपने पूर्ववर्ती आचार्यों का श्रद्धावश स्मरण किया हैं। नन्दीचूर्णी के कर्ता जिनदासगणि महत्तर ने उन्हें (देववाचक को) दूष्यगणि का शिष्य कहा है।^१ यद्यपि देववाचक ने 'स्थविरावली' के अन्त में दूष्यगणि का नाम दिया है^२ परन्तु उन्हें कहीं भी अपना गुरु नहीं कहा है।

कल्पसूत्र 'स्थविरावली' के तृतीय भाग में देसीगणि (दूष्यगणि) का नाम आ चुका है^३ जिन्हें देववाचक के गुरु दूष्यगणि से अभिन्न मानने में कोई बाधा नहीं है। इस प्रकार कल्पसूत्र 'स्थविरावली' के आधार पर संकलित तालिका को जो नवीन स्वरूप प्राप्त होता है, वह इस प्रकार है :-



देवर्धिगणि क्षमाश्रमण और देववाचक को मुनि कल्याणविजयजी^{१४}, आचार्य आत्मारामजी^{१५}, आचार्य हस्तिमलजी^{१६} आदि ने एक ही व्यक्ति माना है। चूँकि तपागच्छीय आचार्य देवेन्द्रसूरि रचित कर्मग्रन्थ की स्वोपज्ञवृत्तिमां नन्दीसूत्र के कर्ता का नाम देवर्धि दिया है।^{१७} अंचलगच्छीय आचार्य मेरुतुंगसूरि ने भी अपनी कृति स्थविरावली अपरनाम विचारश्रेणि में पट्टक्रम का निर्देश करते हुए भूतदित्र, लोहित्य और दूष्यगणि के पश्चात् देवर्धि का नाम दिया है।^{१८} चूँकि नन्दीचूर्णी में दूष्यगणि के शिष्य के रूप में देववाचक का नाम दिया है।^{१९} इस आधार पर उक्त विद्वानों ने अपना मत व्यक्त किया है।

यह एक निर्विवाद तथ्य है कि एक ही ग्रन्थकार अपने दो अलग-अलग ग्रन्थों में अपना दो अलग-अलग नाम और अलग-अलग गुरु-परंपरा नहीं दे सकता। साथ ही देवेन्द्रसूरि से लगभग ६०० वर्ष पूर्व हुए जिनदासगणि ने नन्दीचूर्णी में स्पष्टरूप से देववाचक को दूष्यगणि का शिष्य बतलाया है, अतः देववाचक और देवर्धि न केवल अलग-अलग व्यक्ति हैं, बल्कि देववाचक उनसे दो पीढ़ी पूर्व हुए हैं। जैसा कि ऊपर हम देख चुके हैं। चूँकि देववाचक का समय ४५० ई० के आसपास माना जाता है।^{२०} अतः देवर्धि का समय भी ५०० ई० के आसपास रखने में कोई बाधा नहीं है।

जैसा कि हम पीछे देख चुके हैं कल्पसूत्र की स्थविरावली के अनुसार भद्रबाहु के शिष्य गोडास से गोडास गण की उत्पत्ति हुई। इस गण की चारों शाखायें बंगाल के विभिन्न स्थानों से सम्बद्ध हैं।^{२१} ये शाखायें ईस्वी पूर्व की चौथी शताब्दी में विद्यमान थीं। इन शाखाओं में से तीन तो बंगाल के प्रसिद्ध स्थानों में से हैं। प्रथम शाखा ताम्रलिप्तिका के सम्बन्ध में तो कुछ कहने की आवश्यकता ही नहीं रह जाती है। कोटिवर्ष को पणवणासूत्र में लाढ़ देश की राजधानी कहा गया है। पुण्ड्रवर्धन उत्तरी बंगाल में स्थित है। यह उल्लेखनीय है कि महावीर ने अपने विहारक्रम में बंगाल के भी कुछ क्षेत्रों की यात्रा की थी।^{२२} इस आधार पर यह संभावना व्यक्त की जाती है कि उनकी मृत्यु के पश्चात् वहां उनके उपदेशों का प्रचार

हुआ होगा। आचार्य हरिषेण द्वारा रचित बृहत्कथाकोश (रचनाकाल वि०सं० १८७/ई०स० १३१) के अनुसार आचार्य भद्रबाहु का जन्म पुण्ड्रवर्धन देश के 'देवकोट्ट' नामक नगर में हुआ था।^{२३} भद्रबाहु के वंगभूमि में जन्म लेने के कारण उनके शिष्य गोडास द्वारा स्थापित चार शाखाओं का वहां के विभिन्न स्थानों से सम्बन्ध होना स्वाभाविक ही है। मोरियपुत्र, जिसने महावीर के जीवनकाल में ही जैनधर्म स्वीकार कर लिया था, ताम्रलिसि का निवासी था। भगवतीसूत्र में इसके सम्बन्ध में विस्तृत कथानक प्राप्त होता है।^{२४}

उत्तरबल्लिसहगण की चार शाखाओं में से एक शाखा-कौशाम्बिका का सम्बन्ध वत्स जनपद की राजधानी कौशाम्बी से था। कौशाम्बी की स्थापना हस्तिनापुर के बाढ से नष्ट हो जाने के पश्चात् की गयी थी। महावीर और बुद्ध ने यहां विहार किया था। महावीर के समय उदयन वहां का शासक था।^{२५} जब महावीर वहां पधारे थे तो उसने उनकी वन्दना की थी। भगवतीसूत्र के अनुसार इसी नगरी में उदयन की चाची जयन्ती ने श्रमणी दीक्षा ग्रहण कर ली थी।^{२६} महावीर ने उपवास के पश्चात् प्रथम बार यहां आहार ग्रहण किया था।^{२७} ऐसे प्रसिद्ध स्थान पर ई०पू० ३०० के आसपास जैन धर्म की एक शाखा स्थापित होना अस्वाभाविक नहीं लगता।

उत्तरबल्लिसहगण की दूसरी शाखा सौमित्रिका की पहचान सुक्तमती से की गयी है, जो मध्यभारत के दक्षिणी विभाग में विंध्याचल की घाटियों की तराई में थी।^{२८} यहां भी ई०पू० की तीसरी शताब्दी के आस-पास जैन श्रमणों का प्रवेश हो चुका था। इस गण की दो अन्य शाखाओं - कौटुम्बिनी और चन्द्रनागरी के सम्बन्ध में मुनि कल्याणविजयजी का मत है कि वे पूर्वी भारत से सम्बद्ध हैं।^{२९} चन्द्रनगर को मात्र नामसाम्य के आधार पर वे पूर्वफ्रांसीसी बस्ती चन्द्रनगर से समीकृत मानते हैं।^{३०}

आर्यरोहण से प्रारम्भ हुए उद्देहगण की औदुम्बरीया शाखा को मुनि कल्याणविजयजी ने प्राचीन श्रावस्ती के निकट स्थित माना है।^{३१} जबकि अन्य विद्वानों ने औदुम्बर की पहचान पंजाब के औदुम्बर गण से की है।^{३२}

यहां से इस गण की मुद्रायें बड़ी संख्या में प्राप्त हुई हैं । ये मुद्रायें ईस्वी पूर्व की शताब्दियों की हैं, जिनके आधार पर यह विश्वास किया जाता है कि २५० ई० पू० के आस-पास यह शाखा अस्तित्व में आ चुकी थी और इस समय इस क्षेत्र में जैन धर्म अच्छी तरह से प्रसारित हो चुका था ।

आर्य भद्रयश से ईस्वी पूर्व तृतीय शती के मध्य में अस्तित्व में आयी विभिन्न शाखाओं में दो शाखायें भद्रार्जिका और काकन्दिका इन्ही नामवाले नगरों से निःश्रुत हुई थीं ।^{३३} जैन साहित्य में इन नगरियों के सम्बन्ध में विस्तृत विवरण प्राप्त होते हैं ।

सुहस्ति के शिष्य कामर्द्धि द्वारा स्थापित विभिन्न शाखाओं में श्रावस्ति-का शाखा श्रावस्ती से अस्तित्व में आयी थी । अपने जीवनकाल में महावीर का यहां कई बार आगमन हुआ था । गोशाल और जामालि ने भी यहां अपने धर्म का प्रचार किया था ।^{३४}

सुहस्ति के शिष्य ऋषिगुप्त द्वारा स्थापित विभिन्न शाखाओं में सौराष्ट्रिका शाखा^{३५} का स्थान महत्वपूर्ण माना जा सकता है । इस शाखा के नामकरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि ईस्वी पूर्व तीसरी शताब्दी में गुर्जर प्रान्त में न केवल जैन धर्म का प्रचार हो चुका था,^{३६} बल्कि वहां उस समय विकसित दशा में विद्यमान रहा और उसी स्थिति में वहां आज भी विद्यमान है ।

कोटिक गण की मध्यमिका शाखा को राजस्थान के प्रसिद्ध मध्यमिका नगरी से सम्बद्ध माना जाता है ।^{३७} जैन साहित्य में इस नगरी का विवरण प्राप्त होता है । ईस्वी पूर्व की तीसरी शताब्दी में इस शाखा के अस्तित्व में आने से यह स्पष्ट होता है कि इस समय के पूर्व ही इस क्षेत्र में जैन धर्म का प्रवेश हो चुका था ।

कोटिक गण की उच्चैर्नागर शाखा को बुहलर और मुनि कल्याणविजयजी ने पश्चिमी उत्तरप्रदेश में स्थित बुलन्दशहर से प्रायः नामसाम्य के आधार पर समीकृत किया है ।^{३८} प्रो० सागरमल जैन ने विभिन्न साक्ष्यों के आधार पर उक्त शाखा को मध्यप्रदेश के सतना जिले में अवस्थित ऊंचेहरा नामक स्थान से समीकृत किया है,^{३९} जो सत्य प्रतीत होता है ।

कल्पसूत्र की 'स्थविरावली' में उल्लिखित उक्त शाखाओं के आधार पर यह स्पष्ट निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि ईस्वी पूर्व की तीसरी शताब्दी तक जैनधर्म भारतवर्ष के विभिन्न क्षेत्रों में प्रसारित हो चुका था। बृहत्कल्पसूत्र भाष्य^{४०} में जैन श्रमणों के विहार की भौगोलिक सीमा निर्धारित की गयी है, जिसके अनुसार उन्हें पूर्व में अंग-मगध, दक्षिण में कौशाम्बी, उत्तर में कुणाला और पश्चिम में थूणा तक ही विहार की अनुमति थी। इससे यह स्पष्ट होता है कि उक्त ग्रन्थ का यह कथन कल्पसूत्र-‘स्थविरावली’ में उल्लिखित विभिन्न गण-कुल-शाखाओं के उत्पन्न होने के पूर्व ही रचा जा चुका था। यद्यपि बृहत्कल्पसूत्र बहुत प्राचीन ग्रन्थ नहीं माना जाता है, तथापि उक्त तथ्यों का इस ग्रन्थ में उल्लेख होने से यह कहा जा सकता है कि इसमें सुरक्षित उक्त कथन काफी प्राचीन है।

स्थविरावलीगत विभिन्न गण-कुल-शाखाओं का नाम मथुरा से प्राप्त अभिलेखीय साक्ष्यों में भी प्राप्त होता है^{४१}। उनके अध्ययन से विद्वानों ने जो निष्कर्ष निकाले हैं, वे इस प्रकार हैं :-

१. कोटिकगण सबसे अधिक लोकप्रिय रहा है और आज भी यह बहुत अंशों में विद्यमान है। खरतरगच्छ में आज भी दीक्षा के समय कोटिक गण, चन्द्रकुल और वज्रशाखा का नाम उच्चारित किया जाता है।

२. कुछ गणों का नामकरण उनके प्रवर्तकों के नाम पर पड़ा, जैसे गोडासगण, उत्तरबल्लिसहगण आदि।

३. कुछ शाखाओं का नामकरण व्यक्तिगत और स्थलों के नाम पर भी हुआ, जैसे इसिपालिय, सावत्थिया, कौशाम्बिका आदि।

४. जैन श्रमणों के विभिन्न गण-कुल-शाखा-सम्भोग आदि में विभाजन की प्राचीनता ईस्वी पूर्व की तीसरी शताब्दी तक जाती है। यह भी संभावना व्यक्त की जा सकती है कि यह विभाजन और भी पहले से चला आ रहा होगा।

५. कल्पसूत्र ‘स्थविरावली’ में किन्ही सम्भोगों का उल्लेख नहीं मिलता। जबकि मथुरा के अभिलेखों में इसका स्पष्ट रूप से उल्लेख है।

६. मथुरा के अभिलेखों और कल्पसूत्र 'स्थविरावली' में किसी भी गच्छ का नाम नहीं मिलता है ।

कोटिकगण और उसकी शाखाओं का बाद की शताब्दियों में भी प्रचार-प्रसार होता रहा । आचार्य उमास्वाति (ईस्वी सन् की तीसरी शताब्दी) भी इसी गण की उच्चैर्नागर शाखा के थे ।^{४२} नन्दीचूर्णि के कर्ता जिनदासगणि महत्तर कोटिकगण, वाणिज्यकुल और वज्रशाखा के थे ।^{४३}

दशवैकालिकचूर्णि के कर्ता अगस्त्यसिंह (ईस्वीसन्-५५०-६००) भी कोटिकगण की वज्रशाखा से सम्बद्ध थे । उनके गुरु का नाम ऋषिगुप्त था ।^{४४} उत्तराध्ययनचूर्णी के कर्ता (नाम-अज्ञात) के गुरु का नाम गोपालगणि महत्तर था, जो कोटिकगण, वाणिज्यकुल और वज्रशाखा के थे ।^{४५}

६ठी-७वीं शताब्दी में कोटिकगण से दो नये कुलों निवृत्ति और चन्द्र अस्तित्व में आये । विशेषावश्यकभाष्य आदि के रचनाकार जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण, उपमितिभवप्रपंचाकथा के कर्ता सिद्धर्षि (९वीं शताब्दी) आदि इसी कुल के थे ।

चन्द्रकुल से पूर्वमध्यकाल में छोटे-बड़े अनेक गच्छ अस्तित्व में आये । पूर्वमध्यकाल और मध्यकाल का श्वेताम्बर मूर्तिपूजक समुदाय का इतिहास वस्तुतः विभिन्न गच्छों का ही इतिहास है । आगे के पृष्ठों में इन्ही गच्छों के संक्षिप्त इतिहास पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है ।

संदर्भ :

१. पट्टावली समुच्चय, प्रथम भाग, संपा० मुनि दर्शनविजय, वीरमगाम १९३३ ईस्वी, पृष्ठ-३, ८.
२. प्राध्यापक मधुसूदन ढांकी से व्यक्तिगत चर्चा के आधार पर
३. पट्टावली समुच्चय, प्रथम भाग, पृष्ठ-३.
४. वही, प्रथम भाग, पृष्ठ-३-१०.
५. वही, प्रथम भाग, पृष्ठ-८

६. वही, प्रथम भाग, पृष्ठ-११-११.
७. वही, प्रथम भाग, पृष्ठ-११.
८. प्राध्यापक मधुसूदन ढांकी से व्यक्तिगत चर्चा के आधार पर.
९. नन्दीसूत्र, संपादक-आचार्य श्रीआत्मारामजी महाराज, श्री जैन शास्त्रमाला, ग्रन्थांक-८, आचार्य श्री आत्माराम जैन प्रकाशन समिति, लुधियाना १९६६ ई०, मंगलाचरण गाथा-२२ और आगे.
१०. प्राध्यापक ढांकी से व्यक्तिगत चर्चा के आधार पर.
११. नन्दीचूर्णी, संपा० मुनि पुण्यविजय, प्राकृत ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक-९, अहमदाबाद १९६६ ईस्वी, प्रस्तावना, पृष्ठ-४.
१२. नन्दीसूत्र, संपा० आचार्य श्रीआत्मारामजी, मंगलाचरण, गाथा-४८, पृष्ठ-४८.
१३. द्रष्टव्य संदर्भ क्रमांक-७ और ८.
१४. मुनि कल्याणविजय गणि, संपा० पट्टावलीपरागसंग्रह, जालोर १९६६ ईस्वी, पृष्ठ-५४-६१.
१५. नन्दीसूत्र, संपा० आचार्य आत्मारामजी, प्रस्तावना, पृष्ठ-२३-२४.
१६. आचार्य हस्तिमलजी, जैन धर्म का मौलिक इतिहास, भाग-२, जयपुर १९६७ ईस्वी, पृष्ठ-६८०-८६.
- १७-१८. वही, भाग-२, पृष्ठ-६८०-८१.
१९. नन्दीचूर्णी, संपा० मुनि पुण्यविजयजी, प्रस्तावना, पृष्ठ-४.
२०. प्राध्यापक ढांकी से व्यक्तिगत चर्चा के आधार पर
२१. A. K. Chatarjee, *A Comprehensive History of Jainism*, Vol.I, Calcutta 1984 A.D. P-3.
२२. Chatarjee, Ibid, P-23.
२३. बृहत्कथाकोश, संपा० आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्ये, सिंघी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक-१७, मुंबई १९४३ ई०, "भद्रबाहुकथानकम्", पृष्ठ-३१७-३१९.
२४. M. L. Mehta & K. R. Chandra, Ed. *Prakrit Proper Names*,

Vol. I, L.D. Series No. 28, Ahmedabad 1970 A.D., P-334.

२५-२६. Ibid, Pp-207-208.

२७. मुनि कल्याणविजय गणि, श्रमण भगवान महावीर, प्रथम आवृत्ति, अहमदाबाद २००२ ईस्वी, पृष्ठ ३७२.

२८-३०. मुनि कल्याणविजय, पट्टावलीपरागसंग्रह, पृष्ठ-२१, पाद टिप्पणी

३१. वही, पृष्ठ-२२, पाद टिप्पणी क्रमांक-१

३२-३३. Chatarjee, Ibid, Vol. I, P-38

३४. Mehta & Chandra, Ibid, Vol. I, 780-81.

३५-३६. Chatarjee, Ibid, P-39.

३७. Ibid, P-40.

मुनि कल्याणविजयजी, पूर्वोक्त, पृष्ठ-३७.

३८. मुनि कल्याणविजय, पूर्वोक्त, पृष्ठ-३७-३८.

३९. "उच्चैर्नागर शाखा के उत्पत्तिस्थान एवं उमास्वाति के जन्मस्थल की पहचान" श्रमण, वर्ष-४२, अंक-६-१२, पृष्ठ-१७-२४.

४०. बृहत्कल्पसूत्र १-५०.

उद्धृत-जगदीशचन्द्र जैन, जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज, परिशिष्ट-१, पृष्ठ-५५८.

४१. जैनशिलालेखसंग्रह, भाग-३, प्रस्तावना, पृष्ठ-१५-१६.

S. B. Deo, *History of Jain Monachism*, P-575-578.

J. P. Singh, *Aspect of Early Jainism*, P-36-51.

४२. तत्त्वार्थसूत्र, विवेचक पं० सुखलाल संघवी, प्रस्तावना, पृष्ठ-४-५.

४३. नन्दीसूत्र, जिनदासगणि महत्तर कृत चूर्णि सहित, संपा० मुनि पुण्यविजय, प्रस्तावना, पृष्ठ-५ और आगे.

४४. दशवैकालिकसूत्र, निर्युक्ति एवं चूर्णि सहित, संपा० मुनि पुण्यविजयजी, प्राकृत ग्रन्थ परिषद, ग्रन्थांक १७, अहमदाबाद १९७३ ईस्वी, प्रस्तावना, पृष्ठ १६-१७.

४५. वाणिजकुल संभूतो कोडियगणितो य विज्जसाहीतो ।
गोवालयमहत्तरओ विक्खातो आसि भोगम्मि ॥ १ ॥

ससमय-परसमयविऊ ओयस्सी देहिमं सुगंभीरो ।
सीसगणसंपरिवुडो वक्खाणरतिप्पियो आसी ॥ २ ॥

तोसिं सीसेण इमं उत्तरझयणाण चुण्णिखंडं तु ।
रइयं अणुगहत्थं सीसाणं मंदबुद्धीणं ॥ ३ ॥

जं सत्थं उस्सुतं अयाणमाणेण विरतितं होज्जा ।
तुं अणुओगधरा मे अणुचित्तेउ समारेतु ॥ ४ ॥

वही, प्रस्तावना, पृष्ठ-८.



अध्याय-३

श्वेताम्बर सम्प्रदाय के गच्छों का सामान्य परिचय

विश्व के सभी धर्म एवं सम्प्रदाय अपने उद्भव के पश्चात् कालान्तर में अनेक शाखाओं-उपशाखाओं आदि में विभाजित होते रहे हैं। जैन धर्म भी इसका अपवाद नहीं है। यह विभाजन अनेक कारणों से होता रहा है और इनमें सबसे प्रधान कारण रहा है - देश और काल की परिवर्तनशील परिस्थितियाँ एवं परिवेश। इन्हीं के फलस्वरूप परम्परागत प्राचीन विधि-विधानों के स्थान पर नवीन विधि-विधानों और मान्यताओं को प्रश्रय देने से मूल परम्परा में विभेद उत्पन्न हो जाता है। कभी-कभी यह मतभेद वैयक्तिक अहं की पुष्टि और नेतृत्व के प्रश्न को लेकर भी होता है, फलतः एक नई शाखा अस्तित्व में आ जाती है। पुनः इन्हीं कारणों से उसमें भी भेद होता है और नई-नई उपशाखाओं का उदय होता रहता है।

निर्ग्रन्थ श्रमण संघ में भगवान् महावीर के समय में ही गोशालक एवं जमालि ने संघभेद के प्रयास किये, परन्तु गोशालक आजीवक संघ में सम्मिलित हो गया और जमालि की शिष्य-परम्परा आगे नहीं चल सकी।

वीरनिर्वाण के बाद की शताब्दियों में निर्ग्रन्थ श्रमण संघ विभिन्न गण, शाखा, कुल और अन्वयों में विभक्त होता गया। जैसा कि पिछले अध्याय में कहा जा चुका है कल्पसूत्र और नन्दीसूत्र की स्थविरावलियों में वीरनिर्वाण संवत् ९८० अर्थात् विक्रम संवत् की ५वीं-६ठी शताब्दी तक उत्तर भारत की जैन परम्परा में कौन-कौन से जैन आचार्यों से कौन-कौन से गण, कुल और शाखाओं का जन्म हुआ, इसका सुविस्तृत विवरण संकलित है। ये सभी गण, कुल और शाखायें गुरु-परम्परा विशेष से ही सम्बद्ध रही हैं। इनके धार्मिक विधि-विधानों में किसी प्रकार का मतभेद था या नहीं,

यदि मतभेद था, तो किस प्रकार का था ? इन बातों की जानकारी हेतु हमारे पास कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं है ।

निर्ग्रन्थ श्रमण संघ के जो श्रमण दक्षिण में चले गये थे, वे भी कालान्तर में गणों एवं अन्वयों में विभाजित हुए । यह परम्परा दिगम्बर सम्प्रदाय के रूप में जानी गयी ।

उत्तर भारत के निर्ग्रन्थ संघ में लगभग दूसरी शती में वस्त्र के प्रश्न को लेकर संघ भेद हुआ और एक नवीन परम्परा का उद्भव हुआ जो आगे चलकर कोटिक या यापनीय नाम से प्रसिद्ध हुई । पीछे से जो संघभेद हुए उनके मूल में सैद्धान्तिक विधि-विधान सम्बन्धी भेद अवश्य विद्यमान रहे, किन्तु यहाँ इन सब की चर्चा न करते हुए मात्र श्वेताम्बर सम्प्रदाय में समय-समय पर उत्पन्न एवं विकसित हुए विभिन्न गच्छों की चर्चा प्रस्तुत की गयी है ।

उत्तर और पश्चिम भारत का श्वेताम्बर संघ प्रारम्भ में तो वारणगण, मानवगण, उत्तरवल्लिसहगण आदि अनेक गणों और उनकी कुल-शाखाओं में विभक्त था, किन्तु कालान्तर में कोटिक गण को छोड़कर शेष सभी कुल और शाखायें समाप्त हो गयीं । आज के श्वेताम्बर मुनिजन स्वयं को इसी कोटिकगण से सम्बद्ध मानते हैं । इस गण से भी अनेक शाखायें अस्तित्व में आयीं । उनमें उच्चनागरी, विद्याधरी, वज्री, माध्यमिका, नागिल, पद्मा, जयन्ती आदि शाखायें प्रमुख रूप से प्रचलित रहीं । इन्हीं से आगे चलकर नागेन्द्र और विद्याधर ये दो कुल अस्तित्व में आये । ६ठीं शताब्दी के पश्चात् कोटिक गण से ही निवृत्ति और चन्द्र ये दो कुल भी अस्तित्व में आये । पूर्व मध्ययुगीन श्वेताम्बर गच्छों का इन्हीं से प्रादुर्भाव हुआ ।

ईस्वी सन् की छठी-सातवीं शताब्दी से ही श्वेताम्बर श्रमण परम्परा को पश्चिमी भारत (गुजरात और राजस्थान) में राज्याश्रय प्राप्त होने से इसका विशेष प्रचार-प्रसार हुआ, फलस्वरूप वहाँ अनेक नये-नये जिनालयों का निर्माण होने लगा । जैन मुनि भी अब वनों को छोड़कर जिनालयों के साथ संलग्न भवनों (चैत्यालयों) में निवास करने लगे । स्थिरवास एवं जिनालयों

का स्वामित्व प्राप्त होने के फलस्वरूप इन श्रमणों में अन्य दोषों के साथ-साथ परस्पर विद्वेष एवं अहंभाव का भी अंकुरण हुआ। इनमें अपने-अपने अनुयायियों की संख्या में वृद्धि करने की होड़ सी लगी हुई थी। इन्हीं परिस्थितियों में श्वेताम्बर श्रमणसंघ विभिन्न नगरों, जातियों, घटनाविशेष तथा आचार्यविशेष के आधार पर विभाजित होने लगा। विभाजन की यह प्रक्रिया दसवीं-ग्यारहवीं शताब्दी में तेजी से प्रारम्भ हुई, जिसका क्रम आगे भी जारी रहा।

श्वेताम्बर श्रमणों का ऐसा भी वर्ग था जो श्रमणावस्था में सुविधावाद के पनपने से उत्पन्न शिथिलाचार का कट्टर विरोधी था। आठवीं शताब्दी में हुए आचार्य हरिभद्र ने अपने समय के चैत्यवासी श्रमणों के शिथिलाचार का अपने ग्रन्थ **सम्बोधप्रकरण** में विस्तृत वर्णन किया है और इनके विरुद्ध अपनी आवाज उठायी है। चैत्यवासियों पर इस विरोध का प्रतिकूल असर पड़ा और उन्होंने सुविहितमार्गीय श्रमणों का तरह-तरह से विरोध करना प्रारम्भ किया। गुर्जर प्रदेश में तो उन्होंने चावड़ावंशीय शासक वनराज चावड़ा से राजाज्ञा जारी कर सुविहितमार्गीयों का प्रवेश ही निषिद्ध करा दिया। फिर भी सुविहितमार्गीय श्रमण शिथिलाचारी श्रमणों के आगे नहीं झुके और उन्होंने चैत्यवास का विरोध जारी रखा। अन्ततः चौलुक्य नरेश दुर्लभराज (वि०सं० १०६६-१०८२) की राजसभा में चन्द्रकुलीन वर्धमानसूरि के शिष्य जिनेश्वरसूरि ने चैत्यवासियों को शास्त्रार्थ में पराजित कर गुर्जरभूमि में सुविहितमार्गीयों के विहार और प्रवास को निष्कण्टक बना दिया।

कालदोष से सुविहितमार्गीयश्रमण भी परस्पर मतभेद के शिकार होकर समय-समय पर बिखरते रहे, फलस्वरूप नये-नये गच्छ (समुदाय) अस्तित्व में आते रहे। जैसे चन्द्रकुल की एक शाखा वडगच्छ से पूर्णिमागच्छ, सार्धपूर्णमागच्छ, सत्यपुरीयशाखा आदि अनेक शाखायें-उपशाखायें अस्तित्व में आयीं। इसी प्रकार खरतरगच्छ से भी कई उपशाखाओं का उदय हुआ।

जैसा कि प्रारम्भ में कहा जा चुका है एक स्थान पर स्थायी रूप से रहने की प्रवृत्ति से मुनियों एवं श्रावकों के मध्य स्थायी सम्पर्क बना,

फलस्वरूप उनकी प्रेरणा से नये-नये जिनालयों एवं वसतियों का द्रुतगति से निर्माण होने लगा । स्थानीयकरण की इसी प्रवृत्ति के फलस्वरूप स्थानों के नाम पर भी कुछ गच्छों का भी नामकरण होने लगा, यथा कोरटा नामक स्थान से कोरंटगच्छ, नाणा नामक स्थान से नाणकीयगच्छ, ब्रह्माण (आधुनिक वरमाण) नामक स्थान से ब्रह्माणगच्छ, संडेर (वर्तमान सांडेराव) नामक स्थान से संडेरगच्छ, हरसोर नामक स्थान से हर्षपुरीयगच्छ, पल्ली (वर्तमान पाली) नामक स्थान से पल्लीवालगच्छ आदि अस्तित्व में आये । यद्यपि स्थानविशेष के आधार पर ही इन गच्छों का नामकरण हुआ था, किन्तु सम्पूर्ण पश्चिमी भारत के प्रमुख जैन तीर्थों एवं नगरों में इन गच्छों के अनुयायी श्रमण एवं श्रावक विद्यमान थे । यह बात सम्पूर्ण पश्चिमी भारत के विभिन्न स्थानों में इनके आचार्यों द्वारा प्रतिष्ठापित प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेखों से ज्ञात होती है ।

कुछ गच्छ तो घटनाविशेष के कारण ही अस्तित्व में आये । जैसे चन्द्रकुल के आचार्य धनेश्वरसूरि (वादमहार्णव के रचनाकार अभयदेवसूरि के शिष्य) साधुजीवन के पूर्व कर्दम नामक राजा थे, इसी आधार पर उनके शिष्य राजगच्छीय कहलाये ।

इसी प्रकार आचार्य उद्योतनसूरि ने आबू के समीप स्थित टेली नामक ग्राम में वटवृक्ष के नीचे सर्वदेवसूरि आदि ८ मुनियों को एक साथ आचार्यपद प्रदान किया । वटवृक्ष के आधार पर इन मुनिजनों का शिष्य परिवार वटगच्छीय कहलाया । वटवृक्ष के समान ही इस गच्छ की अनेक शाखायें- उपशाखायें अस्तित्व में आयीं, अतः इसका एक नाम बृहद्रच्छ भी पड़ गया । इसी प्रकार खरतरगच्छ, आगमिकगच्छ, पूर्णिमागच्छ, सार्धपूर्णमागच्छ, अंचलगच्छ, पिप्पलगच्छ आदि भी घटनाविशेष से ही अस्तित्व में आये ।

चाहमाननरेश अणोराज (ईस्वी सन् ११३९-११५३) की राजसभा में दिगम्बर आचार्य कुलचन्द्र को शास्त्रार्थ में पराजित करने वाले आचार्य धर्मघोषसूरि राजगच्छीय आचार्य शीलभद्रसूरि के शिष्य थे । चूँकि ये अपने जीवनकाल में यथेष्ट प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके थे, अतः इनकी मृत्यु के पश्चात् इनकी शिष्यसंतति धर्मघोषगच्छीय कहलायी ।

इस प्रकार स्पष्ट है कि विभिन्न परिस्थितियों में विभिन्न कारणों से श्वेताम्बर श्रमण संघ का विभाजन होता रहा और नये-नये गच्छ अस्तित्व में आते रहे। इन गच्छों का इतिहास जैनधर्म के इतिहास का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अध्याय है, परन्तु इस ओर अभी तक विद्वानों का ध्यान बहुत कम ही है। आज से लगभग ५५ वर्ष पूर्व महान् साहित्यसेवी स्व० अगरचन्द जी नाहटा और भंवरलाल जी नाहटा ने यतीन्द्रसूरिअभिनन्दनग्रन्थ में “जैन श्रमणों के इतिहास पर संक्षिप्त प्रकाश” नामक लेख प्रकाशित किया था और लेख के प्रारम्भ में ही विद्वानों से यह अपेक्षा की थी कि वे इस कार्य के लिये आगे आयें। स्व० नाहटा जी के उक्त कथन को आदेश मानते हुए प्राध्यापक एम०ए० ढांकी की प्रेरणा और सहयोग से मैंने श्वेताम्बर श्रमणों के गच्छों के इतिहास लेखन का कार्य प्रारम्भ किया, जिनका साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर संक्षिप्त विवरण यहां प्रस्तुत है।

अंचलगच्छ अपरनाम विधिपक्ष★ वि० सं० ११५९ या ११६९ में उपाध्याय विजयचन्द्र (बाद में आर्यरक्षितसूरि) द्वारा विधिपक्ष का पालन करने के कारण उनकी शिष्य-संतति विधिपक्षीय कहलायी। प्रचलित मान्यता के अनुसार इस गच्छ के अनुयायी श्रावकों द्वारा मुंहपत्ती के स्थान पर वस्त्र के दोर (अंचल) से वन्दन करने के कारण अंचलगच्छ नाम प्रचलित हुआ। इस गच्छ में अनेक विद्वान् आचार्य और मुनिजन हुए हैं और उनमें से विभिन्न आचार्यों की कृतियाँ आज उपलब्ध होती हैं। इस गच्छ से सम्बद्ध बड़ी संख्या में प्रतिमालेख प्राप्त होते हैं। इनमें प्राचीनतम लेख वि०सं० १२०६ का है। अपने उदय से लेकर आज तक इस गच्छ की अविच्छिन्न परम्परा विद्यमान है।

आगमिकगच्छ – पूर्णिमापक्षीय शीलगुणसूरि और उनके शिष्य देवभद्रसूरि द्वारा जीवदयाणं तक का शक्रस्तव, ६७ अक्षरों का परमेष्ठीमंत्र और तीन स्तुति से देववन्दन आदि बातों में आगमों का समर्थन करने के कारण वि०सं० १२१४ या वि०सं० १२५० में आगमिकगच्छ या त्रिस्तुतिकमत की

★ मेरे द्वारा लिखित इस गच्छ का इतिहास २००१ ईस्वी में प्रकाशित हो चुका है।

उत्पत्ति हुई। इस गच्छ में यशोभद्रसूरि, सर्वाणंदसूरि, विजयसिंहसूरि, अमरसिंहसूरि, हेमरत्नसूरि, अमररत्नसूरि, सोमप्रभसूरि, आनन्दप्रभसूरि आदि कई प्रभावक आचार्य हुए जिन्होंने साहित्यसेवा और धार्मिक क्रियाकलापों से श्वेताम्बर श्रमणसंघ को जीवन्त बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

आगमिकगच्छ से सम्बद्ध बड़ी संख्या में आज साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्य उपलब्ध होते हैं। साहित्यिक साक्ष्यों के अन्तर्गत इस गच्छ के मुनिजनों द्वारा लिखे गये ग्रन्थों की प्रशस्तियाँ तथा कुछ पट्टावलियाँ आदि हैं। इस गच्छ से सम्बद्ध लगभग २०० प्रतिमालेख प्राप्त होते हैं जो वि०सं० १४२० से लेकर वि०सं० १६८३ तक के हैं। उपलब्ध साक्ष्यों से इस गच्छ की दो शाखाओं—धंधूकीया और विलाबंडीया का पता चलता है।

उपकेशगच्छ - पूर्वमध्यकालीन और मध्यकालीन श्वेताम्बर परम्परा में उपकेशगच्छ का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। जहाँ अन्य सभी गच्छ भगवान् महावीर से अपनी परम्परा जोड़ते हैं, वहीं उपकेशगच्छ अपना सम्बन्ध भगवान् पार्श्वनाथ से जोड़ता है। अनुश्रुति के अनुसार इस गच्छ का उत्पत्ति स्थल उपकेशपुर (वर्तमान ओसिया-राजस्थान) माना जाता है। परम्परानुसार इस गच्छ के आदिम आचार्य रत्नप्रभसूरि ने वीर सम्वत् ७० में ओसवाल गच्छ की स्थापना की, परन्तु किसी भी प्राचीन ऐतिहासिक साक्ष्य से इस बात की पुष्टि नहीं होती। ऐतिहासिक साक्ष्यों के आधार पर ओसवालों की स्थापना और इस गच्छ की उत्पत्ति का समय ईस्वी सन् की आठवीं शती के पूर्व नहीं माना जा सकता।

उपकेशगच्छ में कक्कसूरि, देवगुप्तसूरि और सिद्धसूरि इन तीन पट्टधर आचार्यों के नामों की प्रायः पुनरावृत्ति होती रही है, जिससे प्रतीत होता है कि इस गच्छ के अनुयायी श्रमण चैत्यवासी रहे होंगे। इस गच्छ में विभिन्न प्रभावक और विद्वान् आचार्य हो चुके हैं जिन्होंने साहित्योपासना के साथ-साथ नवीन जिनालयों के निर्माण, प्राचीन जीनालयों के जीर्णोद्धार नूतन जिनप्रतिमाओं की प्रतिष्ठापना द्वारा पश्चिम भारत में श्वेताम्बर श्रमण परम्परा को जीवन्त बनाये रखने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

अन्यान्य गच्छों की भाँति उपकेशगच्छ से भी कई अवान्तर शाखाओं का जन्म हुआ। जैसे वि०सं० १२६६/ईस्वी सन् १२१० में द्विवंदनीक शाखा, वि०सं० १३०८/ईस्वी सन् १२५२ में खरतपाशाखा तथा वि०सं० १४९८/ईस्वी सन् १४४२ में खादिरी शाखा अस्तित्व में आयी। इसके अतिरिक्त इस गच्छ की दो अन्य शाखाओं—ककुदाचार्यसंतानीय और सिद्धाचार्यसंतानीय का भी पता चलता है, किन्तु इनकी उत्पत्तिकाल के सम्बन्ध में कोई जानकारी प्राप्त नहीं होती।

उपकेशगच्छ के इतिहास से सम्बद्ध पर्याप्त संख्या में इस गच्छ के मुनिजनों के कृतियों की प्रशस्तियाँ, मुनिजनों के अध्ययनार्थ या उनकी प्रेरणा से प्रतिलिपि करायी गयी प्राचीन ग्रन्थों की दाताप्रशस्तियाँ तथा दो प्रबन्ध (उपकेशगच्छप्रबन्ध और नाभिनन्दनजिनोद्धारप्रबन्ध—रचनाकाल वि०सं० १३९३/ईस्वी सन् १३३६) और उपकेशगच्छ की कुछ पट्टावलियाँ उपलब्ध हैं।

इस गच्छ के मुनिजनों द्वारा प्रतिष्ठापित बड़ी संख्या में जिनप्रतिमायें प्राप्त होती हैं जिनमें से अधिकांश लेखयुक्त हैं। इसके अतिरिक्त इस गच्छ के मुनिजनों की प्रेरणा से निर्मित सर्वतोभद्रयंत्र, पंचकल्याणकपट्ट, तीर्थकरों के गणधरों की चरणपादुका आदि पर भी लेख उत्कीर्ण हैं। ये सभी लेख वि०सं० १०११ से वि०सं० १९१८ तक के हैं। उपकेशगच्छ के इतिहास के लेखन में उक्त साक्ष्यों का विशिष्ट महत्त्व है।

उपकेशगच्छीय साक्ष्यों के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि वि०सं० की १०वीं शताब्दी से लेकर वि०सं० की १६वीं शताब्दी तक इस गच्छ के मुनिजनों का समाज पर विशेष प्रभाव रहा, किन्तु इसके पश्चात् इसमें न्यूनता आने लगी, फिर भी २०वीं शती के प्रारम्भ तक निर्विवाद रूप से इस गच्छ का स्वतन्त्र अस्तित्व बना रहा।

काशहदगच्छ—अर्बुदगिरि की तलहटी में स्थित काशहद (वर्तमान कासीन्द्रा या कायन्द्रा) नामक स्थान से इस गच्छ की उत्पत्ति मानी जाती है। जालिहरगच्छ के देवप्रभसूरि द्वारा रचित पद्मप्रभचरित (रचनाकाल वि०सं० १२५४/ईस्वी सन्

११९८) की प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि काशहद और जालिहर ये दोनों विद्याधरगच्छ की शाखायें हैं। यह गच्छ कब अस्तित्व में आया, इस गच्छ के आदिम आचार्य कौन थे, इस बारे में कोई सूचना प्राप्त नहीं होती। **प्रश्नशतक** और **ज्योतिषचतुर्विंशतिका** के रचनाकार नरचन्द्र उपाध्याय इसी गच्छ के थे। **प्रश्नशतक** का रचनाकाल वि०सं० १३२४/ईस्वी सन् १२७८ माना जाता है। **विक्रमचरित** (रचनाकाल वि०सं० १४७१/ईस्वी सन् १४१५ के आसपास) के रचनाकार उपाध्याय देवमूर्ति इसी गच्छ के थे। इस गच्छ से सम्बद्ध कुछ प्रतिमालेख भी प्राप्त होते हैं जो वि०सं० १२२२ से वि०सं० १४१६ तक के हैं।

उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर विक्रम सम्वत् की १३वीं शती से १५वीं शती के अन्त तक इस गच्छ का अस्तित्व सिद्ध होता है। इस गच्छ से सम्बद्ध साक्ष्यों की विरलता को देखते हुए यह माना जा सकता है कि अन्य गच्छों की अपेक्षा इस गच्छ के अनुयायी श्रावकों और श्रमणों की संख्या अल्प थी। १६वीं शती से इस गच्छ से सम्बद्ध साक्ष्यों के नितान्त अभाव होने से यह कहा जा सकता है कि इस समय तक इस गच्छ का अस्तित्व समाप्त हो गया।

कृष्णर्षिगच्छ— प्राक्मध्ययुगीन और मध्ययुगीन श्वेताम्बर आम्नाय के गच्छों में कृष्णर्षिगच्छ भी एक है। आचार्य वटेश्वर क्षमाश्रमण के प्रशिष्य और यक्षमहत्तर के शिष्य कृष्णमुनि की शिष्य संतति अपने गुरु के नाम पर कृष्णर्षिगच्छीय कहलायी। **धर्मोपदेशमालाविवरण** (रचनाकाल वि०सं० ९१५/ईस्वी सन् ८५९) के रचयिता जयसिंहसूरि, प्रभावकशिरोमणि प्रसन्नचन्द्रसूरि, निस्पृहशिरोमणि महेन्द्रसूरि, **कुमारपालचरित** (वि०सं० १४२२/ईस्वी सन् १३६६) के रचनाकार जयसिंहसूरि, **हम्मीरमहाकाव्य** (रचनाकाल वि०सं० १४४४/ईस्वी सन् १३८६) और **रम्भामंजरीनाटिका** के कर्ता नयचन्द्रसूरि इसी गच्छ के थे। इस गच्छ में जयसिंहसूरि, प्रसन्नचन्द्रसूरि, नयचन्द्रसूरि इन तीन पट्टधर आचार्यों के नामों की पुनरावृत्ति मिलती है, जिससे अनुमान होता है कि यह चैत्यवासी गच्छ था। इस गच्छ से सम्बद्ध पर्याप्त संख्या में अभिलेखीय साक्ष्य भी प्राप्त हुए हैं जो वि०सं० १२८७ से वि०सं० १६१६ तक के हैं।

अभिलेखीय साक्ष्यों से इस गच्छ की कृष्णर्षितपाशाखा का भी उल्लेख प्राप्त होता है। इस शाखा के वि०सं० १४५० से १४७३ तक के लेखों में पुण्यप्रभसूरि, वि०सं० १४८३-१४८७ के लेखों में शिष्य जयसिंहसूरि तथा वि०सं० १५०३-१५०८ के लेखों में जयसिंहसूरि के प्रथम पट्टधर जयशेखरसूरि तथा वि०सं० १५१० के एक लेख में उनके द्वितीय पट्टधर कमलचन्द्रसूरि का प्रतिमाप्रतिष्ठापक के रूप में उल्लेख प्राप्त होता है, किन्तु इस शाखा के प्रवर्तक कौन थे, यह शाखा कब अस्तित्व में आयी, इस सम्बन्ध में कोई सूचना प्राप्त नहीं होती।

वि०सं० की १७वीं शती के पश्चात् कृष्णर्षिगच्छ से सम्बद्ध साक्ष्यों का अभाव है। इससे प्रतीत होता है कि इन समय तक इस गच्छ का अस्तित्व समाप्त हो चुका था।

कोरंटगच्छ-आबू के निकट कोरटा (प्राचीन कोरंट) नामक स्थान से इस गच्छ की उत्पत्ति मानी जाती है। उपकेशगच्छ की एक शाखा के रूप में इस गच्छ की मान्यता है। इस गच्छ के पट्टधर आचार्यों को कक्कसूरि, सर्वदेवसूरि और नन्नसूरि ये तीन नाम पुनः-पुनः प्राप्त होते रहे। इस गच्छ का सर्वप्रथम उल्लेख वि०सं० १२०१ के एक प्रतिमालेख में और अन्तिम उल्लेख वि०सं० १६१९ में प्रतिलिपि की गयी **राजप्रश्नीयसूत्र** की दाताप्रशस्ति में प्राप्त होता है। इस गच्छ से सम्बद्ध मात्र कुछ दाताप्रशस्तियाँ तथा बड़ी संख्या में प्रतिमालेख प्राप्त होते हैं। ये लेख वि०सं० १६१२ तक के हैं। लगभग ४०० वर्षों के अपने अस्तित्वकाल में इस गच्छ के अनुयायी श्रमण शास्त्रों के पठन-पाठन की अपेक्षा जिनप्रतिमा की प्रतिष्ठा में ही अधिक सक्रिय रहे।

खंडिलगच्छ-इस गच्छ के कई नाम मिलते हैं यथा भावडारगच्छ, कालिकाचार्यसंतानीय, भावडगच्छ, भावदेवाचार्यगच्छ, खंडिल्लगच्छ आदि। **प्रभावकचरित** में चन्द्रकुल की एक शाखा के रूप में इस गच्छ का उल्लेख मिलता है। इस गच्छ में पट्टधर आचार्यों को भावदेवसूरि, विजयसिंहसूरि, वीरसूरि और जिनदेवसूरि ये चार नाम पुनः-पुनः प्राप्त होते रहे। **पार्श्वनाथचरित** (रचनाकाल वि०सं० १४१२/ईस्वी सन् १३५६) के रचनाकार भावदेवसूरि इसी गच्छ के थे। इसकी प्रशस्ति के अन्तर्गत उन्होंने अपनी गुरु-परम्परा दी है, जो इस प्रकार है-

भावदेवसूरि

विजयसिंहसूरि

वीरसूरि

जिनदेवसूरि

भावदेवसूरि

विजयदेवसूरि

वीरसूरि

जिनदेवसूरि

यशोभद्रसूरि भावदेवसूरि

(वि०सं० १४१२/ईस्वी सन् १३५६ में

पार्श्वनाथचरित के रचनाकार)

कालकाचार्यकथा, यतिदिनचर्या, अलंकारसार, भक्तामरटीका आदि के कर्ता भावदेवसूरि को ब्राउन ने पार्श्वनाथचरित के कर्ता उपरोक्त भावदेवसूरि से अभिन्न माना है ।

इस गच्छ से सम्बद्ध अनेक प्रतिमालेख मिले हैं जो वि०सं० ११९६ से वि०सं० १६६४ तक के हैं । निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि वि०सं० की १२वीं शती में यह गच्छ अस्तित्व में आया और वि०सं० की १७वीं शती के अन्तिम चरण तक विद्यमान रहा ।

खरतरगच्छ - चन्द्रकुल के आचार्य वर्धमानसूरि के शिष्य जिनेश्वरसूरि ने चौलुक्य नरेश दुर्लभराज की राजसभा में शास्त्रार्थ में चैत्यवासियों को परास्त किया, जिससे प्रसन्न होकर राजा द्वारा उन्हें 'खरतर' का विरुद् प्राप्त हुआ। इस घटना से गुर्जरभूमि में सुविहितमार्गीय श्रमणों का विहार प्रारम्भ हो गया। जिनेश्वरसूरि की शिष्य-सन्तति प्रारम्भ में सुविहितमार्गीय और बाद में खरतरगच्छीय कहलायी। इस गच्छ में अनेक प्रभावशाली और प्रभावक आचार्य हुए और आज भी हैं। इस गच्छ के आचार्यों ने साहित्य की प्रत्येक विधाओं को अपनी लेखनी द्वारा समृद्ध किया, साथ ही जिनालयों के निर्माण, प्राचीन जिनालयों के पुनर्निर्माण एवं जिनप्रतिमाओं की प्रतिष्ठा में भी सक्रियरूप से भाग लिया।

युगप्रधानाचार्यगुर्वावली में इस गच्छ के ११वीं शती से १४वीं शती के अन्त तक के आचार्यों का जीवनचरित्र दिया गया है जो न केवल इस गच्छ के अपितु भारतवर्ष के तत्कालीन राजनैतिक इतिहास की दृष्टि से भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त इस गच्छ से सम्बद्ध अनेक विज्ञप्तिपत्र, पट्टावलियाँ, गुर्वावलियाँ, ऐतिहासिकगीत आदि मिलते हैं, जो इसके इतिहास के लिये अत्यन्त उपयोगी हैं। अन्यान्य गच्छों की भाँति इस गच्छ की भी कई शाखायें अस्तित्व में आयीं, जो इस प्रकार हैं -

१. **मधुकर शाखा** - आचार्य जिनवल्लभसूरि के समय वि०सं० ११६७/ईस्वी सन् ११११ में यह शाखा अस्तित्व में आयी।

२. **रुद्रपल्लीयशाखा** - वि०सं० १२०४ में आचार्य जिनेश्वरसूरि से यह शाखा अस्तित्व में आयी। इस शाखा में अनेक विद्वान् आचार्य हुए। श्री अगरचन्द नाहटा के अनुसार वि०सं० की १७वीं शती तक इस शाखा का अस्तित्व रहा।

३. **लघुखरतरशाखा** - वि०सं० १३३१/ई०सन् १२७५ में आचार्य जिनसिंह-सूरि से इस शाखा का उदय हुआ। अन्यान्य ग्रन्थों के रचनाकार, सुल्तान मुहम्मद तुगलक के प्रतिबोधक शासनप्रभावक आचार्य जिनप्रभसूरि इसी शाखा के थे। वि०सं० की १८वीं शती तक इस शाखा का अस्तित्व रहा।

✿ इस गच्छ का इतिहास प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर से तीन भागों में प्रकाशित हो चुका है।

४. बेगड़ शाखा - वि०सं० १४२२ में यह शाखा अस्तित्व में आयी । जिनेश्वरसूरि इस शाखा के प्रथम आचार्य हुए ।

५. पिप्पलकशाखा - वि०सं० १४७४ में जिनवर्धनसूरि द्वारा इस शाखा का उदय हुआ । नाहटाजी के अनुसार पिप्पलक नामक स्थान से सम्बद्ध होने से यह पिप्पलकशाखा के नाम से जाना गया ।

इसी नाम का एक गच्छ वडगच्छीय शांतिसूरि के शिष्य महेन्द्रसूरि, विजयसिंहसूरि आदि के द्वारा वि०सं० ११८१/ईस्वी सन् ११२५ में अस्तित्व में आया ।

६. आद्यपक्षीयशाखा - वि०सं० १५६४ में आचार्य जिनदेवसूरि से यह शाखा अस्तित्व में आयी । इस शाखा की एक गद्दी पाली में थी ।

७. भावहर्षीयशाखा - वि०सं० १६२१ में भावहर्षसूरि से इसका उदय हुआ । इस शाखा की एक गद्दी बालोतरा में है ।

८. लघुआचार्यशाखा - आचार्य जिनसागरसूरि से वि०सं० १६८६ में यह शाखा अस्तित्व में आयी । इसकी गद्दी बीकानेर में विद्यमान है ।

९. जिनरंगसूरिशाखा - यह शाखा वि०सं० १७०० में जिनरंगसूरि से प्रारम्भ हुई । इसकी गद्दी लखनऊ में थी ।

१०. श्रीसारीयशाखा - वि०सं० १७०० के लगभग यह शाखा अस्तित्व में आयी, परन्तु शीघ्र ही नामशेष हो गयी ।

११. मंडोवराशाखा - जिनमहेन्द्रसूरि द्वारा वि०सं० १८९२ में मंडोवरा नामक स्थान से इसका उदय हुआ । इसकी एक गद्दी जयपुर में विद्यमान थी ।

अगरचन्दजी नाहटा, भंवरलालजी नाहटा और महो० विनयसागरजीने इस गच्छ की साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों का न केवल संकलन और प्रकाशन किया है, अपितु उनका सम्यक् अध्ययन भी समाज के सम्मुख रखा है जो अपने आप में अद्वितीय है ।

चन्द्रगच्छ - चन्द्रकुल ही आगे चलकर चन्द्रगच्छ के नाम से प्रसिद्ध हुआ । राजगच्छ, वडगच्छ, खरतरगच्छ, पूर्णतल्लगच्छ, भावडारगच्छ,

पूर्णमागच्छ आदि कई गच्छ चन्द्रकुल से ही अस्तित्व में आये । इस गच्छ से सम्बद्ध विभिन्न प्रतिमालेख मिलते हैं जो वि०सं० १०७२ से वि०सं० १५५२ तक के हैं । **मुनिपतिचरित्र** (रचनाकाल वि०सं० १००५) एवं **जिनशतककाव्य** (रचनाकाल वि०सं० १०२५) के रचयिता जम्बूकवि अपरनाम जम्बूनाग इसी गच्छ के थे । **सनत्कुमारचरित** के रचनाकार चन्द्रसूरि भी इसी गच्छ के थे । इसी गच्छ के शिवप्रभसूरि के शिष्य श्रीतिलकसूरि ने वि०सं० १२६१ में **प्रत्येकबुद्धचरित** की रचना की । **वसन्तविलास** के रचनाकार बालचन्द्रसूरि, प्रसिद्ध ग्रन्थ संशोधक प्रद्युम्नसूरि, **शीलवतीकथा** के रचनाकार उदयप्रभसूरि इसी गच्छ के थे ।

चैत्रगच्छ- मध्ययुगीन श्वेताम्बर गच्छों में चैत्रगच्छ भी एक है । चैत्रपुर नामक स्थान से इस गच्छ की उत्पत्ति मानी जाती है । इस गच्छ के कई नाम मिलते हैं यथा - चैत्रवालगच्छ, चित्रवालगच्छ, चित्रपल्लीयगच्छ, चित्रगच्छ आदि । धनेश्वरसूरि इस गच्छ के आदिम आचार्य माने जाते हैं । इनके पट्टधर भुवनचन्द्रसूरि हुए जिनके प्रशिष्य और उपाध्याय देवभद्र के शिष्य जगच्चन्द्रसूरि से वि०सं० १२८५/ईस्वी सन् १२२९ में तपागच्छ का प्रादुर्भाव हुआ । देवभद्रसूरि के अन्य शिष्यों से चैत्रगच्छ की अविच्छिन्न परम्परा जारी रही । **सम्यक्त्वकौमुदी** (रचनाकाल वि०सं० १५०४/ईस्वी सन् १४४८) और **भक्तामरस्तवटीका** के रचनाकार गुणाकरसूरि इसी गच्छ के थे ।

चैत्रगच्छ से सम्बद्ध बड़ी संख्या में अभिलेखीय साक्ष्य प्राप्त होते हैं, जो वि०सं० १२६५ से वि०सं० १५९१ तक के हैं । इस गच्छ से कई अवान्तर शाखाओं का जन्म हुआ, जैसे भर्तृपुरीयशाखा, धारणपट्टीयशाखा, चतुर्दशीय-शाखा, चन्द्रसामीयशाखा, सलषणपुराशाखा, कम्बोइयाशाखा, अष्टापदशाखा, शार्दूलशाखा आदि ।

जाल्योधरगच्छ- विद्याधरगच्छ की द्वितीय शाखा के रूप में इस गच्छ का उदय हुआ । यह शाखा कब और किस कारण अस्तित्व में आयी, इसके पुरातन आचार्य कौन थे, साक्ष्यों के अभाव में ये प्रश्न अनुत्तरित हैं । इस गच्छ से सम्बद्ध मात्र दो प्रशस्तियाँ - **नन्दिपददुर्गवृत्ति** की दाताप्रशस्ति

(प्रतिलेखनकाल वि०सं० १२२६/ईस्वी सन् ११६०) और पद्मप्रभचरित (रचनाकाल वि०सं० ११९८) की प्रशस्ति ही मिलती है। पद्मप्रभचरित की प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि यह गच्छ विद्याधरगच्छ की एक शाखा थी।

इस गच्छ से सम्बद्ध कुछ अभिलेखीय साक्ष्य भी मिलते हैं जो वि०सं० १२१३ से वि०सं० १४२३ तक के हैं। ग्रन्थ प्रशस्तियों और अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर इस गच्छ के मुनिजनों के गुरु-परम्परा की एक तालिका बनती है, जो इस प्रकार है -

बालचन्द्रसूरि

गुणभद्रसूरि (वि०सं० १२२६ की नंदीदुर्गपदवृत्ति में उल्लिखित)

सर्वाणंदसूरि (पार्श्वनाथचरित- [अनुपलब्ध] के रचनाकार)

धर्मघोषसूरि

देवसूरि (वि०सं० १२५४/ईस्वी सन् ११९८ में पद्मप्रभचरित के रचनाकार)

हरिभद्रसूरि (वि०सं० १२९६/ईस्वी सन् १२४० प्रतिमालेख - घोघा)

हरिप्रभसूरि

चन्द्रसूरि

?

विबुधप्रभसूरि (वि०सं० १३९२ प्रतिमालेख)

ललितप्रभसूरि (वि०सं० १४२३/ईस्वी सन् १३६७ प्रतिमालेख)

जीरापल्लीगच्छ-राजस्थान प्रान्त के अर्बुदमण्डल के अन्तर्गत जीरावला नामक प्रसिद्ध स्थान है। यहाँ पार्श्वनाथ का एक महिम्न जिनालय विद्यमान

है जो जीरावला पार्श्वनाथ के नाम से जाना जाता है। बृहद्रच्छ पट्टावली में उसकी एक शाखा के रूप में इस गच्छ का उल्लेख मिलता है। जीरावला नामक स्थान से सम्बद्ध होने के कारण यह शाखा जीरापल्लीगच्छ के नाम से प्रसिद्ध हुई। इस गच्छ से सम्बद्ध कई प्रतिमालेख मिलते हैं, जो वि०सं० १४०६ से वि०सं० १५१५ तक के हैं। इसके सम्बन्ध में विशेष अध्ययन आगे के अध्याय में दिया गया है।

तपागच्छ—चैत्रगच्छीय आचार्य भुवनचन्द्रसूरि के प्रशिष्य और देवभद्रसूरि के शिष्य जगच्चन्द्रसूरि को आघाट में उग्र तप करने के कारण वि०सं० १२८५/ईस्वी सन् १२२९ में 'तपा' विरुद् प्राप्त हुआ, इसी कारण उनकी शिष्य सन्तति तपागच्छीय कहलायी। अपने जन्म से लेकर आज तक इस गच्छ की अविच्छिन्न परम्परा विद्यमान है और इसका प्रभाव उत्तरोत्तर बढ़ता ही जा रहा है। इस गच्छ में अनेक प्रभावक आचार्य और विद्वान् मुनिजन हो चुके हैं और आज भी हैं। इस गच्छ से सम्बद्ध बड़ी संख्या में साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्य प्राप्त होते हैं। अन्य गच्छों की भाँति इस गच्छ की भी कई अवान्तर शाखायें अस्तित्व में आयी, जैसे - बृहदपौषालिक, लघुपौषालिक, विजयाणंदसूरिशाखा, विमलशाखा, विजयदेवसूरिशाखा, सागरशाखा, रत्नशाखा, कमलकलशशाखा, कुतुबपुराशाखा, निगमशाखा आदि।

थारापद्रगच्छ—प्राक् मध्ययुगीन और मध्ययुगीन निर्ग्रन्थ धर्म के श्वेताम्बर आम्नाय के गच्छों में इस गच्छ का महत्त्वपूर्ण स्थान है। थारापद्र (वर्तमान थराद, बनासकांठा मंडल - उत्तर गुजरात) नामक स्थान से इस गच्छ का प्रादुर्भाव हुआ। इस गच्छ में ११वीं शती के प्रारम्भ में हुए आचार्य पूर्णभद्रसूरि ने वटेश्वर क्षमाश्रमण को अपना पूर्वज बतलाया है, परन्तु इस गच्छ के प्रवर्तक कौन थे, यह गच्छ कब अस्तित्व में आया, इस बारे में वे मौन हैं। इस गच्छ में ज्येष्ठाचार्य, शान्तिभद्रसूरि 'प्रथम', सिद्धान्तमहोदधि सर्वदेवसूरि, शान्तिभद्रसूरि 'द्वितीय', पूर्णभद्रसूरि, सुप्रसिद्ध पाइयटीका के रचनाकार वादिवेताल शान्तिसूरि, विजयसिंहसूरि आदि अनेक प्रभावक और विद्वान् आचार्य हुए हैं। **षडावश्यकवृत्ति** (रचनाकाल वि०सं० ११२२) और

❁ मेरे द्वारा लिखित इस गच्छ का इतिहास पुस्तक के रूप में ईस्वी सन् २००० में प्रकाशित हो चुका है।

काव्यालंकारटिप्पण के कर्ता नमिसाधु इसी गच्छ के थे। इस गच्छ से सम्बद्ध अभिलेखीय साक्ष्य भी पर्याप्त संख्या में प्राप्त हुए हैं, जो वि०सं० १०११ से वि०सं० १५३६ तक के हैं। इस प्रकार इस गच्छ का अस्तित्व प्रायः १६वीं शती के मध्य तक प्रमाणित होता है। चूँकि इसके पश्चात् इस गच्छ से सम्बद्ध साक्ष्यों का अभाव है। अतः यह माना जा सकता है कि उक्त काल के बाद इस गच्छ का अस्तित्व समाप्त हो गया होगा।

धर्मघोषगच्छ- राजगच्छीय आचार्य शीलभद्रसूरि के एक शिष्य धर्मघोषसूरि अपने समय के अत्यन्त प्रभावक आचार्य थे। नरेशत्रय प्रतिबोधक और दिग्म्बर विद्वान् गुणचन्द्र के विजेता के रूप में इनकी ख्याति रही। इनकी प्रशंसा में लिखी गयी अनेक कृतियाँ मिलती हैं, जो इनकी परम्परा में हुए उत्तरकालीन मुनिजनों द्वारा रची गयी हैं। धर्मघोषसूरि के मृत्योपरान्त इनकी शिष्यसन्तति अपने गुरु के नाम पर धर्मघोषगच्छ के नाम से विख्यात हुई। इस गच्छ में यशोभद्रसूरि, रविप्रभसूरि, उदयप्रभसूरि, पृथ्वीचन्द्रसूरि, प्रद्युम्नसूरि, ज्ञानचन्द्रसूरि आदि कई प्रभावक और विद्वान् आचार्य हुए जिन्होंने वि०सं० की १२वीं शती से वि०सं० की १७वीं शती के अन्त तक अपनी साहित्योपासना, तीर्थोद्धार, नूतन जिनालयों के निर्माण की प्रेरणा, जिनप्रतिमाओं की प्रतिष्ठा आदि द्वारा मध्ययुग में श्वेताम्बर श्रमण परम्परा को चिरस्थायित्व प्रदान करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

इस गच्छ से सम्बद्ध लगभग २०० अभिलेख मिले हैं जो वि०सं० १३०३ से वि०सं० १६९१ तक के हैं। ये लेख जिनमन्दिरों के स्तम्भादि और तीर्थकर प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण हैं, जो धर्मघोषगच्छ के इतिहास के अध्ययन के लिये अत्यन्त उपयोगी हैं।

नागपुरीयतपागच्छ- वडगच्छीय आचार्य वादिदेवसूरि के एक शिष्य पद्मप्रभसूरि ने नागौर में वि०सं० ११७४ या ११७७ में उग्र तप कर 'नागौरीतपा' विरुद् प्राप्त किया। इस आधार पर उनकी शिष्य संतति 'नागपुरीय तपागच्छ' के नाम से विख्यात हुई मुनि जिनविजय द्वारा संपादित विविधगच्छीयपट्टावलीसंग्रह और श्री मोहनलाल दलीचन्द देसाई द्वारा लिखित जैनगुर्जरकविओ (नवीन संस्करण)

भाग-९ में इस गच्छ की पट्टावली प्रकाशित हुई है। इसी गच्छ में १६वीं शती में पार्श्वचन्द्रसूरि हुए, जिनके नाम पर पार्श्वचन्द्रगच्छ का उदय हुआ, जो वर्तमान में भी अस्तित्ववान है।

नागेन्द्रगच्छ—जिस प्रकार चन्द्रकुल बाद में चन्द्रगच्छ के नाम से प्रसिद्ध हुआ, उसी प्रकार नागेन्द्रकुल भी नागेन्द्रगच्छ के नाम से विख्यात हुआ। पूर्व मध्ययुगीन और मध्ययुगीन गच्छों में इस गच्छ का विशिष्ट स्थान रहा। इस गच्छ में अनेक विद्वान् आचार्य हुए हैं। अणहिलपुरपाटन के संस्थापक वनराज चावड़ा के गुरु शीलगुणसूरि इसी गच्छ के थे। उनके शिष्य देवचन्द्रसूरि की एक प्रतिमा पाटन में विद्यमान है। अकोटा से प्राप्त ईस्वी सन् की सातवीं शताब्दी की दो जिनप्रतिमाओं पर नागेन्द्रकुल का उल्लेख मिलता है। महामात्य वस्तुपाल-तेजपाल के गुरु विजयसेनसूरि इसी गच्छ के थे। इसी कारण उनके द्वारा बनवाये गये मन्दिरों में मूर्तिप्रतिष्ठा उन्हीं के कर-कमलों से हुई। जिनहर्षगणि द्वारा रचित वस्तुपालचरित (रचनाकाल वि०सं० १४९७/ईस्वी सन् १४४१) से ज्ञात होता है कि विजयसेनसूरि के उपदेश से ही वस्तुपाल-तेजपाल ने संघ यात्रायें कीं और ग्रन्थभंडार स्थापित किये तथा जिनमंदिरों का निर्माण कराया। इनके शिष्य उदयप्रभसूरि ने धर्माभ्युदय-महाकाव्य (रचनाकाल वि०सं० १२९०/ईस्वी सन् १२३४) और उपदेशमालाटीका (रचनाकाल वि०सं० १२९९/ईस्वी सन् १२४३) की रचना की। इनकी प्रशस्ति में उन्होंने अपनी गुरु-परम्परा का सुन्दर विवरण दिया है जो इस गच्छ के इतिहास की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। वासुपूज्यचरित (रचनाकाल वि०सं० १२९९/ईस्वी सन् १२४३) के रचयिता वर्धमानसूरि और प्रबन्धचिन्तामणि के रचयिता मेरुतुंगसूरि भी इसी गच्छ के थे। इस गच्छ से सम्बद्ध प्रतिमालेख भी बड़ी संख्या में प्राप्त हुए हैं।

नाणकीयगच्छ - श्वेताम्बर चैत्यवासी गच्छों में नाणकीय गच्छ का प्रमुख स्थान है। इसके कई नाम मिलते हैं, जैसे - नाणगच्छ, ज्ञानकीयगच्छ, नाणावालगच्छ आदि। जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट होता है कि अर्बुदमण्डल में स्थित नाणा नामक स्थान से यह गच्छ अस्तित्व में आया। शांतिसूरि

इस गच्छ के आदिम आचार्य माने जाते हैं। उनके पट्ट पर क्रम से सिद्धसेनसूरि, धनेश्वरसूरि और महेन्द्रसूरि ये तीन आचार्य प्रतिष्ठित हुए। यही ४ नाम इस गच्छ के पट्टधर आचार्यों को पुनः-पुनः प्राप्त होते रहे। इस गच्छ के मुनिजनों की प्रेरणा से वि०सं० १२७२ में **बृहत्संग्रहणीपुस्तिका** और वि०सं० १५९२ में **षट्कर्मअवचूरि** की प्रतिलिपि करायी गयी। यह बात उनकी दाताप्रशस्ति से ज्ञात होती है। गच्छ से सम्बद्ध यही साहित्यिक साक्ष्य आज प्राप्त होते हैं। इसके विपरीत इस गच्छ से सम्बद्ध बड़ी संख्या में जिनप्रतिमायें मिली हैं जो वि०सं० ११०२ से वि०सं० १५९९ तक की हैं। इससे प्रतीत होता है कि इस गच्छ के मुनिजन पठन-पाठन की ओर से प्रायः उदासीन रहते हुए जिनप्रतिमा की प्रतिष्ठा और चैत्यों की देखरेख में ही प्रवृत्त रहते थे। श्रावकों को नूतन जिनप्रतिमाओं के निर्माण की प्रेरणा देना ही इनका प्रमुख कार्य रहा। सुविहितमार्गीय मुनिजनों के बढ़ते हुए प्रभाव के बावजूद चैत्यवासी गच्छों का लम्बे समय तक बने रहना समाज में उनकी प्रतिष्ठा और महत्त्व का परिचायक है।

निवृत्तिगच्छ - निर्ग्रन्थ दर्शन के चैत्यवासी गच्छों में निवृत्तिकुल (बाद में निवृत्तिगच्छ) भी एक है। **पर्युषणाकल्प** की 'स्थविरावली' में इस कुल का उल्लेख नहीं मिलता। इससे प्रतीत होता है कि यह कुल बाद में अस्तित्व में आया। इस कुल का सर्वप्रथम उल्लेख अकोटा से प्राप्त धातु की दो प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेखों में प्राप्त होता है। डॉ० उमाकान्त प्रेमानन्द शाह ने इन लेखों की वाचना इस प्रकार दी है -

१. ॐ देवधर्मोयं निवृ(वृ)तिकुले जिनभद्रवाचनाचार्यस्य ।

२. ॐ निवृ(वृ)तिकुले जिनभद्रवाचनाचार्यस्य ।

शाह ने इन प्रतिमाओं का काल ईस्वी सन् ५५० से ६०० के मध्य का माना है। दलसुखभाई मालवणिया के अनुसार वाचनाचार्य और क्षमाश्रमण समानार्थक शब्द हैं, अतः जिनभद्रवाचनाचार्य और प्रसिद्ध भाष्यकार जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण एक ही व्यक्ति माने जा सकते हैं।

उपमितिभवप्रपंचाकथा - (रचनाकाल वि०सं० ९६२/ईस्वी सन् ९०६), **सटीकन्यायावतार**, **उपदेशमालाटीका** के रचनाकार सिद्धर्षि, **चउपन्नमहापुरुषचरियं** (रचनाकाल वि०सं० ९२५/ईस्वी सन् ८६९) के रचनाकार शीलाचार्य अपरनाम विमलमति अपरनाम शीलाङ्क, प्रसिद्ध ग्रन्थसंशोधक द्रोणाचार्य, सूरार्य आदि भी इसी कुल से सम्बद्ध थे। यद्यपि इस कुल या गच्छ से सम्बद्ध अभिलेख वि०सं० १६वीं शती तक के हैं, परन्तु उनकी संख्या न्यून ही है।

इस गच्छ के आदिम आचार्य कौन थे, यह गच्छ कब अस्तित्व में आया, इस बारे में उपलब्ध साक्ष्यों से कोई जानकारी नहीं मिलती। यद्यपि पट्टावलियों में नागेन्द्र, चन्द्र और विद्याधर कुलों के साथ इस कुल की उत्पत्ति का भी विवरण मिलता है, किन्तु उत्तरकालीन एवं भ्रामक विवरणों से युक्त होने के कारण ये पट्टावलियाँ किसी भी गच्छ के प्राचीन इतिहास के अध्ययन के लिये यथेष्ट प्रामाणिक नहीं मानी जा सकती हैं। महावीर की परम्परा में निवृत्तिकुल का उल्लेख नहीं मिलता, अतः क्या यह पार्श्वपत्यों की परम्परा से लाटदेश में निष्पन्न हुआ ! यह अन्वेषणीय है।

पल्लीवालगच्छ- पल्ली (वर्तमान पाली, राजस्थान) नामक स्थान से पल्लीवाल ज्ञाति और श्वेताम्बरों के पल्लीवाल गच्छ की उत्पत्ति मानी जाती है। इस गच्छ से सम्बद्ध साहित्यिक और अभिलेखीय दोनों प्रकार के साक्ष्य प्राप्त होते हैं। **कालिकाचार्यकथा** (रचनाकाल वि०सं० १३६५) के रचनाकार महेश्वरसूरि, **पिंडविशुद्धिदीपिका** (रचनाकाल वि०सं० १६२७), **उत्तराध्ययन-बालावबोधिनी टीका** (रचनाकाल वि०सं० १६२९) और **आचारांगदीपिका** के रचयिता अजितदेवसूरि इसी गच्छ से सम्बद्ध थे। पल्लीवालगच्छ से सम्बद्ध जो प्रतिमालेख प्राप्त हुए हैं वे वि०सं० १३८३ से वि०सं० १६८१ तक के हैं। इस गच्छ की एक पट्टावली भी प्राप्त हुई है, जिसके अनुसार यह गच्छ चन्द्रकुल से उत्पन्न हुआ है।

पूर्णतल्लगच्छ - चन्द्रकुल से उत्पन्न गच्छों में पूर्णतल्लगच्छ भी एक है। इस गच्छ में जिनदत्तसूरि, यशोभद्रसूरि, प्रद्युम्नसूरि, गुणसेनसूरि, देवचन्द्रसूरि, कलिकालसर्वज्ञ हेमचन्द्रसूरि, अशोकचन्द्रसूरि, चन्द्रसेनसूरि, रामचन्द्रसूरि, गुणचन्द्रसूरि, बालचन्द्रसूरि आदि कई आचार्य हुए। तिलकमंजरीटिप्पण, जैनतर्कवार्तिकवृत्ति आदि के रचनाकार शांतिसूरि इसी गच्छ के थे। देवचन्द्रसूरि ने स्वरचित **शांतिनाथचरित** (रचनाकाल वि०सं० ११६०/ई० सन् ११०४) को प्रशस्ति में अपनी गुरु-परम्परा का उल्लेख किया है, जो इस प्रकार है -

यशोभद्रसूरि

|
प्रद्युम्नसूरि

|
गुणसेनसूरि

|
देवचन्द्रसूरि (वि०सं० ११६०/ईस्वी सन् ११०४ में शांतिनाथचरित के रचनाकार)

इसके अतिरिक्त देवचन्द्रसूरि ने **स्थानकप्रकरणटीका** अपरनाम **मूलशुद्धि-प्रकरणवृत्ति** की भी रचना की। चौलुक्यनरेश कुमारपालप्रतिबोधक, कलिकालसर्वज्ञ आचार्य हेमचन्द्रसूरि, **उत्पादसिद्धिप्रकरण** (रचनाकाल वि०सं० १२०५/ईस्वी सन् ११४९) के रचयिता चन्द्रसेनसूरि तथा अशोकचन्द्रसूरि उक्त देवचन्द्रसूरि के शिष्य थे। हेमचन्द्रसूरि की शिष्य परम्परा में प्रसिद्ध नाट्यकार रामचन्द्र-गुणचन्द्र, अनेकार्थसंग्रह के टीकाकार महेन्द्रसूरि, स्नातस्या नामक प्रसिद्ध स्तुति के रचयिता बालचन्द्रसूरि, उदयचन्द्रसूरि, यशश्चन्द्रसूरि, वर्धमानगणि आदि हुए।

पिप्पलगच्छ-वडगच्छीय आचार्य सर्वदेवसूरि के प्रशिष्य और नेमिचन्द्रसूरि के शिष्य आचार्य शांतिसूरि ने वि०सं० ११८१/ईस्वी सन् ११२५ में पीपलवृक्ष के नीचे महेन्द्रसूरि, विजयसिंहसूरि आदि आठ शिष्यों को आचार्य पद प्रदान किया। पीपलवृक्ष के नीचे उन्हें आचार्यपद प्राप्त होने के कारण उनकी शिष्यसन्तति पिप्पलगच्छीय कहलायी।

सिंहासनद्वित्रिंशिका (रचनाकाल वि०सं० १४८४/ईस्वी सन् १४२८) के रचनाकार सागरचन्द्रसूरि, **वस्तुपाल-तेजपाल रास** (रचनाकाल वि०सं० १४८४/ईस्वी सन् १४२८), **विद्याविलासपवाडो** आदि के कर्ता प्रसिद्ध ग्रन्थकार हीरानन्दसूरि, **कालकसूरिभास** के कर्ता आनन्दमेरु इसी गच्छ के थे। इस गच्छ की दो अवान्तर शाखाओं का पता चलता है -

१. त्रिभवीयाशाखा

२. तालध्वजीयशाखा

अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर वि०सं० १७७८ तक इस गच्छ का अस्तित्व सिद्ध होता है।

पूर्णमागच्छ या **पूर्णमापक्ष** - मध्ययुगीन श्वेताम्बर गच्छों में पूर्णमागच्छ का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। चन्द्रकुल के आचार्य जयसिंहसूरि के शिष्य चन्द्रप्रभसूरि द्वारा पूर्णमा को पाक्षिक पर्व मनाये जाने का समर्थन करने के कारण उनकी शिष्य सन्तति पूर्णमापक्षीय या पूर्णमागच्छीय कहलायी। वि०सं० ११४९ या ११५९ में इस गच्छ का आविर्भाव माना जाता है। इस गच्छ में आचार्य धर्मघोषसूरि, देवसूरि, चक्रेश्वरसूरि, समुद्रघोषसूरि, विमलगणि, देवभद्रसूरि, तिलकाचार्य, मुनिरत्नसूरि, कमलप्रभसूरि, महिमाप्रभसूरि आदि कई प्रखर विद्वान् आचार्य हो चुके हैं। इस गच्छ की कई आवन्तर शाखायें अस्तित्व में आयीं, जैसे - प्रधानशाखा या ढंढेरियाशाखा, सार्धपूर्णमाशाखा, कच्छोलीवालशाखा, भीमपल्लीयाशाखा, वटपट्टीयाशाखा, बोरसिद्धीयाशाखा, भृगुकच्छीयाशाखा, छापरियाशाखा आदि। पूर्णमागच्छ के मुनिजनों द्वारा रचित ग्रन्थों की प्रशस्तियों, उनकी प्रेरणा से लिपिबद्ध कराये गये प्राचीन ग्रन्थों की दाताप्रशस्तियों एवं पट्टावलियों में इस गच्छ के इतिहास की महत्वपूर्ण सामग्री संकलित है। यही बात इस गच्छ से सम्बद्ध बड़ी संख्या में प्रतिमालेखों के सम्बन्ध में भी कही जा सकती है।

ब्रह्माणगच्छ - अर्बुदमण्डल के अन्तर्गत वर्तमान वरमाण (प्राचीन ब्रह्माण) नामक स्थान से इस गच्छ की उत्पत्ति मानी जाती है। इस गच्छ से सम्बद्ध बड़ी संख्या में प्रतिमालेख प्राप्त होते हैं जो वि०सं० ११२४ से १६वीं शती के अन्त तक के

हैं। इन लेखों में विमलसूरि, बुद्धिसागरसूरि, उदयप्रभसूरि, मुनिचन्द्रसूरि आदि आचार्यों के नाम पुनः पुनः आते हैं, जिससे प्रतीत होता है कि इस गच्छ के मुनिजन चैत्यवासी रहे होंगे। इस गच्छ से सम्बद्ध साहित्यिक साक्ष्यों का प्रायः अभाव है, अतः इसके बारे में विशेष बातें ज्ञात नहीं होती हैं।

वडगच्छ - सुविहितमार्गप्रतिपालक और चैत्यवास विरोधी गच्छों में वडगच्छ का प्रमुख स्थान है। परम्परानुसार चन्द्रकुल के आचार्य उद्योतनसूरि ने वि०सं० ९९४ में आबू के निकट स्थित टेलीग्राम में वटवृक्ष के नीचे सर्वदेवसूरि सहित ८ शिष्यों को आचार्यपद प्रदान किया। वटवृक्ष के नीचे उन्हें आचार्यपद प्राप्त होने के कारण उनकी शिष्यसन्तति वडगच्छीय कहलायी। वटवृक्ष के समान इस गच्छ की भी अनेक शाखायें-प्रशाखायें अस्तित्व में आयीं, अतः इसका एक नाम बृहद्गच्छ भी पड़ गया। गुर्जरभूमि में विधिमार्गप्रवर्तक वर्धमानसूरि, उनके शिष्य जिनेश्वरसूरि और बुद्धिसागरसूरि, नवाङ्गीवृत्तिकार अभयदेवसूरि, आख्यानकमणिकोश के रचयिता देवेन्द्रगणि अपरनाम नेमिचन्द्रसूरि, उनके शिष्य आम्रदेवसूरि, प्रसिद्ध ग्रन्थकार मुनिचन्द्रसूरि, उनके पट्टधर प्रसिद्ध वादीदेवसूरि, रत्नप्रभसूरि, हरिभद्रसूरि आदि अनेक प्रभावक और विद्वान् आचार्य हो चुके हैं। इस गच्छ की कई अवान्तर शाखायें अस्तित्व में आयीं, जैसे वि०सं० ११४९ या ११५९ में यशोभद्र-नेमिचन्द्र के शिष्य और मुनिचन्द्रसूरि के ज्येष्ठ गुरुभ्राता चन्द्रप्रभसूरि से पूर्णिमागच्छ का उदय हुआ। इसी प्रकार वडगच्छीय शांतिसूरि द्वारा वि०सं० ११८१/ईस्वी सन् ११२५ में पीपलवृक्ष के नीचे महेन्द्रसूरि, विजयसिंहसूरि आदि ८ शिष्यों को आचार्यपद प्रदान करने के कारण उनकी शिष्यसन्तति पिप्पलगच्छीय कहलायी। अभिलेखीय साक्ष्यों द्वारा वि०सं० की १७वीं शती के अन्त तक वडगच्छ का अस्तित्व ज्ञात होता है।

मलधारीगच्छ या हर्षपुरीयगच्छ - हर्षपुर (वर्तमान हरसौर) नामक स्थान से इस गच्छ की उत्पत्ति मानी जाती है। जिनप्रभसूरि विरचित कल्पप्रदीप (रचनाकाल वि०सं० १३८९/ईस्वी सन् १३३३) के अनुसार एक बार चौलुक्यनरेश जयसिंह सिद्धराज ने हर्षपुरीयगच्छ के आचार्य अभयदेवसूरि को मलमलिन वस्त्र एवं उनके मलयुक्तदेह को देखकर उन्हें 'मलधारी' नामक उपाधि से अलंकृत किया। उसी समय से हर्षपुरीयगच्छ मलधारीगच्छ के नाम से विख्यात हुआ।

इस गच्छ में अनेक ग्रन्थों के प्रणेता हेमचन्द्रसूरि, विजयसिंहसूरि, श्रीचन्द्रसूरि, लक्ष्मणगणि, विबुधप्रभसूरि, जिनभद्रसूरि, मुनिचन्द्रसूरि, देवप्रभसूरि, नरचन्द्रसूरि, नरेन्द्रप्रभसूरि, राजशेखरसूरि, सुधाकलश आदि प्रसिद्ध आचार्य और विद्वान् मुनिजन हो चुके हैं। इस गच्छ के मुनिजनों द्वारा बड़ी संख्या में रची गयी कृतियों की प्रशस्तियों एवं गच्छ से सम्बद्ध वि०सं० ११९० से वि०सं० १६९९ तक के प्रतिमालेखों में इतिहास सम्बन्धी महत्वपूर्ण सामग्री प्राप्त होती है।

मोढगच्छ - गुजरात राज्य के मेहसाणा जिले में अवस्थित मोढेरा (प्राचीन मोढेर) नामक स्थान से मोढ ज्ञाति एवं मोढगच्छ की उत्पत्ति मानी जाती है। ईस्वी सन् की १०वीं शताब्दी की धातु की दो प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेखों में इस गच्छ का उल्लेख प्राप्त होता है। इससे प्रमाणित होता है कि उक्त तिथि के पूर्व यह गच्छ अस्तित्व में आ चुका था। **प्रभावकचरित** से भी उक्त मत की पुष्टि होती है। ईस्वी सन् ११७१/वि०सं० १२२७ के एक लेख में भी इस गच्छ का उल्लेख मिलता है। श्री पूरनचन्द नाहर ने इसकी वाचना इस प्रकार दी है -

सं० १२२७ वैशाख सुदि ३ गुरौ नंदाणि ग्रामेन्या श्राविकया आत्मीयपुत्र लूणदे श्रेयोर्थं चतुर्विंशति पट्टः कारिताः। श्रीमोढगच्छे बप्पभट्टिसंताने जिनभद्राचार्यैः प्रतिष्ठितः। **जैनलेखसंग्रह**, भाग-२, लेखांक-१६९४

वि०सं० १३२५ में प्रतिलिपि की गयी **कालकाचार्यकथा** की दाता प्रशस्ति में मोढगुरु हरिप्रभसूरि का उल्लेख प्राप्त होता है। यद्यपि इस गच्छ से सम्बद्ध साक्ष्य सीमित संख्या में प्राप्त होते हैं, फिर भी उनके आधार पर इस गच्छ का लम्बे काल तक अस्तित्व सिद्ध होता है। प्रो० एम० ए० ढांकी का मत है कि जैन धर्मानुयायी मोढ ज्ञाति द्वारा स्थानकवासी (अमूर्तिपूजक) जैनधर्म अथवा वैष्णवधर्म स्वीकार कर लेने से इस श्वेताम्बर मूर्तिपूजक गच्छ का अस्तित्व समाप्त हो गया।

राजगच्छ - चन्द्रकुल से समय-समय पर अनेक गच्छों का प्रादुर्भाव हुआ, राजगच्छ भी उनमें से एक है। वि०सं० की ११वीं शती के आस-पास इस गच्छ का प्रादुर्भाव माना जाता है। चन्द्रकुल के आचार्य प्रद्युम्नसूरि के प्रशिष्य और अभयदेवसूरि के शिष्य धनेश्वरसूरि 'प्रथम' दीक्षा लेने के पूर्व राजा थे, अतः उनकी शिष्य-सन्तति राजगच्छ के नाम से विख्यात हुई। इस गच्छ में धनेश्वरसूरि

‘द्वितीय’, अनेक कृतियों के कर्ता पार्श्वदेवगणि अपरनाम श्रीचन्द्रसूरि, सिद्धसेनसूरि, देवभद्रसूरि, माणिक्यचन्द्रसूरि, प्रभाचन्द्रसूरि आदि कई प्रभावक और विद्वान् आचार्य हुए हैं। इसी गच्छ के वादीन्द्र धर्मघोषसूरि की शिष्य सन्तति अपने गुरु के नाम पर धर्मघोषगच्छीय कहलायी।

यद्यपि राजगच्छ से सम्बद्ध अभिलेखीय साक्ष्य भी मिलते हैं जो वि०सं० ११२८ से वि०सं० १५०९ तक के हैं, तथापि उनकी संख्या न्यून ही है। साहित्यिक साक्ष्यों द्वारा इस गच्छ का अस्तित्व वि०सं० की १४वीं शती तक ही ज्ञात हो पाता है, किन्तु अभिलेखीय साक्ष्यों द्वारा वि०सं० की १६वीं शताब्दी के प्रारम्भ तक इस गच्छ का अस्तित्व प्रमाणित होता है।

रुद्रपल्लीयगच्छ यह खरतरगच्छ की एक शाखा है जो वि०सं० १२०४ में जिनेश्वरसूरि से अस्तित्व में आयी। रुद्रपल्ली नामक स्थान से इस गच्छ की उत्पत्ति हुई। इस गच्छ में देवसुन्दरसूरि, सोमसुन्दरसूरि, गुणसमुद्रसूरि, हर्षदेवसूरि, हर्षसुन्दरसूरि आदि कई आचार्य हुए हैं। वि०सं० की १७वीं शताब्दी तक इस गच्छ की विद्यमानता का पता चलता है।

वायडगच्छ - गुजरात राज्य के पालनपुर जिले में अवस्थित डीसा नामक स्थान के निकट वायड नामक गाम है, जहाँ से छठवीं-सातवीं शती में वायड ज्ञाति और वायडगच्छ की उत्पत्ति मानी जाती है। इस गच्छ में पट्टधर आचार्यों को जिनदत्तसूरि, राशिल्लसूरि और जीवदेवसूरि ये तीन नाम पुनः पुनः प्राप्त होते थे, जिससे पता चलता है कि इस गच्छ के अनुयायी चैत्यवासी रहे। **बालभारत** और **काव्यकल्पलता** के रचनाकार अमरचन्द्रसूरि, **विवेकविलास** व **शकुनशास्त्र** के प्रणेता जिनदत्तसूरि वायडगच्छ के ही थे। **सुकृतसंकीर्तन** का रचनाकार ठक्कुर अरिसिंह इसी गच्छ का अनुयायी एक श्रावक था।

विद्याधरगच्छ - नागेन्द्र, निर्वृत्ति और चन्द्रकुल की भाँति विद्याधरकुल भी बाद में विद्याधर गच्छ के रूप में प्रसिद्ध हुआ। इस गच्छ के कुछ प्रतिमालेख प्राप्त हुए हैं। जालिहरगच्छीय देवप्रभसूरि द्वारा रचित **पद्मप्रभचरित** (रचनाकाल वि०सं० १२५४/ईस्वी सन् ११९८) की प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि काशहद और जालिहर ये दोनों विद्याधरगच्छ की शाखायें थीं।

संडेरगच्छ - मध्ययुगीन श्वेताम्बर चैत्यवासी गच्छों में संडेरगच्छ का भी प्रमुख स्थान है। जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट होता है संडेर (वर्तमान सांडेराव-राजस्थान) नामक स्थान से यह गच्छ अस्तित्व में आया। ईश्वरसूरि इस गच्छ के आदिम आचार्य माने जाते हैं। शालिसूरि, सुमतिसूरि, शांतिसूरि और ईश्वरसूरि ये चार नाम पुनः पुनः इस गच्छ के पट्टधर आचार्यों को प्राप्त होते रहे। संडेरगच्छीय मुनिजनों द्वारा लिखित ग्रन्थों की प्रशस्तियों एवं उनकी प्रेरणा से लिखाये गये ग्रन्थों की दाता प्रशस्तियों में इस गच्छ के इतिहास की महत्वपूर्ण सामग्री संकलित है। यही बात इस गच्छ से सम्बद्ध प्रतिमालेखों - जो वि०सं० १०३९ से वि०सं० १७३२ तक के हैं, के बारे में भी कही जा सकती है। सागरदत्तरास (रचनाकाल वि०सं० १५५०), ललितांगचरित, श्रीपालचौपाई, सुमित्रचरित्र आदि के रचनाकार ईश्वरसूरि इसी गच्छ के थे। प्राचीन ग्रन्थों के प्रतिलेखन की पुष्पिकाओं के आधार पर ईस्वी सन् की १८वीं शती तक इस गच्छ का अस्तित्व ज्ञात होता है।

सरवालगच्छ - पूर्वमध्ययुगीन श्वेताम्बर चैत्यवासी गच्छों में सरवालगच्छ भी एक है। चन्द्रकुल की एक शाखा के रूप में इस गच्छ का उल्लेख प्राप्त होता है। इस गच्छ से सम्बद्ध वि०सं० १११० से वि०सं० १२८३ तक के कुछ प्रतिमालेख प्राप्त हुए हैं। पिण्डनिर्युक्तिवृत्ति (रचनाकाल वि०सं० ११६०/ईस्वी सन् ११०४) के रचयिता वीरगणि अपरनाम समुद्रघोषसूरि इसी गच्छ के थे। इस गच्छ के प्रवर्तन कौन थे, यह गच्छ कब अस्तित्व में आया, इस बारे में कोई जानकारी प्राप्त नहीं होती। सरवाल जैनों की कोई ज्ञाति थी अथवा किसी स्थान का नाम था जहाँ से यह गच्छ अस्तित्व में आया, यह अन्वेषणीय है।



अध्याय - ४ जैन श्वेताम्बर गच्छों का संक्षिप्त इतिहास

अड्डालिजीय गच्छ

जैन परम्परा के श्वेताम्बर सम्प्रदाय में विभिन्न स्थानों के नाम से उद्भूत अल्पजीवी गच्छों में अड्डालिजीय गच्छ भी एक है। अडालज नामक स्थान से सम्बद्ध होने के कारण इस गच्छ का उक्त नामकरण हुआ होगा। अहमदाबाद के निकट 'अडालज' नामक स्थान है जो शायद यही हो सकता है। इस गच्छ से सम्बद्ध साक्ष्यों में मात्र चार अभिलेख ही प्राप्त होते हैं जो बढवाण स्थित एक जिनालय में परिकर एवं एक जिनप्रतिमा पर उत्कीर्ण हैं। विजयधर्मसूरिने^१ इनकी वाचना दी है, जो निम्नानुसार है :-

१. सं० ११३६ फाल्गुन वदि ४ श्रीअड्डालिजीयगच्छे श्रीजीवदेवाचार्यसंताने कुंभानाजप्रतिबद्धसोढसुताशांतिना स्वस्वश्रेयोर्थ (स्वस्वश्रेयोऽर्थ) श्रीशांतिनाथप्रतिमा कारापिता ।

परिकर के नीचे का लेख

बड़ा जैन मंदिर, बढवाण, (गुजरात) ।

२. सं० १२०७ चैत्र वदि ५ स(श)नौ श्रीअड्डालिजीयगच्छे श्रीदेवाचार्यसंताने श्रे० सांति दुहिता स्नामी सांपी स्वश्रेयोर्थ (स्वश्रेयोऽर्थ) श्रीअजितनाथजिनयुगलं कारापितं ॥ मंगलं महाश्री ॥

अजितनाथ की युगलप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

बड़ा जैन मंदिर, बढवाण, (गुजरात) ।

३. संवत् १२२८ फाल्गुन वदि ५ भो (भौ) मे श्रीअड्डालिज्जगच्छे श्रीमोढवंशे श्रे० धांधू भार्या । चडवश्चाविकया आत्मश्रेयोर्थ (आत्मश्रेयोऽर्थ) श्रीश्रेयांसप्रतिमा कारिता ॥

परिकर के नीचे का लेख

बड़ा जैन मंदिर, बढवाण, (गुजरात) ।

४. संवत् १२७३ वर्षे कार्तिक वदि ५ सोमे श्रीमोढ..... श्रीअड्डालिज्ज-
गच्छीय श्रे० आसादेवसुत श्रे० शांतिपुत्रेण व्य० उदयपातेन श्रे०
षोहिणि स्वश्रेयोर्थ (स्वश्रेयोऽर्थ) श्रीमल्लिनाथजिनविंव (बिंब)
कारितमिति ।

परिकर के नीचे का लेख

बड़ा जैन मंदिर, बढवाण, (गुजरात) .

जैसा कि ऊपर हम देख चुके हैं प्रथम लेख में जो वि० सं० ११३६ का है, जीवदेवाचार्य की परम्परा के अनुयायी एक श्रावक द्वारा शांतिनाथ की प्रतिमा प्रतिष्ठापित करने की बात कही गयी है जबकि द्वितीय लेख में (जो वि० सं० १२०७ का है) देवसूरि की परम्परा के एक श्रावक द्वारा अजितनाथ की प्रतिमा प्रतिष्ठापित करने का उल्लेख है ।

श्वेताम्बर परम्परा में परकायप्रवेशविद्या में निपुण जीवदेवसूरि नामक एक प्रभावक आचार्य हो चुके हैं^२ जो वायडगच्छ के आदिम आचार्य माने जाते हैं । उनका काल ईस्वी सन् की ८वीं-९वीं शताब्दी माना जाता है ।^३ यदि ऊपरकथित अभिलेखों में उल्लिखित जीवदेवसूरि और देवसूरि से वायडगच्छ के प्रवर्तक जीवदेवसूरि की ओर संकेत है तो यह कहा जा सकता है कि वायडगच्छ या वायटीयगच्छ की एक शाखा के रूप में यह गच्छ अस्तित्व में आया होगा ।

इस गच्छ से सम्बद्ध तृतीय और चतुर्थ लेखों से भी ज्ञात होता है कि प्रतिमा प्रतिष्ठा का कार्य इस गच्छ के मुनिजनों द्वारा नहीं बल्कि श्रावकों द्वारा ही सम्पन्न होता रहा । वि० सं० १२६३ के पश्चात् इस गच्छ से सम्बद्ध कोई साक्ष्य नहीं मिलता । अतः यह माना जा सकता है कि इस गच्छ के अनुयायी श्रमण विक्रम सम्वत् की तेरहवीं शती के अन्त तक किन्हीं अन्य प्रभावशाली गच्छों में सम्मिलित हो गये होंगे ।

इस गच्छ के प्रवर्तक कौन थे ! वायडगच्छ की एक शाखा के रूप में यह गच्छ कब अस्तित्व में आया, साक्ष्यों के अभाव में ये सभी प्रश्न अनुत्तरित ही रह जाते हैं ।

संदर्भ :-

१. विजयधर्मसूरि-संपा० प्राचीनलेखसंग्रह, भाग-१, लेखांक २, १०, २१, ३२.
२. प्रभावकचरित, संपा० मुनि जिनविजय, पृष्ठ ४७-५३.
“जीवदेवसूरिप्रबन्ध” प्रबन्धकोश, संपा० मुनि जिनविजय, पृष्ठ ७-९.
३. M.A. Dhaky- “Vayatagaccha and Vayatiya Caityas” निर्ग्रन्थ, वर्ष २, १९९६ ई०स०, हिन्दी खण्ड, पृष्ठ ४०-४८.

आगमिक गच्छ/प्राचीन त्रिस्तुतिक गच्छ का संक्षिप्त इतिहास

पूर्वमध्यकाल में श्वेताम्बर श्रमणसंघ का विभिन्न गच्छों और उपगच्छों में विभाजन जैन धर्म के इतिहास की एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण घटना है। चन्द्रकुल (बाद में चन्द्रगच्छ) से अनेक छोटी-बड़ी शाखाओं (गच्छों) का प्रादुर्भाव हुआ और ये शाखायें पुनः कई उपशाखाओं में विभाजित हुईं। चन्द्रकुल की एक शाखा (वडगच्छ/बृहद्गच्छ) के नाम से प्रसिद्ध हुई। वडगच्छ से वि०सं० ११४९ में पूर्णिमागच्छ का प्रादुर्भाव हुआ और पूर्णिमागच्छ की एक शाखा वि० सं० की १३वीं शती से आगमिकगच्छ के नाम से प्रसिद्ध हुई।

पूर्णिमागच्छ के प्रवर्तक आचार्य चन्द्रप्रभसूरि के शिष्य आचार्य शीलगुणसूरि इस गच्छ के आदिम आचार्य माने जाते हैं। इस गच्छ में यशोभद्रसूरि, सर्वाणंदसूरि, विजयसिंहसूरि, अमरसिंहसूरि, हेमरत्नसूरि, अमररत्नसूरि, सोमप्रभसूरि, आणंदप्रभसूरि, मुनिरत्नसूरि, आनन्दरत्नसूरि आदि कई विद्वान् एवं प्रभावक आचार्य हुए हैं, जिन्होंने अपने साहित्यिक और धार्मिक क्रियाकलापों से श्वेताम्बर श्रमणसंघ को जीवन्त बनाये रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका प्रदान की।

पूर्णिमागच्छीय आचार्य शीलगुणसूरि और उनके शिष्य देवभद्रसूरि द्वारा जीवदयाणं तक का शक्रस्तव और ६७ अक्षरों का परमेष्ठीमन्त्र, तीन स्तुति से देववन्दन आदि बातों में आगमपक्ष के समर्थन से वि०सं० १२१४ या १२५० में आगमिकगच्छ अपरनाम त्रिस्तुतिकमत का प्रादुर्भाव हुआ।^१

आगमिक गच्छ के इतिहास के अध्ययन के लिये साहित्यिक और अभिलेखीय दोनों प्रकार के साक्ष्य उपलब्ध हैं। साहित्यिक साक्ष्यों के अन्तर्गत इस गच्छ के आचार्यों द्वारा लिखित ग्रन्थों की प्रशस्तियों तथा इस गच्छ और इसकी शाखाओं की पट्टावलियों का उल्लेख किया जा सकता है। अभिलेखीय साक्ष्यों के अन्तर्गत इस गच्छ के आचार्यों / मुनिजनों द्वारा प्रतिष्ठापित जिन प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेखों को रखा गया है, इनकी संख्या सवा दो सौ के आसपास है।

पट्टावलियों द्वारा इस गच्छ की दो शाखाओं—धंधूकीया और विडालंबीया का पता चलता है।

आगमिकगच्छ और उसकी शाखाओं की पट्टावलियों की तालिका इस प्रकार है :

क्रमाङ्क	पट्टावली का नाम	रचनाकार	संभावित तिथि	संदर्भ ग्रन्थ
१.	आगमिकागच्छपट्टावली	अज्ञात	१३वीं शती लगभग	विविधगच्छीयपट्टावलीसंग्रह, संपा० जिनविजय, पृ. ९-१२
२.	आगमिकागच्छपट्टावली	अज्ञात	१६वीं शती लगभग	जैनगूर्जरकविओ, भाग-३, परिशिष्ट, संपा० मोहनलाल दलीचंद देसाई, पृष्ठ २२२४-२२३२
३.	धंधूकीया शाखा की पट्टावली	अज्ञात	१७वीं शती लगभग	वही, पृष्ठ २२३२
४.	विडालंबीया शाखा की पट्टावली	अज्ञात	१८वीं शती लगभग	वही पृष्ठ २२३३
५.	आगमिकागच्छपट्टावली	मुनिसागरसूरि	१६वीं शती लगभग	पट्टावलीसमुच्चय, भाग-२, पृष्ठ १५८-१६२ जैनसत्यप्रकाश, वर्ष ६, अंक-४, जैन परम्परानो इतिहास, भाग-२,

क्रमाङ्क	पट्टावली का नाम	रचनाकार	संभावित तिथि	संदर्भ ग्रन्थ
				पृष्ठ ५४०-५४२ विविधगच्छीयपट्टावलीसंग्रह, पृष्ठ २३४-२३५
६.	धंधूकीयाशाखा की पट्टावली	अज्ञात	१७वीं शती लगभग	विविधगच्छीयपट्टावलीसंग्रह, पृष्ठ २३५-२३६

उक्त तालिका की प्रथम पट्टावली में आगमिकगच्छ के प्रवर्तक आचार्य शीलगुणसूरि का पूर्णिमागच्छीय आचार्य चन्द्रप्रभसूरि के शिष्य के रूप में उल्लेख है। इसके अतिरिक्त इस पट्टावली से आगमिकगच्छ के इतिहास के बारे में कोई सूचना नहीं मिलती है।

तालिका में प्रदर्शित अंतिम दोनों पट्टावलियाँ इस प्रकार हैं :-

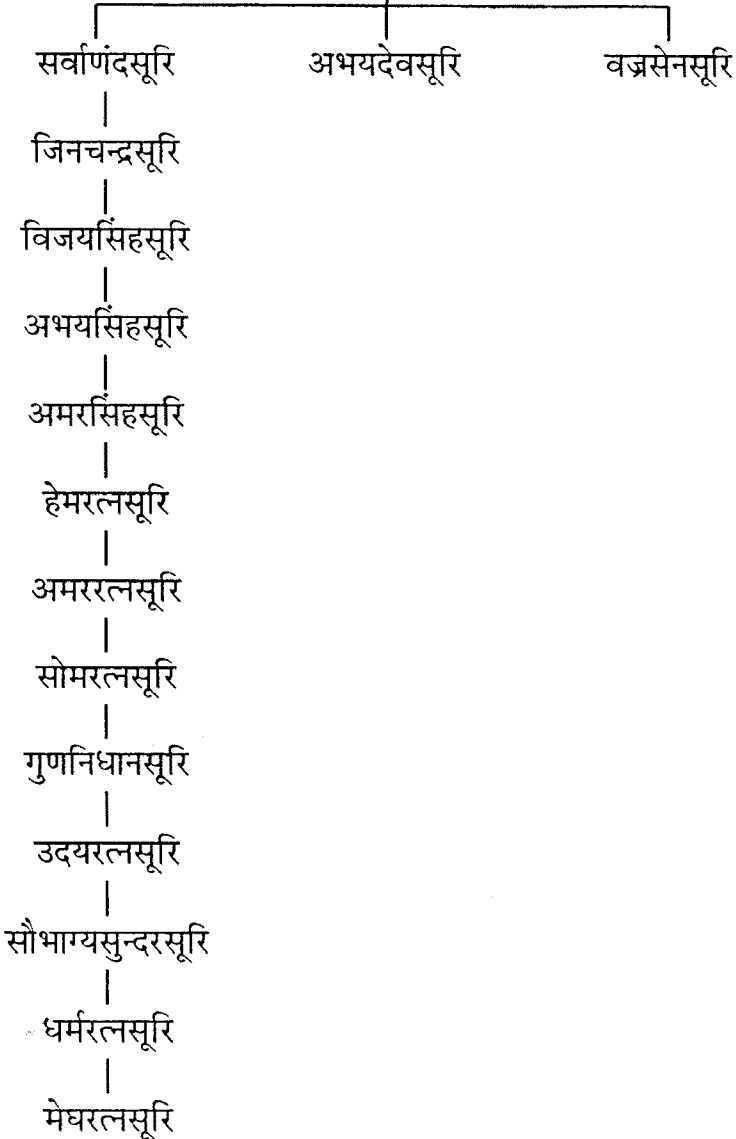
मुनिसागरसूरि द्वारा रचित आगमिकगच्छपट्टावली में उल्लिखित गुरु-परम्परा की सूची

शीलगुणसूरि [आगमिकगच्छ के प्रवर्तक]
 |
 देवभद्रसूरि
 |
 धर्मघोषसूरि
 |
 यशोभद्रसूरि
 |
 सर्वाणंदसूरि
 |
 अभयदेवसूरि
 |
 वज्रसेनसूरि
 |
 जिनचन्द्रसूरि
 |
 हेमसिंहसूरि
 |
 रत्नाकरसूरि
 |
 विजयसिंहसूरि
 |

गुणसमुद्रसूरि
 |
 अभयसिंहसूरि
 |
 सोमतिलकसूरि
 |
 सोमचन्द्रसूरि
 |
 गुणरत्नसूरि
 |
 मुनिसिंहसूरि
 |
 शीलरत्नसूरि
 |
 आणंदप्रभसूरि
 |
 मुनिरत्नसूरि
 |
 मुनिसागरसूरि [पट्टावली के लेखक]

तालिका में क्रमाङ्क ६ पर प्रदर्शित आगमिकगच्छ (धंधूकीयाशाखा) की पट्टावली में उल्लिखित गुरु-परम्परा की सूची :-

शीलगुणसूरि
 |
 देवभद्रसूरि
 |
 धर्मघोषसूरि
 |
 यशोभद्रसूरि
 |



जैसा कि स्पष्ट है, उक्त दोनों पट्टावलियां आगमिकगच्छ के प्रकटकर्ता शीलगुणसूरि से प्रारम्भ होती हैं। इसमें प्रारम्भ के ४ आचार्यों के नाम भी समान हैं, अतः इस समय तक शाखाभेद नहीं हुआ था, ऐसा माना जा

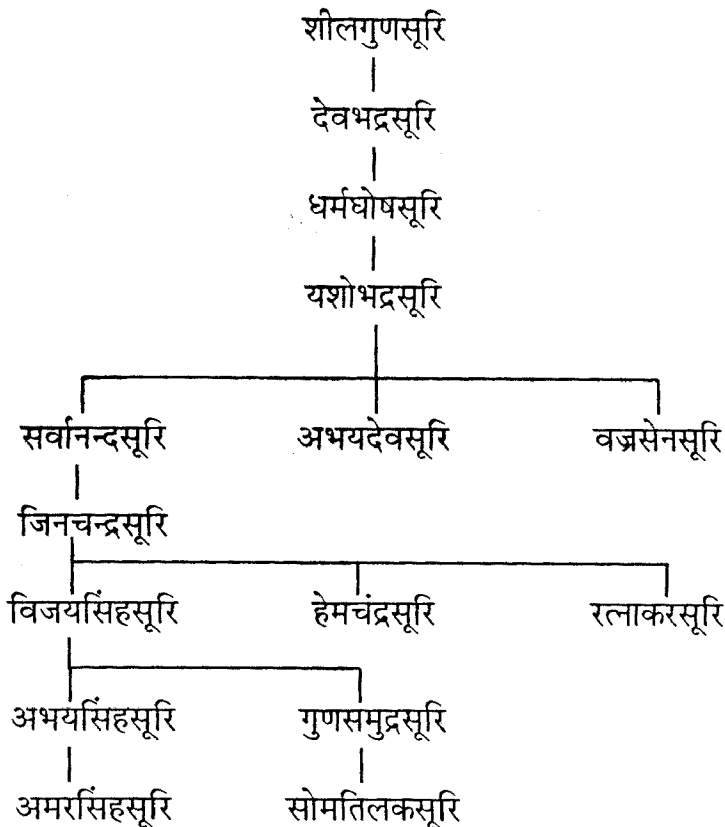
सकता है। आगे यशोभद्रसूरि के तीन शिष्यों-सर्वाणंदसूरि, अभयदेवसूरि और वज्रसेनसूरि को पट्टावलीकार मुनिसागरसूरि ने एक सीधे क्रम में रखा है वहीं धंधूकीया शाखा की पट्टावली में उन्हें यशोभद्रसूरि का शिष्य बतलाया गया है। सर्वाणंदसूरि की शिष्यपरम्परा में जिनचन्द्रसूरि हुए, शेष दो आचार्यों अभयदेवसूरि और वज्रसेनसूरि की शिष्यपरम्परा आगे नहीं चली। जिनचन्द्रसूरि के शिष्य विजयसिंहसूरि का दोनों पट्टावलियों में समान रूप से उल्लेख है। पट्टावलीकार मुनिसागरसूरि ने जिनचन्द्रसूरि के दो अन्य शिष्यों हेमसिंहसूरि और रत्नाकरसूरि का भी उल्लेख किया है, परन्तु उनकी परम्परा आगे नहीं चली। विजयसिंहसूरि के शिष्य अभयसिंहसूरि का नाम भी दोनों पट्टावलियों में समान रूप से मिलता है। अभयसिंहसूरि के दो शिष्यों-अमरसिंहसूरि और सोमतिलकसूरि से यह गच्छ दो शाखाओं में विभाजित हो गया। अमरसिंहसूरि की शिष्यसन्तति आगे चलकर धन्धूकीया शाखा और सोमतिलकसूरि की शिष्यपरम्परा विडालंबीया शाखा के नाम से जानी गयी। यह उल्लेखनीय है कि प्रतिमालेखों में कहीं भी इन शाखाओं का उल्लेख नहीं हुआ है, वहाँ सर्वत्र केवल आगमिकगच्छ का ही उल्लेख है, किन्तु कुछ प्रशस्तियों में स्पष्ट रूप से इन शाखाओं का नाम मिलता है तथा दोनों शाखाओं की पट्टावलियाँ तो स्वतन्त्र रूप से मिलती ही हैं, जिनकी प्रारम्भ में चर्चा की जा चुकी है।

अभयसिंहसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित एक जिनप्रतिमा पर वि० सं० १४२१ का लेख उत्कीर्ण है, अतः यह माना जा सकता है कि वि० सं० १४२१ के पश्चात् अर्थात् १५वीं शती के मध्य के आसपास यह गच्छ दो शाखाओं में विभाजित हुआ होगा।

चूँकि इस गच्छ के इतिहास से सम्बद्ध जो भी साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्य उपलब्ध हैं, वे १५वीं शती के पूर्व के नहीं हैं और इस समय तक यह गच्छ दो शाखाओं में विभाजित हो चुका था अतः इन दोनों शाखाओं का ही अध्ययन कर पाना सम्भव है। शीलगुणसूरि तक के ८

पट्टधर आचार्यों में केवल अभयसिंहसूरि का ही वि० सं० १४२१ के एक प्रतिमा लेख में प्रतिमा प्रतिष्ठापक के रूप में उल्लेख है। शेष ७ आचार्यों के बारे में मात्र पट्टावलियों से ही न्यूनाधिक सूचनायें प्राप्त होती हैं, अन्य साक्ष्यों से नहीं। लगभग २०० वर्षों की अवधि में किसी गच्छ में ८ पट्टधर आचार्यों का होना असम्भव नहीं लगता, अतः आगमिक गच्छ के विभाजन के पूर्व इन पट्टावलियों की सूचना को स्वीकार करने में कोई बाधा नहीं है।

जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है अभयसिंहसूरि के पश्चात् उनके शिष्यों अमरसिंहसूरि और सोमतलिकसूरि की शिष्यसन्तति आगे चलकर क्रमशः धन्धूकीयाशाखा और विडालंबीयाशाखा के नाम से जानी गयी, यह बात निम्न प्रदर्शित तालिका से स्पष्ट होती है :-



हेमरत्नसूरि

सोमचन्द्रसूरि

अमररत्नसूरि

गुणरत्नसूरि

सोमरत्नसूरि

मुनिर्सिंहसूरि

धंधूकीयाशाखा
प्रारम्भ.....

विडालंबीया
शाखा प्रारम्भ....

अध्ययन की सुविधा के लिये दोनों शाखाओं का अलग-अलग विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है। इनमें सर्वप्रथम साहित्यिक साक्ष्यों और तत्पश्चात् अभिलेखीय साक्ष्यों के विवरणों की विवेचना की गयी है।

साहित्यिक साक्ष्य

१- पुण्यसाररास^१—यह कृति आगमगच्छीय आचार्य हेमरत्नसूरि के शिष्य साधुमेरु द्वारा वि० सं० १५०१ पौष वदि ११ सोमवार को धंधूका नगरी में रची गयी। कृति के अन्त में रचनाकार ने अपनी गुरु-परम्परा का उल्लेख किया है, जो इस प्रकार है —

अमरसिंहसूरि

हेमरत्नसूरि

साधुमेरु [रचनाकार]

२- अमररत्नसूरिफागु^२—मरु-गुर्जर भाषा में लिखित १८ गाथाओं की इस कृति को श्री मोहनलाल दलीचन्द देसाई ने वि० सम्वत् की १६वीं शती की रचना मानी है। इस कृति में रचनाकार ने अपना परिचय केवल

अमररत्नसूरिशिष्य इतना ही बतलाया है। यह रचना प्राचीनफागुसंग्रह में प्रकाशित है।

।
अमरसिंहसूरि
।

अमररत्नसूरिशिष्य [रचनाकार]

३- सुन्दरराजारास^४—आगमगच्छीय अमररत्नसूरि की परम्परा के कल्याणराजसूरि के शिष्य क्षमाकलश ने वि० सं० १५५१ में इस कृति की रचना की। क्षमाकलश की दूसरी कृति ललिताङ्गकुमाररास वि० सं० १५५३ में रची गयी है। दोनों ही कृतियाँ मरु-गूर्जर भाषा में हैं। इसकी प्रशस्ति में रचनाकार ने अपनी गुरु-परम्परा का सुन्दर परिचय दिया है, जो इस प्रकार है —

अमररत्नसूरिशिष्य

।
अमररत्नसूरि

।
सोमरत्नसूरि

।
कल्याणराजसूरि

।

क्षमाकलश [सुन्दरराजारास एवं

ललिताङ्गकुमाररास के कर्ता]

४-लघुक्षेत्रसमासचौपाई^५—यह कृति आगमगच्छीय मतिसागरसूरि द्वारा वि०सं० १५९४ में पाटन नगरी में रची गयी है। इसकी भाषा मरु-गूर्जर है। रचना के प्रारम्भ और अन्त में रचनाकार ने अपनी गुरु-परम्परा की चर्चा की है, जो इस प्रकार है —

सोमरत्नसूरि
।

गुणनिधानसूरि

|

उदयरत्नसूरि

|

गुणमेरुसूरि

|

मतिसागरसूरि [रचनाकार]

अभिलेखीय साक्ष्य

आगमिक गच्छ के मुनिजनों द्वारा प्रतिष्ठापित तीर्थङ्कर प्रतिमाओं पर वि० सं० १४२१ से वि० सं० १६८३ तक के लेख उत्कीर्ण हैं। इन प्रतिमालेखों के आधार पर इस गच्छ के कुछ मुनिजनों के पूर्वापर सम्बन्ध स्थापित होते हैं, जो इस प्रकार हैं —

१. अमरसिंहसूरि—इनके द्वारा वि० सं० १४५१ से वि० सं० १४७८ के मध्य प्रतिष्ठापित ७ प्रतिमा लेख उपलब्ध हैं, इनका विवरण इस प्रकार है—

वि०सं० १४५१	ज्येष्ठ सुदि ४ रविवार	१ प्रतिमालेख
वि०सं० १४६२	वैशाख सुदि ३	"
वि०सं० १४६५	माघ सुदि ३ रविवार	"
वि०सं० १४७०	तिथि विहीन	"
वि०सं० १४७५	" "	"
वि०सं० १४७६	चैत्र वदि १ शनिवार	"
वि०सं० १४७८	वैशाख सुदि ३ गुरुवार	"

२. अमरसिंहसूरि के पट्टधर हेमरत्नसूरि—हेमरत्नसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित ४० प्रतिमायें अद्यावधि उपलब्ध हुई हैं। ये सभी प्रतिमायें लेख युक्त हैं। इन पर वि०सं० १४८४ से वि० सं० १५२१ तक के लेख उत्कीर्ण हैं। इनका विवरण इस प्रकार है —

वि०सं० १४८४	वैशाख सुदि ३ शुक्रवार	१ प्रतिमालेख
वि०सं० १४८४	मार्गशीर्ष सुदि ५ रविवार	"
वि०सं० १४८५	ज्येष्ठ वदि.....	२ प्रतिमालेख
वि०सं० १४८७	माघ सुदि ५ गुरुवार	१ प्रतिमालेख
वि०सं० १४८८	ज्येष्ठ सुदि १० शुक्रवार	"
वि०सं० १४८९	माघ वदि २ शुक्रवार	"
वि०सं० १४८९	तिथि विहीन	"
वि०सं० १४९०	फाल्गुन-सोमवार	"
वि०सं० १४९१	द्वितीय ज्येष्ठ वदि ७ शनिवार	"
वि०सं० १४९२	ज्येष्ठ वदि	"
वि०सं० १५०३	माघ वदि ८ बुधवार	"
वि०सं० १५०४	फाल्गुन सुदि १२ गुरुवार	"
वि०सं० १५०५	माघ सुदि ९ शनिवार	२ प्रतिमालेख
वि०सं० १५०६	तिथि विहीन	"
वि०सं० १५०७	ज्येष्ठ सुदि ९	१ प्रतिमालेख
वि०सं० १५०७	माघ सुदि १३ शुक्रवार	"
वि०सं० १५१२	तिथि विहीन	२ प्रतिमालेख
वि०सं० १५१२	ज्येष्ठ वदि ५ सोमवार	१ प्रतिमालेख
वि०सं० १५१२	ज्येष्ठ सुदि १० रविवार	"
वि०सं० १५१२	वैशाख वदि १० शुक्रवार	२ प्रतिमालेख
वि०सं० १५१२	वैशाख सुदि ५ शुक्रवार	३ प्रतिमालेख
वि०सं० १५१२	फाल्गुन वदि ३ शुक्रवार	१ प्रतिमालेख
वि०सं० १५१५	वैशाख सुदि १० गुरुवार	"
वि०सं० १५१५	फाल्गुन सुदि ८ शनिवार	"

वि०सं० १५१६	वैशाख सुदि ३	"
वि०सं० १५१७	वैशाख सुदि ३ सोमवार	"
वि०सं० १५१८	माघ सुदि ५ गुरुवार	"
वि०सं० १५१९	वैशाख वदि ११ शुक्रवार	"
वि०सं० १५१९	वैशाख सुदि ३ गुरुवार	२ प्रतिमालेख
वि०सं० १५१९	माघ वदि ९ शनिवार	१ प्रतिमालेख
वि०सं० १५१९	माघ सुदि ३ सोमवार	"
वि०सं० १५२१	आषाढ सुदि १ गुरुवार	"

३. हेमरत्न के पट्टधर अमररत्नसूरि—इनके द्वारा वि० सं० १५२४ से वि० सं० १५४७ के मध्य प्रतिष्ठापित १८ प्रतिमायें उपलब्ध हुई हैं। इनका विवरण इस प्रकार है —

वि०सं० १५२४	वैशाख सुदि २ गुरुवार	१ प्रतिमालेख
वि०सं० १५२४	कार्तिक वदि १३ शनिवार	१ प्रतिमालेख
वि०सं० १५२५	तिथि विहीन	"
वि०सं० १५२७	तिथि विहीन	"
वि०सं० १५२८	वैशाख सुदि ५ शुक्रवार	"
वि०सं० १५२९	ज्येष्ठ वदि १ शुक्रवार	२ प्रतिमालेख
वि०सं० १५३०	माघ वदि २ शुक्रवार	१ प्रतिमालेख
वि०सं० १५३१	माघ सुदि ५	"
वि०सं० १५३२	वैशाख सुदि ३	४ प्रतिमालेख
वि०सं० १५३२	ज्येष्ठ वदि १३ बुधवार	१ प्रतिमालेख
वि०सं० १५३५	वैशाख सुदि ६ सोमवार	"
वि०सं० १५३५	आषाढ सुदि २ मंगलवार	"
वि०सं० १५३६	वैशाख सुदि ३ शुक्रवार	"

वि०सं० १५४७ वैशाख सुदि ५ गुरुवार "

४. अमररत्नसूरि के षट्पद सोमरत्नसूरि—इनके द्वारा प्रतिष्ठापित १२ प्रतिमायें मिलती हैं, जो वि० सं० १५४८ से वि० सं० १५८१ तक की हैं। इसका विवरण इस प्रकार है —

वि०सं० १५४८	वैशाख सुदि ३	१ प्रतिमालेख
वि०सं० १५५२	वैशाख सुदि ३	"
वि०सं० १५५२	माघ वदि ८ शनिवार	"
वि०सं० १५५५	ज्येष्ठ सुदि ९ रविवार	"
वि०सं० १५५६	वैशाख सुदि १३ रविवार	"
वि०सं० १५६७	वैशाख सुदि ३ बुधवार	"
वि०सं० १५६९	वैशाख सुदि ९ शुक्रवार	"
वि०सं० १५७१	चैत्र वदि २ गुरुवार	"
वि०सं० १५७१	चैत्र वदि ७ गुरुवार...?	"
वि०सं० १५७३	वैशाख सुदि ६ गुरुवार	"
वि०सं० १५७३	फाल्गुन सुदि २ रविवार	"
वि०सं० १५८१	माघ सुदि ५ गुरुवार	"

इस प्रकार अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर आगमगच्छ के उक्त मुनिजनों का जो पूर्वापर सम्बन्ध स्थापित होता है, वह इस प्रकार है —

अमरसिंहसूरि [वि० सं० १४५१-१४८३]

हेमरत्नसूरि [वि० सं० १४८४-१५२१]

अमररत्नसूरि [वि० सं० १५२४-१५४७]

सोमरत्नसूरि [वि० सं० १५४८-१५८१]

पूर्व प्रदर्शित पट्टावलियों की तालिका में श्री मोहनलाल दलीचन्द देसाई द्वारा आगमिकगच्छ और उसकी दोनों शाखाओं की अलग-अलग प्रस्तुत की गई पट्टावलियों को रखा गया है। देसाई द्वारा दी गयी आगमिकगच्छ की गुर्वावली जीवगुणसूरि से प्रारम्भ होकर हेमरत्नसूरि तक एवं धंधूकीया शाखा की गुर्वावली अमररत्नसूरि से प्रारम्भ होकर मेघरत्नसूरि तक के विवरण के पश्चात् समाप्त होती है। ये दोनों गुर्वावलियां मुनि जिनविजयजी द्वारा दी गई धंधूकीयाशाखा की गुर्वावली [जो शीलगुणसूरि से प्रारम्भ होकर मेघरत्नसूरि तक के विवरण के पश्चात् समाप्त होती है] से अभिन्न हैं अतः इन्हें अलग-अलग मानने और इनकी अप्रामाणिकता का कोई प्रश्न ही नहीं उठता है।

अभिलेखीय साक्ष्यों द्वारा ज्ञात पूर्वोक्त चार आचार्यों [अमरसिंहसूरि-हेमरत्नसूरि-अमररत्नसूरि-सोमरत्नसूरि] के नाम इसी क्रम में धंधूकीया शाखा की पट्टावली में मिल जाते हैं। इसके अतिरिक्त ग्रंथप्रशस्तियों द्वारा आगमिक गच्छ के मुनिजनों के जो नाम ज्ञात होते हैं, उनमें से न केवल कुछ नाम धंधूकीयाशाखा की पट्टावली में मिलते हैं, बल्कि इस शाखा के साधुमेरुसूरि, कल्याणराजसूरि, क्षमाकलशसूरि, गुणमेरुसूरि, मतिसागरसूरि आदि ग्रन्थकारों के नाम केवल उक्त ग्रंथप्रशस्तियों से ही ज्ञात होते हैं।

इस प्रकार धंधूकीया शाखा की परम्परागत पट्टावली में उल्लिखित अभयसिंहसूरि, अमरसिंहसूरि, हेमरत्नसूरि, अमररत्नसूरि, सोमरत्नसूरि आदि आचार्यों के बारे में जहाँ अभिलेखीय साक्ष्यों द्वारा कालनिर्देश की जानकारी होती है, वहीं ग्रन्थप्रशस्तियों के आधार पर इस शाखा के अन्य मुनिजनों के बारे में भी जानकारी प्राप्त होती है।

साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों के संयोग से आगमिकगच्छ की धंधूकीया शाखा की परम्परागत पट्टावली को जो नवीन स्वरूप प्राप्त होता है, वह इस प्रकार है —

साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर निर्मित

आगमिकगच्छ [धंधूकीयाशाखा] का वंशवृक्ष

[तालिका-१]

शीलगुणसूरि

|

देवभद्रसूरि

|

धर्मघोषसूरि

|

यशोभद्रसूरि

|

सर्वाणंदसूरि अभयदेवसूरि वज्रसेनसूरि

|

जिनचन्द्रसूरि

|

विजयसिंहसूरि

|

अभयसिंहसूरि [वि० सं० १४२१] प्रतिमालेख

|

अमरसिंहसूरि [वि० सं० १४२१-१४८३] प्रतिमालेख

|

हेमरत्नसूरि [वि० सं० १४८४-१५२१] प्रतिमालेख

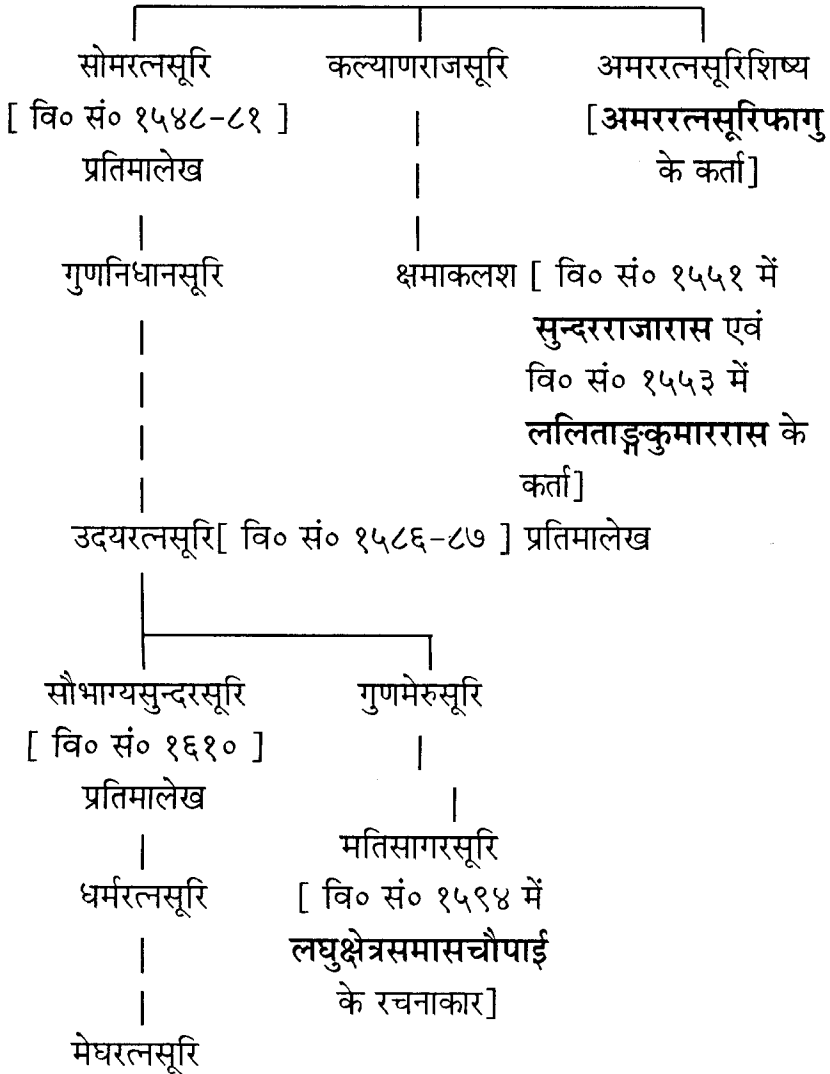
|

साधुमेरु

अमररत्नसूरि [वि० सं० १५२४-४३] प्रतिमालेख

[वि० सं० १५०१ में

पुण्यसाररास के कर्ता]



जैसा कि पूर्व में ही स्पष्ट किया जा चुका है, अभयसिंहसूरि के पश्चात् उनके शिष्यों अमरसिंहसूरि और सोमतिलकसूरि से आगमिकगच्छ की दो शाखायें अस्तित्व में आयीं। अमरसिंहसूरि की शिष्यसंतति आगे चलकर धंधूकीया शाखा के नाम से जानी गयी। उसी प्रकार सोमतिलकसूरि की शिष्य परम्परा विडालंबीयाशाखा के नाम से प्रसिद्ध हुई।

मुनिसागरसूरि द्वारा रचित **आगमिकगच्छपट्टावली** में अभयसिंहसूरि के पश्चात् सोमतिलकसूरि से मुनिरत्नसूरि तक ७ आचार्यों का क्रम इस प्रकार मिलता है —

सोमतिलकसूरि

|

सोमचंद्रसूरि

|

गुणरत्नसूरि

|

मुनिसिंहसूरि

|

शीलरत्नसूरि

|

आनन्दप्रभसूरि

|

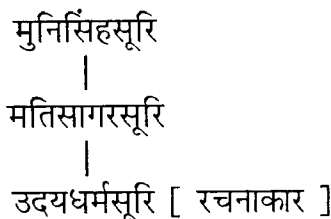
मुनिरत्नसूरि

साहित्यिक साक्ष्यों के आधार पर इस पट्टावली के गुणरत्नसूरि और मुनिरत्नसूरि के अन्य शिष्यों के सम्बन्ध में भी जानकारी प्राप्त होती है।

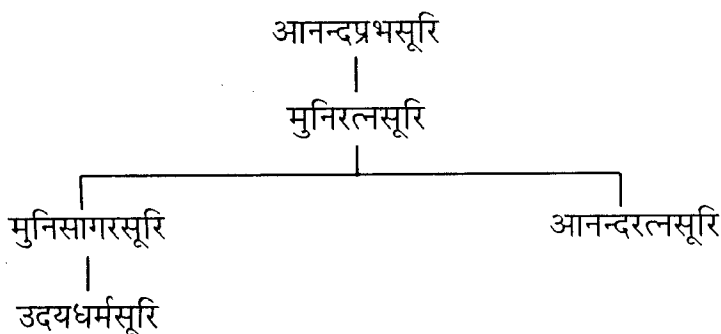
गजसिंहकुमाररास^६ (रचनाकाल वि० सं० १५१३) की प्रशस्ति में रचनाकार देवरत्नसूरि ने अपने गुरु गुणरत्नसूरि का ससम्मान उल्लेख किया है।

इसी प्रकार मलयसुन्दरीरास^७ (रचनाकाल वि० सं० १५४३) और कथाबत्तीसी (रचनाकाल वि० सं० १५५७) की प्रशस्तियों में रचनाकार ने

अपने गुरु परम्परा का उल्लेख किया है, जो इस प्रकार है —



आगमिकगच्छीय उदयधर्मसूरि (द्वितीय) द्वारा रचित **धर्मकल्पद्रुम** की प्रशस्ति में रचनाकार ने अपने गुरु-परम्परा का उल्लेख किया है, जो इस प्रकार है —



[**धर्मकल्पद्रुम** के रचनाकार]

मुनिसिंहसूरि द्वारा वि० सं० १४९९ कार्तिक सुदी ५ सोमवार को प्रतिष्ठापित भगवान् शान्तिनाथ की एक प्रतिमा प्राप्त हुई है। इसी प्रकार मुनिसिंहसूरि के शिष्य शीलरत्नसूरि द्वारा वि० सं० १५०६ से वि० सं० १५१२ तक प्रतिष्ठापित ५ प्रतिमायें मिलती हैं। शीलरत्नसूरि के शिष्य आनन्दप्रभसूरि द्वारा वि० सं० १५१३ से वि० सं० १५२७ तक प्रतिष्ठापित ६ प्रतिमायें प्राप्त होती हैं। आनन्दप्रभसूरि के शिष्य मुनिरत्नसूरि द्वारा वि० सं० १५२३ और वि० सं० १५४२ में प्रतिष्ठापित २ जिन प्रतिमायें प्राप्त हुई हैं। अभिलेखीय साक्ष्यों द्वारा ही मुनिरत्नसूरि के शिष्य आनन्दरत्नसूरि का भी उल्लेख प्राप्त होता है। उनके द्वारा प्रतिष्ठापित ५ तीर्थङ्कर प्रतिमायें

मिली हैं, जो वि० सं० १५७१ से वि० सं० १५८३ तक की हैं। उक्त बात को तालिका के रूप में निम्न प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है —

सोमतिलकसूरि

|

सोमचन्द्रसूरि

|

गुणरत्नसूरि

|

मुनिसिंहसूरि [वि० सं० १४९९]

|

१ प्रतिमालेख

शीलरत्नसूरि [वि० सं० १५०६-१५१२]

|

५ प्रतिमालेख

आनन्दप्रभसूरि [वि० सं० १५१३-१५२७]

|

६ प्रतिमालेख

मुनिरत्नसूरि [वि० सं० १५२३-१५४२]

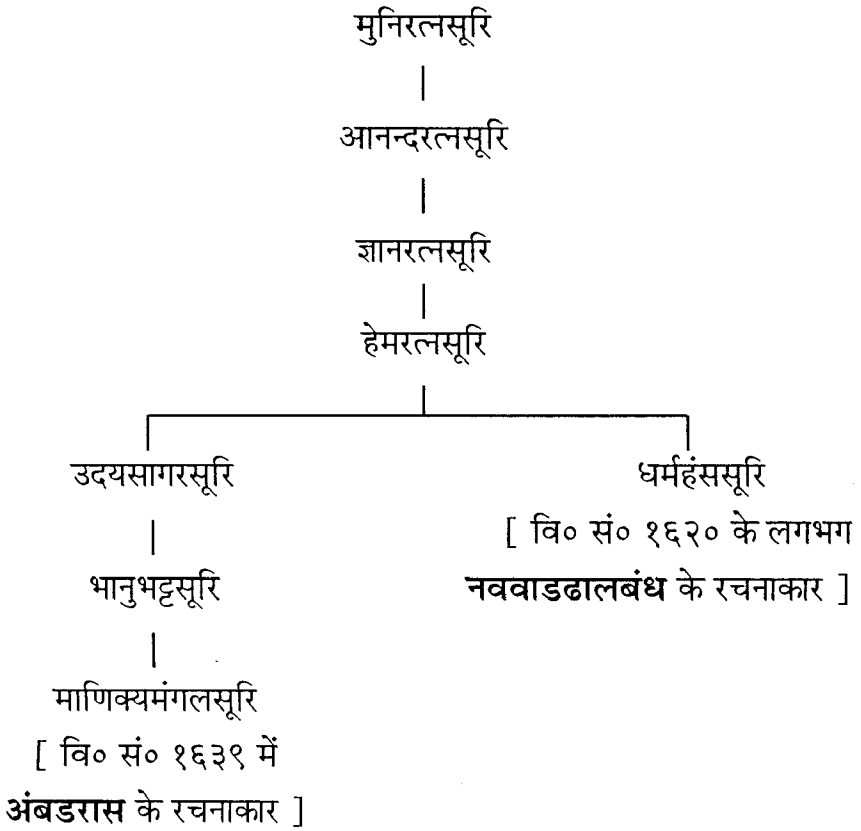
|

२ प्रतिमालेख

आनन्दरत्नसूरि [वि० सं० १५७१-१५८३]

५ प्रतिमालेख

श्री मोहनलाल दलीचन्द देसाई द्वारा प्रस्तुत आगमिकगच्छ की विडालंबीया शाखा की गुर्वावली इस प्रकार है —



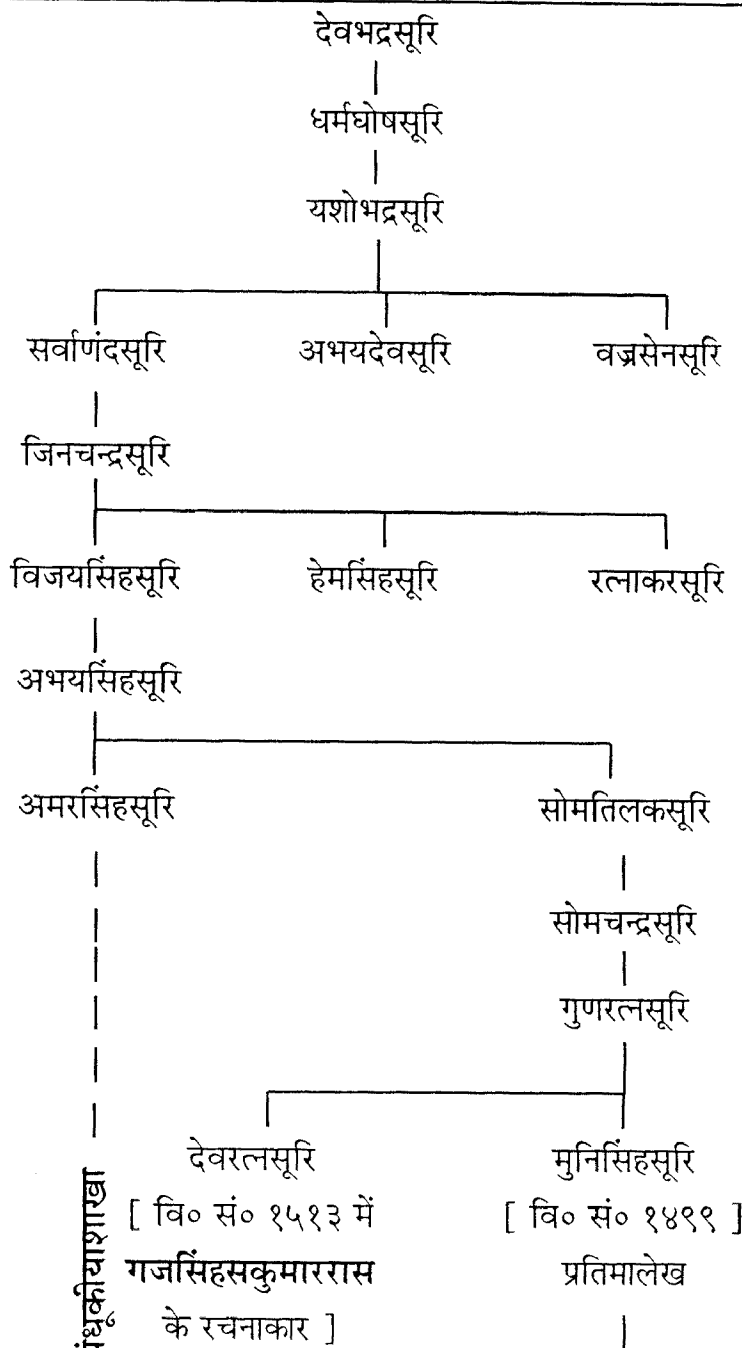
उक्त पट्टावली के आधार पर मुनिसागरसूरि द्वारा रचित आगमिकगच्छपट्टावली में ६ अन्य नाम भी जुड़ जाते हैं। इस प्रकार ग्रन्थ प्रशस्ति, प्रतिमालेख तथा उपरोक्त पट्टावली के आधार पर मुनिसागरसूरि द्वारा रचित पट्टावली अर्थात् आगमिकगच्छ की विडालंबीया शाखा की पट्टावली को जो नवीन स्वरूप प्राप्त होता है, वह इस प्रकार है —

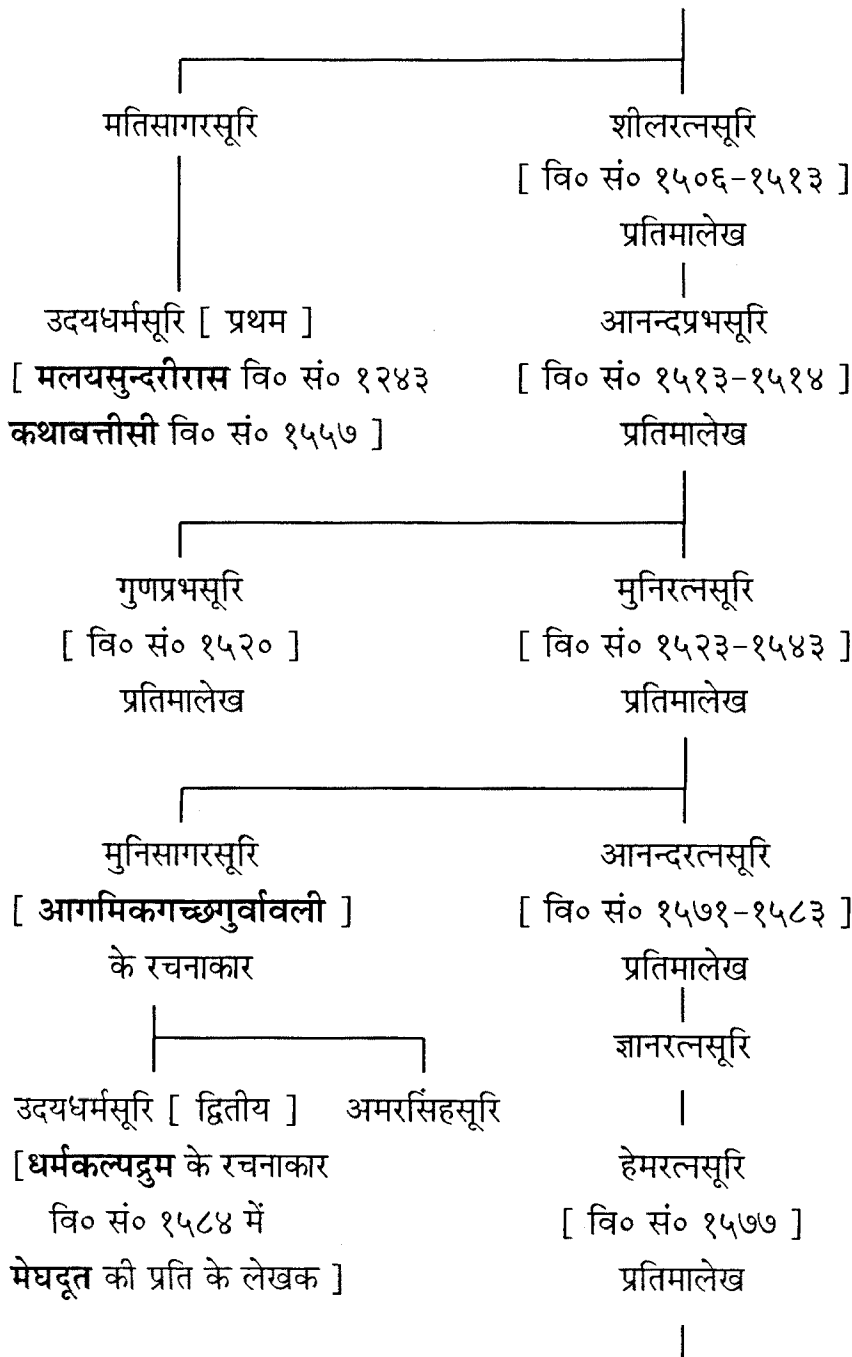
[तालिका-२]

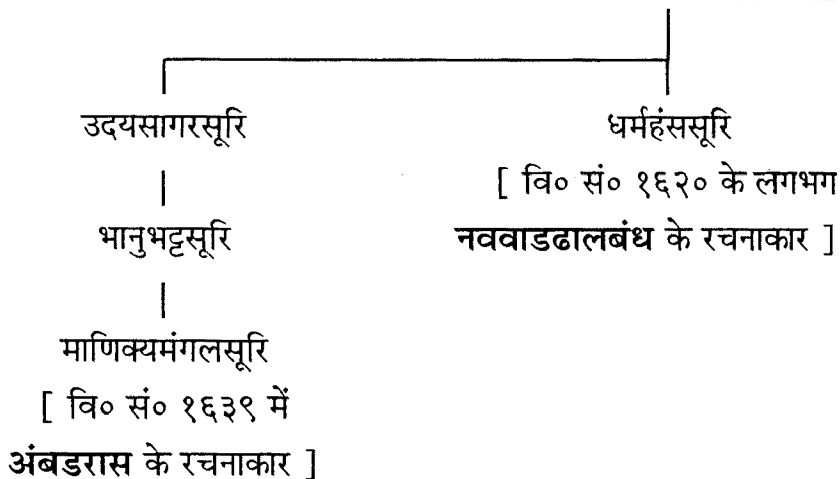
साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर निर्मित आगमिकगच्छ
[विडालंबीयाशाखा] का वंश वृक्ष

शीलगुणसूरि

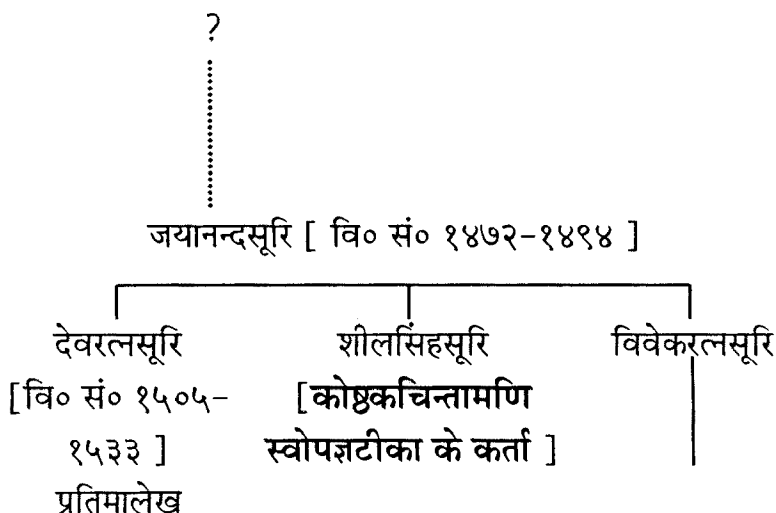
|







साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर आगमिक गच्छ के जयानन्दसूरि, देवरत्नसूरि, शीलसिंहसूरि, विवेकरत्नसूरि, संयमरत्नसूरि, कुलवर्धनसूरि, विनयमेरुसूरि, जयरत्नगणि, देवरत्नगणि, वरसिंहसूरि, विनयरत्नसूरि आदि कई मुनिजनों के नाम ज्ञात होते हैं। इन मुनिजनों के परस्पर सम्बन्ध भी उक्त साक्ष्यों के आधार पर निश्चित हो जाते हैं और इनकी जो गुर्वावली बनती है, वह इस प्रकार है —

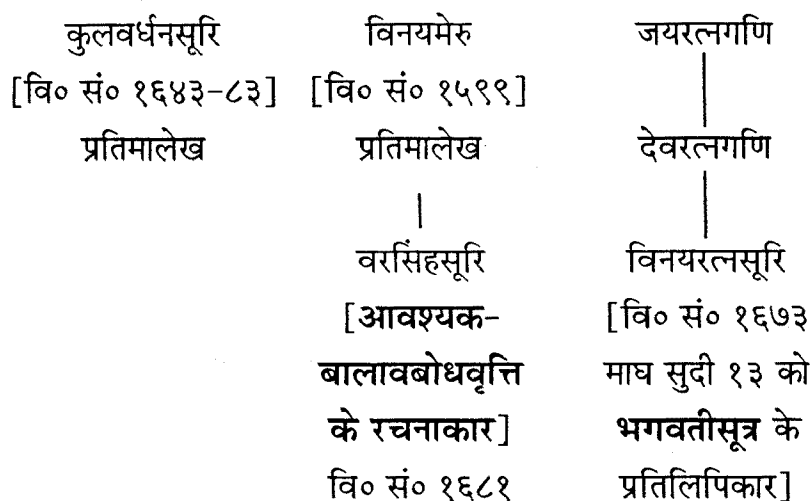


[श्रीचन्द्रचरित [वि० सं० १५४४-७९]
वि० सं० १४९४ के कर्ता] प्रतिमालेख

संयमरत्नसूरि

[वि० सं० १५८०-१६१६]

प्रतिमालेख



आगमिकगच्छ के मुनिजनों की उक्त तालिका का आगमिकगच्छ की पूर्वोक्त दोनों शाखाओं (धंधूकीया शाखा और विडालंबीया शाखा) में से किसी के साथ भी समन्वय स्थापित नहीं हो पाता, ऐसी स्थिति में यह माना जा सकता है कि आगमिकगच्छ में उक्त शाखाओं के अतिरिक्त भी कुछ मुनिजनों की स्वतंत्र परम्परा विद्यमान थी ।

इसी प्रकार आगमिकगच्छीय जयतिलकसूरि^८, मलयचन्द्रसूरि^९, जिनप्रभसूरि^{१०}, सिंहदत्तसूरि^{११} आदि की कृतियाँ तो उपलब्ध होती हैं, परन्तु उनके गुरु-परम्परा के बारे में हमें कोई जानकारी नहीं मिलती है ।

अभिलेखीय साक्ष्यों द्वारा भी इस गच्छ के अनेक मुनिजनों के नाम तो ज्ञात होते हैं, परन्तु उनकी गुरु-परम्परा के बारे में हमें कोई जानकारी नहीं मिलती। यह बात प्रतिमालेखों की प्रस्तुत तालिका से भी स्पष्ट होती है —

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१.	१४२०	कार्तिक सुदि १५ रविवार	-	देवकुलिका का लेख	वीर जिनालय, जीरावला	मुनि जयन्तविजय संपा० आबू, भाग-५, लेखाङ्क १२२
२.	१४२१	कार्तिक सुदि ५ रविवार	-	पद्मप्रभ की प्रतिमा का लेख	जीरावलीतीर्थ चैत्यदेवकुलिका, जैन मन्दिर, थराद	दौलत सिंह लोढ़ा, संपा० श्रीप्रतिमा- लेखसंग्रह, लेखाङ्क ३०४(अ)
३.	१४२१	माघ वदि ११ सोमवार	अभयसिंहसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	गौड़ी पार्श्वनाथ जिनालय, गोगा दरवाजा, बीकानेर	अगरचन्द नाहटा, संपा०-बीकानेर- जैनलेखसंग्रह - लेखाङ्क - १९३६

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
४.	१४३८	आषाढ़ सुदि ९ शुक्रवार	जयतिलकसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	महावीर स्वामी का मन्दिर, ओसिया	पूरुनचंद नाहर, संपा०- जैनलेख- संग्रह, भाग १, लेखाङ्क ७१५
५.	१४३९	पौष वदि ८ रविवार	जयाणंदसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	नेमिनाथ जिनालय, मांडवीपोल, खंभात	बुद्धिसागरसूरि संपा०- जैनधातु- प्रतिमालेखसंग्रह, भाग २ लेखाङ्क ६३१
५ अ.	१४४०	पौष वदि ...!	श्रीतिलकसूरि	आदिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	कोठार पंचतीर्थी, शत्रुञ्जय	मुनि कंचनसागर संपा०- शत्रुञ्जय- गिरिराजदर्शन, लेखाङ्क २६५

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
६.	१४५१	ज्येष्ठ सुदि ४ रविवार	अमरसिंहसूरि	शांतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	जैन मन्दिर, वणा	विजयधर्मसूरि संपा०- प्राचीन- लेखसंग्रह, लेखाङ्क ९४
७.	१४६२	वैशाख सुदि ३	”	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	मनमोहन पार्श्वनाथ जिनालय, मीयागाम	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखाङ्क २७७
८.	१४६४	माघ सुदि ३ शनिवार	”	शांतिनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, बीजापुर	वही, भाग १ लेखाङ्क ४२२
९.	१४७०	-	”	शांतिनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	जैन देरासर, सौदागर पोल, अहमदाबाद	वही, भाग १ लेखाङ्क ८२६

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१०.	१४७१	-	”	चौबीसी जिन प्रतिमा का लेख	जैन मन्दिर, थराद	लोढा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ७५
११.	१४७२	ज्येष्ठ सुदि ११	जयाणंदसूरि	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ देरासर, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखाङ्क १०१
१२.	१४७५	-	अमरसिंहसूरि	पद्मप्रभ की प्रतिमा का लेख	अजितनाथ जिनालय, नदियाड	वही, भाग २ लेखाङ्क ३१८
१३.	१४७६	चैत्र वदि १ शनिवार	”	महावीर स्वामी की चौबीसी प्रतिमा का लेख	चोसठिया जी का मन्दिर, नागौर	विनयसागर, संपा०-प्रतिष्ठा- लेखसंग्रह, भाग १, लेखाङ्क २१५

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१४.	१४७६	चैत्र वदि ९ रविवार	जयाणंदसूरि	शांतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ मुख्य- बावन जिनालय, मातर	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखाङ्क ४७०
१५.	१४७८	वैशाख सुदि ३ गुरुवार	अमरसिंहसूरि	शांतिनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	जैन देरासर, पाटडी	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखाङ्क १२०
१६.	१४८२	फाल्गुन सुदि ३ रविवार	जयाणंदसूरि	सुमतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, कडाकोटडी	बुद्धिसासूरि, पूर्वोक्त भाग २, लेखाङ्क ६१३
१७.	१४८३	माघ वदि ११ गुरुवार	”	पार्श्वनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ देरासर, पाटण	वही, भाग १, लेखाङ्क २१७

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१८.	१४८४	वैशाख सुदि ३ शुक्रवार	हेमराजसूरि	सुमतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	सीमंधरस्वामी का जिनालय, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखाङ्क १२३१
१९.	१४८४	मार्गशीर्ष सुदि ५ रविवार	अमरसिंहसूरि के पट्टघर श्री रत्नसूरि	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ देरासर, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखाङ्क ९००
२०.	१४८५	ज्येष्ठ वदि...	अमरसिंहसूरि के पट्टघर हेमरत्नसूरि	चन्द्रप्रभ स्वामी की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, वणा	विजयधर्मसूरि पूर्वोक्त, लेखाङ्क १३५
२१.	१४८५	ज्येष्ठ मास...१	“	सुविधिनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ देरासर, बीजापुर	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखाङ्क ४२३

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२२.	१४८७	माघ सुदि ५ गुरुवार	अमरसिंहसूरि के पट्टधर हेमरत्नसूरि	पार्श्वनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	सीमंधर स्वामी का मंदिर, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखाङ्क १२२६
२३.	१४८८	ज्येष्ठ सुदि १० शुक्रवार	हेमरत्नसूरि	शीतलनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ७
२४.	१४८८	-	जयानंदसूरि	पार्श्वनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, बालकेश्वर, मुम्बई	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखाङ्क १७९८
२५.	१४८९	माघ वदि २ शुक्रवार	अमरसिंहसूरि के पट्टधर हेमरत्नसूरि	पार्श्वनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	कुंथुनाथ देरासर, बीजापुर	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखाङ्क ४४०

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्वाम्यलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२६.	१४८९	तिथि- विहीन	अमरसिंहसूरि के पट्टधर हेमरत्नसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ देरासर, शांतिनाथ पोल, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखाङ्क १३४६
२७.	१४९०	फाल्गुन .. सोमवार	”	पार्श्वनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	गौड़ीपार्श्वनाथ जिनालय, राधनपुर	मुनि विशालविजय, संपा०-राधनपुर- प्रतिमालेखसंग्रह, लेखाङ्क ११८
२८.	१४९१	द्वितीय ज्येष्ठ वदि ७ शनिवार	हेमरत्नसूरि	कुंशुनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ देरासर, शांतिनाथ पोल, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखाङ्क १२६९
२९.	१४९२	ज्येष्ठ वदि...	”	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ७६३

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
३०.	१४९३	चैत्र वदि ८ गुरुवार	जयाणंदसूरि	धर्मनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखाङ्क १२२
३१.	१४९४	माघ सुदि ५ गुरुवार	जयानन्दसूरि के शिष्य श्रीसूरि	संभवनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, राधनपुर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखाङ्क १६२ एवं मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखाङ्क १२३
३२.	१३९६ (१४९६)	फाल्गुन वदि २ शुक्रवार	“	विमलनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	नवपल्लव पार्श्वनाथ जिनालय, बोलपीपल्लो, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखाङ्क १०८६

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
३३.	१४९९	कार्तिक सुदि ५ सोमवार	मुनिसिंहसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, खेरालु	वही, भाग १, लेखाङ्क ७५५
३४.	१५००	चैत्र सुदि १३ रविवार	सिंहदत्तसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, राधनपुर	मुनि विशालविजय पूर्वोक्त, लेखाङ्क १३१
३५.	१५०३	माघ वदि ३ शुक्रवार	“	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	गोड़ी पार्श्वनाथ देरासर, बीजापुर	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १ लेखाङ्क ४४८
३६.	१५०३	माघ वदि ८ बुधवार	हेमरत्नसूरि	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, भरुच	वही, भाग २, लेखाङ्क ३३८

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
३७.	१५०३	माघ सुदि ४ गुरुवार	”	कुंशुनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त लेखाङ्क ८७८
३८.	१५०३	माघ सुदि ५ गुरुवार	”	शीतलनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	धर्मनाथ जिनालय मडार	मुनि जयन्तविजय, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ७८
३९.	१५०४	फाल्गुन सुदि १२ गुरुवार	अमरसिंहसूरि के पट्टधर हेमरत्नसूरि	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, शांतिनाथ पोल अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखाङ्क १३१२
४०.	१५०४	तिथि- विहीन	जिनचन्द्रसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय शांतिनाथ पोल, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखाङ्क १३०९

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
४१.	१५०५	माघ सुदि ९ शनिवार	हेमरत्नसूरि	शांतिनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	ओसवालों का मंदिर, पूना	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखाङ्क २०८
४२.	१५०५	माघ सुदि ९ शनिवार	”	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	महावीर स्वामी का मन्दिर, थराद	लोढा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क १
४३	१५०६	चैत्र वदि ४ बुधवार	शीलरत्नसूरि	वासुपूज्य स्वामी की पंचतीर्था प्रतिमा का लेख	देहरी नं० ९७, शत्रुञ्जय	मुनि कंचनसागर, पूर्वोक्त, लेखाङ्क १७९
४४.	१५०६	चैत्र वदि ५ गुरुवार	हर्षतिलकसूरि सिंहदत्तसूरि	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	मनमोहन पार्श्वनाथ जिनालय, मीयागाम	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखाङ्क २८२

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
४५.	१५०६	पौष वदि २ बुधवार	हेमरत्नसूरि	शांतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	वासुपूज्यस्वामी का जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क १३२६
४६.	१५०६	तिथि- विहीन	अमररत्नसूरि के पट्टधर हेमरत्नसूरि	सुविधिनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	हीरालाल गुलाबसिंह का घरदेरासर, चितपुर रोड, कलकत्ता	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखाङ्क १००४
४७.	१५०६	तिथि- विहीन	”	”	यति पन्नालाल का घर देरासर, कलकत्ता	वही, भाग १, लेखाङ्क ३९१

नोट : क्रमांक ४६ और ४७ पर दिये गये दोनों प्रतिमा लेखों की वाचना एक ही है और ये दो अलग-अलग प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण हैं।

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
४८.	१५०७	वैशाख	शीलरत्नसूरि	मुनि सुव्रतस्वामी की प्रतिमा का लेख	नवघरे का मन्दिर,	वही, भाग १,
		वदि ६ गुरुवार			चेलपुरी, दिल्ली	लेखाङ्क ४७६
४९.	१५०७	वैशाख वदि ६ गुरुवार	”	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मन्दिर, वडावली	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखाङ्क १७
५०.	१५०७	माघ सुदि ५ शुक्रवार	सिंहदत्तसूरि	आदिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	पद्मप्रभ जिनालय, घाट, जयपुर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखाङ्क ४२०
५१.	१५०७	माघ सुदि १३ शुक्रवार	हेमरत्नसूरि	अभिनन्दन स्वामी की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, दंतालवाडो, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखाङ्क ६८२

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
५२.	१५०७	वैशाख सुदि ६ गुरुवार	शीलरत्नसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मन्दिर वडावली	वही, भाग १, लेखाङ्क १७
५३.	१५०८	चैत्र सुदि १३ रविवार	सिंहदत्तसूरि	चन्द्रप्रभ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, भरुच	वही, भाग २, लेखाङ्क ३१५
५४.	१५०८	चैत्र सुदि १३ रविवार	”	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, चौकसी पोल, खंभात	वही, भाग २, लेखाङ्क ८४२
५५.	१५०८	चैत्र सुदि १३ रविवार	”	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, शकोपुर, खंभात	वही, भाग २, लेखाङ्क १०९

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
५६.	१५०८	वैशाख वदि ११ रविवार	हर्षतिलकसूरि	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, भरुच	वही, भाग २, लेखाङ्क ३४२
५७.	१५०८	वैशाख वदि १२ रविवार	जिनरत्नसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ देरासर, शांतिनाथ पोल, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखाङ्क १३४९
५८.	१५०८	आषाढ सुदि २ रविवार	देवरत्नसूरि	शांतिनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	घर देरासर, बड़ोदरा	वही, भाग २, लेखाङ्क २२०
५९.	१५०९	वैशाख वदि ५ शनिवार	“	कुंथुनाथ की चौबीसी का लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, भरुच	वही, भाग २, लेखाङ्क ३३१

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
५९ (अ)	१५(०?)१	वैशाख वदि ११ शुक्रवार	दे...भि:	आदिनाथ की चौबीसी का लेख	संग्रामसोनी के मन्दिर की देवकुलिका, गिरनार	एम० ए० ढाकी, पं० बेचरदास- दोशी स्मृतिग्रन्थ, पृ० १८८
६०.	१५१०	फाल्गुन वदि ३ शुक्रवार	हर्षतिलकसूरि	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, माणिक चौक, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखाङ्क १८८
६१.	१५१०	"	जिनरत्नसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	धर्मनाथ जिनालय, बड़ा बाजार, कलकत्ता	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखाङ्क १००
६२.	१५१०	"	सिंहदत्तसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, मांडवी पोल, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखाङ्क ६१९

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
६३.	१५१०	”	”	विमलनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	गौड़ीजी भंडार, उदयपुर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखाङ्क २६०
६४.	१५११	आषाढ़ सुदि ६ शुक्रवार	देवरत्नसूरि	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	जैन मन्दिर, कालोल	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखाङ्क ७१८
६५.	१५११	”	”	सुमतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ देरासर, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखाङ्क १२५०
६६.	१५११	आषाढ़ सुदि ६	देवगुप्तसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	सीमंधर स्वामी का जिनालय, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखाङ्क ११६०

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्वाम्यलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
६७.	१५११	माघ सुदि १ शुक्रवार	सिंहदत्तसूरि	शांतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, राधनपुर	मुनि विशालविजय पूर्वोक्त, लेखाङ्क १७०
६८.	१५१२	माघ सुदि १० बुधवार	“	शांतिनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	संभवनाथ देरासर, कड़ी	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखाङ्क ७२३
६९.	१५१२	ज्येष्ठ वदि ५ सोमवार	हेमरत्नसूरि	नमिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शत्रुञ्जय	मुनि कंचनसागर, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ४३९
७०.	१५१२	ज्येष्ठ सुदि १०	“	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मन्दिर, बडावली	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १,

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
७१.	१५१२	रविवार वैशाख वदि १० गुरुवार	”	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, अहमदाबाद	लेखाङ्क १५ वही, भाग १, लेखाङ्क १५९
७२.	१५१२	”	”	कुंथुनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मन्दिर, बडावली	वही, भाग १, लेखाङ्क १४
७३.	१५१२	वैशाख सुदि ५	”	कुंथुनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	गोपों का उपाश्रय, बाड़मेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १,
७४.	१५१२	वैशाख सुदि ५ शुक्रवार	”	कुंथुनाथ की चौबीसी का लेख	चन्द्रप्रभ स्वामी का जिनालय, जैसलमेर	वही, भाग ३, लेखाङ्क २१६५ एवं

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
						नाहटा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क २७७५
७५.	१५१२	-	हेमरत्नसूरि	नमिनाथ की चौबीसी का लेख	शांतिनाथ देरासर, शांतिनाथ पोल, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखाङ्क १३२१
७६.	१५१२		शीलरत्नसूरि आदिरत्नसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर, वादनवाड़ा	जैनसत्यप्रकाश, वर्ष ६, अंक १०, पृष्ठ ३७२-३७४, लेखाङ्क ८
७७.	१५१२	ज्येष्ठ सुदि १० रविवार	हेमरत्नसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर, बडावली	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखाङ्क १५

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्वाम्यलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
७८.	१५१२	फाल्गुन वदि ३ शुक्रवार	हेमरत्नसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ जिनालय, चोलापोल, खंभात	वही, भाग-२, लेखाङ्क ६१५
७९.	१५१३	चैत्र सुदि ५ बुधवार	आणंदप्रभसूरि	कुंथुनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	जीरावलापार्श्वनाथ देरासर, घोघा	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखाङ्क २८७
८०.	१५१३	ज्येष्ठ सुदि ३	देवरत्नसूरि	श्रेयांसनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, वीरमगाम	वही, लेखाङ्क २१२
८१.	१५१३	आषाढ़ सुदि १० गुरुवार	”	”	नवपल्लव पार्श्वनाथ जिनालय, बोलपीपलो, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखाङ्क १०९८

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
८२.	१५१३	माघ वदि २ शुक्रवार	साधुरत्नसूरि	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, चौकसी- पोल, खंभात	वही, भाग-२, लेखाङ्क ८००
८३.	१५१५	वैशाख सुदि १ गुरुवार	हेमरत्नसूरि	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	सीमंधरस्वामी का देरासर, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखाङ्क ११६३
८४.	१५१५	वैशाख सुदि १० गुरुवार	”	संभवनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, करमदी	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखाङ्क ५३१
८५.	१५१५	कार्तिक वदि १ रविवार	देवरत्नसूरि	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	पद्मप्रभजिनालय, कडाकोटडी, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखाङ्क ५९३

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
८६.	१५१५	”	”	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	सीमंधरस्वामी का जिनालय, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखाङ्क १२१२
८७.	१५१५	माघ सुदि १	सिंहदत्तसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख शुक्रवार	धनवसही तलहटी पालिताना	शत्रुजय वैभव, लेखाङ्क १४६
८८.	१५१५	फाल्गुन सुदि ८ शनिवार	हेमरत्नसूरि	पार्श्वनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, खाडीवाडो, खेड़ा, गुजरात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखाङ्क ४०७
८९.	१५१६	चैत्र वदि ४ गुरुवार	आणंदप्रभसूरि	चन्द्रप्रभस्वामी की प्रतिमा के लेख	नेमिनाथ जिनालय, भोंयरापाडो, खंभात	वही, भाग-२, लेखाङ्क ८८९

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
९०.	१५१६	वैशाख सुदि ३	हेमरत्नसूरि	विमलनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, बड़ोदरा	वही, भाग-२, लेखाङ्क १२५
९१.	१५१६	ज्येष्ठ सुदि ३ गुरुवार	देवरत्नसूरि	वासुपूज्यस्वामी की प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथमुख्य बावन जिनालय, मातर	वही, भाग-२, लेखाङ्क ४९९
९२.	१५१६	आषाढ सुदि ३ रविवार	“	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा के लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, नाहटों की गवाड़, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क १५१३
९३.	१५१६	आषाढ सुदि ९	“	नमिनाथ की चांदी की सपरिकर प्रतिमा का लेख	सुपार्श्वनाथ जिनालय, नाहटों की गवाड़, बीकानेर	वही, लेखाङ्क १७६१

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
९४.	१५१६	कार्तिक सुदि १५ शनिवार	सिंहदत्तसूरि	वासुपूज्य स्वामी की प्रतिमा का लेख	सुव्रतनाथ जिनालय, खारवाडो, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखाङ्क-१०३२
९५.	१५१७	वैशाख सुदि ३ सोमवार	हेमरत्नसूरि	शीतलनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, लखनऊ	नाहर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखाङ्क १५०५
९६.	१५१७	वैशाख सुदि १२ सोमवार	आणंदप्रभसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ देरासर, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखाङ्क १०८९
९७.	१५१७	माघ सुदि ५ शुक्रवार	”	कुंथुनाथ की प्रतिमा का लेख	सुविधिनाथ जिनालय, घोघा, काठियावाड़	नाहर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखाङ्क-१७६९

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
९८.	१५१७	माघ सुदि ५ शुक्रवार	देवरत्नसूरि	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	संभवनाथ जिनालय, अजमेर	वही, भाग १, लेखाङ्क ५५७ एवं विनयसागर, पूर्वोक्त भाग १, लेखाङ्क ५७२
९९.	१५१७	”	”	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, चुरु, राजस्थान	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क २४०८
१००.	१५१७	”	महेन्द्रसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, शांतिनाथ पोल, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखाङ्क १२८४

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१०१.	१५१७	"	पूर्णदेवसूरि	मुनिसुव्रत की प्रतिमा का लेख	धर्मनाथ देरासर, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखाङ्क ११३१
१०२	१५१८	ज्येष्ठ सुदि २ शनिवार	देवरत्नसूरि	संभवनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, चौकसीपोल, खंभात	वही, भाग-२ लेखाङ्क ८२७
१०३.	१५१८	माघ सुदि ५ गुरुवार	हेमरत्नसूरि	पद्मप्रभ स्वामी की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखाङ्क २१६
१०४.	१५१९	ज्येष्ठ वदि १ गुरुवार	देवरत्नसूरि	धर्मनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	मोतीसा की टूक, शत्रुञ्जय	मुनि कंचनसागर पूर्वोक्त, लेखाङ्क ४६२

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१०५.	१५१९	वैशाख वदि ११ शुक्रवार	हेमरत्नसूरि	धर्मनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा के लेख	नवपल्लवपार्श्वनाथ देरासर, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, भाग-२, लेखाङ्क १०८९
१०६.	१५१९	वैशाख सुदि ३ गुरुवार	”	पद्मप्रभस्वामी की पंचतीर्थी का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, अज्जार	नाहर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखाङ्क १७२१
१०७.	१५१९	”	”	कुन्थुनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, जैसलमेर	वही, भाग-३, लेखाङ्क २३४४
१०८.	१५१९	माघ वदि ९ शनिवार	”	अजितनाथ की चौबीसी का लेख	कुन्थुनाथ जिनालय, घडियाली पोल, बड़ोदरा	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग - २, लेखाङ्क १६०

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१०९.	१५१९	माघ सुदि ३ सोमवार	”	वासुपूज्य की धातु प्रतिमा का लेख	शान्तिनाथ देरासर, जामनगर	विजयधर्मसूरि पूर्वोक्त, लेखाङ्क ३३०
११०.	१५२०	चैत्र वदि ८ शुक्रवार	-	शीतनलाथ की धातु प्रतिमा का लेख	शान्तिनाथ जिनालय, वीरमगाम	वही लेखाङ्क ३४५
१११.	१५२०	वैशाख वदि ७ शनिवार	आणंदप्रभसूरि	मुनिसुव्रतस्वामी की पंचतीर्थी का लेख	गौड़ीपार्श्वनाथ देरासर, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखाङ्क २३१
११२.	१५२०	”	आणंदप्रभसूरि के शिष्य गुणप्रभसूरि	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	मनमोहनपार्श्वनाथ जिनालय, चौक्सीपोल,	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-२ लेखाङ्क ८२४

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
११३.	१५२०	आषाढ सुदि ९ गुरुवार	हेमरत्नसूरि	मुनिसुव्रत की चौबीसी का लेख	कुन्थुनाथ जिनालय, खंभात	वही, भाग-२ लेखाङ्क ६६६
११४.	१५२१	आषाढ सुदि १ गुरुवार	”	शीतलनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क १०२२
११५.	१५२३	कार्तिक वदि ५ सोमवार	मुनिरत्नसूरि	शांतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, माणेकचौक, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखाङ्क १००५
११६.	१५२३	वैशाख सुदि १३ गुरुवार	सिंहदत्तसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	बावन जिनालय, पेथापुर	वही, भाग-१, लेखाङ्क ७१३

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
११७.	१५२३	फाल्गुन वदि ४ सोमवार	देवरत्नसूरि	कुन्धुनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	जील्लावाला देरासर, घोघा	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ३७०
११८.	१५२४	वैशाख सुदि ३ सोमवार	"	"	चिन्तामणि पार्श्वनाथ देरासर, लाजग्राम	मुनि जयन्तविजय, पूर्वोक्त, भाग-५, लेखाङ्क ४७७
११९.	१५२४	कार्तिक वदि १३ शनिवार	अमररत्नसूरि	सुमतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, गांभू	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखाङ्क ७४
१२०.	१५२४	वैशाख सुदि २ गुरुवार	"	संभवनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, किशनगढ़	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखाङ्क ६३९

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१२१.	१५२५	पौष वदि ५ सोमवार	देवरत्नसूरि	पार्श्वनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	जैन देरासर, लोबडी	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ३८८
१२२.	१५२५	माघ वदि १३ बुधवार	"	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, माणेकचौक, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखाङ्क १३७
१२३.	१५२५	"	जयचन्द्रसूरि के पट्टधर देवरत्नसूरि	अभिनन्दनस्वामी की चौबीसी का लेख	घर देरासर, गामदेवी, वाचागांधी रोड, मुम्बई	नाहर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखाङ्क १८००
१२४.	१५२५	-	अमररत्नसूरि	कुन्थुनाथ की पंतचीर्धी प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, जामनगर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ४०३

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१२५.	१५२७	वैशाख वदि ६ शुक्रवार	आनन्दप्रभसूरि	धर्मनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	नवखंडा पार्श्वनाथ देरासर, घोघा	वही, लेखाङ्क ४०९
१२६.	१५२७	वैशाख वदि १०	देवरत्नसूरि	पद्मप्रभ की प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ मुख्य बावन जिनालय, मातर	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखाङ्क ४६८
१२७.	१५२७	-	अमररत्नसूरि	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	सुविधिनाथ देरासर, घोघा	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ४०५
१२८.	१५२८	आषाढ सुदि ५ रविवार	सिंहदत्तसूरि के पट्टधर सोमदेवसूरि	सुमतिनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखाङ्क २६२ एवं

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
						मुनि जयन्तविजय, आबू, भाग ५, लेखाङ्क ५१०
१२९.	१५२८	पौष सुदि ३ सोमवार	अमररत्नसूरि	धर्मनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय जामनगर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ४१३
१३०.	१५२९	वैशाख सुदि ५ शुक्रवार	देवरत्नसूरि	अभिनन्दनस्वामी की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, माणिक चौक, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, भाग-२, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ९४७
१३१.	१५२९	"	"	पार्श्वनाथ की रत्नमय प्रतिमा के परिकर का लेख	कुन्थुनाथ जिनालय, मांडवी पोल, खंभात	वही, भाग-२, लेखाङ्क ६४३

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१३२.	१५२९	ज्येष्ठ वदि १ शुक्रवार	अमरत्नसूरि	संभवनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	संभवनाथ जिनालय, मांडवीपोल, खंभात	वही, भाग-२, लेखाङ्क ११४२
१३३.	१५२९	ज्येष्ठ वदि १ शुक्रवार	"	पद्मप्रभ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर, थराद	लोढा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ८२
१३४.	१५३०	माघ वदि २ शुक्रवार	"	मुनिसुव्रतस्वामी की प्रतिमा का लेख	विमलनाथ जिनालय, (कोचरो में) बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क १५८२
१३५.	१५३०	माघ सुदि १० गुरुवार	देवरत्नसूरि	कुन्थुनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, माणेक चौक, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-२ लेखाङ्क १०१०

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१३६.	१५३१	माघ सुदि ५	अमरलसूरि	चन्द्रप्रभस्वामी की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	मुनिसुव्रतदेरासर, डभोई	वही, भाग १, लेखाङ्क ६५
१३७.	१५३१	माघ वदि ८ सोमवार	देवरलसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, ऊंझा	वही, भाग-१, लेखाङ्क १८२
१३८.	१५३१	”	”	संभवनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिपार्श्वनाथ जिनालय, खंभात	वही, भाग-२
१३९.	१५३१	”	”	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ जिनालय, पालिताना	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखाङ्क १७५९ एवं

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
						विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ४३५
१४०.	१५३१	”	”	वासुपूज्यस्वामी की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ देरासर, कड़ी	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखाङ्क ७२२
१४१.	१५३२	वैशाख...।	अमररत्नसूरि	अभिनन्दनस्वामी की धातुप्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, जामनगर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ४४६
१४२.	१५३२	वैशाख...।	”	शान्तिनाथ की प्रतिमा का लेख	बावनजिनालय, पेथापुर	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखाङ्क ७१२

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१४३.	१५३२	ज्येष्ठ वदि १३	”	महावीर स्वामी की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखाङ्क २८१
१४४.	१५३२	वैशाख सुदि ३	”	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ जिनालय, नागौर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखाङ्क ७४५ एवं नाहर, पूर्वोक्त, भाग-२ लेखाङ्क १३२३
१४५.	१५३२	वैशाख ।	”	श्रेयांसनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	धर्मनाथदेरासर, डभोई	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखाङ्क ५७

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१४६.	१५३३	माघ सुदि ५ रविवार	देवरत्नसूरि	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, खंभात	वही, भाग-२, लेखाङ्क ३०८
१४७.	१५३४	माघ सुदि ५ शुक्रवार	आनन्दप्रभसूरि	वासुपूज्यस्वामी की प्रतिमा का लेख	जैनदेरासर, गेरीता	वही, भाग १, लेखाङ्क ६७१
१४८.	१५३५	वैशाख सुदि ६	अमररत्नसूरि	वही	जैन मंदिर, चाणस्मा	वही, भाग-१, लेखाङ्क ११४
१४९.	१५३५	आषाढ़ सुदि २ मंगलवार	”	कुंथुनाथ की प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर गेरीता	वही, भाग - १, लेखाङ्क ६६६

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१५०.	१५३६	वैशाख सुदि ३ गुरुवार	„	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, पाडीव सिरोही-राजस्थान	नाहर, पूर्वोक्त, भाग-२ लेखाङ्क २०९१
१५१.	१५३६	पौष वदि... गुरुवार	सिंहदत्तसूरि	नमिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	बड़ा मंदिर, सीहोर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखाङ्क १७३७, एवं विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ४६७
१५२.	१५३६	माघ सुदि ५ शुक्रवार	पं० उदयरत्न	पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, बडावली	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त भाग-१, लेखाङ्क ९८

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१५३.	१५३७	पौष सुदि ९ रविवार	सिंहदत्तसूरि के पट्टधर सोमदेवसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	कोठार पंचतीर्थी-२ शत्रुञ्जय	मुनि कंचनसागर, पूर्वोक्त, लेखाङ्क २३५
१५४.	१५३७	माघ सुदि ५ शुक्रवार	सिंहदत्तसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभजिनालय, जानीशेरी, बड़ोदरा	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखाङ्क १५६
१५५.	१५४२	चैत्र वदि ८ मंगलवार	आनन्दप्रभसूरि के पट्टधर मुनिरत्नसूरि	विमलनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, घोघा	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ४८२
१५६.	१५४२	वैशाख सुदि १ गुरुवार	जिनचन्द्रसूरि	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, बड़ोदरा	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखाङ्क ९५

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१५७.	१५४२	वैशाख सुदि २ गुरुवार	श्रीसूरि	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	दादापार्श्वनाथ जिनालय, नरसिंहजी की पोल, बड़ोदरा	वही, भाग-२ लेखाङ्क १३६
१५८.	१५४२	वैशाख सुदि १० गुरुवार	जिनचन्द्रसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	विमलनाथ जिनालय, चौकसीपोल, खंभात	वही, भाग २, लेखाङ्क ८०६
१५९.	१५४३	वैशाख वदि १० शुक्रवार	“	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, सेठ वाडो, खेड़ा	वही, भाग-२, लेखाङ्क ४३२
१६०.	१५४३	वैशाख वदि १० शुक्रवार	“	शीतलनाथ की प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथमुख्य बावन जिनालय, मातर	वही, भाग-२, लेखाङ्क ५१६

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१६१.	१५४४	फाल्गुन सुदि २ शुक्रवार	विवेकरत्नसूरि	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	जैनदेरासर, सौदागर पोल, अहमदाबाद	वही, भाग-१, लेखाङ्क ८२४
१६२.	१५४४	-	जिनचन्द्रसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	घर देरासर, बड़ोदरा	वही, भाग १, लेखाङ्क २४९
१६३.	१५४६	माघ वदि १३	विवेकरत्नसूरि	स्तम्भलेख	मुनिसुव्रत जिनालय, भरुच	वही, भाग-२ लेखाङ्क ३२१
१६४.	१५४६	माघ सुदि १३	”	चन्द्रप्रभस्वामी की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, गीपटी, खंभात	वही, भाग-२ लेखाङ्क ७०६
१६५.	१५४७	वैशाख सुदि ५ गुरुवार	अमररत्नसूरि	वासुपूज्यस्वामी की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, डीसा	नाहर, पूर्वोक्त, भाग-२ (लेखाङ्क २७०६)

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१६६.	१५४७	वैशाख सुदि ५ शुक्रवार	अमररत्नसूरि	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	मनमोहन पार्श्वनाथ जिनालय, बड़ोदरा	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखाङ्क ८५
१६७.	१५४७	पौष वदि ६ रविवार	"	"	वीर जिनालय, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखाङ्क - ३०६
१६८.	१५४७	पौष वदि १० बुधवार	"	"	पार्श्वनाथ देरासर, पाटन	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखाङ्क २१८
१६९.	१५४७	माघ सुदि १३ रविवार	अमररत्नसूरि के पट्टधर श्रीसूरि	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	बड़ा मंदिर, कातर ग्राम	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ४९६

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१७०.	१५४८	वैशाख सुदि २ शनिवार	जिनचन्द्रसूरि	”	शांतिनाथ जिनालय, चौकसीपोल खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखाङ्क ८३४
१७१.	१५४८	वैशाख सुदि ३	सोमरत्नसूरि	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख वाराणसी	प्रतापसिंह जी का मंदिर, रामघाट	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखाङ्क ४२३
१७२.	१५४९	आषाढ़ सुदि ३ सोमवार	विवेकरत्नसूरि	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	संभवनाथ जिनालय बोलपीपलो, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखाङ्क ११३९
१७३.	१५५२	माघ वदि ८ शनिवार	सोमरत्नसूरि	सुमतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	मनमोहनपार्श्वनाथ जिनालय, मीयागाम	वही, भाग-२ लेखाङ्क २७६

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१७४.	१५५२	वैशाख सुदि ३	”	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभजिनालय, भोंपरापाडो, खंभात	वही, भाग-२ लेखाङ्क-८९४
१७५.	१५५४	फाल्गुन सुदि... ।	विवेकरत्नसूरि	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ मुख्य बावन जिनालय, मातर	वही, भाग-२ लेखाङ्क ४६६
१७६.	१५५५	ज्येष्ठ सुदि ९ रविवार	अमररत्नसूरि के पट्टधर सोमरत्नसूरि	मुनिसुव्रत की धातु की प्रतिमा का लेख	बृहद्खरतरगच्छ का उपाश्रय, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, लेखाङ्क २४८५
१७७.	१५५६	वैशाख सुदि १३ रविवार	सोमरत्नसूरि	”	पार्श्वनाथ जिनालय, दाहोद	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखाङ्क ८८७

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१७८.	१५५९	वैशाख सुदि २	विवेकरत्नसूरि	अभिनन्दनस्वामी की चौबीसी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, पादरा	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ८
१७९.	१५६०	वैशाख सुदि ३ शुक्रवार	“	श्रेयांसनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ३२१
१८०.	१५६०	वैशाख सुदि ३ बुधवार	भावसागरसूरि	शीतलनाथ की प्रतिमा का लेख	सीमंधरस्वामी का देरासर, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखाङ्क १२३६
१८१.	१५६४	फाल्गुन वदि ५ रविवार	आणंदसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनलय, बीजापुर	वही, भाग-१ लेखाङ्क ४३९

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१८२.	१५६६	माघ सुदि ५ सोमवार	शिवकुमारसूरि	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, गीपटी, खंभात	वही, भाग-२, लेखाङ्क ७१०
१८३.	१५६७	वैशाख सुदि ३ बुधवार	सोमरत्नसूरि	मुनिसुव्रत की प्रतिमा का लेख	पद्मप्रभ जिनालय,	वही, भाग-१, लेखाङ्क ६२४
१८४.	१५६९	वैशाख सुदि ९ शुक्रवार	"	आदिनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, जयपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखाङ्क १२१६
१८५.	१५७०	पौष वदि ५ रविवार	शिवकुमारसूरि	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	आजिनाथ जिनालय, बडोदरा	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखाङ्क १००

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१८६.	१५७१	चैत्र वदि २ गुरुवार	आनन्दरत्नसूरि	वासुपूज्य स्वामी की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, वडनगर	वही, भाग-१, लेखाङ्क ५५२
१८७.	१५७१	"	सोमरत्नसूरि	अभिनन्दन स्वामी की चौबीसी प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, लखनऊ	नाहर, पूर्वोक्त, भाग-२ लेखाङ्क १५७७
१८८.	१५७१	चैत्र वदि ७ गुरुवार	"	वासुपूज्य स्वामी की प्रतिमा का लेख	जैनदेरासर, मेरीता	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखाङ्क ६७०
१८९.	१५७३	वैशाख सुदि ६ गुरुवार	"	"	आदिनाथ जिनालय, खेड़ा	वही, भाग २, लेखांक ४१४

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१९०.	१५७३	फाल्गुन सुदि २ रविवार	अमररत्नसूरि के पट्टधर सोमरत्नसूरि	श्रेयांसनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, बीजापुर	वही, भाग-१, लेखाङ्क ४३३
१९१.	१५७५	माघ सुदि ६ गुरुवार	आनन्दरत्नसूरि	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	धर्मनाथ जिनालय, बड़ा बाजार, कलकत्ता	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखाङ्क १११
१९२.	१५७५	माघ सुदि ५ गुरुवार	मुनिरत्नसूरि के पट्टधर आनन्दरत्नसूरि	पद्मप्रभ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	पद्मावती देरासर, बीजापुर	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखाङ्क ४२१
१९३.	१५७६	माघ सुदि ९ शनिवार	“	चन्द्रप्रभस्वामी की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, सुल्तानपुरा, बड़ोदरा	वही, भाग २, लेखाङ्क १९५

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१९४.	१५७७	माघ सुदि १३ गुरुवार	हेमरत्नसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	कोठार पंचतीर्थी-४ शत्रुञ्जय	मुनि कंचनसागर, पूर्वोक्त, लेखाङ्क २३७
१९५.	१५७८	माघ वदि ५	विवेकरत्नसूरि	धर्मनाथ की चतुर्मुख प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, भरुच	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखाङ्क २९४
१९६.	१५७८	माघ वदि ५ गुरुवार	”	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, भरुच	वही, भाग-२, लेखाङ्क ३३७
१९७.	१५७८	माघ सुदि ८ गुरुवार	”	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	नेमिनाथ जिनालय, मेहतापोल, बड़ोदरा	वही, भाग २, लेखाङ्क १७१

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१९८.	१५७९	वैशाख सुदि ५ सोमवार	”	शीतलनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ३३६
१९९.	१५७९	फाल्गुन सुदि ५ सोमवार	शिवकुमारसूरि	”	जैन मंदिर, भ्रामरा ग्राम	मुनि जयन्तविजय, आबू-भाग ५, लेखाङ्क १८२
२००.	१५७९	फाल्गुन सुदि ५	”	”	शांतिनाथ जिनालय कडाकोटडी, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखाङ्क ६१५
२०१.	१५८१	माघ सुदि ५	सोमरत्नसूरि	मुनिसुव्रत की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, थराद	लोढा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क २४७

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२०२	१५८३	ज्येष्ठ सुदि ९ शुक्रवार	मुनिरत्नसूरि के पट्टधर आनन्दरत्नसूरि	श्रेयांसनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ देरासर, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ३४२
२०३	१५८४	वैशाख वदि ४	शिवकुमारसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, भरुच	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखाङ्क ३४८
२०४.	१५८४	वैशाख सुदी - ४	“	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, झुंडाल	वही, भाग १, लेखाङ्क ७७५
२०५.	१५८६	माघ वदि ५	उदयरत्नसूरि	शीतलनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	देरी नं० ७१।२ पंचतीर्थी, शत्रुञ्जय	मुनि कंचनसागर, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ४५२

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२०६.	१५८७	पौष वदि ६ रविवार	सिंहदत्तसूरि के पट्टधर शिवकुमारसूरि	वासुपूज्यस्वामी की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभजिनालय, सुल्तानपुरा, बड़ोदरा	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखाङ्क ११३
२०७.	१५८७	माघ वदि ८ गुरुवार	उदयरत्नसूरि	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	सीमन्धरस्वामी का जिनालय, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखाङ्क १२१६
२०८.	१५८७	माघ वदि... गुरुवार	"	"	जैन मंदिर, ईडर	वही, भाग १, लेखाङ्क १४७७
२०९.	१५८७	माघ वदि ८ गुरुवार	"	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ देरासर, लाडोल	वही, भाग १, लेखाङ्क ४६८

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२१०.	१५९१	वैशाख वदि ६ शुक्रवार	संयमरत्नसूरि	वासुपूज्यस्वामी की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, ऊंडीपोल, खंभात	वही, भाग-२, लेखाङ्क ६७३
२११.	१५९९	ज्येष्ठ सुदि १०	संयमरत्नसूरि विनयमेरुसूरि	आदिनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	जैन देरासर, सौदागर पोल, अहमदाबाद	वही, भाग ६, लेखाङ्क ८६०
२१२.	१५९९	ज्येष्ठ सुदि ११ रविवार	“	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	विमलनाथ जिनालय, (कोचरों में), बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क १५७७
२१३.	१६१०	चैत्र सुदि १५ बुधवार	उदयरत्नसूरि के पट्टधर सौभाग्यरत्नसूरि	शिलालेख	विमलवसही, आबू	मुनि जयन्तविजय, आबू, भाग-२, लेखाङ्क १९४

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
			के परिवार के हर्षरत्न उपाध्याय, पं.० गुणमंदिर, माणिकरत्न, विद्यारत्न, सुमतिराज आदि			
२१४.	१६१२	वैशाख सुदि ६ बुधवार	संयमरत्नसूरि	संभवनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ देरासर, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ३५१
२१५.	१६४६	फाल्गुन सुदि ५ गुरुवार	संयमरत्नसूरि के पट्टधर कुलवर्धनसूरि	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	संभवनाथ जिनालय, पादरा	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखाङ्क ११

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२१६.	१६६७	वैशाख वदि ७		”	शांतिनाथ जिनालय, खंभात	वही, भाग-२, लेखाङ्क ६१०
२१७.	१६६७	”	कुलवर्धनसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	शीतलनाथ जिनालय, कुंभारवाडो, खंभात	वही, भाग-२ लेखाङ्क ६४९
२१८.	१६८३	ज्येष्ठ सुदि ६ गुरुवार	”	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, कनासा पाड़ो, पाटन	वही, भाग-१ लेखाङ्क ३६१

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि आगमिकगच्छ १३वीं शती के प्रारम्भ अथवा मध्य में अस्तित्व में आया और १७वीं शती के अन्त तक विद्यमान रहा । लगभग ४०० वर्षों के लम्बे काल में इस गच्छ में कई प्रभावक आचार्य हुये, जिन्होंने अपनी साहित्योपासना और नूतन जिन प्रतिमाओं की प्रतिष्ठापना, प्राचीन जिनालयों के उद्धार आदि द्वारा पश्चिमी भारत (गुजरात, काठियावाड़ और राजस्थान) में श्वेताम्बर श्रमणसंघ को जीवन्त बनाये रखने में अति महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई । यह भी स्मरणीय है कि यह वही काल है, जब सम्पूर्ण उत्तर भारत पर मुस्लिम शासन स्थापित हो चुका था, हिन्दुओं के साथ-साथ बौद्धों और जैनों के भी मन्दिर-मठ समान रूप से तोड़े जाते रहे, ऐसे समये में श्वेताम्बर श्रमण संघ को न केवल जीवन्त बनाये रखने बल्कि उसमें नई स्फूर्ति पैदा करने में श्वेताम्बर जैन आचार्यों ने अति महत्त्वपूर्ण योगदान दिया ।

विक्रम सम्वत् की १७वीं शताब्दी के पश्चात् इस गच्छ से सम्बद्ध प्रमाणों का अभाव है । अतः यह कहा जा सकता है कि १७वीं शती के पश्चात् इस गच्छ का स्वतंत्र अस्तित्व समाप्त हो गया होगा और इसके अनुयायी श्रमण एवं श्रावकादि अन्य गच्छों के अनुयायी हो गये होंगे ।

वर्तमान समय में भी श्वेताम्बर श्रमण संघ की एक शाखा त्रिस्तुतिकमत अपरनाम बृहद्सौधर्मतपागच्छ के नाम से जानी जाती है, किन्तु इस शाखा के मुनिजन स्वयं को तपागच्छ से उद्भूत तथा उसकी एक शाखा के रूप में स्वीकार करते हैं ।

संदर्भ-सूची :-

१. अगरचन्द नाहटा-“जैन श्रमणों के गच्छों पर संक्षिप्त प्रकाश” यतीन्द्रसूरि अभिनन्दनग्रन्थ (आहोर, १९५८ ई०) पृष्ठ १३५-१६५.
२. आषाढादि पनर एकोतरइ, पोस वदि इग्यारिस अंतरइ ।
धंधूकपुरि कृपारस सत्र, सोमवारि समर्थिउ ए चरित्र ॥
कुमतरुख वणभंग गइंद, जिनशासन रयणायर इंदु ।
सद्गुरुश्रीअमरसिंहसूरिंद, सेवइ भविय जसुय अरविंद ॥

तसु पाटि नयनानंद अमीबिंदु गुरु, श्रीहेमरत्नसूरिमुण्डि ।

आगमगच्छ प्रकाश दिण्दि, जसु दीसइ वर परि चरविंद ॥

सुगुरु पसाईं नयर गोआलेर, धणी पुण्यसार रिद्धिइ कुबेर ।

तासु गुण इम वर्णवइ अजस्त्र, साधुमेरुगणि पंडित मिश्र ॥

मोहनलाल दलीचन्द देसाई-जैनगूर्जरकविओ (नवीन संस्करण, अहमदाबाद १९८६ ई०) भाग १, पृ० ८५ और आगे.

३. देसाई, पूर्वोक्त, पृ० ४७८ और आगे.

४. वही, पृ० २०१-२०२

५. मोहनलाल दलीचन्द देसाई-जैनगूर्जरकविओ पृ० ३३७ और आगे.

६. शितिकंठ मिश्र-हिन्दी जैन साहित्य का बृहद् इतिहास [भाग-१] मरु-गूर्जर (वाराणसी १९९० ई०) पृ० ४००.

७. शितिकंठ, मिश्र, पूर्वोक्त, पृ० ३३४ और आगे.

८. कर्मग्रन्थ-रचनाकाल वि० सं० १४५०.

मलयसुन्दरीकथा-रचनाकाल अज्ञात् [यह कृति प्रकाशित हो चुकी है]

सुलसाचरित-[प्राचीनतम प्रति वि० सं० १४५३]

कथाकोश [वि० सं० १५वीं शती का मध्य]

९. स्थूलभद्रकथानक-यह कृति प्रकाशित हो चुकी है.

१०. मल्लिनाथचरित-रचनाकाल १३वीं शती के आसपास.

११. स्थूलभद्ररास-रचनाकाल १६वीं शती के प्रथम चरण के आसपास.

०००

उपकेशगच्छ का संक्षिप्त इतिहास

पूर्वमध्यकालीन श्वेताम्बर गच्छों में उपकेशगच्छ का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। जहाँ अन्य सभी श्वेताम्बर गच्छ भगवान् महावीर से अपनी परम्परा जोड़ते हैं, वहीं उपकेशगच्छ अपना सम्बन्ध भगवान् पार्श्वनाथ से जोड़ता है। अनुश्रुति के अनुसार इस गच्छ की उत्पत्ति का स्थान राजस्थान प्रदेश में स्थित ओसिया (प्राचीन उपकेशपुर) माना जाता है। परम्परानुसार इस गच्छ के आदिम आचार्य रत्नप्रभसूरि ने वीर सम्बत् ७० में ओसवाल जाति की स्थापना की, परन्तु किसी भी ऐतिहासिक साक्ष्य से इस तथ्य की पुष्टि नहीं होती। ऐतिहासिक साक्ष्यों के आधार पर ओसवालों की स्थापना और इस गच्छ की उत्पत्ति का समय ईस्वी सन् की आठवीं शती के पूर्व नहीं माना जा सकता।

चैत्यवासी आम्नाय में उपकेशगच्छ का विशिष्ट स्थान है। इस गच्छ में कक्कसूरि, देवगुप्तसूरि और सिद्धसूरि इन तीन नामों की प्रायः पुनरावृत्ति होती रही है। उपकेशगच्छ में कई विद्वान् एवं प्रभावक आचार्य और मुनिजन हुए हैं, जिन्होंने साहित्योपासना के साथ-साथ नवीन जिनालयों के निर्माण और प्राचीन जिनालयों के जीर्णोद्धार तथा जिनप्रतिमाओं की प्रतिष्ठापना द्वारा पश्चिम भारत में श्वेताम्बर जैन सम्प्रदाय को जीवन्त बनाये रखने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

अन्य गच्छों की भाँति उपकेशगच्छ से भी कई अवान्तर शाखाओं का जन्म हुआ, जैसे वि० सं० १२६६/ई० सन् १२१० में द्विवंदनीक शाखा, वि० सं० १३०८/ई० सन् १२५२ में खरतपाशाखा तथा वि० सं० १४९८/ई० सन् १४४१ में खादिरीशाखा अस्तित्व में आयी।

उपकेशगच्छ के इतिहास के अध्ययन के लिये साहित्यिक साक्ष्यों के अन्तर्गत इस गच्छ के मुनिजनों की कृतियों की प्रशस्तियाँ, मुनिजनों के अध्ययनार्थ अथवा प्रेरणा से प्रतिलिपि करायी गयी प्राचीन ग्रन्थों की दाता प्रशस्तियाँ, दो प्रबन्ध (उपकेशगच्छप्रबन्ध और नाभिनन्दनजिनोद्धारप्रबन्ध - रचनाकाल - वि० सं० १३९३/ई० सन् १३३६) और उपकेशगच्छ की कुछ पट्टावलियाँ उपलब्ध हैं। इस गच्छ के मुनिजनों द्वारा बड़ी संख्या में प्रतिष्ठापित जिन-प्रतिमायें मिली हैं, जिनमें से अधिकांशतः लेखयुक्त हैं। साम्प्रत लेख में उक्त साक्ष्यों के आधार पर उपकेशगच्छ के इतिहास पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। अध्ययन की सुविधा हेतु सर्वप्रथम साहित्यिक और तत्पश्चात् अभिलेखीय साक्ष्यों का विवरण प्रस्तुत किया गया है। इनका अलग-अलग विवरण इस प्रकार है-

१. नवपदपरण (नवपदप्रकरण) - महाराष्ट्री प्राकृत भाषा में रचित १३७ पद्यों की यह रचना उपकेशगच्छीय कक्कसूरि के विद्वान् शिष्य जिनचन्द्रगणि पूर्वनाम कुलचन्द्र (देवगुप्तसूरि) की अनुपम कृति है। रचनाकार ने अपनी इस कृति पर वि० सं० १०७३/ई० सन् १०१६ में वृत्ति की रचना की, जिसका नाम श्रावकानन्दकारिणी है।^१

कक्कसूरि

|

कुलचन्द्र / जिनचन्द्रगणि

अपरनाम देवगुप्तसूरि [वि० सं० १०७३/ ई० सन्

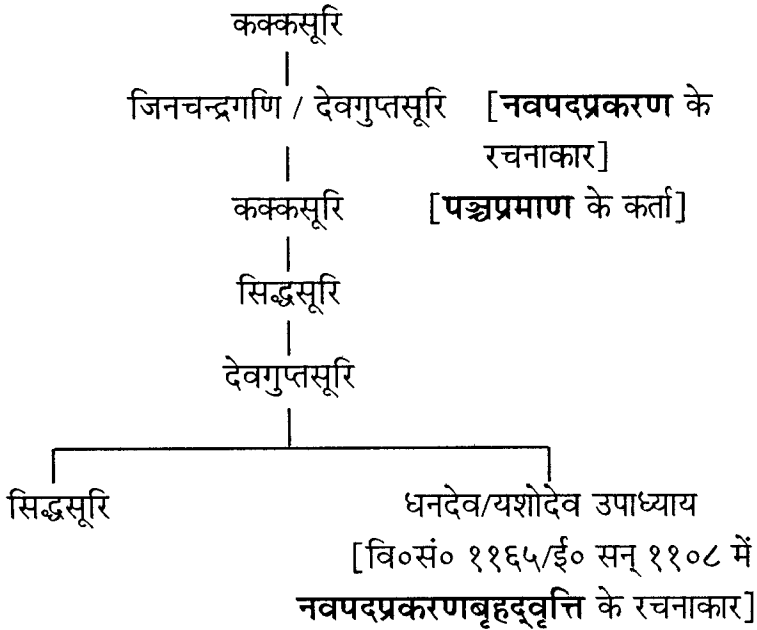
१०१६ में नवपदप्रकरण-

सटीक के रचनाकार]

वाचक उमास्वाति के तत्त्वार्थाधिगमसूत्र की ३१ उपोद्धातकारिका की टीका करने वाले देवगुप्तसूरि भी शायद यही देवगुप्तसूरि हों !

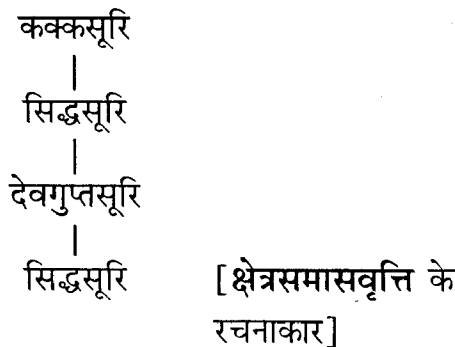
२. नवपदप्रकरणबृहद्वृत्ति - उपकेशगच्छीय धनदेव अपरनाम यशोदेवउपाध्याय ने वि०सं० ११६५ में अपने पूर्वज जिनचन्द्रगणि अपरनाम

देवगुप्तसूरि की कृति पर बृहदवृत्ति की रचना की। इसकी प्रशस्ति^२ में उन्होंने अपनी गुरु परम्परा का उल्लेख किया है, जो इस प्रकार है -



यशोदेवउपाध्याय ने वि० सं० ११७८ / ई० सन् ११२१ में प्राकृत भाषा में (६४०० गाथाओं) चन्द्रप्रभचरित की भी रचना की।

३. क्षेत्रसमासवृत्ति - ३००० श्लोक परिमाण यह कृति उपकेशगच्छीय सिद्धसूरि द्वारा वि०सं० ११९२ में रची गयी है। इसकी प्रशस्ति^३ में वृत्तिकार की गुरु-परम्परा का जो उल्लेख मिलता है, वह इस प्रकार है-



उत्तराध्ययनसूत्र सुखबोधावृत्ति^४ - इस ग्रन्थ की एक प्रति शान्तिनाथ जैन ग्रंथ भण्डार, खंभात में संरक्षित है। इसे उपकेशगच्छीय ककुदाचार्यसंतानीय देवगुप्तसूरि के शिष्य सिद्धसूरि के उपदेश से वि.सं. १३५२/ई० सन् १२९५ में श्रावक गोसल के पुत्र सङ्घपति आशाधर ने लिपिबद्ध कराया :

देवगुप्तसूरि

|

सिद्धसूरि

[वि० सं० १३५२ / ई० सन्

१२९५ में इनके उपदेश से

उत्तराध्ययनसूत्र सुखबोधा-
वृत्ति की प्रतिलिपि की गयी]

नाभिनन्दनजिनोद्धारप्रबन्ध अपरनाम शत्रुञ्जयतीर्थोद्धारप्रबन्ध - शत्रुञ्जयतीर्थोद्धारक समरसिंह के गुरु उपकेशगच्छीय सिद्धसूरि के पट्टधर कक्कसूरि ने वि० सं० १३९३ में कञ्जरोटपुर में उक्त कृति की रचना की। इसमें समरसिंह द्वारा शत्रुञ्जय पर कराये गये जीर्णोद्धार एवं उपकेशगच्छ के सम्बन्ध में विवरण प्राप्त होता है। श्री लालचन्द भगवानदास गांधी ने अपने विद्वत्तापूर्ण लेख^५ में कक्कसूरि की गुरु परम्परा का उल्लेख किया है, जो इस प्रकार है -

रत्नप्रभसूरि

|

यक्षदेवसूरि

|

कक्कसूरि

|

सिद्धसूरि

|

देवगुप्तसूरि

|
सिद्धसूरि

[समरसिंह के गुरु)]

|
कक्कसूरि

[वि० सं० १३९३ / ई० सन्
१३३६ में नाभिनन्दन-
जिनोद्धारप्रबन्ध के कर्ता]

उपदेशगच्छ की पट्टावलियाँ - जहाँ अन्य गच्छों की मात्र दो या तीन पट्टावलियाँ ही मिलती हैं, वहाँ उपदेशगच्छ की कई पट्टावलियों का उल्लेख मिलता है, किन्तु दुर्भाग्यवश अद्यावधि मात्र तीन पट्टावलियाँ ही प्रकाशित होने से अध्ययनार्थ उपलब्ध हो पाती हैं, शेष पट्टावलियाँ या तो नष्ट हो गयीं अथवा किन्हीं प्राचीन हस्तलिखित भण्डारों में पड़ी होंगी।

प्रकाशित पट्टावलियों का विवरण इस प्रकार है -

१. **उपदेशगच्छप्रबन्ध**^६ - रचनाकार - कक्कसूरि, रचनाकाल वि० सं० १३९३

२. **उपदेशगच्छपट्टावली**^७ - रचनाकार - अज्ञात, रचनाकाल - वि० सं० की १५वीं शती का अन्त

३. **उपदेशगच्छपट्टावली**^८ - रचनाकार - अज्ञात, रचनाकाल - वि० सम्वत् की २०वीं शती

कक्कसूरि के सं० १३९३/ई० १३३६ में लिखे गये **उपदेशगच्छप्रबन्ध** एवं **नाभिनन्दनजिनोद्धारप्रबन्ध** के आधार पर श्री मोहनलाल दलीचंद देसाई ने उपदेशगच्छ की पट्टावली का पुनर्गठन किया है। इस पट्टावली में कक्कसूरि और उनके गुरु सिद्धसूरि के सम्बन्ध में दिये गये समसामयिक विवरणों की ऐतिहासिकता निर्विवाद है। इसी प्रकार इस पट्टावली के कुछ अन्य विवरणों जैसे देवगुप्तसूरि द्वारा **नवपदप्रकरणवृत्ति**, उनकी पश्चात्कालीन परम्परा में हुए यशोदेवउपाध्याय द्वारा **नवपदप्रकरणबृहद्वृत्ति** के लेखन की बात उक्त रचनाओं की प्रशस्तियों से समर्थित होती है। चौलुक्यनरेश कुमारपाल के समय कक्कसूरि द्वारा पाटण में क्रियाहीन

साधुओं को गच्छ से बाहर करने की बात, जो इस पट्टावली में उद्धृत की गयी है, सत्य प्रतीत होती है। यद्यपि इस घटना का किसी अन्य समसामयिक साक्ष्य से समर्थन नहीं होता। इस पट्टावली में उल्लिखित अन्य बातें - यथा - पार्श्वनाथ की शिष्य परम्परा से उपकेशगच्छ की उत्पत्ति, वीरनिर्वाणसम्बत् ८४ में आचार्य रत्नप्रभसूरि द्वारा उपकेशपुर और कोरंटपुर में एक साथ जिनप्रतिमा की प्रतिष्ठा आदि का किसी भी पुराने ऐतिहासिक साक्ष्य से समर्थन नहीं होता, अतः ये बातें ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वहीन हैं।

उपकेशगच्छ की द्वितीय पट्टावली में भी पार्श्वनाथ की परम्परा से उपकेशगच्छ की उत्पत्ति, वीरसम्बत् ८४ में आचार्य रत्नप्रभसूरि द्वारा उपकेशपुर और कोरंटपुर में एक ही तिथि में जिनप्रतिमा की प्रतिष्ठापना का परम्परागत विवरण प्राप्त होता है। इस पट्टावली में वि०सं० १२६६ में उपकेशगच्छ से द्विवंदनीकगच्छ का प्रादुर्भाव, इसके पश्चात् वि० सं० १३०८ में खरातपा शाखा का उद्भव एवं वि० सं० १४९८ में देवगुप्तसूरि के शिष्य से खादिरी शाखा के उदय की बात कही गयी है। द्विवंदनीकगच्छ के उद्भव की बात तो अन्य पट्टावलियों से भी ज्ञात होती है किन्तु खरातपा शाखा और खादिरी शाखा के उद्भव के सम्बन्ध में अन्य किसी पट्टावली से कोई सूचना प्राप्त नहीं होती। चूँकि अभिलेखीय साक्ष्यों से उक्त शाखाओं का अस्तित्व सिद्ध है, अतः इस पट्टावली का उक्त विवरण अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं।

उपकेशगच्छ की तृतीय पट्टावली में भगवान् पार्श्वनाथ के पट्टधर शुभदत्त से लेकर सिद्धसूरि वि०सं० १९३५ तक लगभग २५०० वर्षों की अवधि में हुए ८४ आचार्यों के नाम, उनके काल एवं उनके समय की महत्त्वपूर्ण घटनाओं का संक्षिप्त विवरण है। अनुश्रुतिपरक विवरणों से परिपूर्ण एवं अर्वाचीन होने के कारण उपकेशगच्छ के प्राचीन इतिहास के अध्ययन में उक्त पट्टावली प्रामाणिक नहीं कही जा सकती है।

अभिलेखीयसाक्ष्य - उपदेशगच्छ से सम्बद्ध बड़ी संख्या में अभिलेखीय साक्ष्य उपलब्ध हुए हैं। ये लेख वि० सं० १०११ से वि० सं० १९१८ तक के हैं। इन लेखों में विक्रम की ग्यारहवीं शती के प्रारम्भ से लेकर विक्रम की १३वीं शती के अन्त तक केवल १५ लेख ही उपलब्ध हुए हैं, इनका विवरण इस प्रकार है -

उपदेशगच्छ के प्रारम्भिक प्रतिमा लेखों का विवरण

संवत्	तिथि/मिति	आचार्य नाम	
१०११	चैत्र सुदि ६	कक्काचार्य	[१ प्रतिमालेख]
१०११	-	देवसूरि	[१ प्रतिमालेख]
११७२	फाल्गुन सुदि ७ सोमवार	ककुदाचार्य	[१ प्रतिमालेख]
१२०२	आषाढ सुदि ६ सोमवार	,,	[६ प्रतिमालेख]
१२०३	वैशाख सुदि १२	सिद्धाचार्य	[१ प्रतिमालेख]
१२०६	कार्तिक वदि ६	ककुदाचार्य	[१ प्रतिमालेख]
१२१२	ज्येष्ठ वदि ८ मङ्गलवार	,,	[१ प्रतिमालेख]
१२५९	कार्तिकसुदि १२	कक्कसूरि	[१ प्रतिमालेख]
१२६१	ज्येष्ठ सुदि १२	सिद्धसूरि	[१ प्रतिमालेख]

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१.	१०११	चैत्र सुदि ६	कक्काचार्य (ककुदाचार्य) के शिष्य देवदत्त	शान्तिनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, ओसिया	पूरनचन्द नाहर, संपा० जैनलेख- संग्रह, भाग १, लेखांक १३४
२.	१०११	तिथि विहीन	देवसूरि	शान्तिनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	लोटाणा तीर्थ	दौलतसिंह लोढा, संपा० श्रीप्रतिमा- लेखसंग्रह, लेखांक ३२१
३.	११७२	फाल्गुन सुदि ७ सोमवार	ककुदाचार्य	जिन प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय माणिक चौक, खंभात	बुद्धिसागर संपा० जैनधातु- प्रतिमालेखसंग्रह, भाग-२ लेखांक ९१७

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
४.	१२०२	आषाढ सुदि ६ सोमवार	ककुदाचार्य	अरनाथ की प्रतिमा का लेख	विमलवसही, देल्वाड़ा आबू	मुनि कल्याणविजय संपा० प्रबन्ध- पारिजात लेखांक १४
५.	१२०२	"	"	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	"	वही, लेखांक २ एवं मुनि जिनविजय संपा० प्राचीनजैन- लेखसंग्रह, भाग २, लेखांक १३५
६.	१२०२	"	"	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	"	मुनि जिनविजय, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १३९

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
७.	१२०२	"	"	कुन्थुनाथ की प्रतिमा का लेख	"	वही, भाग २ लेखांक १४३
८.	१२०२	"	ककुदाचार्य	जिन प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	विमलवसही, आबू	वही, भाग-२, लेखांक १४७
९.	१२०२	"	"	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	"	वही, भाग २, लेखांक १५०
१०.	१२०३	वैशाख सुदि १२	सिद्धाचार्य...?	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, नाकोड़ा तीर्थ, राजस्थान	विनयसागर- लेखक, नाकोड़ा पार्श्वनाथतीर्थ, लेखांक ४
११.	१२०६	कार्तिक वदि ६	ककुदाचार्य	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	नेमिनाथजिनालय कुंभारिया	मुनि विशालविजय लेखक, कुंभारिया तीर्थ परिशिष्ट, लेखांक ९

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१२.	१२१२	ज्येष्ठ वदि ८ मंगलवार	„	देहरी का लेख	देहरी नं० ५१ विमलसही, आबू	मुनि कल्याणविजय पूर्वोक्त, लेखांक १३८
१३.	१(२२)२५	वैशाख सुदि १०	मुनिचन्द्रसूरि	पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ मुख्य बावन जिनालय, मातर	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ४७४
१४.	१२५९	कार्तिक सुदि १२	कक्कसूरि	चौबीसमाता के पट्ट पर उत्कीर्ण लेख	वीर जिनालय, ओसिया	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ७९१
१५.	१२६१	ज्येष्ठ सुदि १२	सिद्धसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैन मंदिर, ईडर	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १४०८

नवपदप्रकरण के कर्ता देवगुप्तसूरि के शिष्य कक्कसूरि और वि०सं० १०७८/ई० सन् १०२१ के प्रतिमालेख में उल्लिखित कक्कसूरि को समसामयिक होने से एक ही आचार्य मानने में कोई बाधा उपस्थित नहीं होती है, इसी प्रकार देवगुप्तसूरि 'द्वितीय' के शिष्य लघुक्षेत्रसमास (रचनाकाल वि०सं० ११९२/ई० सन् ११३५) के रचनाकार सिद्धसूरि और वि० सं० १२०३/ई० सन् ११४६ के प्रतिमालेख में उल्लिखित सिद्धसूरि को एक दूसरे से अभिन्न माना जा सकता है, क्योंकि इस समय तक उपकेशगच्छ में कोई विभाजन दृष्टिगोचर नहीं होता है।

पट्टावली नं. १ के अनुसार सिद्धसूरि के पट्टधर कक्कसूरि ने चौलुक्यनरेश कुमारपाल (वि०सं० ११९९-१२३०) के समय अपने गच्छ के क्रियाहीन मुनिजनों को गच्छ से निष्कासित कर दिया था। उक्त कक्कसूरि को वि० सं० ११७२-१२१२ के प्रतिमालेखों में उल्लिखित ककुदाचार्य से अभिन्न माना जा सकता है।

ऐसा प्रतीत होता है कि कक्कसूरि ने अपने साथ के जिन मुनिजनों को गच्छ से निष्कासित कर दिया था, उन्हीं से गच्छभेद प्रारम्भ हुआ। सम्भवतः इन्हीं मुनिजनों ने स्वयं को सिद्धाचार्यसन्तानीय कहना प्रारम्भ कर दिया और इसके परिणामस्वरूप कक्कसूरि के शिष्य ककुदाचार्यसन्तानीय कहलाये।

१३वीं शती तक के साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर उपकेशगच्छीय मुनिजनों की गुरु-शिष्य परम्परा का क्रम इस प्रकार निर्मित होता है -

तालिका - १

कक्कसूरि

जिनचन्द्रगणि / कुलचंद्रगणि

अपरनाम

देवगुप्तसूरि [वि०सं० १०७३ / ई० सन्

१०१६ में नवपदप्रकरण-

सटीक के रचनाकार]

कक्कसूरि [जिनचैत्यवन्दनविधि एवं

पञ्चप्रमाण के कर्ता]

[वि०सं० १०७८ प्रतिमालेख]

सिद्धसूरि

देवगुप्तसूरि [द्वितीय]

सिद्धसूरि

[वि०सं० ११९२/
ई० सन् ११३५ में]

क्षेत्रसमासवृत्ति

[वि०सं० १२०३
प्रतिमा लेख]

कक्कसूरि

[चौलुक्यनरेश कुमारपाल-वि०सं० ११९९-१२३०]
के समकालीन

[वि०सं० ११७२-१२१२ प्रतिमालेख]

यशोदेव उपा० पूर्वनाम धनदेव

[वि०सं० ११६५/
ई० सन् ११०८]

में नवपदप्रकरणबृहद्वृत्ति

वि०सं० ११७८/
ई० सन् ११२१ में

चंद्रप्रभचरित के कर्ता

विक्रम की चौदहवीं शती से उपदेशगच्छ से सम्बद्ध प्रतिमालेखों की संख्या बढ़ने लगती है। यह उल्लेखनीय है कि विक्रम की १३वीं शती तक

के लेखों में उपकेशगच्छ और प्रतिमाप्रतिष्ठापक आचार्य का उल्लेख मिलता है, जबकि १४वीं शती एवं बाद के लेखों में प्रतिमाप्रतिष्ठापक आचार्य के नाम के पूर्व ककुदाचार्यसन्तानीय और सिद्धाचार्यसन्तानीय ऐसा उल्लेख मिलता है, इससे यह प्रतीत होता है कि विक्रम की १३वीं शती के अन्त में अथवा १४वीं शती के प्रथम दशक में उपकेशगच्छ दो शाखाओं : ककुदाचार्यसन्तानीय और सिद्धाचार्यसन्तानीय में विभाजित हो चुका था ।

उपकेशगच्छीय ककुदाचार्यसन्तानीय मुनिजनों द्वारा प्रतिष्ठापित प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेखों का विवरण इस प्रकार है -

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१.	१३२०	ज्येष्ठ सुदि १५ शुक्रवार	ककुदाचार्यसंतानीय देवगुप्तसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिपार्श्वनाथ जिनालय, बीकानेर	अगरचन्द नाहटा, संपादक, बीकानेर जैनलेखसंग्रह, लेखांक ४४५
२.	१३४५	-	ककुदाचार्यसंतानीय सिद्धसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभजिनालय, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त भाग ३, लेखांक २२३६
३.	१३४७	-	"	स्तम्भ लेख	चिन्तामणि जिनालय बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक २०४
४.	१३४९	फाल्गुन सुदि ८	"	नेमिनाथ की पाषाण की	वीर जिनालय, अजारी	मुनि जयन्तविजय संपा० अर्बुदाचल-

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
		रविवार		प्रतिमा का लेख		प्रदक्षिणाजैन- लेखसंदोह, लेखांक ४३१
५.	१३५४	माघ वदि ४ शुक्रवार	"	अरनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त- लेखांक २१७
६.	१३५६	ज्येष्ठ वदि ८	"	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	स्तम्भन पार्श्वनाथ जिनालय, खारवाडो, खंभात	बुद्धिसागरसूरि पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १०४४
७.	१३६(?)	तिथि विहीन	ककुदाचार्यसंतानीय देवगुप्तसूरि के शिष्य सिद्धसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, राजलदेसर	नाहटा, पूर्वोक्त- लेखांक २३४८

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
८.	१३७३	”	”	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, पीपलाशेरी, बड़ोदरा	बुद्धिसागरसूरि पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १६६
९.	१३७७	ज्येष्ठ वदि ११ गुरुवार	ककुदाचार्यसंतानीय कक्कसूरि	शांतिनाथ की सपरिकर प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय बीकानेर	नाहटा-पूर्वोक्त लेखांक १३५२
१०.	१३७८	ज्येष्ठ वदि ९ सोमवार	ककुदाचार्यसंतानीय कक्कसूरि	-	देवकुलिका नं. १० विमलवसही, आबू	मुनि जिनविजय - पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक २०६
११.	१३७८	ज्येष्ठ वदि ९ सोमवार	”	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	देहरी नं. ४२ विमलवसही, आबू	मुनि कल्याणविजय पूर्वोक्त, लेखांक ११३

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१२.	१३७८	ज्येष्ठ सुदि ९ मंगलवार	ककुदाचार्यसंतानीत्ज सिंहसूरि (सिद्धसूरि?) के शिष्य कक्कसूरि	जिन प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	विमलवसही, आबू	वही, लेखांक २२१
१३.	१३८०	ज्येष्ठ सुदि १४	ककुदाचार्यसंतानीय कक्कसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, चुरू, राजस्थान	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १३५८
१४.	१३८०	माघ सुदि ६ सोमवार	"	चौबीसीप्रतिमा का लेख	चिन्तामणिपार्श्वनाथ जिनालय, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ५३१
१५.	१३८०	माघ सुदि ६ मंगलवार	"	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	बावन जिनालय, पेथापुर	वही, भाग १, लेखांक ७११

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१६.	१३८२	वैशाख सुदि २ शनिवार	"	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक २९०
१७.	१३८४	माघ सुदि ५	"	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	"	वही, लेखांक ३००
१८.	१३८५	फाल्गुन सुदि ८	"	महावीरस्वामी की प्रतिमा का लेख	"	वही, लेखांक १२७५
१९.	१३८५	"	"	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	"	वही, लेखांक ३०९
२०.	१३८६	वैशाख सुदि १२	ककुदाचार्यसंतानीय कक्कसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथजिनालय गाररडु	विनयसागर- संपा० प्रतिष्ठा- लेखसंग्रह, भाग १, लेखांक १२६

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२१.	१३८६	ज्येष्ठ वदि ५ सोमवार	"	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभजिनालय, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग ३ लेखांक २२५३
२२.	१३८७	माघ सुदि १० शनिवार	"	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभजिनालय, जानीशेरी, बड़ोदरा	बुद्धिसागरसूरी, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १४३
२३.	१३८८	माघ सुदि ६ सोमवार	"	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	बावन जिनालय पेथापुर	वही, भाग १, लेखांक ७०६
२४.	१३९०	ज्येष्ठ वदि ११	"	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, (नाहटों में) बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १४७७

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२५.	१३९१	तिथि विहीन	”	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभजिनालय, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग ३, लेखांक २२६१
२६.	१३९३	तिथि विहीन	”	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ३५३
२७.	१४०१	ज्येष्ठ सुदि १० बुधवार	ककुदाचार्यसंतानीय कक्कसूरि के पट्टधर देवगुप्तसूरि	धातु की परिकर वाली एकतीर्थी प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, जीरावला	मुनि जयन्तविजय, अर्बुदाचल- प्रदक्षिणाजैन लेखसंदोह (आबू, भाग-५) लेखांक ११७

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२८.	१४०५	वैशाख सुदि ३	ककुदाचार्यसंतानीय कक्कसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, जयपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ४००
२९.	१४०५	वैशाख सुदि ३	ककुदाचार्यसंतानीय कक्कसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	नेमिनाथ जिनालय भिंडी बाजार, बम्बई	मुनि कान्तिसागर, संपा० जैनधातु- प्रतिमालेख, लेखांक ३६
३०.	१४०८	वैशाख सुदि..	"	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, जैसलमेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक २७५८
३१.	१४२१	ज्येष्ठ सुदि १० बुधवार	ककुदाचार्यसंतानीय कक्कसूरि के पट्टधर देवगुप्तसूरि	देवकुलिका का लेख	जीरावला तीर्थ चैत्य देवकुलिका	लोढा, पूर्वोक्त, लेखांक ३०३(अ)

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
३२.	१४२२	वैशाख सुदि ११ बुधवार	ककुदाचार्यसंतानीय देवगुप्तसूरि	धातु की जिनप्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ५४१
३३.	१४२५	आषाढ सुदि ३ रविवार	ककुदाचार्यसंतानीय सिद्धसूरि	आदिनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	घर देरासर भारोलग्राम, आबू	मुनि जयन्तविजय आबू, भाग ५, लेखांक ५९
३४.	१४२६	माघ वदि ७	ककुदाचार्यसंतानीय देवप्रभसूरि	शातिनाथ की प्रतिमा का लेख	जगवल्लभपार्श्वनाथ देरासर, निशापोल अहमदाबाद	बुद्धिसागर-पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १२०४
३५.	१४२७	ज्येष्ठ सुदि १५, शुक्रवार	ककुदाचार्यसंतानीय देवगुप्तसूरि	”	महावीर जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १३२८

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ साम्भल्लेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
३६.	१४२७	"	"	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, बीकानेर	वही, लेखांक ४८४
३७.	१४३२	फाल्गुन वदि २	"	शान्तिनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	"	वही, लेखांक ५०१
३८.	१४३२	फाल्गुन सुदि २ शुक्रवार	"	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	नेमिनाथ जिनालय खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक ६३५
३९.	१४४६	वैशाख सुदि ३ सोमवार	"	शान्तिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	पोरवालों का मंदिर, पूना	विजयधर्मसूरि, संपा० प्राचीनलेख- संग्रह, लेखांक ९०

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
३९. अ	१४५२	वैशाख सुदि ३ बुधवार	”	कक्कसूरि (??) की प्रतिमा का लेख	पंचासरापार्श्वनाथ जिनालय, पाटन	जिनाविजय, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ५१६
४०.	१४५७	वैशाख सुदि ३ शनिवार	”	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	वासुपूज्यस्वामी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १३९२
४१.	१४५७	वैशाख सुदि ३ शनिवार	”	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि का मंदिर, बीकानेर	वही, लेखांक ५७७
४२.	१४५९	ज्येष्ठ वदि १२ शनिवार	”	चन्द्रप्रभस्वामी की प्रतिमा का लेख	”	वही, लेखांक ५९१

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
४३.	१४५९	"	"	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	"	वही, लेखांक ५९२
४४.	१४६१	ज्येष्ठ सुदि १० शुक्रवार	"	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	"	वही, लेखांक ६००
४५.	१४६१	ज्येष्ठ सुदि १०	"	"	"	मुनि कान्तिसागर, पूर्वोक्त, लेखांक ६४
४६.	१४६२	वैशाख सुदि १० रविवार	"	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	नवघरे का मंदिर, दिल्ली	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ४९७

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
४७.	१४६३	तिथि विहीन	”	शांतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, (नाहटों में) बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १८३३
४८.	१४६५	माघ सुदि ३ शनिवार	ककुदाचार्यसंतानीय देवगुप्तसूरि	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	वही, लेखांक ६२२
४९.	१४९८	वैशाख वदि ३	”	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	”	वही, लेखांक ६३६
५०.	१४६८	वैशाख सुदि ३ रविवार	”	आदिनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिपार्श्वनाथ जिनालय, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ५६०

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
५१.	१४७०	ज्येष्ठ सुदि १३ शुक्रवार	”	आदिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	मनमोहनपार्श्वनाथ जिनालय वोरवाड़, राधनपुर	मुनि विशालविजय संपा० राधनपुर प्रतिमालेखसंग्रह लेखांक ९५
५२.	१४७०	माघ सुदि २ गुरुवार	”	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, मडिया, सिरोही	नाहर, पूर्वोक्त भाग २, लेखांक २०९२
५३.	१४७०	माघ सुदि २ गुरुवार	”	”	जैन मंदिर, कंकूबाई की धर्मशाला, पालिताना	मुनि कांतिसागर, शत्रुञ्जयवैभव, लेखांक ६०
५४.	१४७७	मार्गशीर्ष वदि ४ रविवार	ककुदाचार्यसंतानीय सिद्धसूरि	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक २७४३

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
५५.	१४७८	पौष वदि १ गुरुवार	”	आदिनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, अलाय	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १ लेखांक २२०
५६.	१४८०	ज्येष्ठ वदि ५	”	नमिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	नमिनाथ जिनालय, कासिमबाजार	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ७७
५७.	१४८१	वैशाख वदि ११	”	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	श्रेयांसनाथ जिनालय, हिंडोन	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक २२९
५८.	१४८२	माघ वदि ५	”	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ७१३

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
५९.	१४८२	तिथि विहीन	"	"	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १०७०
६०.	१४८३	ज्येष्ठ सुदि ११ शुक्रवार	ककुदाचार्यसंतानीय यक्षदेवसूरि	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, थराद	लोढा, पूर्वोक्त, लेखांक १०
६१.	१४८५	वैशाख सुदि ३ बुधवार	ककुदाचार्यसंतानीय सिद्धसूरि	चन्द्रप्रभ की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग ३, लेखांक २३९१ एवं नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक २७७२

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
६२.	१४८५	ज्येष्ठ वदि ९	”	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	खरतरगच्छ का उपाश्रय, किशनगढ़	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक २५४
६३.	१४८५	आषाढ़ सुदि ३ रविवार	”	आदिनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	सीमंधरस्वामी का मंदिर, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ११७५
६४.	१४८६	मार्गशीर्ष वदि ५	”	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १२०५
६५.	१४८७	मार्गशीर्ष वदि १० शुक्रवार	”	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, (नाहटों में) बीकानेर	वही, लेखांक १४७३

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
६६.	१४८८	पौष सुदि ३ शनिवार	”	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	संभवनाथ जिनालय अजमेर	नाहर, पूर्वोक्त भाग १, लेखांक ५५०
६७.	१४८८	पौष सुदि १२ शनिवार	”	”	”	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक २७२
६८.	१४८९	वैशाख वदि १० गुरुवार	”	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	अजितनाथ जिनालय, शेख पाडो, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १०३०
६९.	१४९१	माघ सुदि ५ बुधवार	”	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ देरासर, देवसागर, सुजानगढ़, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त लेखांक २३७७

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
७०.	१४९३	वैशाख सुदि ३	“	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ जिनालय, जयपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ११८२ एवं विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक २९४
७१.	१४९३	ज्येष्ठ सुदि ३ सोमवार	“	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, कनासा पाडो, पाटण	बुद्धिसागरसूरी, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ३५१
७२.	१४९३	फाल्गुन वदि १	“	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय आमेर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक २९९

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
७३.	१४९५	ज्येष्ठ सुदि १३	”	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	गौड़ी पार्श्वनाथ जिनालय, अजमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ५३१
७४.	१४९५	”	”	”	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ७८२
७५.	१४९५	मार्गशीर्ष वदि ४ गुरुवार	ककुदाचार्यसंतानीय सर्वदेवसूरि	शांतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	अजितनाथ जिनालय, अयोध्या	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १६४१
७६.	१४९७	ज्येष्ठ सुदि २	ककुदाचार्यसंतानीय सिद्धसूरि	मुनिसुव्रत की प्रतिमा का लेख	विमलनाथ जिनालय, सवाई माधोपुर	विनयसागर, पूर्वोक्त- भाग १, लेखांक ३१९

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
७७.	१४९७	ज्येष्ठ सुदि ६	"	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, साथां	वही, भाग १, लेखांक ३२०
७८.	१४९८	वैशाख सुदि ५	"	पद्मप्रभ की प्रतिमा का लेख	पञ्चायती मंदिर, जयपुर	वही, भाग १, लेखांक ३२७
७९.	१४९८	फाल्गुन वदि १०	ककुदाचार्यसंतानीय कक्कपूरि	शीतलनाथ की प्रतिमा का लेख	बालावसही, शत्रुञ्जय	शत्रुञ्जयवैभव, लेखांक ८२
८०.	१४९९	फाल्गुन वदि २ गुरुवार	"	"	चन्द्रप्रभ जिनालय,	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक २१९
८१.	१४९९	फाल्गुन वदि २	"	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, चेलापुरी, दिल्ली	वही, भाग १, लेखांक ४७१

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
८२.	१४९९	”	”	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	मनमोहनपार्श्वनाथ जिनालय, चौकसीपोल, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ८२५
८३.	१५००	मार्गशीर्ष वदि २	”	कुन्धुनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १३३०
८४.	१५०१	ज्येष्ठ वदि १२ सोमवार	”	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	वही, लेखांक ८४६
८५.	१५०१	ज्येष्ठ वदि १२ सोमवार	”	कुन्धुनाथ की प्रतिमा का लेख	”	वही, लेखांक ८४५

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
८६.	१५०१	माघ वदि ६	”	शान्तिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	गुरु मन्दिर, कोचरों की बगीची, बीकानेर	वही, लेखांक १९९१
८७.	१५०१	माघ वदि ६ बुधवार	”	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	शीतलनाथ, जिनालय, बालोतरा	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ७३०
८८.	१५०१	माघ वदि ६	”	शान्तिनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, (कोचरों में) बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १६१८
८९.	१५०१	माघ सुदि ५ बुधवार	”	अजिनाथ की प्रतिमा का लेख	पद्मप्रभ जिनालय, घाट, जयपुर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ३४३

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
९०.	१५०१	माघ सुदि ६ गुरुवार	ककुदाचार्यसंतानीय कक्कसूरि	चन्द्रप्रभ की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, मन्दसौर	वही, भाग १, लेखांक ३४४
९१.	१५०३	ज्येष्ठ सुदि ११, शुक्रवार	”	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	बावनजिनालय, करेड़ा	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १९३४
९२.	१५०३	ज्येष्ठ सुदि ११		अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ८६७
९३.	१५०३	आषाढ सुदि ९ गुरुवार	”	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	”	वही, लेखांक ८७१

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
९४.	१५०४	वैशाख सुदि ६ शुक्रवार	”	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	गौड़ी जी भंडार उदयपुर की एक प्रतिमा	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक २०३
९५.	१५०४	ज्येष्ठ सुदि ४	”	चन्द्रप्रभ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ८८०
९६.	१५०४	फाल्गुन वदि ५	”	कुंथुनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	चौमुख जी देरासर, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १३३
९७.	१५०५	वैशाख सुदि ६	ककुदाचार्यसन्तानीय सिद्धसूरि के शिष्य कक्कसूरि	अजितनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	गौड़ी पार्श्वनाथ जिनालय, मोतीकटरा, आगरा	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १४७९

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
९८.	१५०५	”	”	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	गौड़ीपार्श्वनाथ जिनालय, गोगा दरवाजा, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १९३७
९९.	१५०६	फाल्गुन वदि ८	”	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	पंचायती मंदिर जयपुर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ४१०
१००.	१५०७	ज्येष्ठ सुदि १०	”	शान्तिनाथ की धातु की प्रतिमा	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर का लेख	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक २३३
१०१.	१५०७	फाल्गुन वदि ३	ककुदाचार्यसंतानीय कक्कसूरि	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, भिनाय	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ४२४

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१०२.	१५०८	ज्येष्ठ सुदि २	”	नेमिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, भैसरोडगढ़	वही, भाग १, लेखांक ४३२
१०३.	१५०८	मार्गशीर्ष वदि २	”	सुमतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, सांगानेर	वही, भाग १, लेखांक ४३५
१०४.	१५०८	माघ सुदि ५ गुरुवार	ककुदाचार्यसंतानीय ...सूरि	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग ३, लेखांक २३२७
१०५.	१५०९	वैशाख वदि ३	ककुदाचार्यसंतानीय कक्कसूरि	सुविधिनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ देरासर मांडला	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक २५२

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१०६.	१५०९	वैशाख सुदि ३	”	चन्द्रप्रभ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	बड़ा मंदिर, नागौर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ४३७
१०७.	१५०९	माघ सुदि ५ सोमवार	”	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, नागौर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १२५६
१०८.	१५१०	माघ सुदि ५	”	”	महावीर जिनालय, आसानियों का चौक, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १८९६
१०९.	१५१०	फाल्गुन सुदि ४ शुक्रवार	”	कुंथुनाथ की प्रतिमा का लेख	बालावसही, शत्रुञ्जय	शत्रुञ्जयवैभव, लेखांक १२७

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
११०.	१५११	माघ वदि ४	"	पद्मप्रभ की प्रतिमा का लेख	कल्याण पार्श्वनाथ जिनालय, वीसनगर	बुद्धिसागरसूरी, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ४९८
१११.	१५११	माघ वदि ५ सोमवार	"	नमिनाथ की प्रतिमा का लेख	नेमिनाथ जिनालय, अजीमगंज, मुर्शिदाबाद	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १३
११२.	१५११	फाल्गुन सुदी ११	"	श्रेयांसनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	खरतरगच्छीय आदिनाथ जिनालय, कोटा	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ४८१
११३.	१५१२	माघ सुदि १ बुधवार	"	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	पंचायती जैन मंदिर, लशकर, ग्वालियर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १३७३

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्वाम्यलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
११४.	१५१२	माघ वदि ७ बुधवार	“	सुमतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	बड़ा मंदिर, नागौर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ४८८
११५.	१५१२	“	“	संभवनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	माणिकसागरजी का मंदिर, कोटा	वही, भाग १, लेखांक ४८७
११६.	१५१२	महासुदी सुदी ६, बुधवार	“	अनन्तनाथ की प्रतिमा का लेख	सुपार्श्वनाथ का पंचायती मंदिर, जयपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ११५३
११७.	१५१२	माघ वदि बुधवार	“	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, नागौर	वही, भाग २, लेखांक १२६१

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
११८.	१५१२	फाल्गुन सुदि ८ शुक्रवार	ककुदाचार्यसंतानीय सूरि	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, जैसलमेर	वही, भाग ३, लेखांक २३३४
११९.	१५१२	फाल्गुन सुदि १२	ककुदाचार्यसंतानीय कक्कसूरि	आदिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, नागौर	वही, भाग २, लेखांक १२६३ एवं विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ४९१
१२०.	१५१३	चैत्र सुदि ६ गुरुवार	”	मुनिसुव्रत की प्रतिमा का लेख	वीरजिनालय, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ८७६

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१२१.	१५१३	वैशाख सुदि ३ गुरुवार	“	अभिनन्दनस्वामी की प्रतिमा का लेख	जैन मन्दिर, घाटकोपर, मुम्बई	मुनि कान्तिसागर, पूर्वोक्त, लेखांक १४२
१२२.	१५१३	आषाढ़ सुदि २	“	शीतलनाथ की पञ्चतीर्थी प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, सांगानेर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ५१५
१२३.	१५१३	फाल्गुन वदि १२	“	कुंथुनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि जी मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ९८०
१२४.	१५१४	फाल्गुन सुदि १०	“	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग ३, लेखांक २३३५

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ साम्भल्लेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१२५.	१५१४	फाल्गुन सुदि १० सोमवार	”	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय देवीकोट, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग ३, लेखांक २५७७
१२६.	१५१४	”	”	कुंथुनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, जामनगर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक २९५
१२७.	१५१५	ज्येष्ठ सुदि ११	”	नेमिनाथ की पञ्चतीर्थी प्रतिमा का लेख	केशरियानाथ का मन्दिर, भिनाय	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ५३६
१२८.	१५१७	माघ वदि ५	”	अजितनाथ की पञ्चतीर्थी प्रतिमा का लेख	जैन मन्दिर, जसोल, मारवाड़	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १८८३

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१२९.	१५१७	माघ वदि ६	"	कुंशुनाथ की पञ्चतीर्थी प्रतिमा का लेख	पञ्चायती जैन मन्दिर, जयपुर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ५७१
१३०.	१५१७	"	"	चन्द्रप्रभस्वामी की धातु की प्रतिमा का लेख	शान्तिनाथ जिनालय राधनपुर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ३०८
१३१.	११७	माघ वदि ५	"	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १२४४
१३२.	१५१७	माघ सुदि ५	"	कुंशुनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी मंदिर, बीकानेर	वही, लेखांक १००५
१३३.	१५१८	ज्येष्ठ सुदि २	"	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	मनमोहन पार्श्वनाथ जिनालय, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ७६५

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१३४.	१५१८	फाल्गुन वदि ७ शनिवार	”	शीतलनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १०१३
१३५.	१५१९	वैशाख वदि ११ शुक्रवार	”	सम्भवनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, पायधुनी, मुम्बई	मुनि कान्तिसागर, पूर्वोक्त, लेखांक १६८
१३६.	१५२०	वैशाख वदि ५	”	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ मुख्य बावन जिनालय, मातर	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ४७५
१३७.	१५२०	वैशाख सुदि ५ बुधवार	”	चन्द्रप्रभ की पञ्चतीर्थी प्रतिमा का लेख	माणिकसागरजी का मंदिर, कोटा	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ६०४

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१३८.	१५२०	मार्गशीर्ष वदि १२	"	"	आदिनाथ जिनालय, नागौर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १२७१
१३९.	१५२१	वैशाख सुदि १०	ककुदाचार्यसन्तानीय सिद्धसूरि के पट्टधर कक्कसूरि	शान्तिनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	पञ्चायती जैन मन्दिर, लस्कर, ग्वालियर	वही, भाग २, लेखांक १३८१
१४०.	१५२२	पौष वदि १ गुरुवार	"	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त, लेखांक ४०
१४१.	१५२२	माघ सुदि २ गुरुवार	ककुदाचार्यसन्तानीय कक्कसूरि	अजितनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	शान्तिनाथ जिनालय खजुरी शेरी, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक २४४

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१४२.	१५२४	वैशाख सुदि ३ सोमवार	ककुदाचार्यसंतानीय कक्कसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	मोतीशाह की टूंक, शत्रुञ्जय	शत्रुञ्जयवैभव, लेखांक १८१
१४३.	१५२४	वैशाख सुदि ६ गुरुवार	”	नमिनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय (नाहटों में) बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १८३६
१४४.	१५२४	मार्गशीर्ष वदि ३	”	अजितनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय चाडसू	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ६४७
१४५.	१५२४	मार्गशीर्ष वदि ४ रविवार	ककुदाचार्यसंतानीय सिद्धसूरि के पट्टधर कक्कसूरि	कुन्थुनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, आगरा	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १४४३

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१४६.	१५२४	मार्गशीर्ष सुदि १० शुक्रवार	ककुदाचार्यसंतानीय कक्कसूरि	चन्द्रप्रभ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	संभवनाथ जिनालय, मुर्शिदाबाद	नाहर, पूर्वोक्त भाग १, लेखांक ५०
१४७.	१५२४	”	ककुदाचार्यसंतानीय कक्कसूरि	शीतलनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	बड़ा जैन मंदिर, नागौर	वही, भाग २, लेखांक १२७४ एवं विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ६५०
१४८.	१५२६	वैशाख वदि ५	”	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, अलवर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १९४

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१४९.	१५२६	आषाढ सुदि २	"	सुविधिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	कुंथुनाथ जिनालय, रांगड़ी चौक, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १६९१
१५०.	१५२६	"	"	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	वही, लेखांक १०४७
१५१.	१५२७	माघ सुदि ९ बुधवार	"	शान्तिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, सरदारशहर	वही, लेखांक २३८६
१५२.	१५२८	वैशाख वदि ६ सोमवार	ककुदाचार्यसंतानीय देवगुप्तसूरि	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	धर्मनाथ जिनालय, जोधपुर	नाहर, पूर्वोक्त, लेखांक ६२५
१५३.	१५२८	"	"	नमिनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, सुधिदोला, लखनऊ	वही, भाग २, लेखांक १५७१

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१५४.	१५२९	फाल्गुन वदि १	„	कुशुनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १०६४
१५५.	१५३०	वैशाख सुदि ३	„	अभिनन्दनस्वामी की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, माणकचौक, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १४०
१५६.	१५३०	मार्गशीर्ष वदि १२	ककुदाचार्यसंतानीय कक्कसूरि	चन्द्रप्रभस्वामी की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	बड़ा जैन मंदिर, नागौर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ६०७
१५७.	१५३०	माघ सुदि १२ सोमवार	ककुदाचार्यसंतानीय सिद्धसूरि	श्रेयांसनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	मनमोहनपार्श्वनाथ जिनालय, खजूरी पाड़ो, पाटन	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक २५२

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१५८.	१५३०	फाल्गुन सुदि ६	ककुदाचार्यसंतानीय देवगुप्तसूरि	”	मणिकसागरजी का मंदिर, कोटा	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ७३०
१५९.	१५३१	वैशाख सुदि ५ सोमवार	”	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, नासिक	मुनि कान्तिसागर, पूर्वोक्त, लेखांक २२०
१६०.	१५३२	वैशाख सुदि ५	”	शीतलनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	विमलनाथ जिनालय सवाई माधोपुर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ७४६
१६१.	१५३२	वैशाख सुदि ४ शनिवार	”	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, सांगानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १२२३

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१६२.	१५३३	पौष वदि १० गुरुवार	“	अरनाथ की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभजिनालय सुल्तानपुरा, बड़ोदरा	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक २०२
१६३.	१५३४	आषाढ़ सुदि १ गुरुवार	“	पद्मप्रभ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, रेजीडेन्सी बाजार, हैदराबाद	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, सांगानेर २०५२
१६४.	१५३४	मार्गशीर्ष वदि ६ सोमवार	ककुदाचार्यसंतानीय कक्कसूरि	कुन्थुनाथ की प्रतिमा का लेख	शान्तिनाथ जिनालय, हनुमानगढ़, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक २५३०
१६५.	१५३४	मार्गशीर्ष वदि १२	“	देवगुप्तसूरि की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, राजलदेसर	वही, लेखांक २३४१
१६६.	१५३४	माघ सुदि ९	ककुदाचार्यसंतानीय देवगुप्तसूरि	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	वही, लेखांक १०८९

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठाप्रक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१६७.	१५३४	माघ सुदि ९	”	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर पाटन	जिनविजय, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ३५७
१६८.	१५३५	आषाढ़ ... २	”	पद्मप्रभ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, नागौर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १२९२
१६९.	१५३५	पौष वदि ९ शनिवार	”	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर गवाड़ा	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ६५७
१७०.	१५३६	मार्गशीर्ष सुदि ५	”	शीतलनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १०९७

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१७१.	१५३७	मार्गशीर्ष सुदि ५	”	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, डीसा	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक २१०५
१७२.	१५३८	फाल्गुन सुदि ३	”	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	सुपार्श्वनाथ जिनालय, जैसलमेर	वही, भाग ३, लेखांक २२०१
१७३.	१५४२	ज्येष्ठ सुदि ५ सोमवार	”	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	हिम्मताराम बाफना का मंदिर, अमरसागर, जैसलमेर	वही, भाग ३, लेखांक २५३९
१७४.	१५४६	माघ वदि ४	”	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	सांवलियाजी का मंदिर, रामबाग, मुर्शिदाबाद	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ३०

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१७५.	१५५०	आषाढ़ वदि ८ शुक्रवार	“	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	शीतलनाथ जिनालय, रिणी, तारानगर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक २४४४
१७६.	१५५०	माघ वदि १२ शनिवार	“	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, बीकानेर	वही, लेखांक १११७
१७७.	१५५५	ज्येष्ठ सुदि ५ बुधवार	“	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, बीकानेर	वही, लेखांक १२५६
१७८.	१५५५..	पौष वदि ५ गुरुवार	ककुदाचार्यसंतानीय कक्कसूरि के शिष्य देवगुप्तसूरि	अरनाथ की प्रतिमा का लेख	सुपार्श्वनाथ जिनालय, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग ३, लेखांक २२०४

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१७९.	१५५८	वैशाख सुदि ११ शुक्रवार	ककुदाचार्यसंतानीय देवगुप्तसूरि	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, सहादतगंज	वही, भाग २, लेखांक १६३४
१८०.	१५५८	... सुदि ११ गुरुवार	ककुदाचार्यसंतानीय कक्कसूरि के शिष्य देवगुप्तसूरि	मुनिसुव्रत की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, अलवर	वही, भाग १, लेखांक ९९७
१८१.	१५५९	वैशाख वदि ११ शुक्रवार	ककुदाचार्यसंतानीय कक्कसूरि	„	मुनि कर्मचन्द्र हेमचन्द्रजी का मंदिर, पालिताना	वही, भाग १, लेखांक ६७२
१८२.	१५५९	आषाढ़ सुदि १० बुधवार	ककुदाचार्यसंतानीय देवगुप्तसूरि	कुन्धुनाथ की प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ जिनालय, जयपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ११८९ एवं विनय-

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१८३.	१५६२	वैशाख सुदि १० रविवार	“	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	शीतलनाथ जिनालय, माणिकतल्ला, कलकत्ता	सागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १०५
१८४.	१५६३	माघ सुदि १ गुरुवार	“	पद्मप्रभ की प्रतिमा का लेख	नेमिनाथ जिनालय, अजीमगञ्ज, मुर्शिदाबाद	वही, भाग १, लेखांक २०
१८५.	१५६६	ज्येष्ठ	“	शांतिनाथ की	मुनिसुव्रत जिनालय,	विनयसागर,

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१८६.	१५६७	वदि १२ वैशाख सुदि १० बुधवार	ककुदाचार्यसंतानीय सिद्धसूरि	पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख पार्श्वनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	मालपुरा धर्मनाथ जिनालय, सोहावल, फैजाबाद	पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ९२५ नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १६५९
१८७	१५७१	फाल्गुन सुदि ३ शुक्रवार	ककुदाचार्यसंतानीय श्रीसिंहसूरि	मुनिसुव्रत की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, सुंधिडोला, लखनऊ	वही, भाग २, लेखांक १५७४
१८८.	१५७२	फाल्गुन सुदि ९	ककुदाचार्यसंतानीय देवगुप्तसूरि	आदिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	खरतरगच्छीय आदिनाथ जिनालय, कोटा	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ९५३
१८९.	१५७४	वैशाख	ककुदाचार्यसंतानीय	धर्मनाथ की	चिन्तामणि पार्श्वनाथ	नाहर, पूर्वोक्त,

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१९०.	१५७६	सुदि १० शुक्रवार वैशाख वदि १ रविवार	सिद्धसूरि ककुदाचार्यसंतानीय सिद्धसूरि के पट्टधर कक्कसूरि	धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख धर्मनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	जिनालय, आगरा वीर जिनालय, बीकानेर	भाग १, लेखांक १४५० नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १२२९
१९१	१५७९	वैशाख सुदि ६ सोमवार	ककुदाचार्यसंतानीय सिद्धसूरि	पद्मप्रभ की प्रतिमा का लेख	जगत सेठ का मंदिर महिमापुर, बंगाल	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ७४
१९२.	१५७९	"	"	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, चाणस्मा	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १ लेखांक १०८
१९३.	१५८५	आषाढ़	"	आदिनाथ की	वासुपूज्य जिनालय,	नाहर, पूर्वोक्त,

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
		सुदि ५ सोमवार		प्रतिमा का लेख	चम्पापुरीतीर्थ, बिहार	भाग १, लेखांक १५६
१९४.	१६३४	माघ सुदि ९	ककुदाचार्यसंतानीय देवगुप्तसूरि	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, जूना बेडा मारवाड़.	वही, भाग १, लेखांक १२८

उक्त प्रतिमा लेखों के आधार पर उपदेशगच्छीय ककुदाचार्यसंतानीय मुनिजनों की आचार्य-परम्परा का एक क्रम सुनिश्चित होता है, जो इस प्रकार है -

देवगुप्तसूरि	[वि०सं० १३१४-१३२३]
सिद्धसूरि	[वि०सं० १३४६-१३७३]
कक्कसूरि	[वि०सं० १३७८-१४१२]
देवगुप्तसूरि	[वि०सं० १४२१-१४७६]
सिद्धसूरि	[वि०सं० १४७७-१४९८]
कक्कसूरि	[वि०सं० १४९९-१५१२]
देवगुप्तसूरि	[वि०सं० १५२८-१५५७]
सिद्धसूरि	[वि०सं० १५६६-१५९६]
देवगुप्तसूरि	[वि०सं० १६३४]

ककुदाचार्यसन्तानीय आचार्यों की तालिका में उल्लिखित कक्कसूरि [वि०सं० १३७८-१४१२ प्रतिमालेख] और उनके गुरु सिद्धसूरि [वि०सं०

१३४६-१३७३ प्रतिमालेख] को नाभिनन्दनजिनोद्धारप्रबन्ध के कर्ता कक्कसूरि और उनके गुरु सिद्धसूरि से समसामयिकता के आधार पर अभिन्न मान सकते हैं। इसी प्रकार वि०सं० १३५२ में प्रतिलिपि कृत उत्तराध्ययनसूत्र की सुखबोधावृत्ति में उल्लिखित सिद्धसूरि भी उपरोक्त सिद्धसूरि से अभिन्न प्रतीत होते हैं। इसी प्रकार ककुदाचार्य संतानीय देवगुप्तसूरि [वि०सं० १३१४-१३२३ प्रतिमालेख] तथा उपकेशगच्छप्रबन्ध और नाभिनन्दनजिनोद्धारप्रबन्ध के रचनाकार कक्कसूरि के प्रगुरु और सिद्धसूरि के गुरु देवगुप्तसूरि को एक ही आचार्य माना जा सकता है।

उपकेशगच्छीय मतिशेखर द्वारा रचित धन्नारास [रचनाकाल वि०सं० १५१४/ई० सन् १४५८] और वाचक विनयसमुद्र द्वारा रचित आरामशोभाचौपाई [वि०सं० १५८३/ई० सन् १५२७] की प्रशस्तियों में रचनाकार द्वारा जो गुरु-परम्परा दी गई है उसकी संगति भी ककुदाचार्य सन्तानीय गुरु-परम्परा से पूर्णतया बैठ जाती है। इनका विवरण इस प्रकार है-

धन्नारास - मरु-गुर्जर भाषा में रचित यह रचना उपकेशगच्छीय मुनि शीलसुन्दर के शिष्य मतिशेखर की अनुपम कृति है। इसकी प्रशस्ति^१ में रचनाकार ने अपनी गुरु-परम्परा और रचनाकाल का उल्लेख किया है। जो इस प्रकार है-

रत्नप्रभसूरि
|
यक्षदेवसूरि
|
|
देवगुप्तसूरि
|
सिद्धसूरि
|

कक्कसूरि

|

शीलसुन्दर

|

मतिशेखर

[वि०सं० १५१४/ई० सन्
१४५६ में धन्नारास के
रचयिता]

मतिशेखर^{१०} द्वारा रचित अन्य रचनायें, यथा-मयणरेहारास, बावनी, नेमिनाथसतफुलडाफागु, कुरगडु (क्रूरघट) महर्षिरास, इलापुत्रचरित्र, नेमिगीत भी उपलब्ध हैं।

आरामशोभाचौपाई मरु-गूर्जर भाषा में रचित यह कृति उपदेशगच्छीय हर्षसमुद्र के शिष्य वाचक विनयसमुद्र द्वारा वि० सं० १५८३ में रची गयी है।^{११} अद्यावधि इनकी २० रचनायें उपलब्ध हैं जो वि०सं० १५८३ से वि० सं० १६१४ के मध्य रची गयी हैं। आरामशोभाचौपाई की प्रशस्ति में रचनाकार की जो गुरु-परम्परा प्राप्त होती है, वह इस प्रकार है-

रत्नप्रभसूरि

|

सिद्धसूरि

|

हर्षसमुद्र

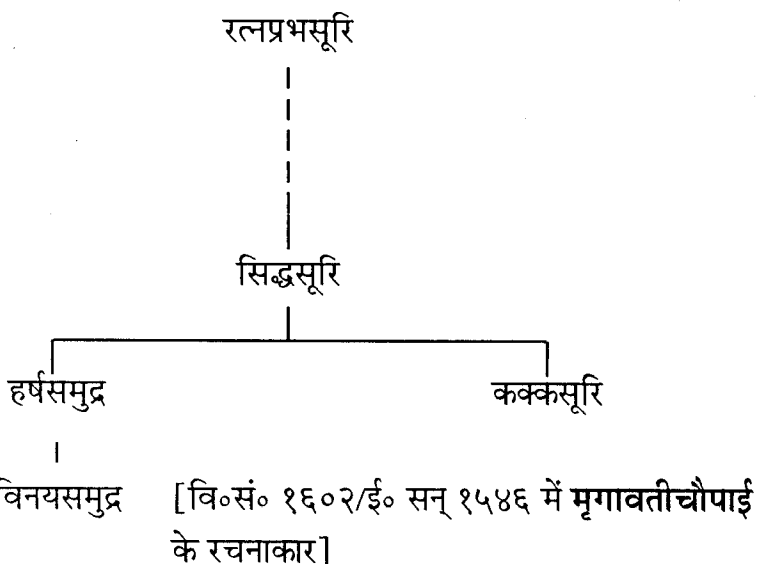
|

विनयसमुद्र

[वि०सं० १५८३/ई० सन्
१५२६ आरामशोभाचौपाई
के रचनाकार]

मृगावतीचपाई^{१२} यह उपदेशगच्छीय वाचक विनयसमुद्र की दूसरी महत्वपूर्ण कृति है, जो वि०सं० १६०२/ई० सन् १५४६ में रची गयी हैं। इस

रचना की प्रशस्ति में भी वाचक विनयसमुद्र ने अपनी गुरु-परम्परा का उल्लेख किया है, जो इस प्रकार है -



उपकेशगच्छीय वाचक मतिशेखर द्वारा वि०सं० १५३७ में रचित मयणरेहारास^{१३} की वि०सं० १५९१/ई० सन् १५३४ में लिखी गयी प्रतिलिपि की प्रशस्ति में उपकेशगच्छीय कक्कसूरि, उनके शिष्य उपा० रत्नसमुद्र और उनकी शिष्या साध्वी रङ्गलक्ष्मी का उल्लेख प्राप्त होता है। इस प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि मयणरेहारास की यह प्रतिलिपि साध्वी रङ्गलक्ष्मी के पठनार्थ लिखी गयी थी।

उक्त साक्ष्यों के आधार पर उपकेशगच्छीय ककुदाचार्यसन्तानीय मुनिजनों के आचार्य परम्परा की जो तालिका बनती है, वह इस प्रकार है -
द्रष्टव्य, तालिका संख्या २ :

तालिका-२

साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर निर्मित
उपकेशगच्छीय ककुदाचार्यसंतानीय मुनिजनों की गुरु-परम्परा

कक्कसूरि

जिनचन्द्रगणि/कुलचन्द्रगणि

अपरनाम देवगुप्तसूरि [वि०सं० १०७३/ई० सन्

१०१७ में नवपदप्रकरण के

रचयिता]

[संभवतः तत्त्वार्थाधिगमसूत्र

की ३१ उपोद्घात्कारिका के

टीकाकार]

कक्कसूरि

[पंचप्रमाण के कर्ता]

वि०सं० १०७८/ई० सन् १०२२

प्रतिमालेख

सिद्धसूरि

देवगुप्तसूरि [द्वितीय]

सिद्धसूरि

[वि०सं० ११९२/ई० सन् ११३६ में
क्षेत्रसमासवृत्ति के कर्ता]

[वि०सं० १२०३

प्रतिमालेख]

यशोदेव उपाध्याय पूर्वनाम धनदेव

वि०सं० ११६५/ई० सन् ११०९ में

नवपदप्रकरणबृहद्वृत्ति एवं

वि०सं० ११७८/ई० सन् ११२२

में चन्द्रप्रभचरित के कर्ता

कक्कसूरि (चौलुक्यनरेश कुमारपाल [वि०सं० ११९९-१२३०]
के समकालीन) वि०सं० ११७२-१२१२ प्रतिमालेख

देवगुप्तसूरि [वि०सं० १३१४-२३] प्रतिमालेख

सिद्धसूरि [वि०सं० १३४६-१३७३] प्रतिमालेख,
शत्रुञ्जयतीर्थोद्धारक समरसिंह के गुरु;
वि०सं० १३५२ की उत्तराध्ययनसूत्रटीका में उल्लिखित

कक्कसूरि [वि०सं० १३७६-१४१२] प्रतिमालेख;
वि०सं० १३९३/ ई० सन् १३३७ में नाभिनन्दन-
जिनोद्धारप्रबन्ध एवं उपकेशगच्छप्रबन्ध के रचयिता

देवगुप्तसूरि [वि०सं० १४३२-१४७६] प्रतिमालेख

सिद्धसूरि [वि०सं० १४७७-१४९८] प्रतिमालेख

कक्कसूरि [वि०सं० १४९९-१५१२] प्रतिमालेख

मुनि शीलसुन्दर

देवगुप्तसूरि

[वि०सं० १५२८-१५२७] प्रतिमालेख

वाचक मतिशेखर

सिद्धसूरि

वि०सं० १५१४/ई० सन्
१४५८ में धन्नारास एवं

[वि०सं० १५६६-१५९६] प्रतिमालेख

वि०सं० १५३७/ई० सन्

१४७१ में मयणरेहारास के कर्ता

हर्षसमुद्र	उपा० रत्नसमुद्र	कक्कसूरि
		[वि०सं० १६०२ में
वाचक विनयसमुद्र	साध्वी रंगलक्ष्मी	रचित मृगावतीचौपाई
[वि०सं० १५८३ में	[वि०सं० १५९१ में	में उल्लिखित
आरामशोभाचौपाई]	इनके पठनार्थ	
एवं [वि०सं० १६०२	मयणरेहारास की	देवगुप्तसूरि
में मृगावतीचौपाई]	प्रतिलिपि की गयी]	[वि०सं० १६३४
के कर्ता		प्रतिमालेख]

साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर निर्मित उपकेशगच्छीय ककुदाचार्यसंतानीय आचार्य परम्परा की उक्त तालिका में वि० सं० की ग्यारहवीं शती के मध्य हुए कक्कसूरि से लेकर विक्रम की सत्रहवीं शती के बीच हुए देवगुप्तसूरि तक के आचार्य हैं। इस तालिका में चौलुक्यनरेश कुमारपाल (वि०सं० ११९९-१२३०) के समकालीन कक्कसूरि (वि० सं० ११७२-१२१२ प्रतिमालेख) और ककुदाचार्यसंतानीय देवगुप्तसूरि (वि०सं० १३१४-१३२३ प्रतिमालेख) के मध्य लगभग १०० वर्षों का अन्तराल है। इस बीच कौन-कौन से आचार्य हुए, इस बारे में ग्रन्थप्रशस्तियों तथा प्रतिमालेखों से कोई जानकारी प्राप्त नहीं होती, किन्तु उपकेशगच्छपट्टावली^{१४} (उपकेशगच्छप्रबन्ध और नाभिनन्दन-जिनोद्धारप्रबन्ध के आधार पर निर्मित) के विवरण के आधार पर इस अन्तराल को पूर्ण किया जा सकता है।

उक्त पट्टावली के अनुसार कक्कसूरि (कुमारपाल के समकालीन) के पश्चात् देवगुप्तसूरि हुये^{१५}। यद्यपि इस देवगुप्तसूरि का कोई प्रतिमालेख नहीं मिला है, तथापि वि० सं० १२४० के आस-पास उनका समय माना जा सकता है। पट्टावली के अनुसार देवगुप्तसूरि के पट्टधर सिद्धसूरि हुए।^{१६}

वि०सं० १२६१ के प्रतिमालेख में उल्लिखित सिद्धसूरि संभवतः यही सिद्धसूरि हैं। पट्टावली में कहा गया है कि वि० सं० १२५२ में तुरुष्कों ने उपकेशपुर पर आक्रमण किया और यहाँ स्थित महावीर जिनालय को क्षतिग्रस्त कर दिया।^{१७} गच्छनायक सिद्धसूरि इस समय पाटण में थे, बाद में वि० सं० १२५५ में उन्होंने इसका जीर्णोद्धार कराया।^{१८} इसी पट्टावली के अनुसार सिद्धसूरि अपना पट्टधर नियुक्त करने के पूर्व ही स्वर्गस्थ हो गये, अतः श्रीसंघ ने वि०सं० १२७८ में उपाध्याय पदधारक मुनि वर्धमान को देवगुप्तसूरि के नाम से गच्छनायक बनाया।^{१९}

उपकेशगच्छ की द्वितीय पट्टावली के अनुसार महावीर और पार्श्व; दोनों की वन्दना करने के कारण वि०सं० १२६६ में उपकेशगच्छ में सिद्धसूरि से द्विवंदनीकशाखा का उदय हुआ^{२०} -

रस-रस-दिनकर (१२६६) वर्षे, मासे मधुमाधवे च संज्ञायाम् ।

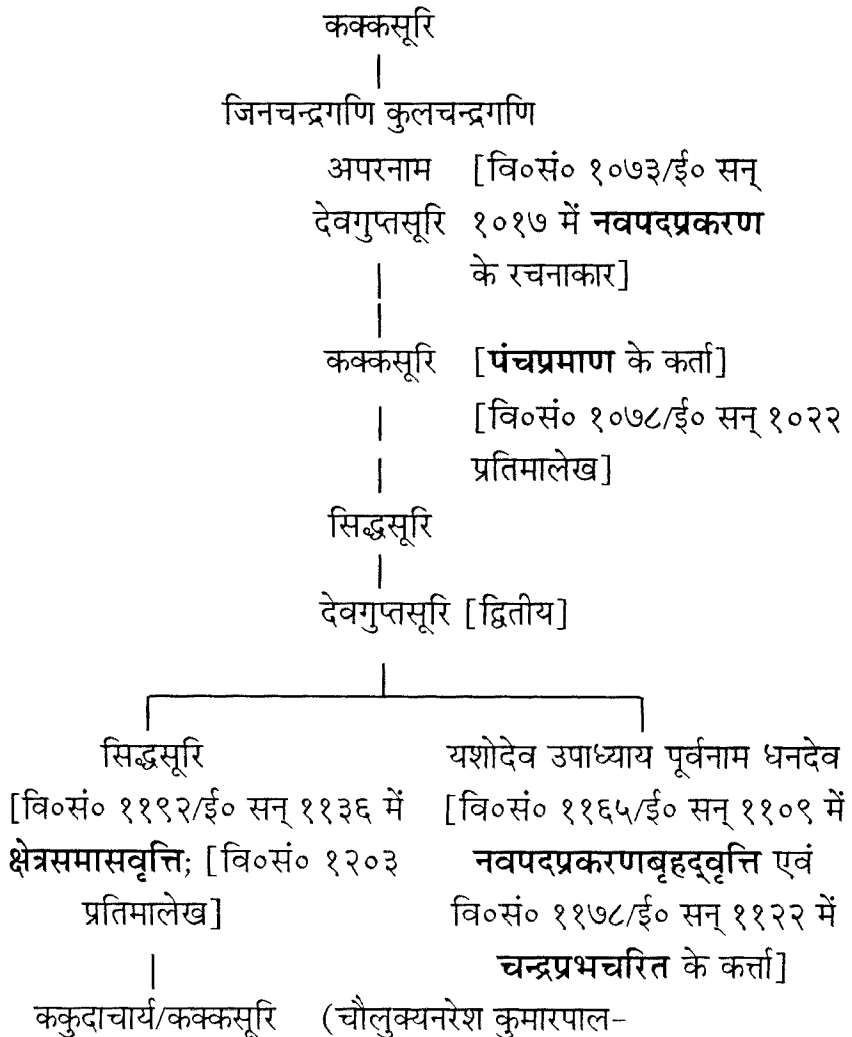
जाता द्विवंदनीकाः, श्रीमत्सिद्धसूरिवराः ॥

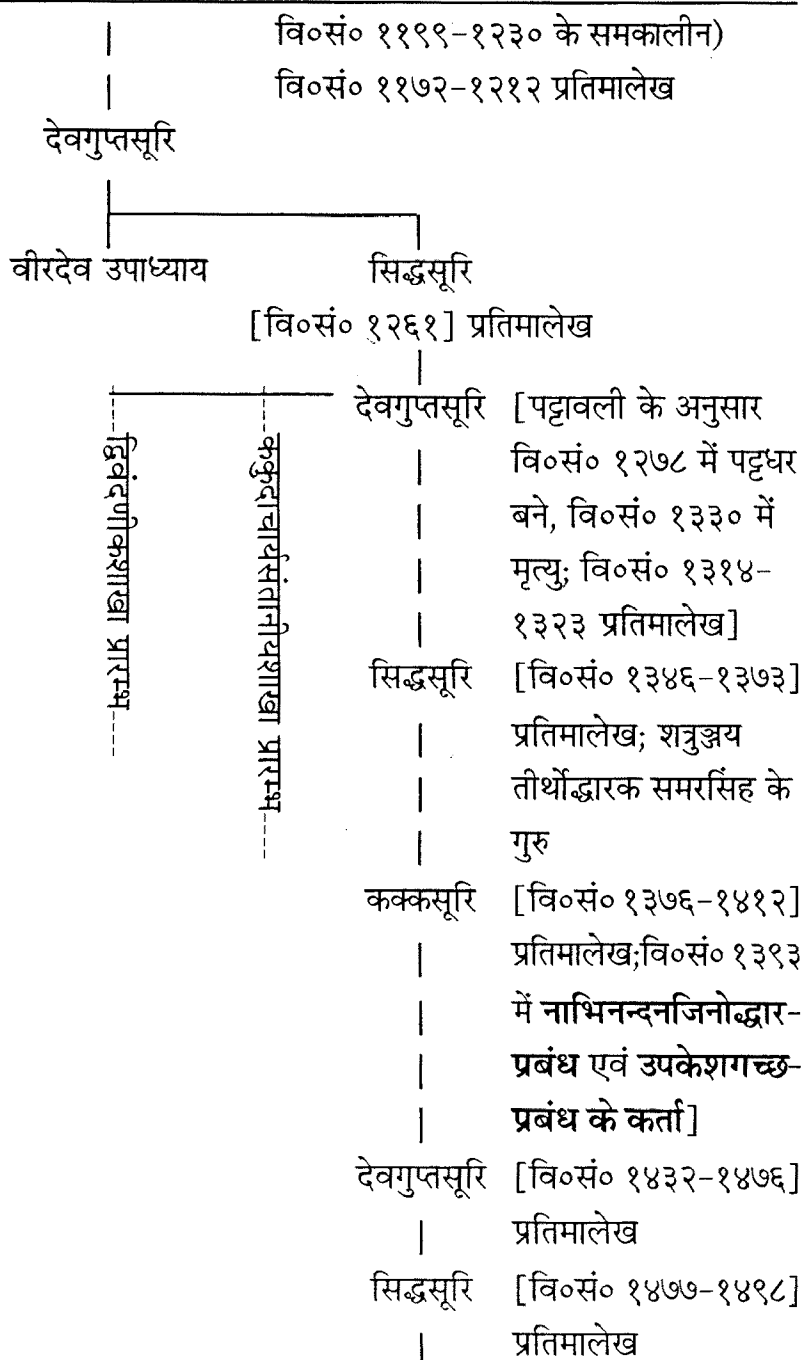
उक्त विवरण से यह स्पष्ट ध्वनि निकलती है कि गच्छनायक गुरु द्वारा गच्छ की परम्परागत मान्यता के विपरीत नवीन मान्यता स्थापित करने के कारण गच्छ में मतभेद हो गया, जिससे सिद्धसूरि अपने जीवनकाल में अपना पट्टधर भी नियुक्त न कर सके, अन्त में श्रीसंघ ने गच्छ की प्राचीन मान्यताओं में श्रद्धा रखने वाले मुनिजनों की सम्मति से वि० सं० १२७८ में उपाध्याय वर्धमान को देवगुप्तसूरि के नाम से गच्छनायक के पद पर प्रतिष्ठित किया।

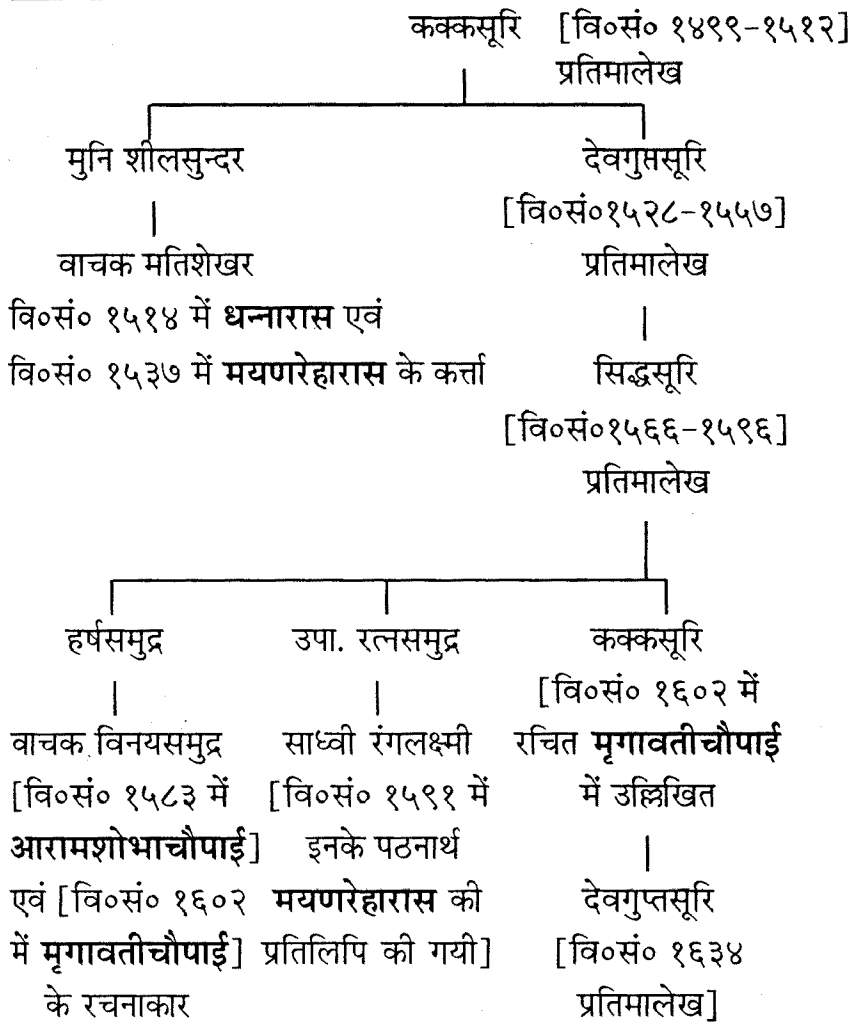
प्रथम पट्टावली के अनुसार देवगुप्तसूरि का वि०सं० १३३० में ८४ वर्ष की आयु में निधन हुआ।^{२१} अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर ककुदाचार्यसंतानीय देवगुप्तसूरि द्वारा वि०सं० १३१४-१३२३ में प्रतिष्ठापित जिनप्रतिमायें उपलब्ध हुई हैं, अतः समसामयिकता के आधार पर उक्त दोनों देवगुप्तसूरि एक ही आचार्य माने जा सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है

कि देवगुप्तसूरि के समय से ही उपकेशगच्छ की इस प्राचीन शाखा के मुनिजन ककुदाचार्यसंतानीय कहे जाने लगे । इस प्रकार उपरोक्त तालिका के १०० वर्षों की आचार्य परम्परा का अन्तराल पूर्ण हो जाता है और उपकेशगच्छीय ककुदाचार्यसंतानीय मुनिजनों के गुरु-परम्परा की जो तालिका निर्मित होती है, वह इस प्रकार है, द्रष्टव्य-तालिका-३ ।

तालिका-३







उपकेशगच्छीय सिद्धाचार्यसंतानीय मुनिजनों द्वारा प्रतिष्ठापित तीर्थङ्कर प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेखों का विवरण इस प्रकार है -

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१.	१३१५ (?)	वैशाख गुरुवार वदि ७	सिद्धाचार्यसंतानीय कक्कसूरि	सिद्धसूरि की प्रतिमा का लेख	पल्लविया पार्श्वनाथ जिनालय, पालनपुर	जिनविजय, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ५५३
२.	१३३७	माघ सुदि ७	”	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १८९
३.	१३४४	कार्तिक सुदि १०	सिद्धाचार्यसंतानीय श्री.....	महावीर की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, हरसूली	विनयसागर, पूर्वोक्त-भाग १, लेखांक ९४
४.	१३४७	वैशाख सुदि १५ रविवार	सिद्धाचार्यसंतानीय देवगुप्तसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, जूनाबेडा, मारवाड़	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १२१

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
५.	१३९३	ज्येष्ठ सुदि १ शुक्रवार	"	"	चन्द्रप्रभ जिनालय कोटा	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १ लेखांक १३७
६.	१४३२	फाल्गुन सुदि ३ शुक्रवार	सिद्धाचार्यसंतानीय सिद्धसूरि	महावीर की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ५०२
७.	१४४०	पौष सुदि १२ बुधवार	"	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	"	वही, लेखांक ५४१
८.	१४६६	वैशाख सुदि ३ शनिवार	सिद्धाचार्यसंतानीय कक्कसूरि	मुनिसुव्रत की प्रतिमा का लेख	"	वही, लेखांक ६२६

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
९.	१४७०	ज्येष्ठ सुदि ४ बुधवार	सिद्धाचार्यसंतानीय देवगुप्तसूरि	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, बीकानेर	वही, लेखांक १३४६
१०.	१४७३	फाल्गुन सुदि १५ सोमवार	सिद्धाचार्यसंतानीय सिद्धसूरि	अनन्तनाथ की सपरिकर प्रतिमा का लेख	„	वही, लेखांक १३६४
११.	१४८४	वैशाख वदि १२ रविवार	सिद्धाचार्यसंतानीय देवगुप्तसूरि	वासपूज्य की प्रतिमा का लेख	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १०७२
१२.	१४८६	वैशाख सुदि ५ गुरुवार	„	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	अनुपूर्ति लेख, आबू	मुनि जयन्तविजय, संपा० अर्बुदप्राचीन जैनलेखसंदोह

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
						(आबू, भाग २) लेखांक ६२२
१३.	१४८६	कार्तिक सुदि ११ सोमवार	”	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, देलवाडा, मेवाड़	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १९८२
१४.	१४९७	आषाढ़ वदि ८ रविवार	”	नमिनाथ की प्रतिमा का लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, राजगृह	वही, भाग १, लेखांक २३८
१५.	१५०२	वैशाख वदि ४ शुक्रवार	सिद्धाचार्यसंतानीय कक्कसूरि	शीतलनाथ की प्रतिमा का लेख	संभवनथ जिनालय, झवेरीवाड़, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ८३२

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१६.	१५०२	माघ सुदि ३ शुक्रवार	”	चन्द्रप्रभ की प्रतिमा का लेख	बावन जिनालय, पेथापुर	वही, भाग १, लेखांक ६८५
१७.	१५०३	ज्येष्ठ सुदि ११ शुक्रवार	”	नमिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ८७०
१८.	१५०३	माघ सुदि ३ शुक्रवार	सिद्धाचार्यसंतानीय कक्कसूरिके पट्टधर देवगुप्तसूरि	कुंशुनाथ की प्रतिमा का लेख	अजितनाथ जिनालय, शेखनो पाडो, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १०६५
१९.	१५०४	ज्येष्ठ वदि ११ मंगलवार	सिद्धाचार्यसंतानीय देवगुप्तसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	चौमुखजी देरासर, वडनगर	वही, भाग १, लेखांक ५६३

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२०.	१५०४	फ़ाल्गुन सुदि १३ शनिवार	सिद्धाचार्यसंतानीय भट्टारक कक्कसूरि	पद्मप्रभ की प्रतिमा का लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, खारवाडो, खंभात	वही, भाग २, लेखांक १०२४
२१.	१५०५	माघ वदि ६ गुरुवार	सिद्धाचार्यसंतानीय कक्कसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ के मंदिर के तलघर की प्रतिमा, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १०१
२२.	१५०६	चैत्र... गुरुवार	„	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, शांतिनाथ पोल, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक १३०५
२३.	१५०६	वैशाख वदि गुरुवार	„	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	गौड़ी पार्श्वनाथ जिनालय, पालिताना	शत्रुञ्जयवैभव, लेखांक १०९

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२४.	१५०७	फाल्गुन सुदि ९ शुक्रवार	”	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	अनुपूर्ति लेख, आबू	आबू, भाग २, लेखांक ६३८
२५.	१५०७	ज्येष्ठ सुदि ५	सिद्धाचार्यसंतानीय देवगुप्तसूरि एवं कक्कसूरि	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, पायधुनी, मुम्बई	मुनि कान्तिसागर, पूर्वोक्त, लेखांक १०७
२६.	१५०७	कार्तिक सुदि ११ शुक्रवार	सिद्धाचार्यसंतानीय कक्कसूरि	”	बड़ा जैन मंदिर, नागौर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ४१७
२७.	१५०८	वैशाख वदि ९ शनिवार	”	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर, बडावली	वही, भाग १, लेखांक ९६

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२८.	१५०८	वैशाख सुदि ५ सोमवार	”	शीतलनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १२५
२९.	१५०९	आषाढ वदि २ गुरुवार	”	श्रेयांसनाथ की पञ्चतीर्थी प्रतिमा का लेख	नेमिनाथ जिनालय, टोडारायसिंह	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ४३९
३०.	१५१०	चैत्र वदि १० शनिवार	”	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ८५८
३१.	१५११	माघ सुदि ८ बुधवार	”	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ देरासर, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक १२३९

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
३२.	१५११	वैशाख वदि ११ शुक्रवार	“	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, लखनऊ	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १५०४
३३.	१५१२	फाल्गुन सुदि १२	“	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	धर्मनाथ जिनालय, जोधपुर	वही, भाग १, लेखांक ६२३
३४.	१५१२	“	“	नमिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ९६०
३५.	१५१५	मार्गशीर्ष सुदि १० गुरुवार	सिद्धाचार्यसंतानीय सिद्धसूरि	चन्द्रप्रभ की प्रतिमा का लेख	चौमुख शांतिनाथ देरासर, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १ लेखांक ८९०
३६.	१५१९	ज्येष्ठ सुदि १३ सोमवार	“	शीतलनाथ की प्रतिमा का लेख	बावन जिनालय, पेथापुर	वही, भाग १, लेखांक ६८०

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
३७.	१५१९	आषाढ वदि ५	"	अभिनन्दनस्वामी की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १०१७
३८.	१५१९	माघ वदि ५ बुधवार	सिद्धाचार्यसंतानीय देवगुप्तसूरि	कुंथुनाथ की प्रतिमा का लेख	अजितनाथ जिनालय, शेखनो पाडो, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १०१४
३९.	१५२१	वैशाख वदि २ रविवार	"	"	जैन मंदिर, पोर	वही, भाग १, लेखांक ७७०
४०.	१५२१	आषाढ सुदि ९ गुरुवार	"	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय राजलदेसर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक २३३९

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
४१.	१५२१	आषाढ़ सुदि ९ गुरुवार	सिद्धाचार्यसंतानीय देवगुप्तसूरि	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, (कोचरों में) बीकानेर	वही, लेखांक १६०३
४२.	१५२५	ज्येष्ठ वदि १ शुक्रवार	सिद्धाचार्यसंतानीय सिद्धसूरि	बासुपूज्य की धातु की प्रतिमा का लेख	संभवनाथ जिनालय, मुर्शिदाबाद	नाहर, पूर्वोक्त, लेखांक ५१
४३.	१५२५	फाल्गुन सुदि ९ सोमवार	"	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर, जसकौर धर्मशाला, पालिताना	शत्रुञ्जयवैभव, लेखांक १८५
४४.	१५२७	आषाढ़ सुदि २ गुरुवार	"	संभवनाथ की धातु की पञ्चतीर्थी प्रतिमा का लेख	वीरजिनालय, तंबोली शेरी, राधनपुर	मुनि विशालविजय पूर्वोक्त, लेखांक २५४

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
४५.	१५२७	पौष वदि ५ शुक्रवार	सिद्धाचार्यसंतानीय देवगुप्तसूरि के पट्टधर सिद्धसूरि	कुन्थुनाथ की प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ जिनालय, नागौर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १३२
४६.	१५२७	"	"	कुन्थुनाथ की पञ्चतीर्थी प्रतिमा का लेख	कुन्थुनाथ जिनालय, गोगोलाब	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ६९३
४७.	१५२७	"	"	"	चौसठिया जी का मन्दिर, नागौर	वही, भाग १, लेखांक ६९४
४८.	१५२८	चैत्र वदि ५ रविवार	"	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, भिण्डी बाजार, मुम्बई	कान्तिसागर, पूर्वोक्त, लेखांक २०६

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
४९.	१५३२	चैत्र सुदि ४ शनिवार	सिद्धाचार्यसंतानीय सिद्धसूरि	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १०७१
५०.	१५३३	आषाढ सुदि २ रविवार	सिद्धाचार्यसंतानीय देवप्रभसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	जगवल्लभ पार्श्वनाथ देरासर, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १२०५
५१.	१५३४	फाल्गुन वदि ३ शुक्रवार	सिद्धाचार्यसंतानीय सिद्धसूरि	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १०९०
५२.	१५३७	पौष वदि १० बुधवार	सिद्धाचार्यसंतानीय कक्कसूरि	श्रेयांसनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	सामला पार्श्वनाथ जिनालय, डभोई	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ३२

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
५३.	१५३ (?)	ज्येष्ठ सुदि ११ शुक्रवार	”	नमिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ११०५
५४.	१५४०	वैशाख सुदि १० बुधवार	सिद्धाचार्यसंतानीय भट्टारक धर्मसुन्दरसूरि एवं सिद्धसूरि	मुनिसुव्रत की पञ्चतीर्थी प्रतिमा का लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, सैलाना	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ८२२
५५.	१५४९	ज्येष्ठ वदि १० शुक्रवार	सिद्धाचार्यसंतानीय धर्मसुन्दरसूरि के पट्टधर कक्कसूरि	आदिनाथ की पञ्चतीर्थी प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, बीबड़ोद, मध्यप्रदेश	वही, भाग १, लेखांक ८५४

अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर निर्मित उपकेशगच्छीय
सिद्धाचार्यसंतानीय शाखा के मुनिजनों के गुरु-परम्परा की तालिका

?	
—	
कक्कसूरि	[वि०सं० १३१५-१३४५]
—	
देवगुप्तसूरि	[वि०सं० १३४७]
—	
सिद्धसूरि	[वि०सं० १३८५]
—	
देवगुप्तसूरि	[वि०सं० १३८९-१४२७]
—	
सिद्धसूरि	[वि०सं० १४३२-१४४५]
—	
कक्कसूरि	[वि०सं० १४६६-१४७१]
—	
देवगुप्तसूरि	[वि०सं० १४७१-१४९९]
—	
सिद्धसूरि	[वि०सं० १४७३]
—	
कक्कसूरि	[वि०सं० १५०२-१५१२]
—	
देवगुप्तसूरि	[वि०सं० १५०३-१५२१]

सिद्धसूरि

[वि०सं० १५१५-१५४०]

कक्कसूरि

[वि०सं० १५३७-१५४९]

अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर सिद्धाचार्यसंतानीय मुनिजनों की तालिका ऊपर प्रदर्शित की गयी है। साहित्यिक साक्ष्यों द्वारा भी उपकेशगच्छीय सिद्धाचार्यसंतानीय कुछ मुनिजनों के नाम ज्ञात होते हैं, इनका विवरण इस प्रकार है-

उत्तराध्ययनसूत्र सुखबोधावृत्ति की प्रतिलेखन प्रशस्ति

उपकेशगच्छीय सिद्धाचार्यसंतानीय देवगुप्तसूरि के शिष्य विनयप्रभ उपाध्याय ने वि० सं० १४७९ में अपने गुरु की आज्ञा से स्वपठनार्थ वडगच्छीय आचार्य नेमिचन्द्रसूरि की प्रसिद्ध कृति उत्तराध्ययनसूत्र सुखबोधावृत्ति की प्रतिलिपि करायी।^{३२} इसके अन्त में उन्होंने अपनी गुरु-परम्परा दी है, जो इस प्रकार है-

सिद्धाचार्यसंतानीय देवगुप्तसूरि

विनयप्रभ उपाध्याय

[वि०सं० १४७९/ई० सन् १४२३] में इनके पठनार्थ उत्तराध्ययनसूत्र-

सुखबोधावृत्ति की प्रतिलिपि की गयी]

यद्यपि इस प्रशस्ति से उपकेशगच्छीय सिद्धाचार्यसंतानीय दो मुनिजनों के नाम ही ज्ञात होते हैं, फिर भी उपकेशगच्छ की उक्त शाखा के इतिहास की दृष्टि से यह प्रशस्ति अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

अजापुत्रचौपाई^{३३} - यह उपकेशगच्छीय सिद्धाचार्यसंतानीय मुनि धर्मरुचि द्वारा मरु-गूर्जर भाषा में वि०सं० १५६१ में रची गयी है। रचना के अन्त में रचनाकार ने अपनी गुरुपरम्परा का उल्लेख किया है, जो इस प्रकार है-

सिद्धसूरि
|
कक्कसूरि
|
देवगुप्तसूरि
|
सिद्धाचार्यसंतानीय

—
|
कक्कसूरि
|
धर्महंस
|
धर्मरुचि

[वि०सं० १५६१/ई०सन् १५०५
में अजापुत्रचौपाई के रचनाकार]

साहित्यक और अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर निर्मित
उपकेशगच्छीय सिद्धाचार्यसंतानीय शाखा के मुनिजनों के गुरु-परंपरा की
तालिका

तालिका ४

?

—
|
कक्कसूरि [वि०सं० १३१५-१३४५]
| प्रतिमालेख

देवगुप्तसूरि [वि०सं० १३४७] प्रतिमालेख

|

सिद्धसूरि [वि०सं० १३८५] प्रतिमालेख

देवगुप्तसूरि [वि०सं० १३८९-१४२७]
प्रतिमालेख

सिद्धसूरि [वि०सं० १४३२-१४४५]
प्रतिमालेख

कक्कसूरि [वि०सं० १४६६-१४७९]
प्रतिमालेख

देवगुप्तसूरि [वि०सं० १४७९-१४९९]
प्रतिमालेख

|

विनयप्रभ उपाध्याय

सिद्धसूरि

[वि०सं० १४७९/ई० सन्
१४२३ की उत्तराध्यनसुखबोधा-
वृत्ति की प्रतिलिपि में
उल्लिखित]

[वि०सं० १४७३] प्रतिमालेख

|

कक्कसूरि

[वि०सं० १५०२-१५०८] प्रतिमालेख

|

देवगुप्तसूरि

[वि०सं० १५०३-१५०७] प्रतिमालेख

सिद्धसूरि

[वि०सं० १५२५-१५४०] प्रतिमालेख

|
कक्कसूरि

[वि०सं० १५३७-१५४९] प्रतिमालेख

|
धर्महंस

|
धर्मरुचि

[वि०सं० १५६१/ई० सन् १५०५ में

अजापुत्रचौपाई के रचनाकार]

उपकेशगच्छीय सिद्धाचार्यसंतानीय शाखा के आचार्यों की परम्परा की पूर्वोक्त तालिका संख्या ४ को अविभाजित उपकेशगच्छ की पूर्व प्रदर्शित तालिका-१ से समायोजित तो किया जा सकता है, किन्तु दोनों के मध्य लगभग १०० वर्षों का जो अन्तराल है, उसे पूरा करने में साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों से कोई सहायता प्राप्त नहीं होती। उक्त दोनों तालिकाओं के समायोजन से गुरु-शिष्य परम्परा की जो नवीन तालिका निर्मित होती है, वह इस प्रकार है-

द्रष्टव्य-तालिका ५

तालिका ५

कक्कसूरि

|
जिनचन्द्रगणि/कुलचन्द्रगणि

अपरनाम

देवगुप्तसूरि

[वि०सं० १०७३/ई० सन्

१०१७ में नवपदप्रकरणवृत्ति

के रचनाकार]

|
[तत्त्वार्थाधिगमसूत्र की ३१

	उपोद्धातकारिकाओं के टीकाकार ?]
कक्कसूरि	[जिनचैत्यवंदनविधि एवं पंचप्रमाण के रचयिता]
	[वि०सं० १०७८ प्रतिमालेख]
सिद्धसूरि	
देवगुप्तसूरि	
सिद्धसूरि	यशोदेव उपाध्याय पूर्वनाम धनदेव
[वि०सं० ११९२/ई० सन् ११३६ में क्षेत्रसमासवृत्ति के रचयिता]	[वि०सं० ११६५/ई. सन् ११०९ में नवपदप्ररणबृहद्वृत्ति एवं वि०सं० ११७८/ई० सन् ११२१ में चन्द्रप्रभचरित के रचयिता]
[वि०सं० १२०३ प्रतिमालेख]	
कक्कसूरि	[चौलुक्यनरेश कुमारपाल वि०सं० ११९९-१२३०] के समकालीन
	[वि०सं० ११७२-१२१२ प्रतिमालेख]
कक्कसूरि	[वि०सं० १३१५-१३४५] प्रतिमालेख
देवगुप्तसूरि	[वि०सं० १३४७] प्रतिमालेख
सिद्धसूरि	[वि०सं० १३८५] प्रतिमालेख

सिद्धाचार्यसत्तानीय
शाखा प्रारम्भ

देवगुप्तसूरि [वि०सं० १३८९-१४२७] प्रतिमालेख

सिद्धसूरि [वि०सं० १४३२-१४४५] प्रतिमालेख

कक्कसूरि [वि०सं० १४६६-१४७१] प्रतिमालेख

देवगुप्तसूरि [वि०सं० १४७१-१४९९] प्रतिमालेख

विनयप्रभ उपाध्याय

[वि०सं० १४७९/ई० सन्
१४२३ की उत्तराध्यनसूत्र की
सुखबोधावृत्ति की प्रतिलिपि में
उल्लिखित]

सिद्धसूरि

[वि०सं० १४७३] प्रतिमालेख

कक्कसूरि

[वि०सं० १५०२-१५०८]

प्रतिमालेख

देवगुप्तसूरि

[वि०सं० १५०३-१५०७]

सिद्धसूरि

[वि०सं० १५२५-१५४०]

कक्कसूरि

[वि०सं० १५३७-१५४९]

धर्महंस

|

धर्मरुचि

[वि०सं० १५६१/ई० सन् १५०५ में]

अजापुत्रचौपाई के रचनाकार]

साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर उपकेशगच्छ की उक्त शाखाओं (ककुदाचार्यसंतानीय और सिद्धाचार्यसंतानीय) के अतिरिक्त इस गच्छ की एक अन्य शाखा द्विवंदणीकगच्छ या विवंदणीकगच्छ का भी पता चलता है। उपकेशगच्छपट्टावली के अनुसार वि० सं० १२६६ (ई० सन् १२१०) में सिद्धसूरि द्वारा आगमिकगच्छ की सामाचारी और सूरिमंत्र अपनाने के कारण इस शाखा का जन्म हुआ। संभवतः पार्श्व और महावीर दोनों की वन्दना करने के कारण ये द्विवंदणीक कहलाये। इस शाखा की कोई पट्टावली नहीं मिलती है^{२४}। इस शाखा से सम्बद्ध वि० सं० १३३४ से १५९९ तक के प्रतिमालेख प्राप्त हुए हैं। इस शाखा के १६वीं शती के कुछ प्रतिमालेखों में प्रतिमा प्रतिष्ठापक आचार्य को सिद्धाचार्यसंतानीय कहा गया है। इससे यह प्रतीत होता है कि उपकेशगच्छ की द्विवंदणीकशाखा और सिद्धाचार्य संतानीयशाखा का निकट सम्बन्ध रहा है। इस शाखा के मुनिजनों द्वारा प्रतिष्ठापित जिनप्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेखों का विवरण इस प्रकार है-

उपकेशगच्छ (द्विवंदणीक/विवंदणीक शाखा) से सम्बद्ध अभिलेखीय साक्ष्यों का विवरण

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१.	१३३४	ज्येष्ठ वदि २ सोमवार	सिद्धसूरि	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	अजितनाथ जिनालय विरमगाम	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १५११
२.	१४४७	फाल्गुन सुदि ८ सोमवार	रत्नप्रभसूरि	अजितनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	चौसठियाजी का मंदिर, नागौर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १७३
३.	१४७९	पौष वदि ५ सोमवार	देवगुप्तसूरि	जिनप्रतिमा बनवाने का उल्लेख	जैन देरासर, सौदागर पोल, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ७९६
४.	१५०३	माघ सुदि ७ बुधवार	श्री ... सेनसूरि	शीतलनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिपार्श्वनाथ देरासर, अहमदाबाद	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ३७२

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
५.	१५०८	वैशाख सुदि ५ शनिवार	देवगुप्तसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर, कोबा	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ७६८
६.	१५१२	मार्गशीर्ष वदि २	सिद्धसूरि	कुन्धुनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	गौड़ीजी भंडार, उदयपुर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक २७४
७.	१५१७	वैशाख सुदि ३ सोमवार	”	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ देरासर, पाटण	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक २३५
८.	१५१७	”	”	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, वढवाण	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ३१२

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
९.	१५१७	पौष वदि ८ रविवार	”	शीतलनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	देरी नं. ६१३/ १।९ शत्रुञ्जय	शत्रुञ्जयगिरिराज- दर्शन, लेखांक २७४ एवं शत्रुञ्जयवैभव, लेखांक १५५
१०.	१५२१	वैशाख सुदि ३ गुरुवार	देवगुप्तसूरि के पट्टधर सिद्धसूरि	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर, चाणस्मा	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १०२
११.	१५२१	”	”	शीतलनाथ की प्रतिमा का लेख	”	वही, भाग १, लेखांक १११

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१२.	१५२१	माघ वदि ५ गुरुवार	”	नमिनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, ऊंझा	वही, भाग १, लेखांक १८८
१३.	१५२२	पौष सुदि १२ सोमवार	”	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ मुख्य बावन जिनालय, मातर	वही, भाग २, लेखांक ४९२ एवं जिनविजय, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ४९२
१४.	१५२४	वैशाख सुदि ३	श्री....?	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	मुनिस्तुप्रत जिनालय, भरुच	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ३५०

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१५.	१५२५	चैत्र वदि ९ शनिवार	अस्पष्ट	सुविधिनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	गौड़ीपार्श्वनाथ जिनालय, अजमेर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १ लेखांक ६२५
१६.	१५३१	माघ वदि ८ सोमवार	सिद्धसूरि	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ मुख्य बावन जिनालय, मातर	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ५०९
१७.	१५३३	वैशाख सुदि ३ बुधवार	सिद्धाचार्यसंतानीय सिद्धसूरि	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	सीमंधर स्वामी का मंदिर, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक ११७३
१८.	१५४७	वैशाख सुदि ३ सोमवार	सिद्धसूरि	नमिनाथ की प्रतिमा का लेख	बालावसही, शत्रुञ्जय	शत्रुञ्जयवैभव, लेखांक २३७

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१९.	१५४७	"	"	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	"	वही, लेखांक २३८
२०.	१५५२	वैशाख सुदि ३ शनिवार	सिद्धाचार्यसंतानीय कक्कसूरि	मुनिसुव्रत की चौबीसी प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, ऊँझा	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १५७
२१.	१५५३	माघ सुदि ६ सोमवार	"	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, भायखला, मुम्बई	कान्तिसागर, पूर्वोक्त, लेखांक २६६
२२.	१५६०	वैशाख सुदि ३	कक्कसूरि	कुन्थुनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, भिंडी बाजार मुंबई	वही, लेखांक २७३
२३.	१५६०	"	"	"	चिन्तामणिपार्श्वनाथ जिनालय, जीरारपाडो, खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ७२५

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२४.	१५६१	ज्येष्ठ सुदि २ बुधवार	”	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ चौमुख जिनालय, चेला पोल, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ६९१
२५.	१५६६	माघ वदि ६	सिद्धसूरि के पट्टधर कक्कसूरि	चन्द्रप्रभ की प्रतिमा का लेख	बालावसही, शत्रुञ्जय	शत्रुञ्जयवैभव, लेखांक २६३
२६.	१५६७	वैशाख सुदि १०	सिद्धाचार्यसंतानीय देवगुप्तसूरि	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय माणेक चौक, खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ९६८
२७.	१५७०	कार्तिक वदि ५ गुरुवार	”	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ देरासर, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक १०७८

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२८.	१५७५	माघ वदि २ सोमवार	सिद्धाचार्यसंतानीय?	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, भिंडी बाजार, मुंबई	कान्तिसागर, पूर्वोक्त, लेखांक २८७
२९.	१५८३	वैशाख सुदि ३	देवगुप्तसूरि	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	बालावसही, शत्रुञ्जय	शत्रुञ्जयवैभव, लेखांक २७८
३०.	१५८९	वैशाख सुदि १२ सोमवार	भट्टारक कक्कसूरि	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, जीरारपाडो, खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ७२१
३१.	१५९९	ज्येष्ठ वदि २ रविवार	सिद्धाचार्यसंतानीय देवगुप्तसूरि	चन्द्रप्रभस्वामी की प्रतिमा का लेख	धर्मनाथ जिनालय, उपलो गभारो, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक ११५

उक्त प्रतिमालेखों के आधार पर द्विवंदणीकशाखा के मुनिजनों के गुरु-परम्परा की एक तालिका बनती है, जो इस प्रकार है -

सिद्धसूरि	[वि०सं० १३३४]
रत्नप्रभसूरि	[वि०सं० १४४७]
देवगुप्तसूरि	[वि०सं० १४७९-१५०८]
सिद्धसूरि	[वि०सं० १५१२-१५४७]
कक्कसूरि	[वि०सं० १५५२-१५८९]
देवगुप्तसूरि	[वि०सं० १५६७-१५९९]

विवंदणीक / द्विवंदणीकगच्छीय कक्कसूरि के प्रशिष्य एवं देवगुप्तसूरि के शिष्य सिंहकुल ने वि० सं० १४८५ (एक अन्य प्रति में वि० सं० १५५०) में **मुनिपतिचरित्र** की रचना की।^{२५}

अभिलेखीयसाक्ष्यों के आधार पर निर्मित द्विवंदणीकशाखा के मुनिजनों की उक्त तालिका में देवगुप्तसूरि नामक दो आचार्यों का उल्लेख है। **मुनिपतिचरित्र** की दो हस्तप्रतियों में भी इसके रचनाकाल की दो तिथियां वि० सं० १४८५ और वि० सं० १५५० दी गयी हैं। अब हमारे सामने यह प्रश्न उठता है कि रचनाकार सिंहकुल किस देवगुप्तसूरि के शिष्य थे और **मुनिपतिचरित्र** के रचनाकाल की कौन सी तिथि सत्य है ?

जहां तक द्विवंदणीकगच्छीय प्रथम देवगुप्तसूरि का सम्बन्ध है, चूंकि उनके द्वारा प्रतिष्ठापित जिनप्रतिमायें वि०सं० १४७९ से १५०८ तक की हैं और मुनिपतिचरित्र की एक प्रति में इस कृति का रचनाकाल वि०सं० १४८५ दिया गया है, अतः समसामयिकता के आधार पर मुनिपतिचरित्र के कर्ता द्विवंदणीकगच्छीय सिंहकुल द्विवंदणीकगच्छीय देवगुप्तसूरि 'प्रथम' (वि०सं० १४७९-१५०८) के ही शिष्य कहे जा सकते हैं और यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि मुनिपतिचरित्र की द्वितीय प्रति में उल्लिखित रचनाकाल वि० सं० १५५० अवश्य ही भ्रामक है और यह लिपिकार की भूल का परिणाम है।

विक्रम की १६वीं शती के पश्चात् उपकेशगच्छ की ककुदाचार्यसंतानीय तथा द्विवंदणीकगच्छ आदि शाखाओं से सम्बद्ध साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों का नितान्त अभाव है, अतः यह कहा जा सकता है कि इस समय (१६वीं शती के पश्चात्) तक उपकेशगच्छ की उक्त शाखाओं का अस्तित्व समाप्त हो गया था। उपकेशगच्छ की जो शाखा २०वीं शती तक अस्तित्व में रही, वह निश्चय ही इन शाखाओं से भिन्न रही है।

सिद्धाचार्यसंतानीय मुनिजनों की परम्परा आगे चलकर १६वीं शती में संभवतः अपना प्रभाव कम होने पर द्विवंदणीकगच्छ [उपकेशगच्छ की एक शाखा, जिसका वि० सं० १२६६ में आविर्भाव हुआ] में सम्मिलित हो गयी प्रतीत होती है, क्योंकि १६वीं शती के कई प्रतिमालेखों में आचार्य के नाम के साथ द्विवंदणीकगच्छीयसिद्धाचार्यसंतानीय यह विशेषण जुड़ा हुआ मिलता है।

एक संभावना यह भी है कि सिद्धसूरि, जिनसे वि० सं० १२६६/ ई० सन् १२१० में द्विवंदणीकशाखा का उदय हुआ, की शिष्य सन्तति अपने गुरु के नाम पर सिद्धाचार्यसंतानीय एवं पार्श्वनाथ तथा महावीर - दोनों की वन्दना करने के कारण द्विवंदनीक कहलायी। संभवतः यही कारण है कि उपकेशगच्छ की इस शाखा के प्रतिमा लेखों में कहीं द्विवंदणीकगच्छ और

कहीं सिद्धाचार्यसंतानीय तथा किन्ही-किन्ही लेखों में दोनो विशेषणों का साथ-साथ प्रयोग मिलता है।

उपकेशगच्छ से सम्बद्ध ऐसे भी अनेक प्रतिमालेख प्राप्त हुए हैं जिनमें प्रतिमा प्रतिष्ठापक आचार्य न तो ककुदाचार्यसंतानीय बतलाये गये हैं और न ही सिद्धाचार्यसंतानीय। इससे यह स्पष्ट होता है कि उक्त शाखाओं (सिद्धाचार्यसंतानीय, ककुदाचार्यसंतानीय तथा द्विवंदणीक शाखा) से भिन्न इन मुनिजनों की परम्परा का अपना स्वतंत्र अस्तित्व था। इस श्रेणी के अभिलेखीय साक्ष्यों का विवरण इस प्रकार है-

उपकेशगच्छीय आचार्यो / मुनिजनो / यतियो से सम्बद्ध अभिलेखीय साक्ष्यो का विवरण

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१.	१३१४	फाल्गुन सुदि ३ शुक्रवार	देवगुप्तसूरि	नेमिनाथ की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग ३, लेखांक २२२६
२.	१३२३	माघ सुदि ६	”	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ देरासर, पाटण	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक २३७
३.	१३२५	फाल्गुन सुदि ४ शुक्रवार	कक्कसूरि	”	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १०३८
४.	१३३७	फाल्गुन सुदि २	देवगुप्तसूरि के पट्टधर पद्मचन्द्र	गणपति की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर नं. १ लोद्रवा	वही, भाग ३, लेखांक २५६५
५.	१३४६	फाल्गुन सुदि २	सिद्धसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, जैसलमेर	वही, भाग ३, लेखांक २२३८

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ साम्भल्लेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
६.	१३५६	तिथि विहीन	कक्कसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	बावन जिनालय करेड़ा	वही, भाग २, लेखांक १९२३
७.	१३७८	ज्येष्ठ वदि ९	”	देहरी का लेख	देहरी नं. ३९, आबू	मुनि कल्याणविजय, पूर्वोक्त, लेखांक १०५ एवं मुनि जयन्तविजय आबू, भाग २, लेखांक १३६
८.	१३८५	वैशाख वदि ५ बुधवार	सिद्धसूरि	महावीर की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ३०७

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
९.	१३८५	फाल्गुन सुदि ...!	कक्कसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १०४३
१०.	१३८९	ज्येष्ठ वदि ११ सोमवार	देवगुप्तसूरि	„	आदिनाथ जिनालय मालपुरा	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १३१
११.	१३९४	वैशाख वदि ६	पानशालि (?) सूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ३६५
१२.	१३९४	तिथि विहीन	कक्कसूरि	महावीर की प्रतिमा का लेख	देहरी नं. ५० विमलवसही, आबू	मुनि कल्याणविजय, प्रबन्धपारिजात लेखांक १३७

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१३.	१३९७	"	"	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ३७१
१४.	१४००	वैशाख सुदि ३	"	समवसरण के अंकन पर उत्कीर्ण लेख	सीमंधरस्वामी का मंदिर, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १०७६
१५.	१४०३	वैशाख सुदि....!	"	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	गौड़ीपार्श्वनाथ जिनालय, पायधुनी, मुंबई	कान्तिसागर, पूर्वोक्त, लेखांक ३४
१६.	१४०६	फाल्गुन सुदि ११	सिद्धसूरि के पट्टधर कक्कसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ४१०
१७.	१४१२	वैशाख सुदि ३	कक्कसूरि	"	जैन मंदिर, जयपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ४०१

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१८.	१४१४	वैशाख सुदि १० गुरुवार	कक्कसूरि के शिष्य देवगुप्तसूरि	,,	शत्रुञ्जय	A. P. Shah—"Some Inscriptions on Mount Satrunjaya" महावीर जैन विद्यालय- सुवर्णजयन्ती अंक, भाग १, पृष्ठ १६७, लेखांक ४
१९.	१४२०	वैशाख सुदि १० शुक्रवार	रत्नप्रभसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ४४४

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२०.	१४३०	तिथि विहीन	देवगुप्तसूरि	जिन प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग ३, लेखांक २२७४
२१.	१४३६	वैशाख वदि ११	"	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ५२४
२२.	१४३६	"	"	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	"	वही, लेखांक ५२५
२३.	१४३९	पौष वदि... सोमवार	"	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, गीपटी, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ६९७
२४.	१४४५	पौष सुदि १२ बुधवार	सिद्धसूरि	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, चेलापुरी, दिल्ली	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ४६०

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२५.	१४५७	वैशाख सुदि ३ शनिवार	रामदेवसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, नमकमंडी, आगरा	वही, भाग २, लेखांक १४९०
२६.	१४६५	वैशाख सुदि ३ गुरुवार	देवगुप्तसूरि	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ६१७
२७.	१४६८	वैशाख वदि ४ शुक्रवार	"	"	"	वही, लेखांक ६३८
२८.	१४६८	ज्येष्ठ वदि १३ रविवार	"	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर	विजयधर्मसूरि पूर्वोक्त, लेखांक १०३

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
						एवं नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १०६२
२९.	१४७१	माघ सुदि ६ गुरुवार	कक्कसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, मेड़तासिटी	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक २०४
३०.	१४७१	माघ सुदि १३ बुधवार	देवगुप्तसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, मेड़ता सिटी	वही, भाग १, लेखांक २०५ एवं नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ७७४
३१.	१४७२	फाल्गुन सुदि ९	”	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १२१६

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
३२.	१४७३	ज्येष्ठ वदि ५	”	”	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	वही, लेखांक ६६६
३३.	१४७६	फाल्गुन सुदि १२	सिद्धसूरि के शिष्य कक्कसूरि	”	”	वही, लेखांक ६८३
३४.	१४८२	ज्येष्ठ वदि ४	सिद्धसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	”	वही, लेखांक ७१२
३५.	१४८५	वैशाख सुदि ५	कक्कसूरि के पट्टधर सिद्धसूरि	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	सुपार्श्वनाथ जिनालय, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग ३, लेखांक २१७९
३६.	१४८५	ज्येष्ठ सुदि १३ सोमवार	सिद्धसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, मिरर स्ट्रीट, कलकत्ता	वही, भाग १, लेखांक ३८९

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
३७.	१४८८	वैशाख सुदि ६	कक्कसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, जैसलमेर	वही, भाग ३, लेखांक २३०२
३८.	१४९१	माघ सुदि ५ बुधवार	सिद्धसूरि	पार्श्वनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, लखनऊ	वही, भाग २, लेखांक १५४६
३९.	१४९२	चैत्र वदि ५ शुक्रवार	”	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ७५६
४०.	१४९४	तिथि विहीन	”	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग ३, लेखांक २४११

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
४१.	१४९९	वैशाख वदि १ शनिवार	देवगुप्तसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, कोट, मुम्बई	मुनि कान्तिसागर, पूर्वोक्त, लेखांक ८९
४२.	१५०१	फाल्गुन सुदि १३ शनिवार	कक्कसूरि	कुन्थुनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ८५७
४३.	१५०२	माघ सुदि ५	”	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	पद्मप्रभ जिनालय, जयपुर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ३६२
४४.	१५०३	माघ सुदि २ शुक्रवार	”	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	माणिकसागरजी का मंदिर, कोटा	वही, लेखांक ३७१

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
४५.	१५०४	तिथि विहीन	”	अम्बिका की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	संभवनाथ देरासर, कड़ी	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १ लेखांक ७४७
४६.	१५०५	आषाढ़ सुदि ९	”	चन्द्रप्रभ की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, आमेर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ३९३
४७.	१५०५	आषाढ़ सुदि ९	”	”	सुपार्श्वनाथ का पंचायती मंदिर, जयपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ११४८
४८.	१५०६	आषाढ़ सुदि ५ बुधवार	देवगुप्तसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	सीमंधरस्वामी का मंदिर, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ११५२

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
४९.	१५०७	चैत्र वदि ५ शनिवार	कक्कसूरि	”	चन्द्रप्रभ जिनालय, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग ३, लेखांक २३२५
५०.	१५०८	वैशाख सुदि ५ सोमवार	”	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	शंखेश्वरपार्श्वनाथ जिनालय, आसानियों का चौक, बीकानेर	वही, भाग २, लेखांक १३३२ एवं नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १९०७
५१.	१५०८	वैशाख सुदि ५	कक्कसूरि	मुनिसुव्रत की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १२८१
५२.	१५०८	वैशाख सुदि ५	”	”	”	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १३७४

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
५३.	१५०८	वैशाख सुदि ५	”	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	घर देरासर, बड़ोदरा	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक २२१
५४.	१५०९	चैत्र वदि ११ शुक्रवार	”	मुनिसुव्रत की धातु प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिपार्श्वनाथ जिनालय, वेरावल	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक २५१
५५.	१५०९	वैशाख वदि ११ शुक्रवार	”	कुन्थुनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, माणेक चौक, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ७७१
५६.	१५०९	मार्गशीर्ष सुदि ९	”	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	बालावसही, शत्रुञ्जय	मुनि कान्तिसागर, शत्रुञ्जयवैभव, लेखांक १२२

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
५६.अ.	१५०९	मार्गशीर्ष सुदि ९	”	कुन्धुनाथ की प्रतिमा का लेख	शान्तिनाथ जिनालय, (नाहटों में) बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १८३१
५७.	१५११	माघ सुदि २ शनिवार	”	शान्तिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	नेमिनाथ जिनालय, महुआ	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ४७९
५८.	१५१२	माघ सुदि ५ सोमवार	”	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, वडनगर	बुद्धिसागसूरि, पूर्वोक्त, भाग १ लेखांक ५५३
५९.	१५१२	फाल्गुन सुदि ८	”	श्रेयांसनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	विजयगच्छीय जैन मंदिर, जयपुर	विनयसागर, पूर्वोक्त, लेखांक ४९२

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
६०.	१५१३	चैत्र सुदि ६ गुरुवार	”	नमिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	विमलनाथ जिनालय, सवाईमाधोपुर	वही, लेखांक ४९९
६१.	१५१४	माघ सुदि १ शुक्रवार	”	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	संभवनाथ देरासर, कड़ी	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ७२७
६२.	१५१५	फाल्गुन सुदि ९ रविवार	”	शीतलनाथ की प्रतिमा का लेख	गौड़ी पार्श्वनाथ जिनालय, अजमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ५३४
६३.	१५१८	मार्गशीर्ष वदि ५	”	कुन्धुनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय सोजत रोड	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ५८२

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्ताम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
६४.	१५१९	ज्येष्ठ वदि ११ शुक्रवार	”	सुमतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	संभवनाथ जिनालय, अजमेर	वही, भाग १, लेखांक ५९३ एवं नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ५५८
६५.	१५२०	वैशाख वदि ३ सोमवार	”	चन्द्रप्रभ की धातु की प्रतिमा का लेख	गौड़ी जी का मंदिर, उदयपुर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ३४८ एवं नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ११२८

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
६६.	१५२०	मार्गशीर्ष सुदि ९ शनिवार	”	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	अमीझरा पार्श्वनाथ जिनालय, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ७५३
६७.	१५२३	माघ सुदि ६ रविवार	सिद्धसूरि के पट्टधर कक्कसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त लेखांक १५०३
६८.	१५२४	ज्येष्ठ वदि ४	”	अजितनाथ की पाषाण की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय बाबापुरी	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक २२६
६९.	१५२५	ज्येष्ठ वदि १	”	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, माणेक चौक, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ११९

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
७०.	१५२५	माघ वदि ६ सोमवार	सिद्धसूरि के पट्टधर कक्कसूरि	कुन्थुनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय भैसरोङ्गढ़	विनयसागर, पूर्वोक्त, लेखांक ६७१
७१.	१५२५	फाल्गुन सुदि १२	कक्कसूरि	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय भरुच	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक २९७
७२.	१५२८	ज्येष्ठ वदि ३ बुधवार	“	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १३०१
७३.	१५२८	माघ वदि ४ बुधवार	देवगुप्तसूरि	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि जिनालय, बीकानेर	वही, लेखांक १०५९

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्वाम्यलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
७४.	१५३१	वैशाख सुदि २ सोमवार	श्रावकों का उल्लेख	शिलालेख	लूणवसही, आबू	आबू, भाग २, लेखांक ३३८
७५.	१५३४	आषाढ सुदि १ गुरुवार	कक्कसूरि के पट्टधर देवगुप्तसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १२१९
७६.	१५३६	आश्विन सुदि ९ सोमवार	”	अम्बिका की प्रतिमा का लेख	जमुनादास कोठारी का घर देरासर, बड़ोदरा	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक २३७
७७.	१५३६	फाल्गुन सुदि ३	”	कुन्धुनाथ की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, आसानियों का चौक, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १८९८

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
७८.	१५४२	माघ सुदि २ शनिवार	”	सुमतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, जोमनेर	विनयसागर, पूर्वोक्त, लेखांक ८२९
७९.	१५४४	आषाढ़ वदि ८ गुरुवार	”	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	संभवनाथ जिनालय, फूलवाली गली, आगरा	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १६०३
८०.	१५४५	पौष वदि...	”	जिन प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अजितनाथ जिनालय, शेख पाडो, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १०१४
८१.	१५४६	आषाढ़ वदि २	देवगुप्तसूरि	चन्द्रप्रभ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय नागौर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १२९३

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
८२.	१५४६	आषाढ सुदि २ शनिवार	”	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय (नाहटों में) बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १५१८
८३.	१५४९	वैशाख सुदि १० शुक्रवार	”	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	गांव का जैन मंदिर, बालावसही, पालिताना	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ६७६ एवं शत्रुञ्जयवैभव , लेखांक २४६
८४.	१५५१	माघ वदि २	”	चन्द्रप्रभ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, राजलदेसर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक २३३७
८५.	१५५६	वैशाख सुदि ६ शनिवार	देव (?) सूरि	चतुर्मुख प्रासाद देवकुलिका का लेख	रैनपुर तीर्थ	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ७१०

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
८६.	१५५७	वैशाख सुदि ५ गुरुवार	देवगुप्तसूरि	वासुपूज्य की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ जिनालय जयपुर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखांक ८९०
८७.	१५५९	आषाढ सुदि २	”	शीतलनाथ की प्रतिमा का लेख	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर	नाहर, पूर्वोक्त भाग २, लेखांक ११०१
८८.	१५५९	आषाढ सुदि १०	”	सुमतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	संभक्नाथ जिनालय अजमेर	वही, भाग १, लेखांक ५६६ एवं विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १०३

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
८९.	१५५९	मार्गशीर्ष वदि ६	”	कुन्धुनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, हनुमानगढ़ (बीकानेर)	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक २५३३
९०.	१५६३	वैशाख सुदि ६ शनिवार	श्रीसूरि	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	अरनाथ जिनालय जीरारवाड़ो, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ७७२
९१.	१५६६	चैत्र सुदि १	मुनि देवसागर के निधन का उल्लेख	शिलालेख	उपकेशगच्छ की बगीची, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक २१३१
९२.	१५६६	फाल्गुन सुदि ३ सोमवार	सिद्धसूरि	नमिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	बड़ा मंदिर, नागौर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १३०० एवं विनयसागर,

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
						पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ९३३
९३.	१५९३	ज्येष्ठ वदि ८ रविवार	देवगुप्तसूरि के पट्टधर सिद्धसूरि	अरनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ५३४
९४.	१५७१	आषाढ सुदि २	कक्कसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	शान्तिनाथ जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ११३५
९५.	१५७२	चैत्र वदि ३ बुधवार	सिद्धसूरि	शान्तिनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, सुंघि टोला, लखनऊ	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १५७६
९६.	१५७८	माघ सुदि ४ गुरुवार	"	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, भायखला, मुम्बई	मुनि कान्तिसागर, पूर्वोक्त, लेखांक १९४

क्रममाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
९७.	१५९२	आषाढ सुदि ९	“	अभिनन्दन स्वामी की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	बड़ा मंदिर, नागौर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ९८८ एवं नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १३०४
९८.	१५९३	ज्येष्ठ वदि ४ मंगलवार	“	कुन्धुनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक २२७२
९९.	१५९३	आषाढ सुदि ४ गुरुवार	“	शीतलनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, भुरों का वास, बीकानेर	वही, लेखांक २२३७

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१००.	१५९४	कार्तिक वदि ९	”	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	श्री गंगा गोल्डेन जुबिली म्युजियम, बीकानेर	वही, लेखांक २१६१
१०१.	१५९६	वैशाख सुदि ३ सोमवार	”	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, आसानियों का चौक बीकानेर	वही, लेखांक १९०३ एवं नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १३४७
१०२.	१६३८	वैशाख सुदि १५	यति श्री वस्ता के दिवंगत होने का उल्लेख	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	उपदेशगच्छ की बगीची, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ११३२

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१०३.	१६५९	भाद्रपद सुदि ७ शनिवार	सिद्धसूरि	”	जैनमंदिर, नाणा	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १ लेखांक ८९०
१०४.	१६६३	प्रथम चैत्र सुदि ८ शुक्रवार	विनयसमुद्रसूरि के शिष्य (यति) अचलसमुद्रसूरि के निधन का उल्लेख	शिलालेख	उपकेशगच्छ की बगीची बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक २१३३
१०५.	१६६३	माघ वदि ९ सोमवार	श्रीवस्ता के शिष्य यति तिहुणा का निधन	”	”	वही, लेखांक २१३४
१०६.	१६६४	वैशाख सुदि ११ सोमवार	(यति) तिहुणा के शिष्य श्रीराणा का निधन	”	”	वही, लेखांक २१३५

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१०७.	१६८९	भाद्रपद सुदि ४ गुरुवार	देवगुप्तसूरि के पट्टधर सिद्धसूरि का निधन	शिलालेख	”	वही, लेखांक २१३६
१०८.	१६९१	भाद्रपद सुदि ५	कक्कसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, राजलदेसर	वही, लेखांक २३४०
१०९.	१७६३	श्रावण सुदि १ सोमवार	आनन्दकलश के शिष्य अमीपाल के पट्टधर यति खेतसी का निधन	शिलालेख	उपकेशगच्छ की बगीची, बीकानेर	वही, लेखांक २१३९
११०.	१७८१	आषाढ़ सुदि १३	कर्पूरप्रियागणि	चौबीसी प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय रङ्गपुर, बंगाल	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २ लेखांक १०२४

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१११.	१७८३	आषाढ़ सुदि १५ रविवार	सिद्धसूरि के निधन की तिथि का उल्लेख	”	उपकेशगच्छ की बगीची, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक २१४०
११२.	१७९५	वैशाख सुदि ३ गुरुवार	देवगुप्तसूरि के पट्टधर भामसुन्दर के शिष्य कल्याणसुन्दर एवं लब्धिसुन्दर द्वारा पौषधशाला बनवाने का उल्लेख	”	”	वही, लेखांक २५५४
११३.	१८०५	पौष सुदि २-३ रविवार	सिद्धसूरि के शिष्य (यति) क्षमासुन्दर	”	”	वही, लेखांक २१४२

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
११४.	१८०७	आषाढ सुदि १५ रविवार	कक्कसूरि के निधन का उल्लेख	”	”	वही, लेखांक २१४१
११५.	१८३८	तिथि विहीन	क्षमासुन्दर के शिष्य (यति) उदयसुन्दर का निधन	”	”	वही, लेखांक २१४३
११६.	१८४६	चैत्र वदि ३ बुधवार	देवगुप्तसूरि के निर्वाण की तिथि का उल्लेख	”	”	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक २१४४
११७.	१८६०	चैत्र सुदि ८ रविवार	(यति) बखतसुन्दर के निधन का उल्लेख	”	”	वही, लेखांक २१४५

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
११८.	१८९०	माघ सुदि ६ शनिवार	सिद्धसूरि के निधन की तिथि का उल्लेख	”	”	वही. लेखांक २१४६
११९.	१८९१	”	कक्कसूरि के पट्टधर सिद्धसूरि के पट्टधर क्षमासुन्दर के पट्टधर जयसुन्दर के शिष्य (यति) मत्तिसुन्दर के चरणचिह्न स्थापित होने का उल्लेख	”	”	वही, लेखांक २१४७

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१२०.	१८९१	-	"	"	"	वही, लेखांक २१४८
१२१.	१९०५	माघ सुदि ५	देवगुप्तसूरि	गिरनारतीर्थ पट्ट पर उत्कीर्ण लेख	वीर जिनालय बीकानेर	वही, लेखांक १२६९
१२२.	१९०५	माघ सुदि ५ सोमवार	"	सिद्धचक्रमंडल पर उत्कीर्ण लेख	"	वही, लेखांक १२६७
१२३.	१९०५	माघ सुदि ५ सोमवार	"	गणधर की पादुका पर उत्कीर्ण लेख	"	वही, लेखांक १२६८
१२४.	१९०५	"	देवगुप्तसूरि	पार्श्वनाथ के गणधर की पादुका पर उत्कीर्ण लेख	"	वही, लेखांक १२६६

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१२५.	१९०५	”	”	पंचकल्याणक पट्ट पर उत्कीर्ण लेख	”	वही, लेखांक १२६५
१२६.	१९१२	मार्गशीर्ष वदि ५	”	सर्वतोभद्रयंत्र पर उत्कीर्ण लेख	”	वही, लेखांक १२४७
१२७.	१९१२	मार्गशीर्ष वदि ४ बुधवार	”	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	विमलनाथ जिनालय, (कोचरों में) बीकानेर	वही, लेखांक १५६७
१२८.	१९१५	...सुदि ५ सोमवार	(यति) आनन्दकलश के निधन का उल्लेख	शिलालेख	उपकेशगच्छ की बगीची, बीकानेर	वही, लेखांक २१४९

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१२९.	१९१८	ज्येष्ठ सोमवार वदि १०	(यति) आनन्दसुन्दर के शिष्य (यति) खूबसुन्दर का उल्लेख	”	”	वही, लेखांक २१५१

उपदेशगच्छीय मुनिजनों द्वारा प्रतिष्ठापित तीर्थङ्कर प्रतिमाओं एवं चरणचिन्हों पर उत्कीर्ण लेखों के आधार पर इस गच्छ के मुनिजनों की जो तालिका निर्मित होती है, वह इस प्रकार है-

कक्कसूरि	[प्रतिमालेख अनुपलब्ध]
देवगुप्तसूरि	[वि०सं० १३१४-१३२३]
सिद्धसूरि	[वि०सं० १३४६-१३८५]
कक्कसूरि	[वि०सं० १३५६-१४१२]
देवगुप्तसूरि	[वि०सं० १३८९-१४३९]
सिद्धसूरि	[वि०सं० १४४५]
कक्कसूरि	[वि०सं० १४७१-१४८८]
देवगुप्तसूरि	[वि०सं० १४६५-१४९९]
सिद्धसूरि	[वि०सं० १४८२-१४९४]
कक्कसूरि	[वि०सं० १५०१-१५२८]
देवगुप्तसूरि	[वि०सं० १५२८-१५५९]
सिद्धसूरि	[वि०सं० १५६६-१५९६]
कक्कसूरि	[प्रतिमालेख अनुपलब्ध]

देवगुप्तसूरि	[प्रतिमालेख अनुपलब्ध]
सिद्धसूरि	[वि०सं० १६५९-१६८९]
	वि०सं० १६८१ में दिवंगत
कक्कसूरि	[वि०सं० १६९१---?]
देवगुप्तसूरि	[प्रतिमालेख अनुपलब्ध]
सिद्धसूरि	[वि०सं० १७८३ में दिवंगत]
कक्कसूरि	[प्रतिमालेख अनुपलब्ध]
देवगुप्तसूरि	[वि०सं० १८४६ में दिवंगत]
सिद्धसूरि	[वि०सं० १८९० में दिवंगत]
कक्कसूरि	[प्रतिमालेख अनुपलब्ध]
देवगुप्तसूरि	[वि०सं० १९०५-१९१२]
	प्रतिमालेख

उपकेशगच्छ से सम्बद्ध १८वीं - १९वीं शती के कुछ प्रतिमाओं पर इस गच्छ के यतिजनों के नाम भी मिलते हैं, ^{२६} परन्तु इनके आधार पर इन यतिजनों की गुरु-परम्परा की कोई तालिका नहीं बन पाती है।

उपकेशगच्छ से सम्बद्ध प्रतिमालेखों की उक्त तालिका से स्पष्ट है कि विक्रम की १६वीं शती तक इस गच्छ के मुनिजनों का विशेष प्रभाव रहा, किन्तु १७वीं शताब्दी से इस गच्छ के प्रभाव में कमी आने लगी, फिर भी २०वीं शती तक इस गच्छ का निर्विवाद रूप से अस्तित्व बना रहा।

संदर्भसूची :

१. नवपदपटीका प्रोक्ता श्रावकानन्दकारिणी नाम्ना ।
 श्रीदेवगुप्तसूरिभिर्भावयितव्या प्रयत्नेन ॥
 साधूपयोगाय मया प्रयासः कृतः स्वपुण्याय च एष धर्मः ।
 अतोत्र मात्सर्यमभिप्रपद्य मा कोपि कार्ष्णम्म पुण्यविघ्नं ॥
 त्रिसप्तत्यधिकसहस्रे मासे कार्तिकसंज्ञिते । श्रीपार्श्वनाथचैत्ये तु दुर्गमीये च पत्तने ॥
 श्रावकानन्दटीकेयं नवपदस्य प्रकीर्तिता । जिनचन्द्रगणिनाम्ना तु गच्छे ऊक्तेः संज्ञिते ॥
 कक्काचार्यस्य शिष्येण कुलचन्द्रसंज्ञितेन । तेनैषा रचिता टीका निर्जरार्थं तु कर्मणां ॥
 शिष्य-प्रशिष्यवंशस्योपकाराय जायते । टीकेयं नवपदस्यास्तु यथार्थेयं प्रवर्तिता ॥
 C. D. Dalal, *A Descriptive Catalogue of Manuscripts in the Jain Bhandars at Pattan*, (Baroda - 1937 A. D.) Pp. 2-3.
२. उत्सूत्रमत्र रचितं यदनुपयोगान्मया कुबोधाय ।
 तच्छ्रेयधनं सुधियः सदाशया मयि विधाय कृपाम् ॥ १ ॥
 विलसद्गुणमणिनिकरः, पाठीनविराजितो नदीनश्व ।
 जलनिधिरिवास्ति गच्छः श्रीमानूकेशपुरनिसृतः ॥ २ ॥
 तत्रासीदतिशायिबुद्धिविभवश्चारित्रिणामग्रणीः,
 सिद्धान्तार्णवपारगः स भगवान् श्रीदेवगुप्ताभिधः ।
 सूरिभूरिगुणान्वितो जिनमतादुद्धृत्य येन स्वयं,
 श्रोतृणां हितकाम्यया विरचिता भव्याः प्रबन्धा नवाः ॥ ३ ॥
 तेनैव स्वपदप्रतिष्ठिततनुः श्रीकक्कसूरिप्रभु-
 र्नानाशास्त्रप्रबोधबन्धुरमतिर्जज्ञे स विद्वानिह ।
 मीमांसां जिनचैत्यवन्दनविधिं पञ्चप्रमाणीं तथा,
 बुध्वा यस्य कृतिं भवन्ति कृतिनः सद्बोधशुद्धाशयाः ॥ ४ ॥
 तत्पादपद्मद्वयचञ्चरीकः, शिष्यस्तदीयोऽजनि सिद्धसूरिः ।
 तस्माद्वभूवोज्ज्वलशीलशाली, त्रिगुप्तिगुप्तः खलु देवगुप्तः ॥ ५ ॥
 अपिच-यं वीक्ष्य निःसीमगुणैरुपेतं, श्रीसिद्धसूरिः स्वपदे विधातुम् ।
 श्रीमत्युपाध्यायपदे निवेश्य, प्रख्यापयामास जनस्य मध्ये ॥ ६ ॥

तद्वचनेनारब्धा तस्यान्तेवासिना विवृतिरेषा ।

तत्रैवाचार्यपदं विशदं पालयति सन्नीत्या ॥ ७ ॥

लोकान्तरिते तस्मिन्स्तस्य विनेयेन निजगुरुभ्रात्रा ।

श्रीसिद्धसूरिनाम्ना, भणितेन समर्थिता चेति ॥ ८ ॥

उपाध्यायो यशोदेवो, धनदेवाद्यनामकः ।

जडोऽपि धाष्टर्यतञ्जक्रे, वृत्तिमेनां सविस्तराम् ॥ ९ ॥

एकादशशतसंख्येष्वब्देष्वधिकेषु पञ्चषष्टयेयम् ।

अणहिल्लपाटकपुरे सिद्धोक्तेशीयवीरजिनभवने ॥ १० ॥

नवपदप्रकरणबृहद्वृत्ति की प्रशस्ति, प्रकाशक-देवचन्दलालभाई जैन पुस्तकोद्धार;
ई० सन् १९२७.

३. प्रसिद्ध ऊकेशपुरीयगच्छे श्रीकर्कसूरिविदुषां वरिष्ठः ।

साहित्यतर्कागमपारदृक्षा बभूव सल्लक्षणलक्षिताङ्गः ॥ १ ॥

तदीयशिष्योऽजनि सिद्धसूरिः सद्देशनाबोधितभव्यलोकः ।

निर्लोभतालङ्कृतचितवृत्तिः सज्ज्ञानचारित्रदयान्वितश्च ॥ २ ॥

श्रीदेवगुप्तसूरिस्तच्छिष्योऽभूद्विशुद्धचारित्रः ।

वादिगजकुम्भभेदनपटुतरनखरायुधसमानः ॥ ३ ॥

तच्छिष्यसिद्धसूरिः क्षेत्रसमासस्य वृत्तिमयमकरोत् ।

गुरुभ्रातृयशोदेवोपाध्यायज्ञातशास्त्रार्थः ॥ ४ ॥

उत्सूत्रमत्र किञ्चिन्मतिमान्द्याज्ञानतो मयाऽलेखि ।

निर्व्याजं विद्वद्भिस्तच्छोध्यं मयि विधाय दयाम् ॥ ५ ॥

खैः षण्णवत्याङ्कैश्चतुःषष्ट्या द्वात्रिंशताक्षरैः ।

श्लोकमानेन चैवं त्रिसहस्रा ग्रन्थसङ्ख्याऽत्र ॥ ६ ॥

अब्दशतेष्वेकादशसु द्विनवत्याधिकेषु ११९२ विक्रमतः ।

चैत्रस्य शुक्लपक्षे समर्थिता शुक्लत्रयोदश्याम् ॥ ७ ॥

यावज्जैनेश्वरो धर्मः समेरुर्वर्तते भुवि ।

भव्यैः पापठ्यमानोऽयं तावन्नन्दतु पुस्तकः ॥ ८ ॥

Muni Punyavijaya, Ed. *New Catalogue of Sanskrit & Prakrit Manuscripts* : Jesalmer Collection. (Ahmedabad - 1972 A.D.)
P. 68.

४. सिद्धसूरिगुरोराज्ञां बिभ्राणः शिरसा भृशम् ।
करेष्वग्नीन्दु १३५२ वर्षेऽत्र व्यलीलिखदवाचयत् ॥ २८ ॥
... ..
श्रीदेवगुप्तसूरीणां शिष्यः समुदि संसदि ।
पासमूर्तिस्तदादेशात् किमप्यर्थमभाषत् ॥ ३१ ॥
..... जस्येह पुष्पदन्तौ स्थिराविमौ ।
गुरुभिर्वाच्यमानोऽयं तावन्नन्दतु पुस्तकः ॥ ३२ ॥
संवत् १३५२ वर्षे वर्षाकाले श्रीउपकेशगच्छे ककुदाचार्यसंताने श्रीसिद्धसूरिप्रतिपत्तो
सा. देसलसन्ताने सा. गोसलात्मजसंघपतिआशाधरेण श्रीउत्तराध्ययनवृत्तिः ससूत्रा
कारिता ॥
- Muni Punyavijaya, Ed. *Catalogue of Palm-Leaf Manuscripts in the Shantinath Jain Bhandar, Cambay* (Baroda 1962-66 A.D.) Pp. 120-123).
५. लालचन्द भगवानदास गान्धी, ऐतिहासिकलेखसंग्रह,
[बड़ोदरा, १९६३ ई०] पृष्ठ ५११-५९१.
मोहनलाल दलीचन्द देसाई, जैन साहित्यनो संक्षिप्त इतिहास, पृष्ठ ४२६-२७.
६. मोहनलाल दलीचन्द देसाई, जैनगुर्जरकविओ (प्रथम संस्करण), भाग-३, खण्ड २,
पृष्ठ २२५४-२२७६.
७. मुनि जिनविजय - संपा० विविधगच्छीयपट्टावलीसंग्रह (बम्बई १९५१ ई०)
पृष्ठ ७-९.
८. देसाई, जैनगुर्जरकविओ (प्रथम संस्करण), भाग-३, खंड-२, पृष्ठ २२७७-
२२८५.
मुनि दर्शनविजय-संपा० पट्टावलीसमुच्चय, भाग १, (वीरमगाम १९३३ ई०)
पृष्ठ १७७-१९४.
मुनि कल्याणविजय - संपा० पट्टावलीपरागसंग्रह (जालौर सं० २०२३) पृष्ठ २३४-
२३८.
९. श्री उवएसगच्छ सिणगारो पहिलो रयणप्पह गणधारो, गुणि गोयम अवतारो,
जकखदेवसूरीय प्रसिद्धो तास पाटि जिणि जगि जस लीधो, संयमसिरि उरिहारो ॥२६॥
अनुक्रुमि देवगुपतिसूरीस, सिद्धसूरि नामि तस सीस, मुणिजण सेवीय पाय,

तस पाटे संपइ जयवंतो, गच्छनायक महिमा गुणवंतो, कक्कसूरि गुरुराय ॥ २७ ॥
सई हत्थि थापीय तिणि गुणहारा, गुणवन्त सीलसुन्दर सारा, वारीय जिणि अणंगो,
तास सीस मतिसेहर हरसिंहि, पनरइ सई चउदोत्तर वरसिहि, कीयो कवित
अतिअंगो ॥ २८ ॥

मोहनलाल दलीचन्द देसाई, जैनगुर्जरकविओ-भाग १, (नवीन संस्करण,
अहमदाबाद - १९८६ ई०) पृष्ठ १०७.

१०. देसाई, पूर्वोक्त, पृष्ठ १०७ और आगे.

११. करि संलेहण साध्यां काज, लहिसे मुक्तिपुरीनउ राज । उवअसगच्छ गुणगणे गरिठ्ठु, श्री
रयणप्पहसूरि वरिठ्ठु ॥ ४५ ॥

तसु अनुक्रमि संपइ सिद्धसूरि, तासु सीस वाचक गुणभूरि । हरषसमुद्र नामि गुणसार,
तासु सीसइ कहउ विचार ॥ ४६ ॥

विनयसमुद्र वाचक इम भणइं, धन्य ति नरनारी जे सुणइं । तेहनी सीझइं सघली
आस, पुणि ते लहिअे शिवपुरि वास ॥ ४७ ॥

अे आरामसोभा चउपइ, भावतणे उपरि मइं कही, वरस त्रासिये मागसिर मासि,
बीकानयरिहि मन उल्लासि ॥ ४८ ॥

देसाई, पूर्वोक्त, पृष्ठ २८१

१२. कर गयणंगण रस शशि वर्षे, वर वैशाख मास मन हर्षे । पञ्चमी सोमवार चउसाल,
चउपइबन्ध रची सुविशाल ॥ ९३ ॥

बीकानयरहि वीर जिणंद, तासु पसायइं परमाणंद । श्री उवअसगच्छ सिणगार,
रयणपह गिरुओ गणधार ॥ ९४ ॥

प्रकट पारसनाहथी पट्टि, बहुरिमें मुनिजननै थट्टि । श्री सिद्धसूरि संपइ सुहकार,
कक्कसूरि तसु शिष्य उदार ॥ ९५ ॥

तसु आदेशि हर्षसमुद्र, वाचक तेहनै विनयसमुद्र । तिणि विरच्यो अे चरित रसाल,
सुणियो कविवर संघ विशाल ॥ ९६ ॥

मोहनलाल दलीचन्द देसाई, वही, भाग - १, पृष्ठ २८२-८३.

१३. देसाई, पूर्वोक्त, पृष्ठ ११०.

१४. देसाई, जैनगुर्जरकविओ (प्रथम संस्करण) भाग ३, खंड २, पृष्ठ २२५४-२२७६.

१५. वही, पृष्ठ २२६५-२२६६.

१६. वही, पृष्ठ २२६७.

१७. वही, पृष्ठ २२६७.

१८. वही, पृष्ठ २२६८

१९. वही

२०. मुनि जिनविजय-विविधगच्छीयपट्टावलीसंग्रह, पृष्ठ ८.

२१. देसाई, पूर्वोक्त, प्रथम संस्करण, भाग ३, खंड २, पृष्ठ २२६९.

२२. संवत् १४७९ वर्षे ज्येष्ठ सुदि षष्ठ्यां रवौ श्री श्री उपकेशगच्छे श्री सिद्धाचार्यसंताने
... ..

एवंविधगुणोपेतभट्टारकश्रीश्रीदेवगुप्तसूरीणामादेशेन शिष्याणुरुपाध्यायश्रीविनयप्रभेण
आत्मपठनार्थं श्रीनेमिचन्द्रसूरिविरचिता श्रीउत्तराध्ययन-लघुवृत्तिर्नि(नि)जसंच(?)पुस्तके
निजगुर्वाज्ञया लिषापिता लेषकेन लिखिता श्रीउत्तराध्ययनवृत्तिः संपूर्णा ॥

Kapadiya, H.R. - *Descriptive Catalogue of the Govt. Collections of the Mss deposited at the B. O. R. I., Pune, Volume XVII Part III* (Pune - 1940) Pg. 32-33.

२३. संवत् पन्नर वरस अेकसट्ठि, वैशाख पंचमी शुदि गुरुहिं गरिड्डा । नक्षत्र मृगशिर योग
सकर्मा, कीधी चउपई दिन जाणी ॥ ३४ ॥

उवएसगच्छ तणा शृंगार, सिद्धसूरि गुरु लब्धिभंडार । सद्गुरु नामइ गच्छ संतान,
वंदिइ भवियण महिमानिधान ॥ ३५ ॥

कक्कसूरि तस पाटि मुणींद, आगम कमला विकासन दिणंद । लोपी मिथ्यामय
विषकंद, समकित अमृतकला गुरु चंद ॥ ३६ ॥

सूरि शीरोमणी देवगुप्त, जाइ पाय जस नाम पवित्त । विघ्न टलइ सवि संपद मिलइ,
गुरु नामइ चितित फलइ ॥ ३७ ॥

चिंतामणी कामधेनु समान, रत्नत्रय जिम नाम प्रधान । अलिय निवारी देव सचि
आवी, वीरजिणेश्वर नमइशि भावि ॥ ३८ ॥

कक्कसूरि केरा शिष्य, श्री धर्महंस पय नामक शिष्य । धर्मरुचि बोलइ तास पसाइ,
रची चउपइ अजापुत्राय ॥ ३९ ॥

देसाई, पूर्वोक्त, द्वितीय संशोधित संस्करण, पृष्ठ २१८-२१९.

२४. मुनि कान्तिसागर - शत्रुञ्जयवैभव, पृष्ठ १२६-१२७.

२५. मोहनलाल दलीचन्द देसाई, जैनगूर्जकविओ-भाग १, (नवीन संस्करण, बम्बई
१९८५) पृष्ठ १९४-१९६.

२६. अगरचन्द भंवरलाल नाहटा, बीकानेरजैनलेखसंग्रह, लेखांक २१३१-२१५१.

काम्यकगच्छ का संक्षिप्त इतिहास

निर्ग्रन्थ दर्शन के श्वेताम्बर आम्नाय में विभिन्न स्थानों के नाम से उद्धृत गच्छों में काम्यक गच्छ भी एक है। काम्यक नामक स्थान से सम्बद्ध होने के कारण इस गच्छ का उक्त नामकरण हुआ। श्री विमलाचरण लाहा ने काम्यक की पहचान राजस्थान प्रान्त के भरतपुर जिले में अवस्थित कामा नामक स्थान से की है।^१ भरतपुर जिले के ही बयाना (प्राचीन श्रीपथ) नामक स्थान से वि. सं. ११०० (ई. सन् १०४४) का एक अभिलेख प्राप्त हुआ है जो आज मस्जिद के रूप में परिवर्तित एक जैन मंदिर की दीवार पर उत्कीर्ण है। जे० एफ० फ्लीट ने रोमन लिपि में इसकी वाचना दी है^२ जिसका कुछ सुधार के साथ नागरी लिपि में रूपान्तर निम्नानुसार है :^३

ॐ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥

आसीन्निर्वृतकान्वयैकतिलकः श्रीविष्णुसूर्यासने

श्रीमत्काम्यकगच्छतारकपथश्वेताशुमान् विश्रुत ।

श्रीमान्सूर्यमहेश्वरः प्रशमभूः (प्रशम्भूः) श्वेताम्ब(ब)रग्रामणीः

राज्ये श्रीविजयाधिराजनृपतेः श्रीश्रीपथायांपुरी ॥

ततश्च नाशं यातुशतं सहस्रसहितं संवत्सराणां द्रुतम्,

म्याना [नाम्ना] भाद्रभद सभद्रपदवीं मासः समारोहतु ।

सास्यैव क्षयमेतु सोम स (हि) ता कृष्णा द्वितीया तिथिः,

पंचश्रीपर [मेष्ठी] निष्ठ हृदयः प्राप्तोदिवं यत्र सः ॥

[अ] [पि] च ॥ -

कीर्तिर्दिवकरिकान्तदन्तमुशल प्रोद्भूतलास्यक्रमम्,
 क्वापि क्वापि हिमाद्रि मु-मही [मुद्रितमही]
 सोत्प्रास [सोऽत्रास] हास स्थितिम्
 क्वाप्यैरावण नागराजनजित स्पर्धानुबद्धोदस्म नुव (बं) धोद्धुरं,
 भ्र[1]मन्ति भुवनत्रयम् त्रिपथगेवाद्यापि न श्राम्यति ॥

सं० ११०० भाद्रवदि २ चन्द्रे कल्याणक दि [ने] प्रशस्तिरियं साधु
 सर्वदेवेनोत्कीर्णैति ॥

यही इस गच्छ से सम्बद्ध एकमात्र उपलब्ध साक्ष्य है। जैसा कि ऊपर हम देख चुके हैं यह लेख ॐ नमः सिद्धेभ्यः से प्रारम्भ होता है।^३ इसके द्वितीय और तृतीय पंक्ति में निवृत्ति अन्वय (कुल)^४ से उद्धृत काम्यकगच्छ में हुए विष्णुसूरि के पट्ट पर आसीन महेश्वरसूरि का उल्लेख है जो वि० सं० ११०० में स्वर्गवासी हुए। लेख की पंचम पंक्ति से ज्ञात होता है कि इसे श्रीपथ के राजा या अधिपति विजय के राज्यकाल में उत्कीर्ण कराया गया। लेख की अंतिम पंक्ति में इसे उत्कीर्ण कराने वाले साधु सर्वदेव का नाम मिलता है जो महेश्वरसूरि के शिष्य रहे होंगे।

निवृत्तिकुल

—

विष्णुसूरि

—

महेश्वरसूरि [वि० सं० ११०० में स्वर्गस्थ]

—

।
साधु सर्वदेव [वि० सं० ११०० में प्रशस्ति
अभिलेख उत्कीर्ण कराने वाले]

उक्त प्रशस्ति के अनुसार वि० सं० ११०० में महेश्वरसूरि का निधन हुआ था, अतः अपनी मृत्यु के लगभग २५ पूर्व अर्थात् वि० सं० १०७५ के आसपास वे अपने गुरु विष्णुसूरि के पट्टधर हुए होंगे। इस आधार पर विष्णुसूरि का काल वि० सं० १०५० - १०७५ के आसपास माना जा सकता है।

निर्वृत्तिकुल की यह शाखा कब और किस कारण अस्तित्व में आयी, इसके आदिम आचार्य कौन थे ? इस सम्बन्ध में विशेष जानकारी उपलब्ध नहीं है। मात्र स्थानांगसूत्र^५ में 'कामड्विक' (कामर्धिक) गण का और कल्पसूत्र^६ (पर्युषणाकल्प) की 'स्थविरावली' में 'कामड्वियकुल' का उल्लेख मिलता है। इनका काम्यकगच्छ से सम्बन्ध रहा है ? अथवा नहीं रहा - यह प्रश्न प्रमाणों के अभाव में अभी अनुत्तरित ही रह जाता है।

संदर्भ सूची :

१. विमलाचरण लाहा - प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल, लखनऊ १९७२ ई० सन्, पृष्ठ ५२९.
२. J. F. Fleet:, 'Bayana Stone Inscription of AdhiRajaVijaya, Samvat 1100', *Indian Antiquary*, Vol. 14, Pp. 8-10.
३. वही
४. श्वेताम्बर आमनाय के चार प्रमुख कुलों में निर्वृत्तिकुल भी एक है। अन्य कुलों की भांति यह कुल भी पूर्वमध्यकाल में एक गच्छ के रूप में प्रसिद्ध हुआ और इससे भी कुछ अवान्तर शाखाओं का जन्म हुआ। काम्यकगच्छ भी उन्हीं में से एक है।
५. समणस्स णं भगवतो महावीरस्स णव गणा हुत्था, तं जहा - गोदासगणे, उत्तरबलिस्सहगणे, उद्देहगणे, चारणगणे, उद्देवाइयगणे, विस्सवाइयगणे, कामड्वियगणे, मानवगणे, कोडियगणे।

स्थानांगसूत्र, संपा० मधुकर मुनि, जिनागम ग्रन्थमाला, ग्रंथांक ७, आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर १९८१ ई०, १।२९, पृष्ठ ६७०.

६. गणियं मेहिय कामड्डियं च, तह होई इंदपुरगं च ।

एसाइं वेसणाडियगणस्स चत्तारि उ कुलाइ ॥ २१४ ॥

“स्थविरावली” कल्पसूत्र, संपा० देवेन्द्रमुनि शास्त्री, श्री अमर जैन आगम शोध संस्थान, गढ सिवाना, बाड़मेर १९६८ ई० सन्, पृष्ठ २९९.

काशहृदगच्छ का संक्षिप्त इतिहास

निर्ग्रन्थदर्शन के श्वेताम्बर आम्नाय से पूर्वमध्ययुग में नगरों और ग्रामों के नाम के आधार पर भी विभिन्न गच्छों का नामकरण हुआ; यथा ब्रह्माण से [वर्तमान वरमाण] से ब्रह्माणगच्छ, वायट से वायटीयगच्छ, काशहृद से काशहृदगच्छ, जाल्योधर [जालिहर] से जाल्योधर या जालिहरगच्छ, कोरंट [कोरटा] से कोरंटगच्छ आदि । अर्बुदगिरि [वर्तमान आबू पर्वत] की तलहटी में काशहृद^१ [वर्तमान कासीन्द्रा या कायंद्रा] नामक एक प्राचीन ग्राम स्थित है जो जैन तीर्थ के रूप में पूर्व मध्ययुग से ही प्रसिद्ध रहा है । इसी स्थान से काशहृदगच्छ की उत्पत्ति मानी जाती है । जहां अन्य गच्छों से सम्बद्ध बड़ी संख्या में ग्रन्थप्रशस्तियां, महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों की प्रतिलिपि की दाता प्रशस्तियां, दो-एक पट्टावलियां तथा प्रतिमालेख आदि उपलब्ध होते हैं वही इस गच्छ की न तो कोई पट्टावली मिलती है और न ही पर्याप्त संख्या में ग्रन्थ प्रशस्तियां या अभिलेखीय साक्ष्य ही मिलते हैं । मात्र कुछ ग्रन्थप्रशस्तियां और प्रतिमालेख ही ऐसे मिलते हैं जो इस गच्छ से सम्बद्ध हैं। उक्त सीमित साक्ष्यों के आधार पर इस गच्छ के इतिहास की एक झलक प्रस्तुत है —

जालिहरगच्छीय आचार्य देवप्रभसूरि द्वारा रचित **पद्मप्रभचरित** [रचनाकाल वि०सं० १२५४/११९८ ई०] की प्रशस्ति^२ में काशहृदगच्छ और जालिहरगच्छ का विद्याधरगच्छ की शाखा के रूप में उल्लेख है । परन्तु ये दोनों गच्छ कब और किस कारण से अस्तित्व में आये, इनके आदिम आचार्य कौन थे, इस बारे में उक्त प्रशस्ति से कोई भी जानकारी नहीं मिलती ।

काशहदगच्छ का उल्लेख करने वाला सर्व प्रथम साक्ष्य है वि०सं० ११९२/ ११३६ ई० का एक लेख, जो पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण है। श्री साराभाई नवाब ने इसकी वाचना निम्नानुसार दी है^३—

सं० ११९२ काशहदगच्छे श्रीसिंहलभार्या.....
भार्यया सोहव्या कारिता ।

काशहदगच्छ का उल्लेख करने वाला द्वितीय साक्ष्य है वि० सं० १२२२/ ११६६ ई० का लेख, जो पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण है। यह प्रतिमा आबू स्थित विमलवसही में प्रतिष्ठापित है। मुनि जयन्तविजयजी^४ ने इसकी वाचना दी है, जो इस प्रकार है—

संवत् १२२२ फाल्गुन सुदी १३ रवौ श्रीकाशहदगच्छे श्र [श्री] मद्दु [द्] द्योतनाचार्यसंताने अर्बुदवास्तव्य श्रे० वरणाग तद्भार्या दली तत् पुत्रो [तत्पुत्रौ] श्रे० छाहर बाहरौ प्रथम [स्य] भार्या जासू तत्पुत्रा देवचंद्र वीरचंद्र । पास [र्श्व] चंद्र प्रभृतिसमस्तकुटुंबसमुदायेन श्रीपार्श्वनाथबिंबं आत्मश्रेयोर्थ कारितमिति ॥ मंगलं महाश्रीः ॥ चंद्रार्क यावन्नंदति चिरं जयतु ।

उक्त लेख में प्रतिमा प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम नहीं मिलता बल्कि उद्योतनसूरिसंतानीय..... ऐसा उल्लेख है। काशहदगच्छ के उपलब्ध साक्ष्यों में सबसे प्राचीन होने से यह लेख महत्वपूर्ण माना जा सकता है।

काशहदगच्छ से सम्बद्ध वि०सं० १२४५/११८९ ई० वैशाख वदि ५ गुरुवार के १० लेख मिले हैं।^५ ये सभी आबू स्थित विमलवसही में प्रतिष्ठापित तीर्थंकर प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण हैं। इन लेखों में प्रतिमा प्रतिष्ठापक आचार्य के रूप में काशहदगच्छीय आचार्य सिंहसूरि का उल्लेख है। ये सिंहसूरि किनके शिष्य थे, इस बारे में उक्त लेखों से कोई जानकारी नहीं प्राप्त होती।

काशहदगच्छ से सम्बन्धित वि० सं० १३००/१२४४ ई० का भी एक लेख उक्त जिनालय से ही प्राप्त हुआ है।^६ लेख का मूल पाठ इस प्रकार है—

संवत् १३०० ज्येष्ठ वदि १ सुक्रैः [शुक्रैः] ॥ श्रीकाशहृदगच्छे,
श्रीदेवचंद्रा आचारजसंताने सालिगसुत आसिग देवेन
..... सहितेन ।

यद्यपि उक्त खण्डित लेख में प्रतिमा प्रतिष्ठापक आचार्य या मुनि का नाम नष्ट हो गया है, परन्तु वे आचार्य देवचन्द्र के संतानीय [शिष्य] थे, ऐसा स्पष्ट होता है ।

काशहृदगच्छ में किन्ही सिंहसूरि के शिष्य नरचन्द्र उपाध्याय नामक एक विद्वान् मुनि हो चुके हैं जिनके द्वारा रचित **प्रश्नशतक ज्ञानदीपिका** नामक वृत्ति सहित, **जन्मसमुद्रसटीक** और **ज्योतिषचतुर्विंशतिका** आदि कृतियां मिलती हैं ।^९ **प्रश्नशतक** का रचनाकाल वि०सं० १३२४/१२६८ ई० माना जाता है । इसकी **प्रशस्ति** में उन्होंने अपने गुरु का सादर उल्लेख किया है—

इति श्रीकाशहृदगच्छीय श्रीसिंहसूरिशिष्यश्रीनरचंद्रोपाध्यायकृतायां
ज्ञानदीपिकासंज्ञायां प्रश्नशतकवृत्तौ वृत्तिवेडालधुभागिन्यां वृष्टिवार्तादि-
प्रकीर्णकफललक्षणो नाम सप्तमः प्रकाशः ॥ ६ ॥ ज्ञानदीपिकानामवृत्तिः
समाप्ता ॥

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, वि०सं० १२४५/११८९ ई० के कई प्रतिमालेखों में काशहृदयगच्छीय आचार्य सिंहसूरि का प्रतिमाप्रतिष्ठापक के रूप में उल्लेख है और **प्रश्नशतक** आदि कई ग्रन्थों के रचनाकार नरचन्द्र उपाध्याय भी अपने गुरु का नाम सिंहसूरि ही बतलाते हैं । ऐसी स्थिति में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि क्या आबू स्थित विमलवसही में वि० सं० १२४५/११८९ ई० में प्रतिष्ठापित जिन प्रतिमाओं के प्रतिष्ठापक सिंहसूरि तथा पूर्वोक्त ग्रन्थकार नरचन्द्र उपाध्याय के गुरु सिंहसूरि एक ही व्यक्ति हैं ? नरचन्द्र उपाध्याय का समय वि० सं० १३२४/१२६८ ई० सुनिश्चित है, अतः उनके गुरु का समय उनसे लगभग २५ वर्ष पूर्व वि०सं० १३०० के आस-पास माना जा सकता है । इस प्रकार दोनों सिंहसूरि के

बीच लगभग ५५ वर्षों का अन्तराल है। अतः इस आधार पर यह माना जा सकता है कि दोनों अलग-अलग व्यक्ति हैं, एक नहीं।

काशहदगच्छ से सम्बद्ध एक लेख वि० सं० १३४९/१२८३ ई० का है। यह लेख चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर में संरक्षित पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण है। श्री अगरचन्द नाहटा^८ ने इस लेख की वाचना निम्नानुसार दी है -

संव [त्] १३४९ फागुण [फाल्गुन] सुदि ८ श्रीकाशहदगच्छे श्री० आंबड़पुत्रकर्मणेन मातृपितृश्रेयार्थं पार्श्वनाथबिंबं कारितं प्र० यणः (?)।

इस लेख में प्रतिमा प्रतिष्ठापक मुनि का स्पष्ट उल्लेख नहीं है। इसी गच्छ से सम्बद्ध अगला लेख वि० सं० १३७३/१३१७ ई० का है। यह लेख वडनगर स्थित चौमुखजी देरासर में प्रतिष्ठापित आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण है। आचार्य बुद्धिसागरसूरि^९ ने इसकी वाचना दी है, जो इस प्रकार है-

सं० १३७३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १२ श्रीकाशहदीयगच्छे, बहुसीहनय श्रीआदिनाथबिंब का० प्रति० श्री उमेतनसूरिभिः ॥

इस लेख में प्रतिमाप्रतिष्ठापक के रूप में उमेतनसूरि [उद्योतनसूरि] का उल्लेख है।

काशहदगच्छ से सम्बद्ध अगला अभिलेख वि० सं० १३९३/१३३७ ई० में प्रतिष्ठापित शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण है। मुनि जयन्तविजय^{१०} के अनुसार लेख का मूलपाठ इस प्रकार है-

सं० १३९३ काशहदगच्छे श्रे० नरसीह भा० वरजी पु० धरणिगेन पित्रोः श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिं० का० प्र० श्री सिंहसूरिभिः ॥

उक्त लेख में प्रतिमाप्रतिष्ठापक के रूप में सिंहसूरि का नाम दिया गया है।

इसी गच्छ से सम्बद्ध दो प्रतिमालेख वि. सम्वत् की १५वीं शती के हैं। उनमें से एक वि० सं० १४६१/१४०५ ई० का है, जो मातर स्थित

सुमतिनाथ मुख्य बावन जिनालय में रखी पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण है।^{११} लेख का मूलपाठ इस प्रकार है-

सं० १४६१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० शुक्रे उपकेराज्ञा० श्रे० सांगणभार्यासुहवदे-पुत्रघणसीहेन सु० मेघासहितेन पितृपितृव्यराणानिमित्तं श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० काशहृदगच्छे श्रीदेवचन्द्रसूरिभिः ॥

वि० सं० की १५वीं शती का द्वितीय लेख वि० सं० १४७२/१४१६ ई० का है जो धर्मनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण है। श्री अगरचन्द नाहटा^{१२} ने इस लेख की वाचना दी है, जो इस प्रकार है-

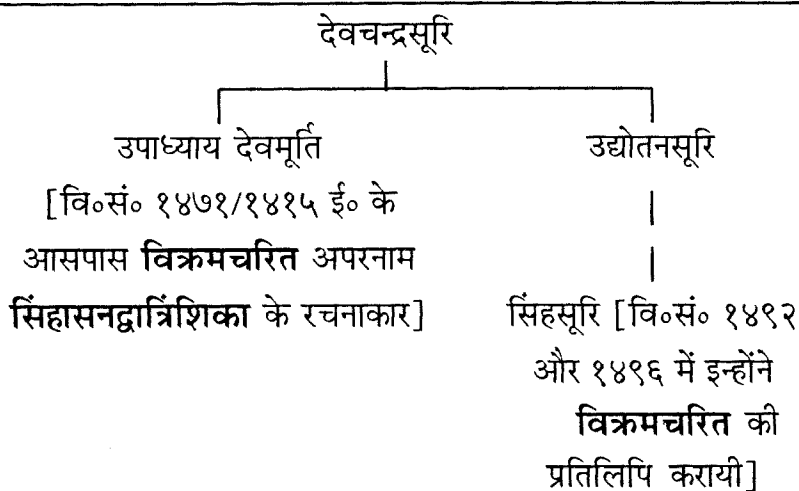
सं० १४७२ वर्ष फा० सु० ९ श्रीकासद्र [काशहृद] गच्छे उएस ज्ञा० मोटिलागोत्रे श्रे० जयता पु० रत्ना भा० रत्नसिरि पु० धणसीहेन पित्रोः श्रेयसे श्रीधर्मनाथ [बिंबं] कारित प्रति० श्री उजोअण [उद्योतन] सूरिभिः ॥

उक्त प्रतिमा आज चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर में है। काशहृदगच्छ का उल्लेख करने वाला यह अंतिम अभिलेखीय साक्ष्य है।

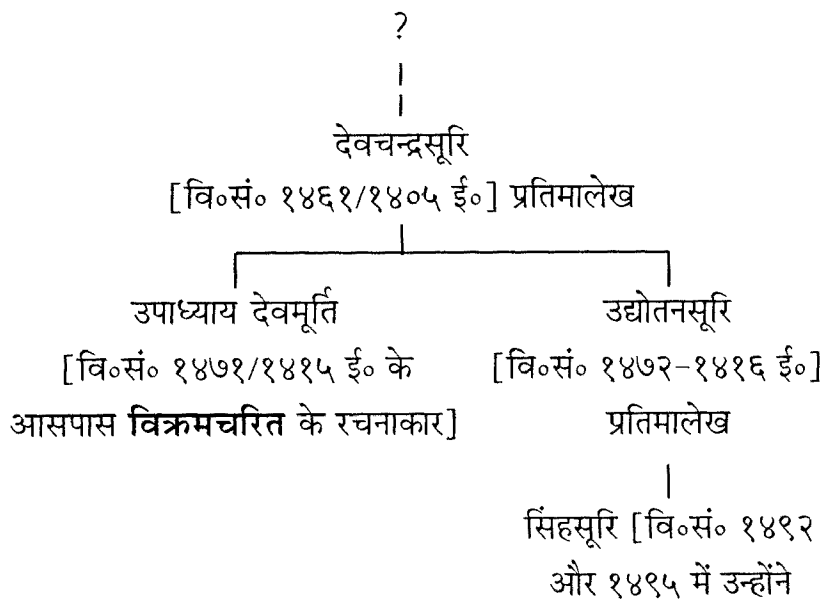
काशहृदगच्छीय किन्हीं देवचन्द्रसूरि के शिष्य उपाध्याय देवमूर्ति द्वारा रचित **विक्रमचरित** [रचनाकाल वि०सं० १४७१ के आसपास] नामक एक कृति मिलती है।^{१३} इस कृति की दो हस्तलिखित प्रतियां मेदपाट [मेवाड़] के शासक कुम्भकर्ण [वि०सं० १४८९-१५२४/१४३३-१४६८ ई०] के राज्य में लिखी गयीं। प्रथम प्रति वि० सं० १४९२/१४३६ ई० में वेसग्राम नामक स्थान पर ग्रन्थकार के गुरु देवचन्द्रसूरि के शिष्य उद्योतनसूरि के पट्टधर सिंहसूरि ने स्व पठनार्थ वाचनाचार्य शीलसुन्दर से लिखवायी। द्वितीय प्रति उक्त सिंहसूरि ने ही उक्त शासक के शासनकाल में ही वि० सं० १४९९/१४४० ई० में महीतिलक से लिखवायी। अर्थात्-

?

|
|



वि० सं० १४६१/१४०५ ई० के प्रतिमालेख में उल्लिखित देवचन्द्रसूरि और वि०सं० १४७२/१४१६ ई० के प्रतिमालेख में प्रतिष्ठापक के रूप में वर्णित उद्योतनसूरि को **विक्रमचरित** की प्रशस्ति में उल्लिखित देवचन्द्रसूरि और उनके पट्टधर उद्योतनसूरि से समसामयिकता और गच्छसाम्य के आधार पर अभिन्न माना जा सकता है।



विक्रमचरित की प्रतिलिपि करायी]

उक्त साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर इस गच्छ के कुल ९ मुनिजनों के नामों का पता चलता है। इनमें से उद्योतनसूरि और सिंहसूरि का तीन बार और देवचन्द्रसूरि का दो बार उल्लेख आया है अर्थात् देवचन्द्रसूरि, उद्योतनसूरि और सिंहसूरि का पट्टधर आचार्यों के रूप में पुनः पुनः नाम आता है। अतः यह कहा जा सकता है कि काशहदगच्छ में पट्टधर आचार्यों के यहीं तीन नाम पुनः पुनः प्राप्त होते रहे। संख्या की दृष्टि से साक्ष्यों की विरलता तथा उपलब्ध साक्ष्यों से प्राप्त विवरणों की सीमितता आदि कारणों से इस गच्छ के बारे में विशेष विवरणों का अभाव सा है। फिर भी उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर विक्रम सम्बत् की १३वीं शती से १५वीं शती के अन्त तक लगभग ३०० वर्ष पर्यन्त इस गच्छ का स्वतंत्र अस्तित्व सिद्ध होता है। इस गच्छ से सम्बद्ध साक्ष्यों की सीमितता को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि अन्य गच्छों की अपेक्षा इस गच्छ के मुनिजनों और उनके अनुयायी श्रावकों की संख्या अधिक न थी। १६वीं शती से इस गच्छ से सम्बद्ध साक्ष्यों का पूर्णतः अभाव है, अतः यह अनुमान व्यक्त किया जा सकता है कि इस गच्छ के मुनि और श्रावक इस समय तक किन्ही अन्य गच्छ में सम्मिलित हो गये होंगे।

साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर इस गच्छ के मुनिजनों की गुरु-शिष्य परम्परा की एक तालिका निर्मित की जा सकती है, जो इस प्रकार है-

?

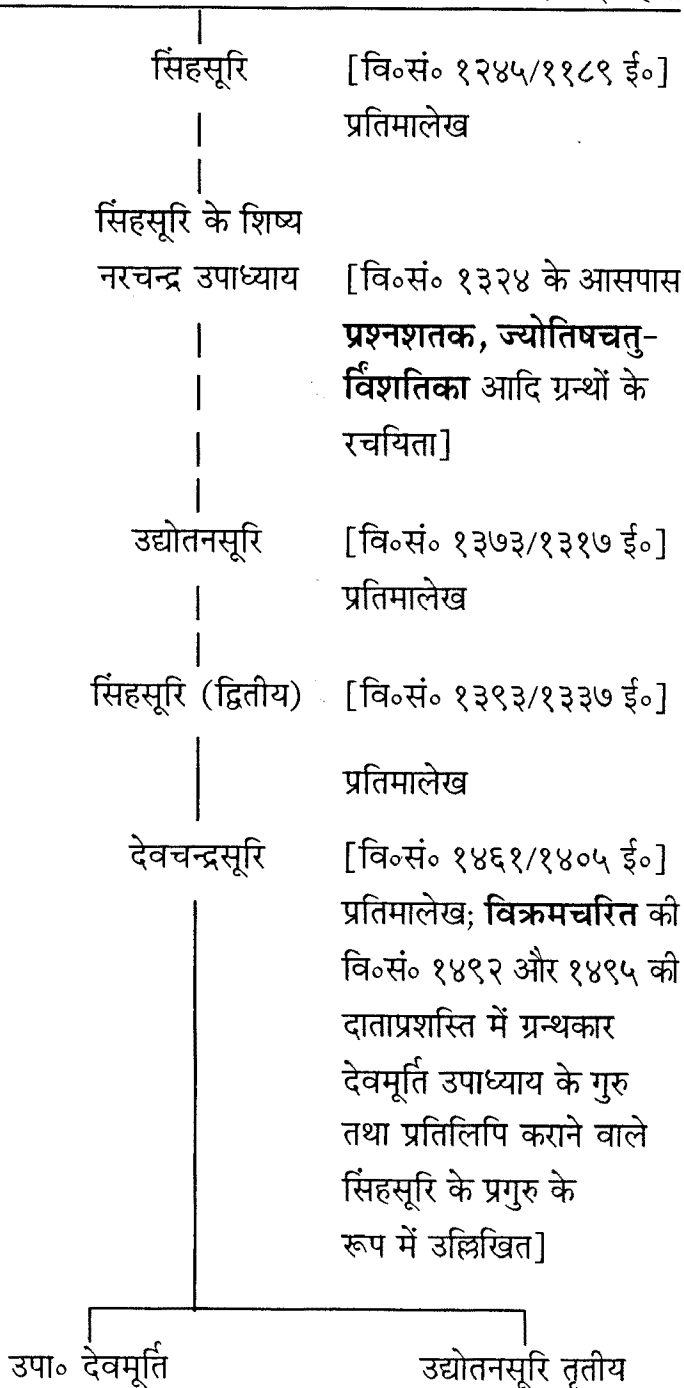
|

|

उद्योतनसूरिसंतानीय [वि०सं० १२२२/११६६ ई०]

|

प्रतिमालेख



[वि०सं० १४७१/१४१५ ई० के [वि०सं० १४७२] प्रतिमालेख
आसपास विक्रमचरित के रचनाकार]

सिंहसूरि

[इन्होंने वि०सं० १४९२

और १४९५ में

विक्रमचरित की स्वपठनार्थ
प्रतिलिपि करवायी.]

संदर्भ सूची :

१. यह वही ऐतिहासिक स्थान है जहां चौलुक्यनरेश बाल मूलराज [११७६-७८ ई०] और शहाबुद्दीन गोरी की सेनाओं में भीषण संघर्ष हुआ था, जिसमें तुर्कों की बुरी तरह पराजय हुई थी।
R. C. Majumdar, and A.D. Pusalker, (Ed.) - *The Struggle For Empire*, 3rd Ed., p. 78.
२. C.D. Dalal, - *Descriptive Catalogue of Mss in the Jaina Bhandars at Pattan*, P. 210-213.
३. साराभाई नवाब- “गुजरातनी केटलीक प्राचीन जिनमूर्तियों” श्रीमहावीर जैन विद्यालय रौप्य जयन्ती ग्रन्थ, मुंबई १९४० ई०, पृष्ठ १४४-४५.
४. मुनि जयन्तविजय (संपा०), अर्बुदप्राचीनजैनलेखसंदोह, लेखांक १७१.
५. वही, लेखांक ५५, ७३, ९५, ९८, १००, १०३, १०४, १०६, १०९, १४७
६. वही, लेखांक ४३.
७. भोगीलाल सांडेसरा - महामात्य वस्तुपाल का साहित्य मंडल और संस्कृत साहित्य में उसकी देन, पृष्ठ १०२-१०३, संदर्भ संख्या ३.
प्रो० सांडेसरा ने प्रश्नशतक का रचनाकाल ई० सन् ११७८ माना है, जो भ्रामक है।
८. अगरचन्द नाहटा, भंवरलाल नाहटा (संपा०), बीकानेर जैन लेख संग्रह, लेखांक २१०.
९. बुद्धिसागरसूरि (संपा०) जैन धातु प्रतिमा लेख संग्रह, भाग १, लेखांक ५६२.
१०. मुनि जयन्तविजय, पूर्वोक्त, लेखांक ५६२.
११. बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ४७१.

१२. नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ६६१.

१३. मोहनलाल दलीचन्द देसाई - जैन साहित्यनो संक्षिप्त इतिहास, पृ० ४६८.

श्री देसाईने विक्रमचरित की “रायल एशियाटिक सोसायटी- बाम्बे ब्रांच” में संरक्षित प्रति को वि० सं० १४८२/१४२६ ई० में लिपिबद्ध बतलाया है। श्री अगरचन्द नाहटा ने भी विक्रम स्मृति ग्रन्थ (उज्जैन, वि० सं० २००१) में प्रकाशित अपने लेख “विक्रमादित्य संबंधी जैन साहित्य” में श्री देसाई का ही अनुसरण किया है; जब कि श्री हरि दामोदर वेलणकर ने स्वसम्पादित जिनरत्नकोश (पृष्ठ ३४९-३५०) में उक्त प्रति को वि० सं० १४९२ में लिखा गया बतलाया है, जो प्रमाणिक है क्यों कि राणा कुम्भकर्ण का शासन वि० सं० १४८९ /१४३३ ई० में प्रारम्भ हुआ था।

कोरंट गच्छ का संक्षिप्त इतिहास

ई० सन् की दसवीं-ग्यारहवीं शताब्दी में श्वेताम्बर जैन श्रमण संघ का नगरों, उपनगरों आदि के आधार पर भी विभाजन होने लगा। इसी क्रम से कोरटा नामक स्थान से कोरंटगच्छ, नाणा से नाणकीयगच्छ, ब्रह्माण से ब्रह्माणगच्छ, संडेरे से संडेरेगच्छ आदि अनेक गच्छ अस्तित्व में आये। विभाजन की यह प्रक्रिया परवर्ती शताब्दियों में भी जारी रही। प्रस्तुत लेख में कोरंटगच्छ के इतिहास पर प्रकाश डाला गया है -

गच्छों के इतिहास के अध्ययन के लिये साहित्यिक और अभिलेखीय दोनों प्रकार के साक्ष्य उपलब्ध हैं। साहित्यिक साक्ष्य के अन्तर्गत ग्रन्थ और पुस्तक प्रशस्तियों एवं गच्छ से सम्बन्धित गुर्वावली-पट्टावली आदि उल्लेखनीय हैं। अभिलेखीय साक्ष्यों में सम्बद्ध गच्छ के आचार्यों द्वारा विभिन्न स्थानों पर प्रतिष्ठापित प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेखों की चर्चा की जा सकती है।

कोरंटगच्छ मध्ययुगीन श्वेताम्बर जैन संघ के चैत्यवासी आमनाय से सम्बद्ध रहा है। उपकेशगच्छ की एक शाखा के रूप में इसकी मान्यता है। इस गच्छ के आचार्यों के ये तीन नाम-कक्कसूरि, सावदेव (सर्वदेव) सूरि और नन्नसूरि पुनः पुनः मिलते हैं। इस गच्छ का सर्वप्रथम उल्लेख वि० सं० १२०१ के एक प्रतिमा लेख में और अन्तिम उल्लेख रायपसेणियसुत्त की वि० सं० १६१९ की प्रतिलिपि की प्रशस्ति में प्राप्त होता है। इस प्रकार लगभग ४०० वर्षों तक इस गच्छ का अस्तित्व रहा।

कोरंटगच्छ के इतिहास के अध्ययन के लिये सीमित संख्या में

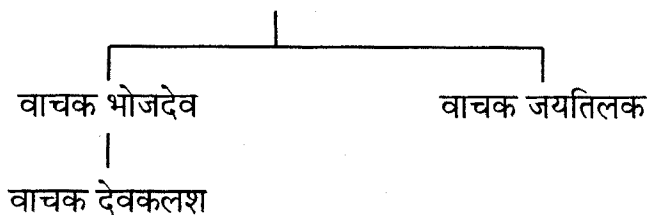
मूलकर्ता के ग्रन्थ की प्रतिलिपि की दाताप्रशस्तियाँ एवं बड़ी संख्या में इस गच्छ के आचार्यों द्वारा प्रतिष्ठापित प्रतिमाओं के लेख मिले हैं, जिनके आधार पर इस गच्छ के इतिहास का एक सर्वेक्षण प्रस्तुत है-

कोरंटगच्छ का उल्लेख करने वाला सबसे प्राचीन साहित्यिक साक्ष्य है महावीरचरित्र (त्रि० श० पु०, पर्व १०) की वि० सं० १३६८ में की गयी प्रतिलिपि की दाताप्रशस्ति^१, जिसमें कोलापुर (?) निवासी श्रावक मूलू और उसके परिजनों द्वारा अपनी माता के श्रेयार्थ अपने गुरु, कोरंटगच्छीय कृष्णर्षि के शिष्य, चन्द्रकुल के ध्वज समान आचार्य नन्नसूरि को वाचनार्थ प्रदान करने का उल्लेख है।

दूसरा साहित्यिक साक्ष्य है त्रि० श० पु० च० के द्वितीय सर्ग (अजितनाथचरित्र) की वि० सं० १४३६ में तैयार की गयी प्रतिलिपि की दाताप्रशस्ति।^२ ९ श्लोकों की इस प्रशस्ति में प्रथम ४ श्लोकों में दाता श्रावक देवसिंह और उसके परिवार का परिचय और अन्तिम ५ श्लोकों में श्रावक के गुरु एवं पुस्तक प्राप्तकर्ता सावदेवसूरि के शिष्य आचार्य नन्नसूरि का प्रशंसात्मक विवरण है।

तीसरा और अन्तिम साहित्यिक साक्ष्य है राजप्रश्नीयसूत्र की वि० सं० १६१९ में पूर्ण की गयी प्रतिलिपि की दाताप्रशस्ति।^३ इसमें कोरंटगच्छीय वाचक आसदेव के पट्टधर भोजदेव की परम्परा में हुए वाचक देवप्रभ द्वारा जोधपुर नरेश महाराज मालदेव के उत्तराधिकारी चन्द्रसेन के राज्यकाल में उक्त ग्रन्थ की प्रतिलिपि करने का उल्लेख है। प्रशस्ति में कोरंटगच्छीय वाचक परम्परा की गुर्वावली दी गयी है जो इस प्रकार है-

वाचक आसदेव



|
वाचक देवसुन्दर

|
वाचक देवमूर्ति

|
वाचक देवप्रभ (वि० सं० १६१९ में रायपसेणियसुत्त के
प्रतिलिपि कर्ता)

कोरंट गच्छ से सम्बद्ध अब तक उपलब्ध अन्तिम साक्ष्य होने के
कारण ही इस प्रशस्ति का महत्त्व है ।

कोरंटगच्छीय आचार्यों द्वारा प्रतिष्ठापित प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेखों
का कालक्रमानुसार विवरण इस प्रकार है-

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१.	१२०१	तिथि विहीन		धातु प्रतिमा लेख	आदिनाथ जिनालय, कोरटा, मारवाड	जैन सत्यप्रकाश ज़िल्द १, पृ. ३१०-११, लेख क्रमांक ८
२.	१२१२	ज्येष्ठ वदि ८ मंगलवार	नन्नसूरि के पट्टधर कक्कसूरि	शिलालेख	हस्तिशाला, विमलवसही, आबू	जिनविजय, प्राचीन जैनलेखसंग्रह, भाग २, लेखांक २४८
३.	१२१२	ज्येष्ठ वदि ८ मंगलवार	कक्कसूरि	-	हस्तिशाला, विमलवसही, आबू	आबू, भाग ५ लेखांक २२९

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
४.	१२२६	माघ सुदि ४ गुरुवार	यशोभद्रसूरि संतानीय	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, रोहिड़ा	वही, भाग ५ लेखांक ५५७
५.	१२७४	फाल्गुन सुदि ५ गुरुवार	कक्कसूरि के शिष्य सर्वदेवसूरि की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	गुरु प्रतिमा लेख	पालनपुर	जिनविजय, पूर्वोक्त, लेखांक ५५२ एवं जैनतीर्थसर्वसंग्रह, पालनपुर, पृ. ३२-३४
६.	१२९२	फाल्गुन सुदि ८ रविवार	कक्कसूरि	एक तीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जिनालय रोहिड़ा	आबू. भाग ५ लेखांक ५०३

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
७.	१२९३	फाल्गुन सुदि ८	कक्कसूरि	धर्मनाथ पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, रोहेड़ा, सिरोही	पूरनचन्द नाहर, जैनलेखसंग्रह भाग २, लेखांक २०८०
८.	१२९८	वैशाख सुदि ३	”	एक तीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैन मंदिर, अजारी	आबू, भाग ५, लेखांक ४२४
९.	१२९८	ज्येष्ठ सुदि १३	”	धातु प्रतिमा लेख	शांतिनाथ जिनालय, भिण्डी बाजार, बम्बई	मुनि कांतिसागर, जैनधातुप्रतिमा- लेख भाग १, लेखांक १४
१०.	१३१२	-	सर्वदेवसूरि	-	चन्द्रप्रभ जिनालय, सुलतानपुरा, बड़ोदरा	बुद्धिसागर, संपा० जैनधातुप्रतिमा- लेखसंग्रह,

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
						भाग २, लेखांक ५०४
११.	१३१७	ज्येष्ठ वदि ११ बुधवार	नन्नाचार्य संतानीय सर्वदेवसूरि	देहरियों की पाट का लेख	बावन जिनालय, करेड़ा	पूरनचन्द्र नाहर, जैनलेखसंग्रह, भाग २, लेखांक १९५०
१२.	१३२५	फाल्गुन सुदि ४ बुधवार	मुनिप्रभ उपाध्याय के शिष्य हस्तिराज द्वारा पुण्डरीक प्रतिमा की स्थापना का उल्लेख	पुण्डरीक प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैन मंदिर, पालनपुर	जैनतीर्थसर्वसंग्रह पृ० ३२-३४
१३.	१३३१	वैशाख वदि ४	नन्नाचार्यसंतानीय कक्कसूरि के शिष्य..	खंडित लेख	जैन मंदिर, पालनपुर	वही, पृ० ३२-३४

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१४.	मिति- नष्ट	माघ सुदि १३	नन्नचार्यसंतानीय कक्कसूरि के शिष्य	-	-	मुनि जिनविजय, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ५५५
१५.	१३३२	मिति- विहीन	सर्वदेवसूरि	-	चन्द्रप्रभ जिनालय, सुल्तानपुरा, बड़ोदरा	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १८९
१६.	१३४०	ज्येष्ठ सुदि १० शुक्रवार	श्री....सूरिभिः	पार्श्वनाथ की खंडित प्रतिमा का लेख	मल्लिनाथ की महादेव मंदिर के पास पड़ी खंडित प्रतिमा का लेख, प्रभासपाटन	नाहर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक १७९२

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१७.	१३४०	मिति विहीन	नन्नसूरि के संतानीय कक्कसूरि के पट्टधर सावदेवसूरि	नेमिनाथ की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, मणिकतल्ला कलकत्ता	नाहर, वही, भाग १, लेखांक ११५
१८.	१३४५	वैशाख वदि २	-	महावीर की धातु प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	अगरचन्द नाहटा, बीकानेरजैन- लेखसंग्रह, लेखांक २०१
१९.	१३५४	वैशाख सुदि २ सोमवार	-	कायोत्सर्ग प्रतिमा पर उत्कीर्ण दो लेख	अजितनाथ जिनालय, तारंगा	जैनतीर्थसर्वसंग्रह, तारंगा, पृ० १४६-१५२; जैनसत्यप्रकाश जिल्द २,

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्वाम्यलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
						“पुरातन इतिहास अने स्थापत्य”, जयन्तविजयजी, पृ० ६५-६८ लेखांक ११-१२
२०.	१३६०	आषाढ सुदि ९ सोमवार	-	नन्नसूरि की प्रतिमा का लेख	पावठा, जमीन की खुदाई में मिट्टी के ढेर से प्राप्त प्रतिमाओं में से एक	जैनतीर्थसर्वसंग्रह, पृ० ३६-३७, नं० ११७ - पावठा कोठा नं० २८८२
२१.	१३७३	ज्येष्ठ सुदि १२	”	आदिनाथ प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	अगरचन्द नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक २५५

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ साम्भललेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२२.	१३७५	तिथि विहीन	”	”	वही,	वही, पूर्वोक्त, लेखांक २६८
२३.	१३८२	वैशाख सुदि ५	”	”	वही,	वही, पूर्वोक्त, लेखांक २९३
२४.	१३८४	माघ सुदि ५	”	पार्श्वनाथ प्रतिमा का लेख	वही,	वही, पूर्वोक्त, लेखांक ३०२
२५.	१३८४	माघ सुदि ५	वज्रसूरि	महावीर प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, जेसलमेर	पूरनचन्द नाहर, पूर्वोक्त, भाग ३, लेखांक २५१
२६.	१३८७	ज्येष्ठ वदि ११ सोमवार	नन्नसूरि	आबू- अनुपूर्ति लेख	-	आबू, भाग २, लेखांक ५५६

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२७.	१३८९	फाल्गुन सुदि ८ सोमवार	नन्नसूरि कक्कसूरि	-	लूणवसही, आबू	आबू, भाग ५, लेखांक ४०५
२८.	१३८९	फाल्गुन सुदि ८	नन्नसूरि	आदिनाथ प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	अगरचन्द नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ३३८
२९.	१३८९	फाल्गुन सुदि ८	”	गूढ मंडप का लेख	लूणवसही. आबू	आबू, भाग २, लेखांक २५४
३०.	१३९०	तिथि विहीन	”	शांतिनाथ प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मन्दिर, बीकानेर	अगरचन्द नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ३३८

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
३१.	१३९२	ज्येष्ठ वदि ८	कक्कसूरि	आदिनाथ पंचतीर्थी का लेख	महावीर जिनालय, सांगानेर	विनयसागर, प्रतिष्ठालेखसंग्रह, भाग १, लेखांक १३४
३२.	१३९२	फाल्गुन वदि ८	नन्नसूरि के पट्टधर कक्कसूरि	-	अनुपूर्ति लेख आबू	आबू, भाग २, लेखांक ५५६
३३.	१३९३	फाल्गुन सुदि ८ सोमवार	”	आचार्य प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैन मन्दिर, सादड़ी	विजयधर्मसूरि, प्राचीनलेखसंग्रह, लेखांक ६३
३४.	१३९७	फाल्गुन सुदि १३ गुरुवार	नन्नसूरि	महावीर की पंचतीर्थी का लेख	जैन मन्दिर, ऊँझा, गुजरात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १५४

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
३५.	१४०४	वैशाख सुदि १० रविवार	”	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, डीसा	पूरनचन्द नाहर, भाग २, लेखांक २१०२
३६.	१४०६	फाल्गुन सुदि ८	नन्नाचार्य संतानीय कक्कसूरि	महावीर प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मन्दिर, बीकानेर	अगरचन्द, नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ४०८
३७.	१४०६	फाल्गुन सुदि ११ गुरुवार	”	नेमिनाथ प्रतिमा का लेख	वही	वही, पूर्वोक्त, लेखांक ४०९
३८.	१४०८	वैशाख सुदि ५	”	गूढमंडप में कक्कसूरि द्वारा २ जिन प्रतिमाओं	विमलवसही, आबू	आबू, भाग २, लेखांक ११

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
				की प्रतिष्ठा का उल्लेख		
३९.	१४०८	वैशाख सुदि ५ गुरुवार	नन्नसूरि के पट्टधर कक्कसूरि	शिलालेख	”	मुनि जिनविजय, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक २४०
४०.	१४०८	वैशाख सुदि ५ गुरुवार	”	”	”	जिनविजय, पूर्वोक्त, लेखांक २३९ तथा आबू, भाग २ लेखांक १०
४१.	१४११	ज्येष्ठ सुदि १२	कक्कसूरि	शांतिनाथ-प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर	अगरचन्द नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ४२७

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
४२.	१४१४	वैशाख सुदि १०	नन्नाचार्य संतानीय कक्कसूरि	अजितनाथ-प्रतिमा का लेख	वही, लेखांक ४३३	
४३.	१४२२	वैशाख सुदि ११	श्री ... देवसूरि	महावीर स्वामी की प्रतिमा का लेख	वही, लेखांक ४४८	
४४.	१४२६	वैशाख सुदि २ रविवार	कक्कसूरि के पट्टधर ?	शिलालेख	जैन मन्दिर, मुंगथला	जिनविजय, पूर्वोक्त, भाग २ लेखांक २७४
४५.	१४२६	वैशाख सुदि ९ रविवार	कक्कसूरि	शांतिनाथ की पंचतीर्थी का लेख	महावीर जिनालय चोथका, बरवाड़ा	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १५६

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
४६.	१४२६	वैशाख सुदि १	कक्कसूरि के पट्टधर सार्वदेवसूरि	स्तंभ लेख	खंडित जिनालय मुंगथला	आबू, भाग ५ लेखांक १४९
४७.	१४२७	ज्येष्ठ सुदि १५	कक्कसूरि	पार्श्वनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	जैन मन्दिर, ऊंझा	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १५२
४८.	१४२८	पौष वदि ७ रविवार	नन्नाचार्य संतानीय कक्कसूरि	वासुपूज्य- पंचतीर्थी का लेख	चिन्तामणिजी का मन्दिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ४९०
४९.	१४३३	वैशाख सुदि ९ शनिवार	नन्नाचार्य संतानीय सावदेवसूरि	धातु पंचतीर्थी का लेख	महावीर जिनालय, थराद	लोढ़ा, श्रीप्रतिमालेख- संग्रह, लेखांक ७

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
५०.	१४३७	वैशाख वदि १० सोमवार	”	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	शीतलनाथ जिनालय उदयपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १०५७
५१.	१४३९	माघ वदि ५ रविवार	”	वासुपूज्य पंचतीर्थी का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ५३७
५२.	१४५१	फाल्गुन वदि २ रविवार	नन्नसूरि	वासुपूज्य प्रतिमा का लेख	वही	वही, लेखांक ५५९
५३.	१४५२	ज्येष्ठ सुदि ८ सोमवार	”	संभवनाथ की धातु प्रतिमा जो गंभगृह में	शांतिनाथ देरासर, कनासा पाडो	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ३६२

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
				रखी है, पर उत्कीर्ण लेख		
५४.	१४५६	वैशाख सुदि ४	”	पद्मप्रभ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ५६९
५५.	१४६२	सुदि ५	”	धातु की एकतीर्थी प्रतिमा का लेख	जैन मन्दिर मालग्राम	आबू, भाग ५, लेखांक २१०
५६.	१४६६	फाल्गुन सुदि ३ सोमवार	”	धातु प्रतिमा लेख	गौडी जी भंडार उदयपुर	प्राचीनलेखसंग्रह, भाग १, लेखांक १०१
५७.	१४७२	फाल्गुन सुदि ९ शुक्रवार	कक्कसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ६६३

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
५८.	१४७५	ज्येष्ठ सुदि २	”	चन्द्रप्रभ स्वामी की प्रतिमा का लेख	”	नाहटा, पूर्वोक्त लेखांक ६७६
५९.	१४८०	सुदि १० सोमवार	नन्नसूरि के पट्टधर कक्कसूरि	आदिनाथ की पंचतीर्थों का लेख	विमलनाथ जिनालय, सवाई माधोपुर	प्रतिष्ठालेखसंग्रह, भाग १, लेखांक २२८
६०.	१४८०	फाल्गुन सुदी १० बुधवार	”	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त लेखांक ६९९
६१.	१४८०	फाल्गुन सुदि १० बुधवार	”	धातु प्रतिमा लेख	आदिनाथ जिनालय भोजकों की सेरी, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त, लेखांक २०५

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
६२.	१४८६	वैशाख सुदि १०	नन्नसूरि के पट्टधर कक्कसूरि	शीतलनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १२९९
६३.	१४८६	ज्येष्ठ वदि ६ शनिवार	”	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	वही, पूर्वोक्त, लेखांक ७३३
६४.	१४८७	आषाढ़ वदि ८ रविवार	कक्कसूरि	पद्मप्रभ की धातु प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय राजलदेसर, बीकानेर	वही, लेखांक २३४७
६५.	१४९१		सावदेवसूरि	भोयरा स्थित प्रतिमा लेख	शांतिनाथ जिनालय, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २ लेखांक ७४०

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
६६.	१४९१	फाल्गुन सुदि ११	”	धातुपंचतीर्थी का लेख	जैनमन्दिर रोहिड़ा, सिरोही	आबू, भाग ५, लेखांक २०८२
६७.	१४९१	फाल्गुन सुदि १२	”	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर रोहिड़ा, सिरोही	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक २०८२
६८.	१४९२		कक्कसूरि के पट्टधर सावदेवसूरि	-	जैन मंदिर, प्रभासपाटन	जैनसत्यप्रकाश, जिल्द १८ पृ० २३७, लेखांक २२
६९.	१४९२	वैशाख वदि ५	सावदेवसूरि	संभवनाथ प्रतिमा का लेख	जैन मन्दिर, ओसिया	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ७९६

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ साम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
७०.	१४९२	वैशाख सुदि ३ गुरुवार	”	श्रेयांसनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	माणिकसागर जी का मन्दिर, कोटा	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक २८९
७१.	१४९५	आषाढ वदि १३ मंगलवार	”	पद्मप्रभपंचतीर्थी का लेख	पंचायती मन्दिर जयपुर	वही, भाग १ लेखांक ३१४
७२.	१४९५	ज्येष्ठ वदि १४ बुधवार	”	शांतिनाथ की पंचतीर्थी का लेख	मुनिसुव्रत जिनालय मालपुरा	वही, भाग १, लेखांक ३०९
७३.	१४९५	ज्येष्ठ सुदि	”	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ७८१

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
७४.	१४९६	आषाढ़ सुदि ६ गुरुवार	”	अभिनन्दननाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	मनमोहन पार्श्वनाथ मन्दिर, जीरारवाड़ो खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ७६४
७५.	१४९६	फाल्गुन वदि ६ बुधवार	”	शांतिनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	महावीर स्वामी का मन्दिर, आसाणियों का चौक, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १८९३
७६.	१४९६	फाल्गुन वदि ५ बुधवार	कक्कसूरि के पट्टधर सावदेवसूरि	शांतिनाथ की पंचतीर्थी का लेख	शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिनालय, बीकानेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १३३०
७७.	१४९९	फाल्गुन वदि २ गुरुवार	नन्नाचार्य सतानीय भावदेव(सावदेव)सूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ८११

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
७८.	१५०१	तिथि विहीन	सावदेवसूरि	अभिनन्दननाथ की पंचतीर्थी का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, कोटा	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ३५६
७९.	१५०३	ज्येष्ठ सुदि ११ शुक्रवार	कक्कसूरि के पट्टधर सावदेवसूरि	पद्मप्रभ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ८६८
८०.	१५०६	माघ वदि ९	सावदेवसूरि	वासुपूज्य की पंचतीर्थी का लेख	सुमतिनाथ जिनालय जयपुर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ४०८
८१.	१५०६	माघ वदि	नन्नाचार्य संतानीय सावदेवसूरि	वासुपूज्यपंचतीर्थी का लेख	वही	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ११८३

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्वाम्यलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
८२.	१५०७	चैत्र वदि ५ शनिवार		चन्द्रप्रभ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ११०
८३.	१५०७	माघ वदि ५ सोमवार	सावदेवसूरि	धातु प्रतिमा लेख	शांतिनाथ जिनालय, मांडल	प्राचीनलेखसंग्रह, लेखांक २२६
८४.	१५०७	माघ सुदि	कक्कसूरि	आदिनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, मालपुरा	विनयसागर पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ४२३
८५.		फाल्गुन वदि ३ गुरुवार	सावदेवसूरि	सुमतिनाथ प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १२२

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
८६.	१५०८	वैशाख वदि ११	नन्नाचार्य संतानीय कक्कसूरि के पट्टधर सावदेवसूरि	चौबीसी का लेख	अजितनाथ जिनालय, तारंगा	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १७३३
८७.	१५०९	तिथि विहीन	सावदेवसूरि	वासुपूज्य की चौबीसी प्रतिमा का लेख	ऊंडीपोल, शांतिनाथ जिनालय, बडौदा	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ६७१
८८.	१५०९	”	कक्कसूरि के पट्टधर सावदेवसूरि	-	जैनमन्दिर, गुलाबबाड़ी, बम्बई	जैनसत्यप्रकाश, जिल्द ५, पृ. १६०-६५ क्रमांक २१
८९.	१५०९	ज्येष्ठ सुदि ९ शुक्रवार	सावदेवसूरि	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, सुलतानपुरा, बडौदा	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक २०३

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
९०.	१५०९	वैशाख वदि ११	नन्नाचार्य संतानीय सावदेवसूरि	वासुपूज्यपंचतीर्थी का लेख	आदिनाथ जिनालय, धर्मशाला, आबूरोड	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक २०१२
९१.	१५०९	वैशाख वदि ११ शुक्रवार	”	धातुपंचतीर्थी का लेख	आदिनाथ जिनालय, खराडी ग्राम	आबू, भाग ५, लेखांक १
९२.	१५०९	वैशाख वदि ११ शुक्रवार	”	कुंथुनाथ की प्रतिमा का लेख	कुशलाजी का मन्दिर, रामघाट, वाराणसी	नाहर, भाग १, लेखांक ४१७
९३.	१५०९	वैशाख वदि ११ शुक्रवार	”	कुंथुनाथ की प्रतिमा का लेख	अजितनाथ जिनालय, शेखनो पाडो, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १०९२

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१४.	१५०९	वैशाख सुदि पंचमी	नन्नसूरि के पट्टधर कक्कसूरि	पाषाण की कायोत्सर्ग प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, आबू	नाहर, भाग २, लेखांक २०१४
१५.	१५०९	वैशाख सुदि १३ शुक्रवार	कक्कसूरि के पट्टधर सावदेवसूरि	धातुकी प्रतिमा का लेख	घेलासेठ का घर देरासर, राधनपुर	राधनपुरप्रतिमा- लेखसंग्रह, विशालविजयजी, लेखांक १५७
१६.	१५०९	माघ पंचमी		धर्मनाथकी धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, गुलाबवाड़ी, बम्बई	कान्तिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १२१
१७.	१५११	माघ सुदि ५ गुरुवार	सावदेवसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	सीमंधर स्वामी का जिनालय, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक ११४८

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
९८.	१५१२	फाल्गुन सुदि १२ बुधवार		नमिनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	गौड़ी पार्श्वनाथ जिनालय, गोगा दरवाजा, पार्श्वनाथ पार्क, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १९२९
९९.	१५१३	मिति विहीन	कक्कसूरि के पट्टधर सावदेवसूरि	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	संभवनाथ जिनालय, कडी	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ७३६
१००.	१५१५	फाल्गुन सुदि १२ बुधवार	सोम(साव)देवसूरि	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	अभिनंदननाथ जिनालय, लालवाड़ी, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ८६१

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१०१.	१५१७	माघ सुदि १० बुधवार	कक्कसूरि के पट्टधर श्रीपाद... ।	चन्द्रप्रभ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, लस्कर, ग्वालियर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १४०४
१०२.	१५१७	”	कक्कसूरि के पट्टधर सावदेवसूरि	धातु प्रतिमा लेख	आदिनाथ जिनालय, जामनगर	प्राचीनलेखसंग्रह, लेखांक ३०५
१०३.	१५१७	माघ सुदि १२	”	कुंथुनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	शीतलनाथ जिनालय, रिणी, तारानगर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक २४४२
१०४.	१५१८	ज्येष्ठ सुदि ६ बुधवार	सावदेवसूरि	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, बरलुट (सिरौही)	जैनसत्त्वप्रकाश, जिल्द २, पृ० ५०६, क्रमांक ३८

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१०५.	१५१८	ज्येष्ठ सुदि ६ बुधवार	“	चन्द्रप्रभ पंचतीर्थी का लेख	अजितनाथ जिनालय, तारंगा	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १७२६
१०६.	१५१८		“	कुंथुनाथ प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १०१०
१०७.	१५१९	ज्येष्ठ सुदि १३ शनिवार	पजूनसूरि	संभवनाथ चौबीसी का लेख	बावन जिनालय, पेथापुर	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ६९७
१०८.	१५२१	वैशाख वदि ६ बुधवार	नन्नाचार्य संतानीय कक्कसूरि के पट्टधर सावदेवसूरि	धर्मनाथ प्रतिमा का लेख	धर्मनाथ जिनालय, डभोई	वही, भाग १, लेखांक १४

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१०९.	१५२१	वैशाख सुदि २ शनिवार	सावदेवसूरि	धातुपंचतीर्थी का लेख	भोंयरासेरी स्थित महावीर जिनालय की एक धातु प्रतिमा का लेख	राधनपुरप्रतिमा- लेखसंग्रह, लेखांक २३५
११०.	१५२२	आषाढ सुदि १२ रविवार	नन्नसूरि	धातुपंचतीर्थी का लेख	गौडीजी खड़की स्थित गौडी पार्श्वनाथ जिनालय	वही, लेखांक २४७
१११.	१५२३	वैशाख सुदि ४ बुधवार	कक्कसूरि के पट्टधर सावदेवसूरी	श्रेयांसनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	ठाकुर भाई मूलचन्द जिनालय, सूरत	प्राचीनलेखसंग्रह, भाग १, लेखांक ३७१
११२.	१५२३	वैशाख सुदि ५ बुधवार	कक्कसूरि के पट्टधर भावदेवसूरि (सावदेवसूरि)	श्रेयांसनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	बड़ा देरासर, लिंबडी	वही, भाग १, लेखांक ३७३

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
११३.	१५२३	वैशाख सुदि १३ शुक्रवार	”	सुपाश्वनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १०३०
११४	१५२४	ज्येष्ठ सुदि १३ शुक्रवार	”	आदिनाथ पंचतीर्थी का लेख	पद्मप्रभ जिनालय जयपुर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ६४५
११५.	१५२५	फाल्गुन सुदि ७ शनिवार	”	विमलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	झवेरीवाड, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ८५०
११६.	१५२८	वैशाख वदि २ गुरुवार	”	आदिनाथ प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १०५६

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
११७.	१५३०	माघ वदि ८ सोमवार	नन्नाचार्य संतानीय क्वकसूरि के पट्टधर सावदेवसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, झवेरीवाड़ अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ८११
११८.	१५३०	तिथि विहीन		आदिनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	गौड़ी पार्श्वनाथ जिनालय, देरापोल बाबाजीपुरा, बड़ोदरा	वही, भाग-२, लेखांक २१८
११९.	१५३१	वैशाख वदि ११ सोमवार		चन्द्रप्रभ की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, रिलीफ रोड, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक १५५
१२०.	१५३१	माघ वदि ८	सावदेवसूरि	आदिनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, ईडर	वही, भाग १, लेखांक १४१७

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१२१.	१५३१	वैशाख सुदि ५ सोमवार	सर्व(साव)देवसूरि	मुनिसुव्रत की धातु-प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, दंताल पोल, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ६६३
१२२.	१५३१	”	”	श्रेयांसनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	भोंयरा स्थित प्रतिमा लेख, शांतिनाथ जिनालय, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ७४८
१२३.	१५३२	वैशाख सुदि ६ सोमवार	”	सुमतिनाथ की पंचतीर्थी का लेख	पंचायती मंदिर सराफा बाजार, लस्कर, ग्वालियर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २ लेखांक १३८०
१२४.	१५३४	माघ सुदि १३ शुक्रवार	”	धातु प्रतिमा लेख	आदिनाथ जिनालय, पूना	प्राचीनलेखसंग्रह, भाग १, लेखांक ४५६

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१२५.	१५३४	वैशाख सुदि १० सोमवार	नन्नसूरि के संतानीय कवकसूरि	स्तम्भ लेख	जैन मन्दिर, जीरावला	आबू, भाग-५, लेखांक १७३
१२६.	१५३६	माघ वदि ५ गुरुवार	नन्नाचार्य के संतानीय सावदेवसूरि	आदिनाथ पंचतीर्थी का लेख	चिन्तामणि जिनालय, किशनगढ़	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ७९८
१२७.	१५४४	फाल्गुन वदि २ गुरुवार	सावदेवसूरि	धातु प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	गांव का जैन मंदिर, चांदवाड़, नासिक	मुनि कान्तिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक २४७
१२८.	१५४९	माघ सुदि ५ सोमवार	रत्न (नन्न) सूरि	दादा पार्श्वनाथजी देहरा का लेख	नरसिंहजी की पोल, बड़ोदरा	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १२३

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१२९.	१५४९	माघ सुदि...	नन्नसूरि	चन्द्रप्रभ पंचतीर्थी का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, जड़ाड	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ८५६
१३०.	१५५२	मार्गशीर्ष सुदि ५ रविवार	"	कुन्धुनाथ पंचतीर्थी का लेख	मणिक सागरजी का मन्दिर, कोटा	वही, भाग १, लेखांक ८६८
१३१.	१५५३	माघ सुदि ५ दिने	"	कुन्धुनाथ पंचतीर्थी का लेख	जैन मंदिर, क्षत्रियकुंड, लक्षवाड़	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १६९८
१३२.	१५५३	माघ सुदि ६	श्री....सूरि	कुन्धुनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, बालुचर, मुर्शिदाबाद	वही, भाग-१, लेखांक ३७

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१३३.	१५५६	माघ सुदि ५ सोमवार	भावदेवसूरि (सावदेवसूरि ?)	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, सांगानेर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १ लेखांक ८०१
१३४.	१५५७	वैशाख सुदि १०	नन्नसूरि	आदिनाथ की पाषाण प्रतिमा का लेख	अजितनाथ जिनालय, कटरा, अयोध्या	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २ लेखांक १६४२
१३५.	१५६८	आषाढ़ सुदि ४	“	नमिनाथ पंचतीर्थी का लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, मालपुरा	विनयसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ९३६
१३६.	१५६९	ज्येष्ठ सुदि १३ मंगलवार	“	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	सीमंधर स्वामी का मन्दिर, खंभात	गुड्डिसागर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १०६६

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१३७.	१५७३	आषाढ़ सुदि ५ गुरुवार	”	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	पहले यह प्रतिमा मातर ग्राम में थी, परन्तु अब अरनाथ जिनालय जीरारवाडो, खंभात में है।	चारजैनतीर्थों, मुनि विशालविजय, लेखांक ९, तथा बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ७६९
१३८.	१५७९	वैशाख सुदि ७ बुधवार	कक्कसूरि	पार्श्वनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय पुरानी मंडी, जोधपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ६०३
१३९.	१५९५	वैशाख सुदि ४ गुरुवार	”	अजितनाथ की पंचतीर्थों का लेख	बृहत्खरतगच्छ का उपाश्रय, जैसलमेर	वही, भाग ३, लेखांक २४८८

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१४०.	१५१५	माघ वदि १२	”	मुनिसुव्रत की धातु प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, पाटण	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ४५५
१४१.	१६११	ज्येष्ठ सुदि १२ शनिवार	नन्नसूरि	सुपाश्वनाथ की प्रतिमा का लेख	शीतलनाथ जिनालय, कुंभारवाडो, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ६५६
१४२.	१६१२	तिथि विहीन	”	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, गीपटी, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ६९६

साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर निर्मित

कोरंटगच्छ की पट्टावली

वि० सं० १२०१ (प्रतिमा प्रतिष्ठापक आचार्य
का नाम अनुपलब्ध)

कक्कसूरि वि० सं० १२१२

यशोभद्रसूरि संतानीय - ? वि० सं० १२२६

कक्कसूरि के शिष्य —→ वि० सं० १२७४

सर्वदेवसूरि की

प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

कक्कसूरि वि० सं० १२९२-१२९८ के
मध्य ३ प्रतिमा लेख

सर्वदेवसूरि वि० सं० १३१२-१३४० के
मध्य ४ प्रतिमा लेख

? वि० सं० १३४५ - १३६० के
मध्य ३ लेख जिनमें

प्रतिमा प्रतिष्ठापक आचार्य
का नाम नहीं है।

नन्नसूरि	वि० सं० १३७३-१३९७ के मध्य ९ प्रतिमा लेख
कक्कसूरि	वि० सं० १३८९-१४२८ के मध्य १५ प्रतिमा लेख
सावदेव (सर्वदेवसूरि)	वि० सं० १४२२ - १४३९ के मध्य ४ प्रतिमा लेख
नन्नसूरि	वि० सं० १४५१-१४६६ के मध्य ५ प्रतिमा लेख
कक्कसूरि	वि० सं० १४७२-१४८७ के मध्य ८ प्रतिमा लेख
सावदेवसूरि	वि० सं० १४९१-१५२१ के मध्य लगभग ४० प्रतिमा लेख
नन्नसूरि	वि० सं० १५२२
कक्कसूरि	(कोई प्रतिमा लेख नहीं मिलता)
सावदेवसूरि	वि० सं० १५२३-१५३४ के मध्य १० प्रतिमा लेख
नन्नसूरि	(कोई प्रतिमा लेख नहीं मिलता है)

?		कक्कसूरि	वि० सं० १५३४
वाचक आसदेव		सावदेवसूरि	वि० सं० १५३६-१५५६ के
वाचक	वाचक		मध्य ३ प्रतिमा लेख
भोजदेव	जयतिलक	नन्नसूरि	वि० सं० १५४९-१५७३ के
			मध्य ७ प्रतिमा लेख
वाचक		कक्कसूरि	वि० सं० १५७९-१५९५ के
देवकलश			मध्य ३ प्रतिमा लेख
वाचक			
देवसुन्दर			
वाचक		सावदेवसूरि	(कोई प्रतिमा लेख उपलब्ध नहीं)
देवमूर्ति			
वाचक		नन्नसूरि	वि.सं. १६११-१६१२ के
देवप्रभ			२ प्रतिमा लेख

[वि० सं० १६१९ में

रायपसेणियसुत्त

के प्रतिलिपिकर्ता]

उक्त तालिका से स्पष्ट है कि वि० सं० की १२वीं शती के उत्तरार्ध में यह गच्छ अस्तित्व में आया और सत्रहवीं शती के प्रथम चरण तक विद्यमान रहा। ४०० वर्षों के दीर्घकाल में इस चैत्यवासी गच्छ के आचार्यों

ने स्वयं को नूतन जिनालयों के निर्माण तथा नवीन जिन प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा तक ही सीमित रखा। शनैः शनैः इस गच्छ के आचार्यों का समाज पर प्रभाव कम होने लगा और ऐसी स्थिति में इस गच्छ के अनुयायी मुनिजनों का अन्य प्रभावशाली गच्छों में सम्मिलित हो जाना अस्वाभाविक नहीं है।

संदर्भ-सूची :-

१. C. D. Dalal, Ed. *Descriptive Catalogue of Manuscripts in the Jaina Bhandaras at Pattan*, Pp. 327-28.
२. Ibid. P. 364.
३. श्री प्रशस्ति संग्रह, संपादक : अमृतलाल मगनलाल शाह (अहमदाबाद वि० सं० १९९३) भाग २, पृ० ११५, प्रशस्ति क्रमांक ४३४.

कृष्णार्षिगच्छ का संक्षिप्त इतिहास

प्राक्मध्ययुगीन एवं मध्ययुगीन निर्ग्रन्थदर्शन के श्वेताम्बर आम्नाय के गच्छों में कृष्णार्षिगच्छ भी एक था। आचार्य वटेश्वर क्षमाश्रमण के प्रशिष्य एवं यक्षमहत्तर के शिष्य कृष्णमुनि की शिष्यसंतति अपने गुरु के नाम पर कृष्णार्षिगच्छीय कहलायी। इस गच्छ में जयसिंहसूरि (प्रथम), नयचन्द्रसूरि (प्रथम), जयसिंहसूरि (द्वितीय), प्रसन्नचन्द्रसूरि (प्रथम व द्वितीय), महेन्द्रसूरि, नयचन्द्रसूरि, (द्वितीय य तृतीय) आदि कई विद्वान् आचार्य हुए हैं। इस गच्छ में जयसिंहसूरि, प्रसन्नचन्द्रसूरि और नयचन्द्रसूरि इन तीन पट्टधर आचार्यों के नामों की प्रायः पुनरावृत्ति मिलती है, अतः यह माना जा सकता है कि इस गच्छ के मुनिजन संभवतः चैत्यवासी रहे होंगे।

कृष्णार्षिगच्छ के इतिहास के अध्ययन के लिये इस गच्छ के मुनिजनों की कृतियों की प्रशस्तियाँ तथा उनकी प्रेरणा से प्रतिलिपि करायी गयी महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों की दाताप्रशस्तियाँ उपलब्ध हैं। इस गच्छ से सम्बद्ध कोई पट्टावली प्राप्त नहीं होती। अभिलेखीय साक्ष्यों के अन्तर्गत इस गच्छ के मुनिवरों द्वारा प्रतिष्ठापित जिन-प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेखों की चर्चा की जा सकती है। ये लेख वि० सं० १२८७ से वि० सं० १६१६ तक के हैं। यहां उक्त सभी साक्ष्यों के आधार पर इस गच्छ के इतिहास पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

कृष्णार्षिगच्छ का उल्लेख करने वाला सर्वप्रथम साक्ष्य है - गच्छ के आदिपुरुष कृष्णार्षि के शिष्य जयसिंहसूरि द्वारा वि० सं० ९१५ / ई० स० ८५९ में रचित धर्मोपदेशमालाविवरण की प्रशस्ति^१। इसमें जो गुरु-परम्परा दी गयी है, वह इस प्रकार है :

वटेश्वर क्षमाश्रमण

तत्त्वाचार्य

यक्षमहत्तर

कृष्णार्षि

जयसिंहसूरि

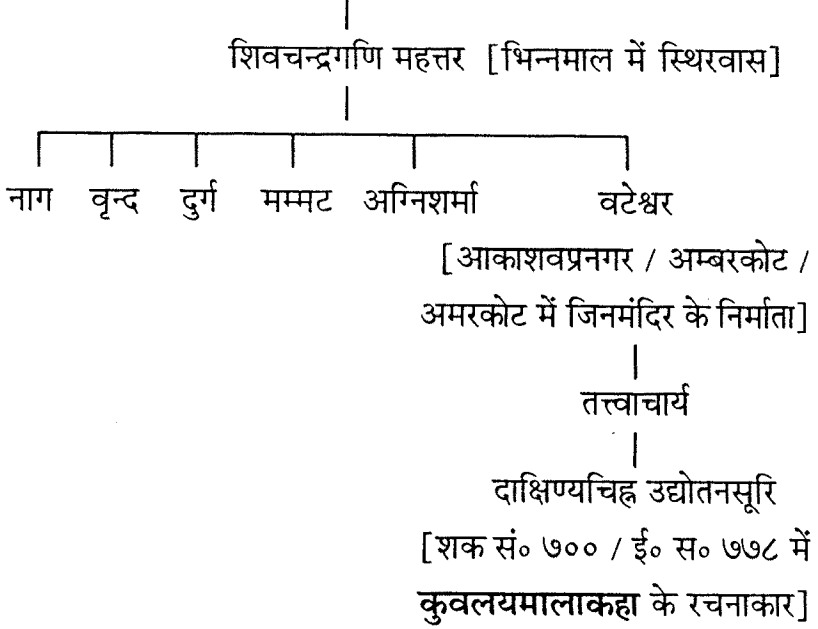
[वि०सं० ९१५/ ई० सन् ८५९
में धर्मोपदेशमालाविवरण
के रचनाकार]

शीलोपदेशमाला के कर्ता जयकीर्ति संभवतः इन्हीं जयसिंहसूरि के शिष्य थे^२।

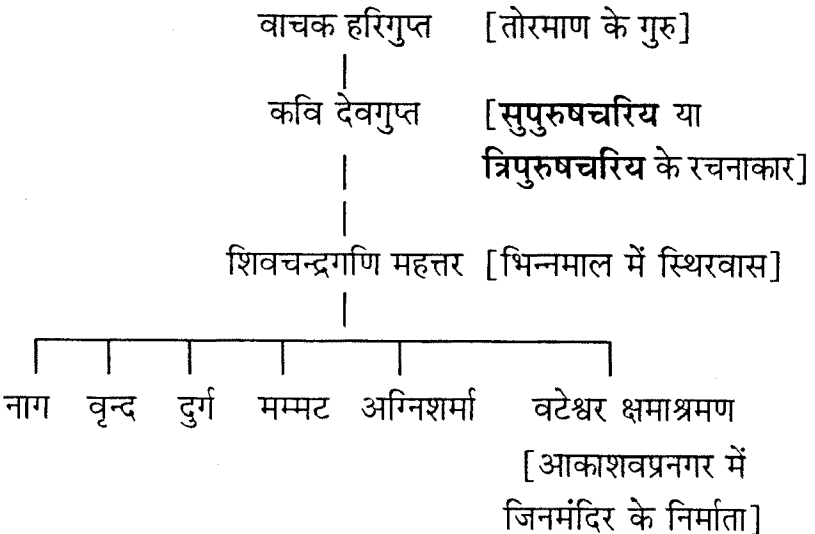
दाक्षिण्यचिह्न उद्योतनसूरि ने कुवलयमालाकहा^३ (रचनाकाल शक सं० ७०० / ई० सं० ७७८) की प्रशस्ति में अपने गुरु-परम्परा की लम्बी तालिका दी है, जिसमें वटेश्वरसूरि का भी उल्लेख है। इस तालिका में सर्वप्रथम वाचक हरिगुप्त का नाम आता है, जो तोरराय (तोरमाण) के गुरु थे। उनके पट्टधर कवि देवगुप्त हुए, जिन्होंने सुपुरुषचरिय या त्रिपुरुषचरिय की रचना की। कवि देवगुप्त के शिष्य शिवचन्द्रगणि महत्तर हुए जिनके नाग, वृन्द, दुर्ग, मम्मट, अग्निशर्मा और वटेश्वर ये ६ शिष्य थे। वटेश्वर क्षमाश्रमण ने आकाशवप्रनगर (अम्बरकोट / अमरकोट) में जिनमंदिर का निर्माण करवाया। वटेश्वर के शिष्य तत्त्वाचार्य हुए। कुवलयमालाकहा के रचनाकार दाक्षिण्यचिह्न उद्योतनसूरि इन्हीं तत्त्वाचार्य के शिष्य थे। इस बात को प्रस्तुत तालिका से भली भांति समझा जा सकता है :

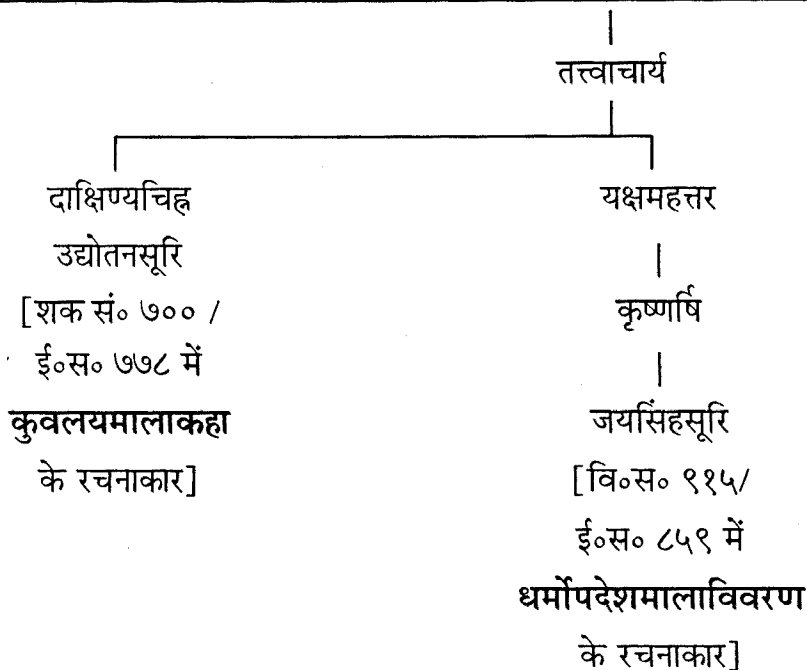
वाचक हरिगुप्त [तोरमाण के गुरु]

कवि देवगुप्त [सुपुरुषचरिय के
रचनाकार]



उक्त दोनों प्रशस्तियों की गुरु-परम्परा की तालिकाओं के मिलान से उद्योतनसूरि और कृष्णार्षिगच्छीय जयसिंहसूरि की गुरु-परंपरा की जो संयुक्त तालिका बनती है, वह इस प्रकार है :





धारापद्रगच्छ से सम्बद्ध वि० सं० १०८४ / ई० सं० १०२८ के लेख^४ में इस गच्छ के आचार्य पूर्णभद्रसूरि ने भी वटेश्वर क्षमाश्रमण का अपने पूर्वज के रूप में उल्लेख किया है।

कृष्णार्षिगच्छ का उल्लेख करनेवाला द्वितीय साहित्यिक साक्ष्य है वि० सं० १३९० / ई० सं० १३३४ में इस गच्छ के भट्टारक प्रभानंदसूरि द्वारा आचार्य हरिभद्र विरचित जम्बूद्वीपसंग्रहणीप्रकरण^५ पर लिखी गई टीका की प्रशस्ति। यद्यपि इसमें टीकाकार प्रभानन्दसूरि के अतिरिक्त किसी अन्य आचार्य या मुनि का उल्लेख नहीं मिलता, किन्तु इनकी प्रेरणा से वि० सं० १३९१ / ई० सं० १३३५ में लिपिबद्ध करायी गयी त्रिषष्टिशलाकापुरुष-चरित की प्रतिलिपि की दाताप्रशस्ति^६ से इनके गुरु-परम्परा के बारे में कुछ जानकारी प्राप्त होती है। इसके अनुसार कृष्णार्षिगच्छ में सुविहित शिरोमणि पद्मचन्द्र उपाध्याय हुए जिनकी शाखा में भट्टारक पृथ्वीचन्द्रसूरि हुए। उनके पट्टधर प्रभानन्दसूरि के उपदेश से एक श्रावकपरिवार द्वारा उक्त

महत्त्वपूर्ण कृति की प्रतिलिपि करायी गयी ।

सुविहितशिरोमणि पद्मचन्द्र उपाध्याय

भट्टारक पृथ्वीचन्द्रसूरि

प्रभानन्दसूरि

[वि०सं० १३९० / ई० सन् १३३४ में

जम्बूद्वीपसंग्रहणीप्रकरणटीका के रचनाकार,

इनके उपदेश से वि० सं० १३९१ / ई० सं० १३३५ में

त्रिशष्टिशलाकापुरुषचरित की प्रतिलिपि की गयी]

कृष्णर्षिगच्छ का उल्लेख करने वाला तृतीय साहित्यिक साक्ष्य है इसी गच्छ के आचार्य जयसिंहसूरि द्वारा रचित कुमारपालचरित (रचनाकाल वि०सं० १४२२/ ई० १३६६) की प्रशस्ति^९, जिसके अन्तर्गत ग्रन्थकार ने अपनी गुरुपरम्परा दी है । इसके अनुसार चारण (वारण) गण की वज्रनागरी शाखा के... कुल में कृष्ण नामक महातपस्वी मुनि हुए । उनकी परम्परा में निर्ग्रन्थचूडामणि आचार्य जयसिंहसूरि हुए, जिन्होंने वि० सं० १३०१ / ई० सं० १२४५ में मरुभूमि से मंत्रशक्ति द्वारा जल निकाल कर प्यास से व्याकुल श्रीसंघ की प्राणरक्षा की । इनके शिष्य प्रभावक शिरोमणि प्रसन्नचन्द्रसूरि हुए । इनके पट्टधर निःस्पृहशिरोमणि महेन्द्रसूरि हुए, जिनका सम्मान मुहम्मदशाह ने किया था । इन्हीं के शिष्य जयसिंहसूरि हुए, जिन्होंने वि० सं० १४२२ / ई० सन् १३६६ में उक्त कृति की रचना की जिसकी प्रथमादर्श प्रति इनके प्रशिष्य नयचन्द्रसूरि ने लिखी ।

कृष्णमुनि

निर्ग्रन्थचूडामणि

[वि०सं० १३०१ /

जयसिंहसूरि

ई० स० १२४५ में मरुभूमि में

जल निकालकर संघ की

प्राणरक्षा की]

प्रभावक शिरोमणि प्रसन्नचन्द्रसूरि

निःस्पृह शिरोमणि

[मुहम्मदशाह द्वारा

महेन्द्रसूरि

सम्मानित]

जयसिंहसूरि

[वि०सं० १४२२ /

ई० स० १३६६ में

कुमारपालचरित के

रचनाकार]

आचार्य जयसिंहसूरि ने भासर्वज्ञ कृत न्यायसार पर न्यायतात्पर्य-दीपिका^८ की भी रचना की।

जयसिंहसूरि के प्रशिष्य एवं प्रसन्नचन्द्रसूरि के शिष्य नयचन्द्रसूरि ने वि० सं० १४४४ / ई० स० १३८८ के आसपास हम्मीरमहाकाव्य^९ और रम्भामञ्जरीनाटिका^{१०} की रचना की। इन रचनाओं की प्रशस्तियों में इन्होंने अपने प्रगुरु जयसिंहसूरि का सादर स्मरण किया है।

जयसिंहसूरि

प्रसन्नचन्द्रसूरि

नयचन्द्रसूरि

[वि०सं० १४४४ / ई० स० १३८८ के लगभग]

हम्मीरमहाकाव्य और

रम्भामंजरीनाटिका के रचनाकार]

यही इस गच्छ से सम्बद्ध साहित्यिक साक्ष्य हैं। जैसा कि पूर्व में कहा गया है, इस गच्छ के मुनिजनों द्वारा प्रतिष्ठापित जिनप्रतिमायें भी उपलब्ध हुई हैं। इन पर उत्कीर्ण लेखों का विवरण इस प्रकार है :-

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१.	१२८७	फाल्गुन वदि ३ रविवार	नयचन्द्रसूरि	शिलालेख	लूणवसही, आबू	अर्बुदप्राचीनजैन- लेखसंदोह, लेखांक २५१
२.	१३७१	तिथि विहीन	प्रसन्नचन्द्रसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	पंचायती मंदिर, कलकत्ता	जैनलेखसंग्रह, भाग १, लेखांक ४२६
३.	१४१७	आषाढ सुदि ५ गुरुवार	जर्यासिंहसूरि	स्तम्भ लेख	लूणवसही, आबू	मुनि जयंतविजय, पूर्वोक्त, लेखांक ३८१
४.	१४८३	माघ सुदि ५	प्रसन्नचन्द्रसूरि के पट्टधर नयचन्द्रसूरि	आदिनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	बीकानेरजैनलेख- संग्रह, लेखांक ७२४,

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
५.	१४८८	मार्गशीर्ष सुदि ५ गुरुवार	”	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, वैदो का चौक, बीकानेर	वही, लेखांक १३४३
६.	१४९८	फाल्गुन वदि १० सोमवार	”	सुविधिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर, कातरग्राम	प्राचीनलेखसंग्रह, लेखांक १७४
७.	१४९८		जयसिंहसूरि के संतानीय नयचन्द्रसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग ३, लेखांक २३१४
८.	१५०१	माघ सुदि १० सोमवार	नयचन्द्रसूरि	शांतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, पनवाड़	प्रतिष्ठालेखसंग्रह, भाग १, सं० विनयसागर, लेखांक ३५१

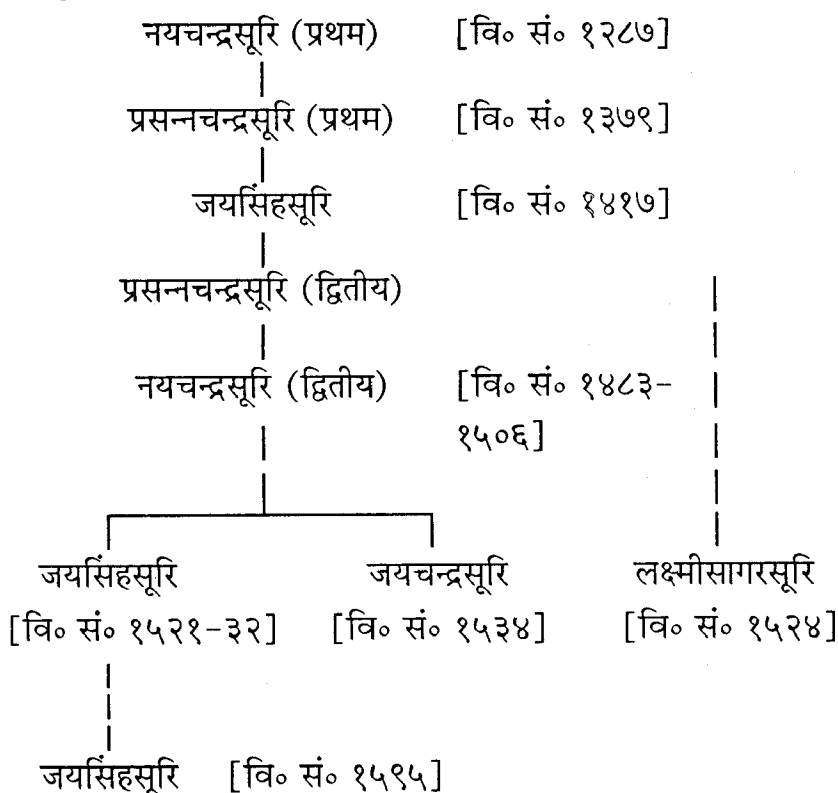
क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
९.	१५०९	पौष सुदि ५	“	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	धर्मनाथ जिनालय, बड़ा बाजार, कलकत्ता	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ९८
१०.	१५०६	“	“	चन्द्रप्रभ की प्रतिमा का लेख	“	वही, लेखांक ९९
११.	१५०६	पौष सुदि ९	“	श्रेयांसनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर, तूलापट्टी कलकत्ता	जैनधातुप्रतिमा- लेख, लेखांक १०५
१२.	१५१०	चैत्र वदि ५ शनिवार	प्रसन्नचन्द्रसूरि	मुनिसुव्रत की प्रतिमा का लेख	बालावसही, शत्रुञ्जय	शत्रुञ्जयवैभव, लेखांक १२३

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१३.	१५१२	माघ वदि १३ शुक्रवार	पुण्यरत्नसूरि	जिनप्रतिमापर उत्कीर्ण लेख	बालावसही, शत्रुञ्जय	वही, लेखांक १३७
१४.	१५२१	ज्येष्ठ सुदि १० बुधवार	नयचन्द्रसूरि के पट्टधर जयसिंहसूरि	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, खेड़ा, गुजरात	जैनधातुप्रतिमा- लेखसंग्रह, भाग २, लेखांक ४५५
१५.	१५२४	मार्गशिर वदि ५ रविवार	लक्ष्मीसागरसूरि	चन्द्रप्रभ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, रामपुरा	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ६४८
१६.	१५३२	आषाढ़ सुदि २ सोमवार	जयसिंहसूरि	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १०७५

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१७.	१५३४	आषाढ सुदि १ गुरुवार	नयचन्द्रसूरि के पट्टधर जयचन्द्रसूरि	सुमतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	भाण्डारस्थ धातु-प्रतिमा, वीर जिनालय, वैदों का चौक, बीकानेर	वही, लेखांक १३७८
१८.	१५३४	माघ सुदि ... शुक्रवार	प्रसन्नचन्द्रसूरि के पट्टधर नयचन्द्रसूरि	शांतिनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, भिनाय	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ७८२
१९.	१५८५ (१५ १४?)	ज्येष्ठ सुदि ६	जयशेखरसूरि	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा का लेख	नेमिनाथ जिनालय, सेठियों का वास, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक २३२६

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२०.	१५९५	माघ वदि २ बुधवार	जयसिंहसूरि	अजितनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, हनुमानगढ़, बीकानेर	वही, लेखांक २५३४
२१.	१६१६	माघ सुदि ११	धनचन्द्रसूरि, उपाध्याय, कमलकीर्ति आदि	शिलालेख	विमलवसही, आबू	मुनि जयन्तविजय, पूर्वोक्त, लेखांक १५५
२२.	१६१६	माघ सुदि ११	धनचन्द्रसूरि, उपाध्याय कमलकीर्ति आदि	शिलालेख	विमलवसही, आबू	वही, लेखांक २०६

उक्त अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर इस गच्छ के कुछ मुनिजनों की गुरु-परम्परा की एक तालिका इस प्रकार बनायी जा सकती है :



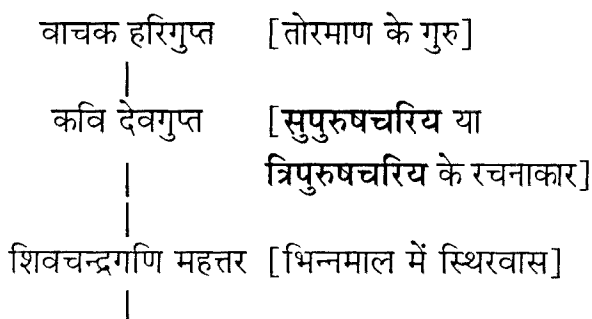
अभिलेखीय साक्ष्यों द्वारा निर्मित इस तालिका में नयचन्द्रसूरि, प्रसन्नचन्द्रसूरि और जयसिंहसूरि ये तीन नाम कुमारपालचरित और हम्मीरमहाकाव्य की प्रशस्तियों में भी आ चुके हैं। दोनों ही साक्ष्यों में इन नामों की प्रायः पुनरावृत्ति होती रही है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि कृष्णार्षिगच्छ की इस शाखा में पट्टधर आचार्यों को जयसिंहसूरि, प्रसन्नचन्द्रसूरि और नयचन्द्रसूरि ये तीन नाम प्रायः प्राप्त होते रहे। उक्त तर्क के आधार पर वि० सं० १२८७ के प्रतिमालेख में उल्लिखित नयचन्द्रसूरि को निर्ग्रन्थचूडामणि जयसिंहसूरि (जिन्होंने वि० सं० १३०१ में मरुभूमि में भीषण ताप के समय मंत्रशक्ति द्वारा भूमि से जल निकाल कर श्रीसंघ की

प्राणरक्षा की थी) के गुरु (नयचन्द्रसूरि ?) से समीकृत किया जा सकता है । किन्तु इनके शिष्य प्रसन्नचन्द्रसूरि और वि० सं० १३७९ में प्रतिमाप्रतिष्ठापक प्रसन्नचन्द्रसूरि को अभिन्न मानने में सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि दोनों आचार्यों की कालावधि में पर्याप्त अन्तर है । वि० सं० १४१७ के प्रतिमालेख में उल्लिखित जयसिंहसूरि कुमारपालचरित और न्यायतात्पर्यदीपिका (रचनाकाल वि० सं० १४२२/ई० सं० १३६६) के रचनाकार जयसिंहसूरि से निश्चय ही अभिन्न हैं ।

वि० सं० १४८३ से वि० सं० १५०५ के मध्य प्रतिमाप्रतिष्ठापक नयचन्द्रसूरि और हम्मीरमहाकाव्य (रचनाकाल वि० सं० १४४४ / ई० सं० १३८८) और रम्भामंजरीनाटिका के कर्ता नयचन्द्रसूरि को उनके कालावधि के आधार पर अलग - अलग आचार्य माना जा सकता है और यह कहा जा सकता है कि वि० सं० १४४४ और वि० सं० १४८३ के मध्य जयसिंहसूरि और प्रसन्नचन्द्रसूरि ये दो आचार्य हुए, परन्तु उनके बारे में हमें कोई सूचना प्राप्त नहीं होती ।

अभिलेखीय साक्ष्यों में उल्लिखित लक्ष्मीसागरसूरि (वि० सं० १५२४) और जयशेखरसूरि (वि० सं० १५८४) के बारे में हमें अन्यत्र कोई सूचना प्राप्त नहीं होती ।

इस प्रकार साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों द्वारा निर्मित तालिकाओं के परस्पर समायोजन से कृष्णार्षिगच्छीय मुनिजनों के आचार्य परम्परा की एक विस्तृत तालिका बनती हैं, जो इस प्रकार है :





[वि० सं० १४२२ / ई० स० १३६६ जयसिंहसूरि [तृतीय]
में कुमारपालचरित एवं
न्यायतात्पर्यदीपिका के रचनाकार]

प्रसन्नचन्द्रसूरि [द्वितीय]

[वि० सं० १४४४ / ई० स० १३८८ नयचन्द्रसूरि [द्वितीय]
के आसपास हम्मीरमहाकाव्य एवं
रम्भामंजरीनाटिका के रचयिता]

प्रसन्नचन्द्रसूरि [तृतीय]

[वि० सं० १४८३-१५०६] नयचन्द्रसूरि [तृतीय]
प्रतिमालेख

लक्ष्मीसागरसूरि
[वि० सं० १५२४,
प्रतिमालेख]

जयसिंहसूरि [चतुर्थ]
[वि० सं० १५१६-१५३२,
प्रतिमालेख]

जयचन्द्रसूरि
[वि० सं० १५३४,
प्रतिमालेख]

जयशेखरसूरि
[वि० सं० १५८५, प्रतिमालेख]

जयसिंहसूरि [वि० सं० १५८५,
प्रतिमालेख]

धनचन्द्रसूरि, कमलकीर्ति आदि

[वि० सं० १६१६, प्रतिमालेख]

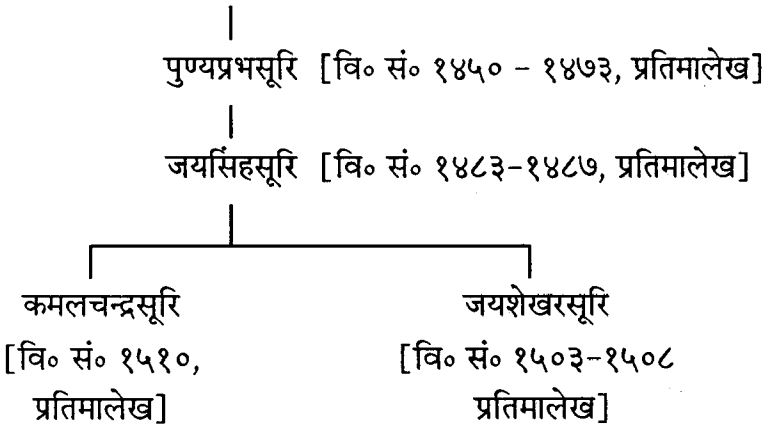
अभिलेखीय साक्ष्यों द्वारा कृष्णर्षिगच्छ की एक कृष्णर्षितपाशाखा का भी पता चलता है। इस शाखा से सम्बद्ध वि० सं० १४५० से वि० सं० १५१० तक के प्रतिमालेख प्राप्त हुए हैं। इनका विवरण इस प्रकार है :

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१.	१४५०	माघ वदि ९ सोमवार	पुण्यप्रभसूरि	पद्मप्रभ की धातुप्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ५५८
२.	१४७३	ज्येष्ठ सुदि ५	„	सुपार्श्वनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, मालपुरा	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक २११
३.	१४८३	भाद्रपद वदि ७ गुरुवार	पुण्यप्रभसूरि के पट्टधर जयसिंहसूरि	देहरी नं० १८ पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, जीरावला	अर्बुदाचल- प्रदक्षिणाजैन- लेखसंदोह, सं० मुनि जयन्तविजय, लेखांक १३८

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
४.	१४८३	भाद्रपद वदि ७ गुरुवार	”	देहरी नं० २० पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, जीरावला	वही, लेखांक १४१
५.	१४८९	माघ वदि ६ रविवार	जयसिंहसूरि	आदिनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ७४४
६.	१५०३	आषाढ़ सुदि ९	जयसिंहसूरि के पट्टधर जयशेखरसूरि	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, पुरानी मंडी, जोधपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ५८६
७.	१५०५	वैशाख सुदि ६ सोमवार	”	चन्द्रप्रभ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ८९०

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
८.	१५०८	वैशाख सुदि ५ सोमवार	„	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	लक्कड़वास का मंदिर, उदयपुर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक २३७
९.	१५१०	मार्गशीर्ष सुदि १० रविवार	जर्यासिंहसूरि की शाखा के कमलचन्द्रसूरि	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, वैदों का चौक, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १२१३

अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर कृष्णार्षिगच्छ की कृष्णार्षितपा-शाखा के मुनिजनों के गुरु-परम्परा की जो तालिका बनती है, वह इस प्रकार है :



कृष्णार्षितपाशाखा के प्रवर्तक कौन थे, यह शाखा कब और किस कारण से अस्तित्व में आयी, इस बात की कोई जानकारी नहीं मिलती ।

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि कृष्णार्षिगच्छ वि० सं० की ९वीं शती के अंतिम चरण तक अवश्य ही अस्तित्व में आ चुका था । वि० सं० की १० वीं शती के प्रारम्भ का केवल एकमात्र साक्ष्य है जयसिंहसूरि कृत **धर्मोपदेशमालाविवरण** की प्रशस्ति । इसके लगभग ३५० वर्षों पश्चात् ही इस गच्छ के बारे में विवरण प्राप्त होते हैं और ये साक्ष्य वि० सं० की १७वीं शती के प्रारम्भ तक जाते हैं । यद्यपि इस गच्छ के बारे में लगभग ३५० वर्षों तक कोई विवरण प्राप्त नहीं होता, किन्तु इस गच्छ की अविच्छिन्न परम्परा विद्यमान रही होगी, इस तथ्य को अस्वीकार नहीं किया जा सकता । वि० सं० की १६वीं शती के पश्चात् इस गच्छ के सम्बन्ध में कोई भी विवरण न मिलने से ऐसा प्रतीत होता है कि इस समय तक इस गच्छ का अस्तित्व समाप्त हो गया होगा और इसके अनुयायी किसी अन्य गच्छ में सम्मिलित हो गये होंगे ।

संदर्भसूची :

१. धर्मोपदेशमालाविवरण, सं० पं० लालचंद भगवानदास गांधी, सिंधी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थाङ्क २८, बम्बई १९४९, पृ० २२८-२३०; पं० लालचन्द भगवानदास गांधी, ऐतिहासिकलेखसंग्रह, श्री सयाजी साहित्यमाला, पुष्प ३३५, बड़ोदरा १९६३, पृ० ३०४ और आगे; और त्रिपुटी महाराज, जैन परम्परानो इतिहास, श्री चारित्र स्मारक ग्रन्थमाला, ग्रन्थाङ्क ५१, अहमदाबाद १९५२, पृ० ५१८ और आगे.
२. शीलोपदेशमाला, गुजराती भाषान्तर, अनुवादक हरिशंकर कालिदास शास्त्री, अहमदाबाद १९००; पं० लालचंद भगवानदास गांधी, ऐतिहासिक०, पृ० ३१४.
३. कुवलयमालाकहा, सं० आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्ये, सिंधी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थाङ्क ४५, बम्बई १९५९, पृ० २८२-२८४
४. अम्बालाल प्रेमचंद शाह, जैनतीर्थसर्वसंग्रह, खंड १, भाग १, अहमदाबाद १९५३, पृ० ३९.
५. Muni Punyavijaya, *New Catalogue of Prakrit and Sahskrit Mss, Jesalmer Collection*, L.D. Series No. 36, Ahmedabad - 1972, Pp. 303, No. 1492.
६. Muni Punyavijaya, *Catalogue of Plam-Leaf Mss. in the Shantinath Jain Bhandar, Cambay*, Part II, G.O.S. No. 149, Baroda Pp. 301-302.
७. H. R. Kapadia, *Descriptive Catalogue of the Govt. Collections of Mss. deposited at the Bhandarkar Oriental Research Institute*, Volume XIX, Section II, Part 1, B. O. R. I. Pune 1967, Pp. 176-178.
८. न्यायतात्पर्यदीपिका, सं० महामहोपाध्याय सतीशचंद्र विद्याभूषण, Asiatic Society of Bengal, Calcutta 1910.
९. हम्मीरमहाकाव्य, सं० मुनि जिनविजय, राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला, ग्रन्थाङ्क ६५, जोधपुर १९६८.
१०. H. D. Velankar, *Jinaratnakosha*, Bhandarkar Oriental Research Institute, Government Oriental Series, Class c, No. 4, Poona 1944, Pp. 329.

खंडिलगच्छ का संक्षिप्त इतिहास

निर्ग्रन्थ दर्शन के श्वेताम्बर सम्प्रदाय में ईस्वी सन् की प्रारम्भिक शताब्दियों में विभाजन की जो प्रक्रिया प्रारम्भ हुई, वह आगे भी जारी रही, जिसके फलस्वरूप पूर्वमध्ययुग में विभिन्न छोटे-बड़े गच्छ अस्तित्व में आये, जिनमें से खंडिलगच्छ भी एक है। यह गच्छ खंडेला नामक स्थान से अस्तित्व में आया। सिद्धसेनसूरि ने अपनी सुप्रसिद्ध कृति **सकलतीर्थस्तोत्र**^१ में इस स्थान का उल्लेख एक जैन तीर्थ के रूप में किया है। वि० सं० १०५५ / ई० सं० १९८ में रची गयी **धर्मरत्नाकर** की प्रशस्ति^२ से ज्ञात होता है कि इसके रचनाकार यहां आये थे। इसका नाम खंडिल्ला और खण्डेलपुरा भी प्रचलित रहा है।^३ वर्तमान राजस्थान प्रान्त के सीकर जिले में जिला मुख्यालय से ४५ किलोमीटर दूर स्थित यह स्थान आज 'खण्डेला' के नाम से जाना जाता है। यहां प्राचीन जिनालयों एवं अन्य स्मारकों के अवशेष यत्र-तत्र बिखरे पड़े हैं जिनसे विभिन्न जिन प्रतिमायें, जो मध्ययुगीन हैं, प्राप्त हुई हैं।^४

भावदेवसूरि इस गच्छ के प्रथम आचार्य माने जाते हैं, उनके नाम पर इस गच्छ का एक नाम 'भावदेवाचार्यगच्छ' भी प्रचलित हुआ। इस गच्छ के आचार्य स्वयं को कालकाचार्यसंतानीय कहते हैं, अतः इसका यह भी एक नाम प्रचलन में आया। प्रतिमालेखों में इस गच्छ का नाम भावडारगच्छ एवं भावङ्गगच्छ भी मिलता है। **प्रभावकचरित** (रचनाकाल वि० सं० १३३४) के अन्तर्गत 'वीरसूरिचरितम्' में चन्द्रकुल की एक शाखा के रूप में इस गच्छ का उल्लेख प्राप्त होता है।^५ इस गच्छ के पट्टधर आचार्यों को

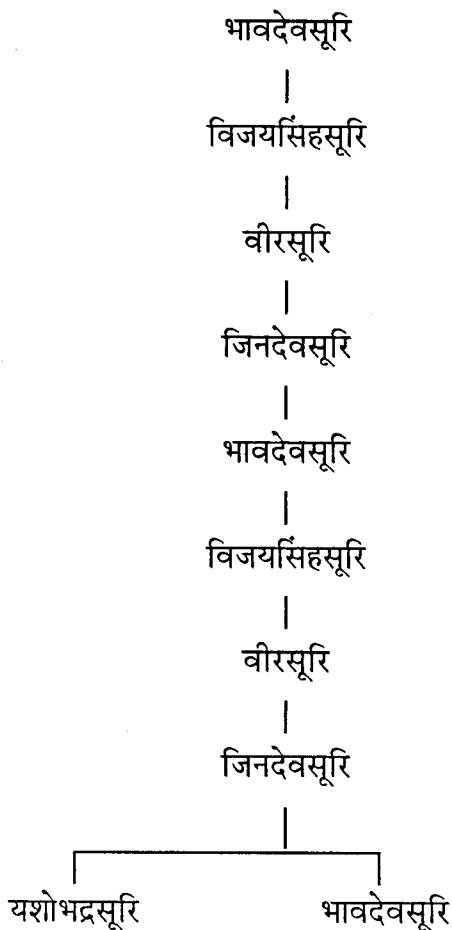
भावदेवसूरि, विजयसिंहसूरि, वीरसूरि और जिनदेवसूरि - ये चार नाम पुनः पुनः प्राप्त होते हैं, जिससे स्पष्ट होता है कि यह चैत्यवास समर्थक गच्छ था, क्योंकि पट्टधर आचार्यों के नामों की पुनरावृत्ति की परम्परा चैत्यवासियों में ही दिखाई देती है। प्रभावकचरित के 'वीरसूरिचरितम्' से ज्ञात होता है कि भावदेवसूरि इस गच्छ के आदिम आचार्य थे। उनके पट्टधर महान् वादी विजयसिंहसूरि हुए, जिनके शिष्य एवं पट्टधर वीरसूरि थे। ये चौलुक्यनरेश जयसिंह - सिद्धराज (वि० सं० ११५० - ११९९) के मित्र एवं इस गच्छ के महान् आचार्य थे। वि० सं० ११६० में उन्होंने बौद्धाचार्य, दिगम्बर आचार्य कमलकीर्ति और सांख्यवादी वादिसिंह को शास्त्रार्थ में परास्त कर यश प्राप्त किया।^६

इस गच्छ के इतिहास के अध्ययन के लिये सीमित संख्या में उपलब्ध साहित्यिक साक्ष्यों का विवरण इस प्रकार है :

- * १. पार्श्वनाथचरित (रचनाकाल वि० सं० १४१२); रचनाकार-
भावदेवसूरि
२. कालकाचार्यकथा - भावदेवसूरि
३. यतिदिनचर्या - भावदेवसूरि (रचनाकाल-अज्ञात)
४. अलंकारसार-भावदेवसूरि (रचनाकार-अज्ञात)

५. भक्तामरटीका - शांतिसूरि (रचनाकाल-अज्ञात) शांतिनाथ जैन ज्ञान भंडार, खंभात में इस ग्रन्थ की एक हस्तलिखित प्रति संरक्षित है, जो वि० सं० १५वीं शती प्रारम्भ की मानी जाती है। जहां तक प्रथम दो रचनाओं के रचनाकारों के नामसाम्य का प्रश्न है, ब्राउन ने कालकाचार्यकथा के कर्ता भावदेवसूरि को पार्श्वनाथचरित के कर्ता भावदेवसूरि से अभिन्न माना है।^७ यतिदिनचर्या और अलंकारसार के रचनाकार भावदेवसूरि पार्श्वनाथचरित के कर्ता भावदेवसूरि से अभिन्न हैं अथवा अलग-अलग, यह कहना कठिन है।

पार्श्वनाथचरित की प्रशस्ति^१ में इस गच्छ के आचार्यों की लम्बी गुर्वावली पायी जाती है, जो इस प्रकार है :



(वि० सं० १४१२ में)

पार्श्वनाथचरित के रचनाकार)

भक्तामरटीका के रचनाकार शांतिसूरि ने अपनी रचना की प्रशस्ति के अन्त में अपने गच्छ का नाम तो स्पष्ट रूप से दिया है, किन्तु अपनी गुरु-परम्परा और समय आदि की कोई चर्चा नहीं की है ।^१

“श्रीखंडेल्लकगच्छसम्बन्धिश्वेताम्बरशान्तिसूरिविरचितमानतुंगाचार्य-
कविकृतभक्तामराख्यसूत्रवृत्तिः परिसमाप्ता ।”

विक्रम सम्वत् की १६वीं शती के उत्तरार्ध में इसी गच्छ में हुए विजयसिंहसूरि के हर्षमूर्ति नामक विद्वान् शिष्य हुए, जिनके द्वारा वि० सं० १५९२ में मरु-गुर्जर भाषा में रची गयी गौतमपृच्छाचौपाई नामक कृति प्राप्त होती है।^{१०} चन्द्रलेखाचौपाई और पद्मावतीचौपाई भी इन्हीं की कृतियाँ हैं।^{११}

विजयसिंहसूरि के काल में ही वि० सं० १५६१ श्रावण सुदि ११ को ब्रह्मेचा गोत्रीय श्रावक द्वारा सूत्रकृतांगसूत्र की प्रतिलिपि कराय गयी। अमृतलाल मगनलाल शाह ने इसकी प्रशस्ति का मूलपाठ दिया है,^{१२} जो इस प्रकार है-

संवत् १५६१ वर्षे श्रावण सुदि ११ श्री भावडारगच्छे श्रीभावदेवसूरिः ।
तप्पट्टे श्रीविजयसिंहसूरिः ब्रह्मेचागोत्रे संघवी हरा भार्या हासलदे पुत्र संघवी
वीरा भार्या वील्हणदे पुत्र संघवी भोजकेन ज्ञान लखापितं दशसहस्रं
आलोचननिमित्तं ॥

विक्रम सम्वत् की सत्रहवीं शताब्दी के अंतिम दशक में इसी गच्छ में कनकसुन्दर नामक विद्वान् मुनि हुए, जिन्होंने वि० सं० १६९७ में हरिश्चन्द्रराजारास की रचना की।^{१३} यही इस गच्छ से सम्बद्ध अब तक उपलब्ध अंतिम साक्ष्य है।

जैसा कि प्रारम्भ में हम साहित्यिक साक्ष्यों के अन्तर्गत देख चुके हैं इस गच्छ के पट्टधर आचार्यों को भावदेवसूरि, विजयसिंहसूरि, वीरसूरि और जिनदेवसूरि ये चार नाम पुनः पुनः प्राप्त होते हैं। इन्ही नामों का उल्लेख करने वाला वि० सं० १०८० का एक लेख मथुरा से प्राप्त हुआ है। जार्ज बुहलर ने इसकी वाचना दी है, जो कुछ संशोधन के साथ इस प्रकार है :

१. ॐ जिनदेवः सूरिस्तदनु श्रीभावदेवनामाभूत् ।
आचार्य विजयसिंह स्वच्छिष्यस्तेन च प्रोक्तैः ॥१॥
२. सुश्रावकैर्नवग्रामस्थानादिस्यै स्वशक्तितः
वर्द्धमानश्चतुर्बिंबः कारितोऽयं सभक्तिभिः ॥२॥
- ३ संवत्सरै १०८० यंभकपप्पकाभ्यांघटितः ॥ ॐ ॥

G Buhler, "Further Jaina Inscriptions From Mathura"
Epigraphia Indica, Vol. II, Pp. 195-212, No. XLI.

यद्यपि इस लेख में कहीं भी गच्छ का नाम नहीं मिलता, फिर भी इसमें जिनदेवसूरि, भावदेवसूरि और विजयसिंहसूरि का नाम मिलने से इसे खंडिलगच्छ से सम्बद्ध मानने में कोई बाधा दिखाई नहीं देती। इस आधार पर इस लेख को इस गच्छ का सर्वप्राचीन साक्ष्य माना जा सकता है।

इस गच्छ के नामोल्लेख वाला सर्वप्रथम लेख वि० सं० ११९६ का है,^{१४} परन्तु इसमें प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम नहीं मिलता। यही बात वि० सं० १२१४ का एक लेख^{१५} जो आबू के निकट स्थित सीवेरा नामक ग्राम के एक जिनालय में संरक्षित ऋषभदेव की प्रतिमा पर उत्कीर्ण है, के बारे में भी कही जा सकती है। वि० सं० १२३७ के लेख में स्पष्ट रूप से प्रतिमा प्रतिष्ठापक आचार्य के रूप में विजयसिंहसूरि का उल्लेख है।^{१६} वि० सं० १५७८ तक के प्रायः सभी लेखों में प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम मिलता है, जिनकी संक्षिप्त तालिका इस प्रकार है :

जिनदेवसूरि
|
भावदेवसूरि
|
विजयसिंहसूरि
|

(वीरसूरि)	(वि० सं० १०८० में जिनप्रतिमा के प्रतिष्ठापक)
?	(वि० सं० ११९६ प्रतिमालेख)
?	(वि० सं० १२०८ प्रतिमालेख)
विजयसिंहसूरि	(वि० सं० १२३७ प्रतिमालेख)
वीरसूरि	(कोई प्रतिमालेख उपलब्ध नहीं है)
जिनदेवसूरि	(वि० सं० १२६८-१२८२)
भावदेवसूरि	(वि० सं० १३१७)
विजयसिंहसूरि	(वि० सं० १३४९)
वीरसूरि	(वि० सं० १३७४)
जिनदेवसूरि	(वि० सं० १३७९-१४२९ के मध्य कुल ८ प्रतिमा लेख)
भावदेवसूरि	(वि० सं० १४३५-१४४९ के मध्य कुल ६ प्रतिमा लेख)

विजयसिंहसूरि	(वि० सं० १४६९-१४८५ के मध्य कुल ६ प्रतिमा लेख)
वीरसूरि	(वि० सं० १४८९-१५१३ के मध्य लगभग ३० प्रतिमा लेख)
जिनदेवसूरि	(वि० सं० १५१५ के तीन प्रतिमा लेख)
भावदेवसूरि	(वि० सं० १५१७ - १५३९ के मध्य कुल १५ प्रतिमा लेख)
विजयसिंहसूरि	(वि० सं० १५५६ - १५७८ के मध्यकुल ५ प्रतिमा लेख)

अन्तिम प्रतिमा लेख वि० सं० १६६४ का है। इस लेख में भी प्रतिष्ठापक आचार्य का नामोल्लेख नहीं मिलता है।

इस गच्छ के आचार्यों द्वारा प्रतिष्ठापित जिनप्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेखों का विस्तृत विवरण इस प्रकार है -

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, भावदारगच्छ का उल्लेख करने वाला सबसे प्राचीन प्रतिमा लेख वि० सं० ११९६ / ई० सन् ११४० का है, जो आज भिवंडी (बम्बई) के एक जैन मन्दिर में सुरक्षित है। मुनि कांतिसागरजी ने लेख की वाचना इस प्रकार दी है -

सम्बत् ११९६ वैशाख सुदि १० भाडवाचार्य (गच्छीय साध ----
लाडि पुत्र नमि कुमारेण नि० (बिम्बं) कारितः।^{१७}

इस लेख में प्रतिमा प्रतिष्ठापक आचार्य का उल्लेख नहीं है। इस गच्छ से सम्बन्धित अगला अभिलेख वि० सं० १२१४ / ई० सन् ११५७ का है जो ऋषभदेव की धातु प्रतिमा पर उत्कीर्ण है। इस लेख में भी प्रतिमा के प्रतिष्ठापक आचार्य का उल्लेख नहीं मिलता। वर्तमान में यह धातु प्रतिमा आबू के निकट सीवेरा नामक ग्राम के एक जैन मन्दिर में प्रतिष्ठित है।^{१८} डॉ० सोहनलाल पटनी ने इस लेख को वि० सं० १२२४ का बतलाया है। दोनों में कौन सी वाचना सही है, इसका निर्णय तो लेख को प्रत्यक्ष देखने से ही हो सकता है।^{१८अ}

जैसा कि हम ऊपर देख चुके हैं, इस गच्छ में भावदेवसूरि, विजयसिंहसूरि, वीरसूरि और जिनदेवसूरि, इन चार पट्टधर आचार्यों के नामों की ही पुनरावृत्ति होती है। इन परम्परागत नामों का उल्लेख करने वाला सर्वप्रथम लेख वि० सं० १२३७ / ई० सन् ११८० का है जो एक सिरविहीन पाषाण प्रतिमा पर उत्कीर्ण है।^{१९} यह प्रतिमा आज खेड़ा जिले में स्थित रणछोड़जी के मंदिर में रखी हुई है।

इस लेख में प्रतिमा प्रतिष्ठापक के रूप में आचार्य विजयसिंहसूरि का उल्लेख है। इनके द्वारा प्रतिष्ठापित अन्य कोई प्रतिमा नहीं मिली है।

विजयसिंहसूरि के पट्टधर वीरसूरि हुए। इनके द्वारा भी प्रतिष्ठापित कोई प्रतिमा आज उपलब्ध नहीं है।

वीरसूरि के पट्टधर जिनदेवसूरि हुए। इनके द्वारा प्रतिष्ठापित दो प्रतिमाओं के लेख उपलब्ध हुए हैं। उनका विवरण इस प्रकार है—

(१) सं० १२६८ वैशाख सुदि ३ श्री भावदेवाचार्यगच्छ श्रे० पुत्र वत्र सुतेन आमदत्तेन पु० त्रागभन्त्रुढत्याण (?) । ३ । वीरबिबं कारितं । प्रति० श्री जिनदेवसूरिभिः^{२०}

(२) सं० १२८२ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० शुक्ले श्रीभावदेवाचार्य गच्छे ताड़कात्रा पत्र्या वाढ जामहेड़ आरात देवड़ शालिभिः वीरा श्रेयसे पार्श्वबिबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जि(न)देवसूरिभिः ।^{२१}

जिनदेवसूरि के पट्टधर भावदेवसूरि हुए जिनके द्वारा प्रतिष्ठापित शांतिनाथ की प्रतिमा पर वि० सं० १३१७ का एक लेख उत्कीर्ण है। लेख इस प्रकार है-

सं० १३१७ वर्षे वैशाख वदि ... शनौ क्येह श्रीमद्गणहिलपाटके श्री भवडाद (भावडार) गच्छे श्रीमालज्ञा० रत्नपुरीय श्रे. जसकुमार सु श्रे० उदाश्रेयोर्थ पुत्र सोमाकेन श्री शांतिनाथबिंबं का० प्रति० श्रीभावदेवसूरिभिः ॥^{२२}

प्रतिष्ठा स्थान - शांतिनाथ जैन मंदिर, पाटन।

भावदेवसूरि के पट्टधर विजयसिंहसूरि हुए। इनके द्वारा प्रतिष्ठापित पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर वि० सं० १३४९ का लेख उत्कीर्ण है, जो इस प्रकार है -

सं० १३४९ ज्येष्ठ सुदि २ श्री भावडारगच्छे सा० सोमा भार्या सोमश्री पुत्र छाड़ा-नागा-गयवरैः स्वमातृ श्रेयसे श्री पार्श्वनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीविजयसिंहसूरिभिः।

प्रतिष्ठा स्थान-जैनमंदिर, थराद^{२३}

विजयसिंहसूरि के पट्टधर वीरसूरि हुए। इनके द्वारा प्रतिष्ठापित ऋषभनाथ की प्रतिमा पर वि० सं० १३७४ का लेख उत्कीर्ण है। लेख इस प्रकार है -

सम्वत् १३७४ वर्षे वैशाख सुदि ७ श्री भावडारगच्छे उपकेशज्ञातीय तिहुणा भार्या तिहुणा देवि पु० महणाकेन श्रीऋषभदेवबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीवीरसूरिभिः ॥^{२४}

विजयसिंहसूरि के पट्टधर जिनदेवसूरि हुए जिनके द्वारा प्रतिष्ठापित वि० सं० १३७९ से १४२९ तक के कुल ८ लेख मिले हैं, जिनका विवरण इस प्रकार है-

१. सं० १३७९ वैशाख सु० भावडारगच्छे उपकेशज्ञा० पितृ कर्मा भ० ललतू भ्रातृ सही..... महं भउणाकेन श्री पार्श्वनाथबिंबं का० प्र० श्री जिनदेवसूरिभिः।

बीकानेर जैन लेख संग्रह, लेखाङ्क २८३

२. सं० १३८३ वर्षे श्री भावडारगच्छे ओसरा(वा)लज्ञातीय व्य० जयतपाल भार्या मोषल श्रेयसे सुत सहजपालकेन श्रीशांतिनाथबिंब कारितं प्र० श्री जिनदेवसूरिभिः ॥

अर्बुदाप्राचीनजैनलेखसंदोह, लेखांक ५५३

३. सं० १३९३ ---- सुदि ८ रवौ श्री भावडारगच्छे --- गोत्रे श्रे० --- भा० लखम पुत्र मंडलिकेन पित्रो श्रेयसे श्री पार्श्वनाथबिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिनदेवसूरिभिः ।

बीकानेरजैनलेखसंग्रह, लेखांक ३६२

४. सं० १४०९ ज्ये० शु० १० सोमे श्री भावडारगच्छे श्री श्रीमाल ज्ञा० व्य० वीदा भा० कडू सुत रामाकेन पि० श्रे० श्री शांतिनाथबिंब का० प्र० श्री जिनदेवसूरिः (रिभिः) ॥

अर्बुदप्राचीनजैनलेखसंदोह, लेखांक ५७०

५. सं० १४२२ वैशाख सु० १२ श्री भावडारगच्छे उप० ज्ञा० श्रे० गागल भा० कामल पु० देवसिंह उदयसिंहेः पित्रोः श्रेयसे श्री पंचतीर्थ (थीं) का० प्रतिष्ठिता श्री जिनदेवसूरिभिः ।

राधनपुरप्रतिमालेखसंग्रह, लेखांक ६२

६. सं० १४२२ वैशाख सुदि १२ भावडारगच्छे श्रीमाल ज्ञा० व्य० तेजा भा० तेजलदे पु० पासदेन पित्रोः भ्रातृः सहजपालस्य च श्रेयसे श्री विमलनाथबिंब का० प्र० श्रीजिनदेवसूरिभिः ।

बीकानेरजैनलेखसंग्रहे, लेखांक ४५१

७. सं० १४२७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १५ शुक्रे श्री भावडारगच्छे उपकेश ज्ञा० श्रे० रत्न पुत्रेण हीराकेन भ्रातृ कालू सा० कुरंपाल नरपाल श्री कुंथुनाथपंचतीर्थी का० प्र० जिनदेवसूरिभिः ।

बीकानेरजैनलेखसंग्रह, लेखांक ४८३

८. सं० १४२९ वर्षे माघ वदि... सोमे श्री कालिकाचार्य सन्ताने श्री भावदेवाचार्यगच्छे श्री विजयसिंहसूरिपट्टालंकार-श्रीवीरसूरीणां मूर्तिः श्रीजिनदेवसूरिभिः प्र० ।

(प्राचीनजैनलेखसंग्रह, भाग २, लेखांक ५२१)

जिनदेवसूरि के पट्टधर भावदेवसूरि हुए । इनके द्वारा प्रतिष्ठापित ६ प्रतिमायें उपलब्ध हुई हैं जिन पर वि० सं० १४३५ से वि० सं० १४४९ तक के लेख उत्कीर्ण हैं । इनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है-

सं० १४३५ माघ वदि १२ सोमवार^{२५}

पार्श्वनाथ प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख, प्रतिष्ठा स्थान- जैनमंदिर, राधनपुर ।

सं० १४३६ वैशाख वदि ११ मंगलवार^{२६}

शान्तिनाथ प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख, प्रतिष्ठा स्थान-चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर ।

सं० १४३८ ज्येष्ठ वदि ४ शनिवार^{२७}

शान्तिनाथ प्रतिमा का लेख, प्रतिष्ठा स्थान-पूर्वोक्त, बीकानेर ।

सं० १४४० पौष सुदि १२^{२८}

वासुपूज्य स्वामी की प्रतिमा का लेख, प्रतिष्ठा स्थान-पूर्वोक्त, बीकानेर ।

सं० १४४४ ज्येष्ठ वदि ९ शनिवार^{२९}

आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख, प्रतिष्ठा स्थान-चन्द्रप्रभ जिनालय, जामनेर ।

सं० १४४९ वैशाख सुदि ६ शुक्रवार^{३०}

वासुपूज्य स्वामी की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख प्रतिष्ठा स्थान - चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर ।

भावेदेवसूरि के पट्टधर विजयसिंहसूरि हुए। इनके द्वारा प्रतिष्ठापित ६ सलेख जिनप्रतिमायें आज उपलब्ध हैं जो वि० सं० १४६९ से वि० सं० १४८५ तक की हैं। इनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है -

वि० सं० १४६९ माघ सुदि^{३१}

मुनिसुव्रत की प्रतिमा का लेख, प्रतिष्ठा स्थान-चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर।

वि० सं० १४७१ माघ सुदि १३ बुधवार^{३२}

आदिनाथ की प्रतिमा का लेख, प्रतिष्ठा स्थान-पूर्वोक्त, बीकानेर।

वि० सं० १४७६ चैत्र वदि १ शनिवार^{३३}

शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख, प्रतिष्ठा स्थान-पूर्वोक्त, बीकानेर।

वि० सं० १४७९ माघ वदि ७ सोमवार^{३४}

चन्द्रप्रभ की प्रतिमा का लेख, प्रतिष्ठा स्थान-जैनमंदिर, थराद।

वि० सं० १४८१ वैशाख वदि ११^{३५}

धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख, प्रतिष्ठा स्थान-चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर।

वि० सं० १४८५ माघ वदि ९ गुरुवार^{३६}

संभवनाथ की प्रतिमा का लेख, प्रतिष्ठा स्थान - जैनमंदिर, थराद।

विजयसिंहसूरि के पट्टधर वीरसूरि हुए। इनके द्वारा प्रतिष्ठापित ३१ प्रतिमायें आज उपलब्ध हैं जो वि० सं० १४८९ से वि० सं० १५१३ के मध्य की हैं। इनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है-

वि० सं० १४८९ फाल्गुन वदि २ गुरुवार

नमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख,

प्रतिष्ठा स्थान - चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर।

संदर्भ - बीकानेर जैनलेखसंग्रह, लेखांक ७४५

वि० सं० १४९४ माघ सुदि ५ गुरुवार

आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्रतिष्ठा स्थान - चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर ।

संदर्भ - बीकानेरजैनलेखसंग्रह, लेखांक ७७७

वि० सं० १४९५ ज्येष्ठ सुदि १३ शुक्रवार

आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्रतिष्ठा स्थान - पार्श्वनार्थ जिनालय, रोहिडा

संदर्भ - अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेखसंदोह, लेखांक ५७६.

वि० सं० १४९५ ज्येष्ठ वदि १ शुक्रवार

नमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्रतिष्ठा स्थान -

संदर्भ - जैनलेखसंग्रह, भाग ३, लेखांक २३१०

वि० सं० १४९८ पौष वदि ११ रविवार

संभवनाथ की धातु प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्राप्तिस्थान - पुरातत्त्व संग्रहालय सिरोही ।

संदर्भ - अर्बुदपरिमंडल की जैन धातु प्रतिमायें एवं मन्दिरावलि,
पृष्ठ ६८, लेखांक १७२

वि० सं० १४९९ वैशाख वदि ४ गुरुवार

नमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्राप्तिस्थान - जैन मंदिर थराद ।

संदर्भ - श्रीप्रतिमालेखसंग्रह, लेखांक २५५

वि० सं० १४९९ फाल्गुन वदि २ गुरुवार

नमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्राप्ति स्थान - चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर ।

संदर्भ - बीकानेरजैनलेखसंग्रह, लेखांक ८१२

वि० सं० १४९९ फाल्गुन वदि २ गुरुवार

नमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्राप्तिस्थान - मुनिसुव्रत जिनालय, जोधपुर

संदर्भ - जैनलेखसंग्रह, भाग १, लेखांक ६१६

वि० सं० १५०७ माघ सुदि ५

सुविधिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्राप्ति स्थान - पुरातत्त्व संग्रहालय, सिरौही ।

संदर्भ - अर्बुदपरिमंडल की जैन धातु प्रतिमायें एवं मन्दिरावलि,
लेखांक ३१, पृ० ७८

वि० सं० १५०९ वैशाख सुदि ३ गुरुवार

शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्रतिष्ठा स्थान - जैन मंदिर, निंवज, सिरौही, (राज०) ।

संदर्भ - जैनलेखसंग्रह, भाग २, लेखांक २०९३

एवं अर्बुदपरिमंडल की जैन धातु प्रतिमायें एवं मन्दिरावलि,
लेखांक १०९

वि० सं० १५१० फाल्गुन सुदि ११ शनिवार

धर्मनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्रतिष्ठा स्थान - महावीर जिनालय, बीकानेर ।

संदर्भ - बीकानेरजैनलेखसंग्रह, लेखांक १३६२

वि० सं० १५०१ माघ सुदि ५

शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्रतिष्ठा स्थान - पार्श्वनाथ जिनालय, मुंडावा ।

संदर्भ - प्रतिष्ठालेखसंग्रह, भाग १, लेखांक ३४२

वि० सं० १५०२ माघ सुदि ५

- श्रेयांसनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख
 प्रतिष्ठा स्थान - पद्मप्रभ जिनालय, जयपुर ।
 संदर्भ - प्रतिष्ठालेखसंग्रह, भाग १, लेखांक ३६२
 वि० सं० १५०२ फाल्गुन सुदि २ गुरुवार
 सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख
 प्रतिष्ठा स्थान - महावीर जिनालय, भिनाय ।
 संदर्भ - प्रतिष्ठालेखसंग्रह, भाग १, लेखांक ३६३
 वि० सं० १५०३ फाल्गुन सुदि ८ सोमवार
 सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख
 प्रतिष्ठास्थान - मुनिसुव्रत जिनालय, डभोई ।
 संदर्भ - जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह, भाग १, लेखांक ६०
 वि० सं० १५०३ ज्येष्ठ वदि ३ सोमवार
 वासुपूज्य की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख
 प्रतिष्ठा स्थान - जैन मंदिर, थराद ।
 संदर्भ - श्रीप्रतिमालेखसंग्रह, लेखांक १५०
 वि० सं० १५०३ मार्गशीर्ष वदि ५
 नमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख
 प्रतिष्ठा स्थान - पूर्वोक्त ।
 संदर्भ - श्रीप्रतिमालेखसंग्रह, लेखांक १६२
 वि० सं० १५०३ माघ वदि ५ शनिवार
 वासुपूज्य स्वामी की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख
 प्रतिष्ठा स्थान - आदिनाथ जिनालय, जामनगर ।
 संदर्भ - प्राचीनलेखसंग्रह, भाग १, लेखांक १९२
 वि० सं० १५०६ कार्तिक वदि ७ शुक्रवार

तीर्थंकर की धातु प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्रतिष्ठास्थान - आदिनाथ जिनालय, चाडसू ।

संदर्भ - प्रतिष्ठालेखसंग्रह, भाग १, लेखांक ४०२

वि० सं० १५१० फागुन सुदि ११ शनिवार^{३७}

आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

वि० सं० १५१० आषाढ वदि १३ रविवार^{३८}

संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

वि० सं० १५१० फाल्गुन सुदि ११ शनिवार^{३९}

अभिनन्दनस्वामी की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

वि० सं० १५१२ चैत्र वदि ८ सोमवार^{४०}

कुन्थुनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

वि० सं० १५१२ मार्गशीर्ष सुदि १५ सोमवार^{४१}

एवं सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख^{४२}

वि० सं० १५१२ चैत्र वदि ८ सोमवार^{४३}

कुन्थुनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

वि० सं० १५१२ मार्गशीर्ष सुदि १५ सोमवार^{४४}

श्रेयांसनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

वि० सं० १५१२ माघ सुदि ६ सोमवार^{४५}

सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

वि० सं० १५१२ कार्तिक सुदि १० रविवार^{४६}

शान्तिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

वि० सं० १५१३ फाल्गुन वदि १२ सोमवार^{४७}

अजितनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

वीरसूरि के पट्टधर जिनदेवसूरि हुए। उनके द्वारा वि० सं० १५१५ कार्तिक वदि १४ शुक्रवार को प्रतिष्ठापित श्रेयांसनाथ, सुमतिनाथ और शीतलनाथ की प्रतिमायें आज थराद, मुंडावा और पाटन के जैनमंदिरों में संरक्षित हैं। इन पर उत्कीर्ण लेख इस प्रकार हैं-

संवत् १५१५ वर्षे कार्तिक वदि १४ शुक्रे श्री भावडारगच्छे श्रीश्रीमाल ज्ञा० व्य० राणा भा० रांभलदे पु० बेलां भा० फतू पु० आल्हा सहितेन पित्रोः श्रेयसे भ्रातृ वीरा लीना श्रेयसे श्रीश्रेयांसनाथबिबं कारि० प्रति० भ० श्रीजिनदेवसूरिभिः ॥

प्रतिष्ठा-स्थान-पार्श्वनाथ जिनालय, मुंडावा^{४८}

संवत् १५१५ वर्षे कार्तिक वदि १४ शुक्रे श्रीभावडारगच्छे श्रीश्रीमाल ज्ञा० व्य० मीणा भा० माहणादे पु० माला भोजी देवासहितेन श्रीसुमतिनाथबिबं का० मातृपितृश्रेयसे श्री पू० कालिकाचार्यसंताने पू० श्रीजिनदेवसूरिभिः ॥

प्रतिष्ठा स्थान - बड़ा देरासर, कानासानो पाडो, पाटन।^{४९}

संवत् १५१५ वर्षे कार्तिक वदि १४ शुक्रे श्रीभावडारगच्छे श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० मेहाउलेन भा० दादू पुत्र पूना गांगा सांगा पितृव्य गेला सहितेन स्वपुण्यार्थ श्री शीतलनाथबिबं का० प्रति० श्री वीरसूरिपट्टे पूज्य श्री जिनदेवसूरिभिः ।

प्रतिष्ठा स्थान - जैन मंदिर- थराद^{५०}

जिनदेवसूरि का अन्य कोई लेख उपलब्ध नहीं है।

जिनदेवसूरि के पट्टधर भावदेवसूरि हुए। इनके द्वारा प्रतिष्ठापित प्रतिमाओं पर वि० सं० १५१७ से वि०सं० १५३९ तक के लेख उत्कीर्ण हैं। इनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है-

वि०सं० १५१७ फाल्गुन सुदि ३ शुक्रवार^{५१}

मुनिसुव्रत की चौबीसी पर उत्कीर्ण लेख।

प्रतिष्ठा स्थान-सुमतिनाथ जिनालय, ओराण

वि०सं० १५१८ माघ सुदि २ शनिवार^{५२}

चन्द्रप्रभ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख, प्रतिष्ठा स्थान-आदिनाथ जिनालय, करमदी ।

वि० सं० १५१८ फाल्गुन सुदि ९ सोमवार^{५३}

संभवनाथ की धातु-प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख, प्रतिष्ठा स्थान-जैनमंदिर, थराद ।

वि०सं० १५२४ कार्तिक वदि २ शुक्रवार^{५४}

पद्मप्रभ चौबीसी पर उत्कीर्ण लेख, प्रतिष्ठा स्थान-आदिनाथ जैनमंदिर, डीसा ।

वि०सं० १५२९ ज्येष्ठ सुदि ३ रविवार^{५५}

नमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख, प्रतिष्ठा स्थान-बृहद् खरतरगच्छ उपासरा, जैसलमेर ।

वि० सं० १५३२ ज्येष्ठ सुदि १३ बुधवार^{५६}

नमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख, प्रतिष्ठा स्थान-जैनमंदिर, थराद ।

वि० सं० १५३२ वैशाख वदि ५ रविवार^{५७}

सुविधिनाथ की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्रतिष्ठा स्थान - महावीर जिनालय, माणिकतल्ला, कलकत्ता ।

वि०सं० १५३२ आषाढ़ सुदि ८ रविवार^{५८}

धर्मनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख, प्रतिष्ठा स्थान-आदिनाथ जिनालय, नागौर ।

वि० सं० १५३४ मार्गशीर्ष वदि ५ रविवार^{५९}

सुविधिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्रतिष्ठा स्थान-पार्श्वनाथ जिनालय, कोचरों का मुहल्ला, बीकानेर ।

वि०सं० १५३५ पौष सुदी ६ बुधवार^{६०}

मुनिसुव्रत की चौबीसी पर उत्कीर्ण लेख

प्रतिष्ठा स्थान - चन्द्रप्रभस्वामी का मंदिर, जैसलमेर ।

वि० सं० १५३६ माघ वदि ६ मंगलवार^{६१}

शीतलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्रतिष्ठा स्थान-सीमंधरस्वामी का मंदिर, अहमदाबाद ।

वि०सं० १५३७ फाल्गुन ८^{६२}

सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख, प्रतिष्ठा स्थान-पंचायती मन्दिर,
जयपुर ।

वि०सं० १५३९ वैशाख सुदि ४ शुक्रवार^{६३}

पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्रतिष्ठा स्थान-महावीर स्वामी का मंदिर, आसानियों का चौक,
बीकानेर ।

वि०सं० १५३९ आषाढ़ ६^{६४}

सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख, प्राप्ति स्थान-गौड़ीजी
भंडार, उदयपुर ।

वि० सं० १५३१ मार्गशीर्ष वदि ८ बुधवार का एक लेख अजितनाथ
की प्रतिमा पर उत्कीर्ण है ।^{६५} इस पर भी प्रतिष्ठापक आचार्य के रूप में
जिनदेवसूरि के पट्टधर भावदेवसूरि का उल्लेख है ।

भावदेवसूरि के शिष्य विजयसिंहसूरि हुए । उनके द्वारा प्रतिष्ठापित
जिनप्रतिमाओं पर वि० सं० १५५६ से वि० सं० १५७८ तक के प्रतिमा लेख
उपलब्ध हुए हैं । इनका विवरण इस प्रकार है :

वि० सं० १५५६ फाल्गुन वदि २ बुधवार^{६६}

वासुपूज्य की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख, प्रतिष्ठा स्थान-कुएं वाला
देरासर, ईडर ।

वि० सं० १५५८ फागुण वदि २ बुधवार^{६७}

शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख,

प्रतिष्ठा स्थान-सुपार्श्वनाथ जिनालय, जैसलमेर ।

वि० सं० १५६६ माघ सुदि पंचमी^{६८}

आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्रतिष्ठा स्थान - आदिनाथ जिनालय, भायखला, मुम्बई ।

वि० सं० १५७२ फाल्गुन वदि ४ गुरुवार^{६९}

कुन्थनाथ एवं संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्रतिष्ठा स्थान-पाटण^{७०} ।

वि० सं० १५७८ माघ वदि ८ सोमवार^{७१}

कुन्थुनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्रतिष्ठा स्थान-आदिनाथ जिनालय, भायखला ।

इस गच्छ का उल्लेख करनेवाला अन्तिम प्रतिमा लेख वि० सं० १६६४^{७२} का है, जो बीकानेर के नाहटों की गुवाड़ स्थित ऋषभदेव जिनालय की भण्डारस्थ एक खंडित प्रतिमा पर उत्कीर्ण है । इस लेख में प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम नष्ट हो गया है ।

साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर इस गच्छ के आचार्यों की लम्बी गुर्वावली निर्मित होती है जो इस प्रकार है-

जिनदेवसूरि (वि० सं० १०००) अनुमानित

|

भावदेवसूरि (वि० सं० १०२५) अनुमानित

|

विजयसिंहसूरि (वि० सं० १०५०) अनुमानित

|

(वीरसूरि) (वि० सं० १०८०) में वर्धमान

	की प्रतिमा के प्रतिष्ठापक
जिनदेवसूरि	(वि० सं० ११००) अनुमानित
भावदेवसूरि	(वि० सं० ११२५) अनुमानित
विजयसिंहसूरि	(वि० सं० ११५०) अनुमानित
वीरसूरि	जयसिंहसिद्धराज के समकालीन (वि० सं० ११५० - ९९)
	एवं मित्र तथा वि० सं० ११९०
	में बौद्धाचार्य, दिगम्बराचार्य
	कमलकीर्ति और सांख्यवादी
	वादिसिंह को वाद में परास्त
	कर प्रसिद्धि प्राप्त करने वाले
(जिनदेवसूरि?)	(वि० सं० ११९६)
(भावदेवसूरि)	(वि० सं० १२०८)
विजयसिंहसूरि	(वि० सं० १२३७)
(वीरसूरि)	(प्रतिमालेख अनुपलब्ध)
जिनदेवसूरि	(वि० सं० १२६८-१२८२)

भावदेवसूरि (वि० सं० १३१७)

|

विजयसिंहसूरि (वि० सं० १३४९)

|

वीरसूरि (वि० सं० १३७४)

|

जिनदेवसूरि (वि० सं० १३७१-१४२९)

|

भावदेवसूरि (वि० सं० १४३५-१४४९;

|

पार्श्वनाथचरित एवं

|

कालकाचार्यकथा के

|

रचनाकार)

|

विजयसिंहसूरि (वि० सं० १४६९-१४८५)

|

वीरसूरि (वि० सं० १४८९-१५१३)

|

जिनदेवसूरि (वि० सं० १५१५)

|

भावदेवसूरि (वि० सं० १५१७-१५३९)

|

विजयसिंहसूरि (वि० सं० १५५५-१५७८)

|

|

|

|

(?) (वि० सं० १६६४) इस लेख में
आचार्य का नाम नहीं मिलता है।

कनकसुन्दर (वि० सं० १६९७ में
हरिश्चन्द्रराजारास के रचनाकार)

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि वि० सं० की ११ वीं शताब्दी के प्रथम चरण में यह गच्छ अस्तित्व में आया और वि० सं० की १७ वीं शती के अन्त तक इसका स्वतंत्र अस्तित्व बना रहा, तथापि इस समय तक इसका पूर्व गौरव समाप्त हो चुका था। वर्तमान में इस गच्छ का अस्तित्व इतिहास के पृष्ठों तक सीमित है।

संदर्भ सूची :

१. 'सकलतीर्थस्तोत्र' C.D. Dalal, *Descriptive Catalogue of Manuscripts at Jaina Bhandar's at Pattan*, G.O.S. No. 76, P. 156.
२. मेदार्येण महर्षिभिर्विहरता तेपे तपो दुश्चरं ।
श्रीखंडिलकपत्तनान्ति करणाभ्यर्द्धिप्रभावात्तदा ।
जुगल किशोर मुख्तार, संपा० जैनग्रन्थप्रशस्तिसंग्रह, वीरसेवा मंदिर ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक १२, दिल्ली १९५४ ई०, पृष्ठ ३-४ ।
३. मुनि जिनविजय, संपा० खरतरगच्छबृहद्गुर्वावली, सिंधी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक ४२, मुम्बई १९५६ ई० पृष्ठ ९६ ।
४. प्रोग्रेस रिपोर्ट, आर्कियोलोजिकल सर्वे ऑफ इन्डिया, वेस्टर्न सर्किल, पृष्ठ ५६ ।
- ५-६. मुनि जिनविजय, संपा० प्रभावकचरित, सिंधी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक १३, मुम्बई १९४० ई०
७. H.D. Velankar, Ed. *Jinaratnakosh*, Poona 1944 A.D. pp. 86.

८. श्रीपत्तनाख्यनगरे रविविश्व वर्षे ।

पार्श्वप्रभोश्चरितरत्नमिदं ततान ॥ १४ ॥

इस ग्रन्थ की प्रस्तावना में पं० श्री हरगोविन्ददासजी ने प्रशस्ति पद्य में उल्लिखित रविविश्व वर्ष का अर्थ १३१२ किया है जो भ्रामक प्रतीत होता है, क्योंकि रवि - १२ और विश्व १४ गणना ही उचित है। इस आधार पर भावदेवसूरि विक्रम सम्वत् की १५वीं शती के विद्वान् सिद्ध होते हैं।

यह ग्रन्थ यशोविजय जैन ग्रन्थमाला, काशी से ई० सन् १९१२ में प्रकाशित हुआ है।

९. Muni Punyavijaya, Ed. *Catalogue of Palm-Leaf Mss in the Shanti Natha Jain Bhandar, Cambay* Part II G.O.S. No. 149, pp. 432-33 No. 278.

१०. मोहनलाल दलीचंद देसाई, जैनगुर्जरकविओ, भाग ३, खंड १, पृष्ठ ५३०-३१।

११. वही, भाग १, पृष्ठ १०५; शीतिकंठ मिश्र, हिन्दी जैन साहित्य का इतिहास, मरु - गुर्जर, भाग १, पृष्ठ ५३७-३८।

१२. अमृतलाल मगनलाल शाह, संपा० श्रीप्रशस्तिसंग्रह, भाग २, प्रशस्ति क्रमांक २४५, पृष्ठ ६४।

१३. मोहनलाल दलीचंद देसाई, जैनगुर्जरकविओ, भाग १, पृष्ठ ५८३, Vidhatri Vora, Ed. *Catalogue of Gujarati Mss. Muni Punyavijaya Ji's Collection*, L.D. Siris No. 71. Ahmedabad 1978, P. 610.

१४. मुनि कान्तिसागर, संपा० जैनधातुप्रतिमालेख, लेखांक ५।

१५. मुनि जयन्तविजय, संपा० अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेखसंदोह, लेखांक ३१९।

सोहनलाल पटनी, संपा० अर्बुद परिमंडल की जैन धातु प्रतिमाये एवं मन्दिरावलि, सिरौही २००२ ई०, लेखांक १, पृष्ठ १०७।

१६. अगरचन्द नाहटा, "खेड़ का जैन शिलालेख", जैनसत्यप्रकाश, जिल्द XVIII पृष्ठ १८७-९०।

१७. मुनि कान्तिसागर, संपा० जैनधातुप्रतिमालेख, लेखांक ५।

१८. मुनि जयन्तविजय, संपा० अर्बुदाचलप्रदक्षिणा, लेखांक १८ अ-सोहनलाल पटनी, पूर्वोक्त, पृष्ठ. १०७, ३१९।

१९. अगरचंद नाहटा - 'खेड़ का जैन शिलालेख' जैनसत्यप्रकाश, जिल्द XVIII, पृ० १८७-९०।

२०. अगरचन्द नाहटा, बीकानेरजैनलेखसंग्रह, लेखांक १०९।

२१. वही, लेखांक १२० ।
२२. बुद्धिसागरसूरि-संपा० जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह, भाग १, लेखांक ३२२ ।
२३. दौलतसिंह लोढ़ा, संपा० श्रीजैनप्रतिमालेखसंग्रह, लेखांक २० ।
२४. पूरनचन्द नाहर, संपा० जैनलेखसंग्रह, भाग ३, लेखांक २२४८ ।
२५. मुनि विशाल विजय, संपा० राधनपुरप्रतिमालेखसंग्रह, लेखांक ७३ ।
२६. बीकानेरजैनलेखसंग्रह, लेखांक ५२२ ।
२७. वही, लेखांक ५३१ ।
२८. वही, लेखांक ५३८ ।
२९. प्रतिष्ठालेखसंग्रह, भाग १, संपा० महो० विनयसागर, लेखांक १६९ ।
३०. बीकानेरजैनलेखसंग्रह, लेखांक ५५६ ।
३१. वही, लेखांक ६५० ।
३२. वही, लेखांक ६५६ ।
३३. वही, लेखांक ६८४ ।
३४. श्रीप्रतिमालेखसंग्रह, लेखांक ११३ ।
३५. बीकानेरजैनलेखसंग्रह, लेखांक ७०३ ।
३६. श्रीप्रतिमालेखसंग्रह, लेखांक १७६ ।
३७. वही, लेखांक ८८ ।
३८. प्रतिष्ठालेखसंग्रह, भाग १, लेखांक ४६३ ।
३९. श्रीप्रतिमालेखसंग्रह, लेखांक १५७ ।
४०. बीकानेरजैनलेखसंग्रह, लेखांक ९५४ ।
४१. राधनपुरप्रतिमालेखसंग्रह, लेखांक १७८ ।
४२. श्रीप्रतिमालेखसंग्रह, लेखांक ।
४३. बीकानेरजैनलेखसंग्रह, लेखांक ९५४ ।
४४. प्राचीनलेखसंग्रह, लेखांक २७३ ।
४५. जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह, भाग १, लेखांक ५५३ ।
४६. प्राचीनलेखसंग्रह, लेखांक २७२ ।
४७. प्रतिष्ठालेखसंग्रह, भाग १, लेखांक ५२७ ।

४८. वही, लेखांक ५४५ ।
४९. जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह, भाग १, लेखांक ३०२ ।
५०. श्रीजैनप्रतिमालेखसंग्रह, लेखांक १२८ ।
५१. जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह, भाग १, लेखांक ६११ ।
५२. प्रतिष्ठालेखसंग्रह, भाग १, लेखांक ५८३ ।
५३. श्रीजैनप्रतिमालेखसंग्रह, लेखांक ३३५ ।
५४. जैनलेखसंग्रह, भाग २, लेखांक २०९५ ।
५५. वही, भाग ३, लेखांक २४८३ ।
५६. श्रीप्रतिमालेखसंग्रह, पूर्वोक्त, लेखांक १२४ ।
५७. जैनलेखसंग्रह, भाग १, लेखांक ११८ ।
५८. प्रतिष्ठालेखसंग्रह, भाग १, लेखांक ७५१ ।
५९. बीकानेरजैनलेखसंग्रह, लेखांक १६०२ ।
६०. जैनलेखसंग्रह, भाग ३, लेखांक २२१७ ।
६१. जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह, भाग १, लेखांक ११५४ ।
६२. प्रतिष्ठालेखसंग्रह, भाग १, लेखांक ८१५ एवं जैनलेखसंग्रह, भाग २, लेखांक ११६५ ।
६३. जैनलेखसंग्रह, भाग २, लेखांक १३४२ एवं बीकानेरजैनलेखसंग्रह, लेखांक १८९९ ।
६४. प्राचीनलेखसंग्रह, लेखांक ४७८ ।
६५. प्रतिष्ठालेखसंग्रह, भाग १, लेखांक ७३६ ।
६६. जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह, भाग १, लेखांक १४३५ ।
६७. जैनलेखसंग्रह, भाग ३, लेखांक २२०३ ।
६८. जैनधातुप्रतिमालेख, लेखांक २८३ ।
६९. जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह, भाग १, लेखांक १९८ ।
७०. वही, लेखांक २२२ ।
७१. जैनधातुप्रतिमालेख, पूर्वोक्त, लेखांक २९१ ।
७२. बीकानेरजैनलेखसंग्रह, लेखांक १४६४ ।

चन्द्रकुल (चन्द्रगच्छ) का संक्षिप्त इतिहास

निर्ग्रन्थ परम्परा के श्वेताम्बर सम्प्रदाय में चन्द्रकुल का स्थान प्रथम पंक्ति में है । परम्परानुसार आर्य वज्रसेन के चार शिष्यों-नागेन्द्र, चन्द्र, निर्वृत्ति और विद्याधर से उक्त नाम वाले चार कुलों का जन्म हुआ,^१ किन्तु पर्युषणाकल्प अपरनाम कल्पसूत्र की स्थविरावली में चन्द्र और निर्वृत्तिकुल उल्लेख न होने से यह माना जा सकता है कि ये दोनों कुल बाद में अस्तित्व में आये ।

चन्द्रकुल का सर्वप्रथम उल्लेख अकोटा से प्राप्त कुछ धातु प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेखों में प्राप्त होता है ।^२ डा० उमाकान्त पी० शाह ने लिपि एवं प्रतिमाशास्त्रीय अध्ययन के आधार पर उनमें से एक प्रतिमा का काल ईस्वीसन् की छठी शताब्दी निर्धारित किया है ।^३

चन्द्रकुल से समय - समय पर विभिन्न शाखाओं के रूप में अनेक गच्छों का प्रादुर्भाव हुआ, जैसे वि० सम्वत् ९९४ में चन्द्रकुल के एक आचार्य उद्योतनसूरि ने सर्वदेवसूरि सहित ८ शिष्यों को अर्बुद-मण्डल में स्थित धर्माण (ब्रह्माण-वर्तमान वरमाण) सन्निवेश में वट वृक्ष के नीचे आचार्य पद प्रदान किया । वट वृक्ष के कारण उनका शिष्य परिवार वटगच्छीय कहलाया ।^४ इसी प्रकार चन्द्रकुल के ही एक आचार्य प्रद्युम्नसूरि के प्रशिष्य और अभयदेवसूरि (वादमहार्णव के रचनाकार) के शिष्य धनेश्वरसूरि; जो कि मुनि दीक्षा के पूर्व राजा थे, की शिष्यसन्तति राजगच्छीय कहलायी ।^५ इसी प्रकार पूर्णतल्लगच्छ, सरवालगच्छ, पूर्णिमागच्छ,

आगमिकगच्छ, पिप्पलगच्छ, खरतरगच्छ, तपागच्छ और अंचलगच्छ आदि का भी समय-समय पर विभिन्न कारणों से चन्द्रकुल की एक शाखा के रूप में जन्म हुआ। इनमें से खरतरगच्छ, तपागच्छ और अंचलगच्छ आज भी विद्यमान हैं।

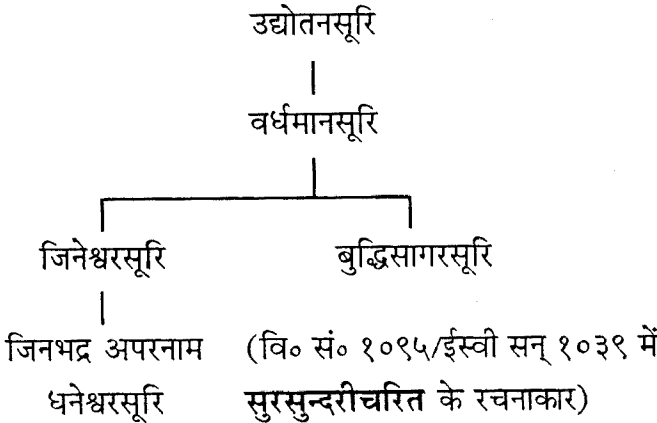
ईस्वीसन् की १२ वीं शताब्दी से नागेन्द्र, चन्द्र, निर्वृत्ति और विद्याधर ये चारों कुल गच्छों के रूप में उल्लिखित मिलते हैं। चन्द्रकुल से सम्बद्ध पर्याप्त संख्या में ग्रन्थप्रशस्तियाँ, पुस्तकप्रशस्तियाँ तथा प्रतिमालेख आदि मिले हैं और ये सब मिलकर ईस्वी सन् की छठी शताब्दी से लेकर ई० सन् की १६ वीं शताब्दी तक के हैं। यहां उक्त साक्ष्यों के आधार पर इस गच्छ के इतिहास पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। अध्ययन की सुविधा के लिये सर्वप्रथम साहित्यिक साक्ष्यों और तत्पश्चात् अभिलेखीय साक्ष्यों का विवरण प्रस्तुत है :

साहित्यिक साक्ष्य

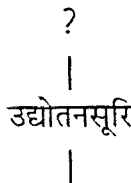
चन्द्रकुल से सम्बद्ध पर्याप्त संख्या में प्रकाश में आ चुके साहित्यिक साक्ष्यों के दो वर्ग किये जा सकते हैं। प्रथम वर्ग के अन्तर्गत इस कुल एवं गच्छ के मुनिजनों द्वारा प्रणीत कृतियों की प्रशस्तियों को रखा गया है। द्वितीय वर्ग में उक्त गच्छ के विभिन्न मुनिजनों के उपदेश से श्रावकों द्वारा लिखवाई गयी या स्वयं मुनियों द्वारा ही लिखी गयी प्राचीन महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों की प्रतिलिपि की प्रशस्तियों को रखा गया है। दोनों ही प्रकार की प्रशस्तियों में प्रायः समान रूप से रचनाकार या प्रतिलिपिकार मुनि की गुरु-परंपरा, रचनाकाल या लेखनकाल आदि का उल्लेख मिलता है। यहां केवल उन्हीं कृतियों को रखा गया है जिनकी प्रशस्तियां इस गच्छ के इतिहास के अध्ययन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। उक्त प्रशस्तियों को क्रमशः ग्रन्थप्रशस्ति और पुस्तकप्रशस्ति के नाम से जाना जाता है। इनका अलग अलग-विवरण इस प्रकार है :

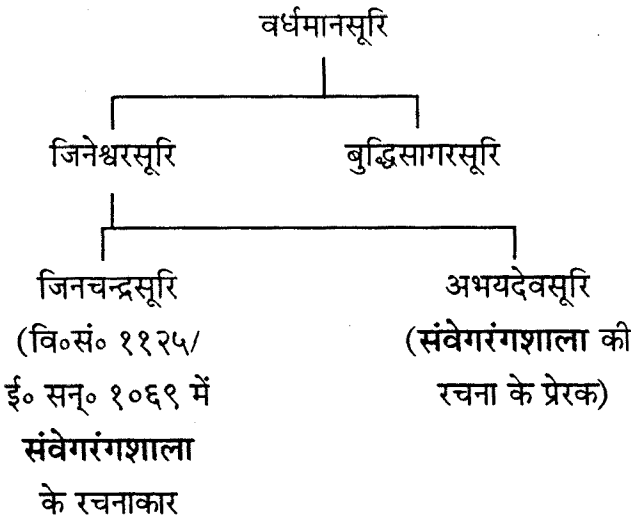
(क) ग्रन्थप्रशस्तियां

१. सुरसुन्दरीचरियं (सुरसुन्दरीचरित) प्राकृत भाषा में १६ अध्यायों में विभक्त ४००० गाथाओं की यह कृति चन्द्रकुल के आचार्य धनेश्वरसूरि की कृति है। इसमें एक विद्याधर राजकुमार की प्रणयगाथा वर्णित है। कृति के अन्त में प्रशस्ति^६ के अन्तर्गत ग्रन्थकार ने अपनी गुरु-परम्परा और रचनाकाल का उल्लेख किया है, जो इस प्रकार है :

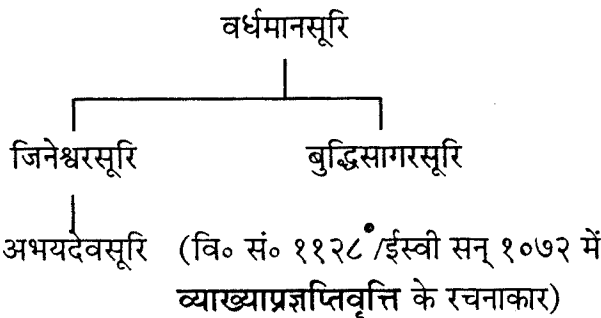


२. संवेगरंगशाला - यह कृति चन्द्रगच्छीय जिनचन्द्रसूरि द्वारा वि० सं० ११२५/ ईस्वी सन् १०६९ में रची गयी है। इसमें १५० गाथायें हैं। कृति के अन्त में प्रशस्ति के अन्तर्गत रचनाकार ने अपनी गुरु-परम्परा, रचनाकाल आदि का उल्लेख किया है।^७ इस प्रशस्ति से यह भी ज्ञात होता है कि ग्रन्थकार ने अपने गुरुभ्राता नवाङ्गवृत्तिकार अभयदेवसूरि के अनुरोध पर इस कृति की रचना की थी। इसमें उल्लिखित गुरु-परम्परा इस प्रकार है :



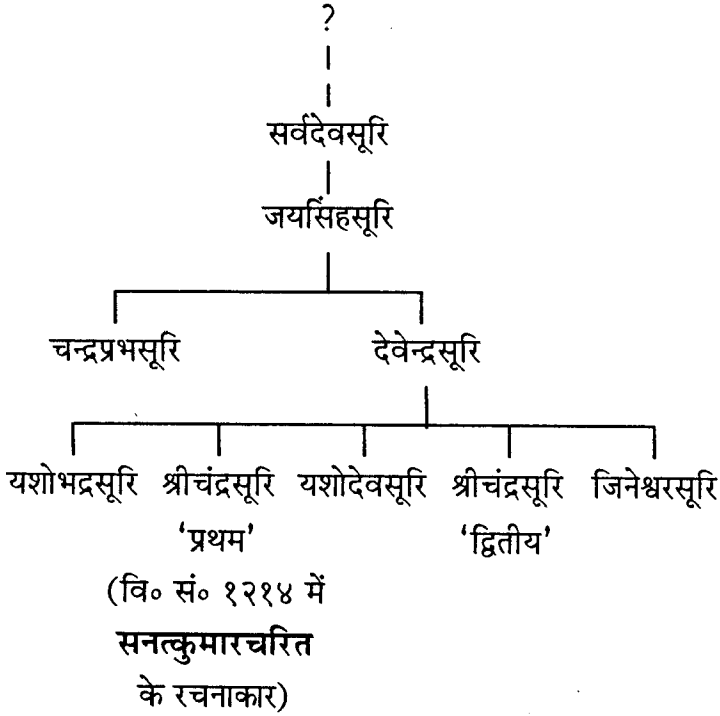


३. **व्याख्याप्रज्ञप्तिवृत्ति** - चन्द्रकुल के आचार्य वर्धमानसूरि के प्रशिष्य और जिनेश्वरसूरि एवं बुद्धिसागरसूरि के शिष्य अभयदेवसूरि ने वि० सं० ११२८/ईस्वी सन् १०७२ में इस कृति की रचना की। अभयदेवसूरि ने **व्याख्याप्रज्ञप्ति** सहित ९ अंग ग्रन्थों पर वृत्तियां रची हैं, इसी कारण ये नवाङ्गवृत्तिकार के रूप में विख्यात रहे हैं। **व्याख्याप्रज्ञप्तिवृत्ति** की प्रशस्ति में वृत्तिकार ने अपनी गुरु-परम्परा, रचनाकाल, रचनास्थान आदि का उल्लेख किया है, जो इस प्रकार है :



४. **सणकुमारचरिय (सनत्कुमारचरित)** श्वेताम्बर जैन परम्परा में सनत्कुमार की चौथे चक्रवर्ती के रूप में मान्यता है।^१ इनके जीवनचरित

पर विभिन्न जैन ग्रन्थकारों की कृतियां उपलब्ध होती हैं। इनमें सबसे प्राचीन है चन्द्रगच्छीय श्रीचन्द्रसूरि द्वारा प्राकृत भाषा में रचित सणंकुमारचरिय है। इसकी प्रशस्ति में ग्रन्थकार ने अपनी गुरु - परम्परा, रचनाकाल आदि का विवरण दिया है^{१०}, जो इस प्रकार है :



इसी प्रकार पूर्णिमापक्षीय विमलगणि द्वारा रचित दर्शनशुद्धिवृत्ति^{११} (रचनाकाल वि० सं० ११८१/ईस्वी सन् ११२५) की प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि पूर्णिमागच्छ या पूर्णिमापक्ष के प्रवर्तक तथा विमलगणि के प्रगुरु चन्द्रप्रभसूरि चन्द्रकुल के सर्वदेवसूरि के प्रशिष्य तथा जयसिंहसूरि के शिष्य थे। इस प्रशस्ति में दी गयी गुरु-परम्परा इस प्रकार है :

सर्वदेवसूरि

|

जयसिंहसूरि

|

चन्द्रप्रभसूरि

(पूर्णमापक्ष के प्रवर्तक तथा

|

दर्शनशुद्धि के रचनाकार

धर्मघोषसूरि

|

विमलगणि

(वि० सं० ११८१/

ई० सन्० ११२५ में

दर्शनशुद्धिवृत्ति के

रचनाकार)

उक्त दोनों प्रशस्तियों से प्राप्त गुर्वावली से स्पष्ट होता है कि उनमें प्रथम दो नाम सर्वदेवसूरि और जयसिंहसूरि समान हैं तथा जयसिंहसूरि के एक शिष्य चन्द्रप्रभसूरि से पूर्णमागच्छ अस्तित्व में आया एवं द्वितीय शिष्य देवेन्द्रसूरि की शिष्य मंडली में सनत्कुमारचरित के रचनाकार श्रीचंद्रसूरि (प्रथम) हुए।

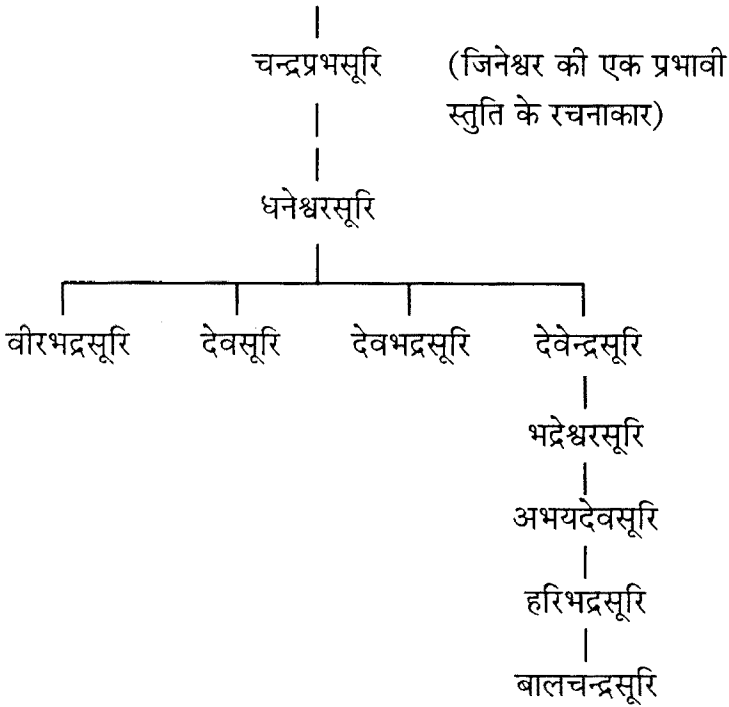
५. उपदेशकन्दलीटीका - यह चन्द्रगच्छीय हरिभद्रसूरि के शिष्य बालचंद्रसूरि द्वारा रची गयी है। इनके द्वारा रची गयी कुछ अन्य कृतियां भी मिलती हैं, जैसे वसन्तविलासमहाकाव्य, विवेकमंजरीवृत्ति, करुणावज्रायुधनाटक आदि। उपदेशकन्दलीटीका की प्रशस्ति^{१२} में टीकाकार ने अपनी गुरु-परम्परा का विस्तृत विवरण दिया है, जो इस प्रकार है :

|
?

|

प्रद्युम्नसूरि

(तलवाटक के राजा के
उपदेशक)



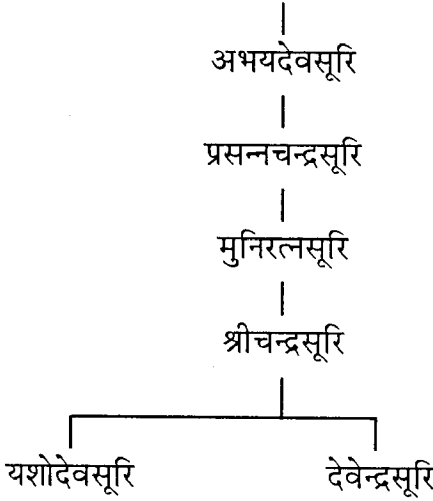
(वि० सं० १२९६/ई० सन् १२४० के पूर्व
उपदेशकन्दलीटीका के रचनाकार)

६. उपमितिभवप्रपंचकथासारोद्धार - चन्द्रगच्छीय देवेन्द्रसूरि द्वारा संस्कृत भाषा में रचित यह कृति सिद्धार्थ के उपमितिभवप्रपंचाकथा (रचनाकाल वि० सं० ९६२/ईस्वी सन् ९०६) का संक्षिप्त रूप है। इसकी प्रशस्ति^{१३} के अन्तर्गत ग्रन्थकार ने अपनी लम्बी गुर्वावली दी है और रचनाकाल का उल्लेख किया है, जो इस प्रकार है :

भद्रेश्वरसूरि

हरिभद्रसूरि

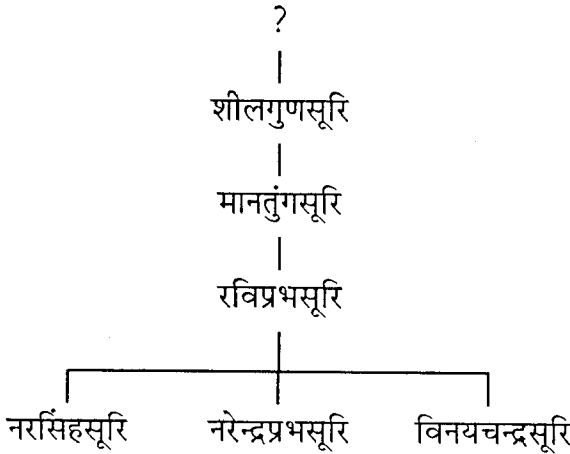
शांतिसूरि



(वि० सं० १२९८/ई० सन् १२४२ में)

उपमितिभवप्रपंचकथासारोद्धार के रचनाकार)

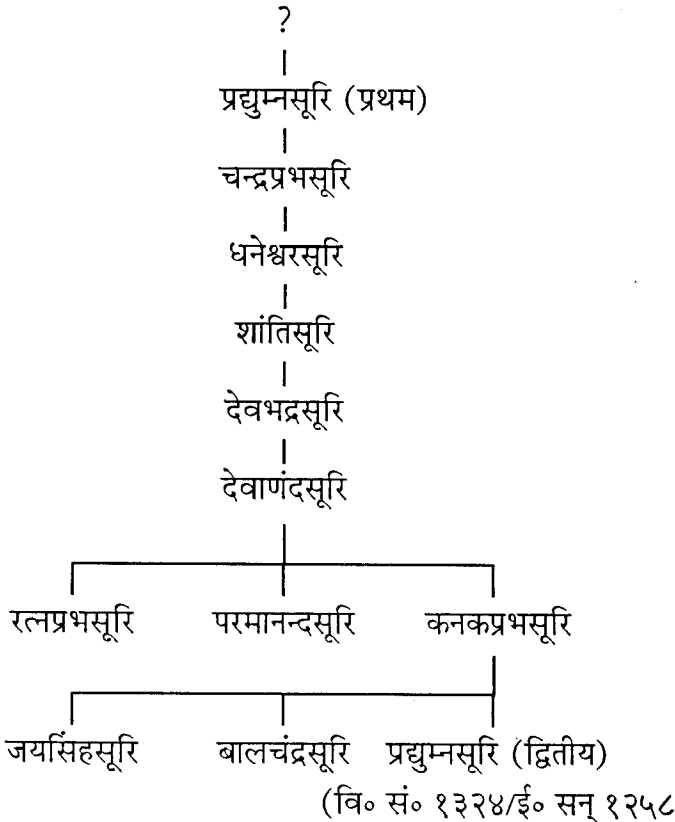
६. पार्श्वनाथचरित - यह चन्द्रगच्छीय रविप्रभसूरि के शिष्य विनयचन्द्रसूरि की कृति है। यह ६ सर्गों में विभाजित है, इसमें ४९८५ श्लोक हैं। रचना के अन्त में प्रशस्ति के अन्तर्गत रचनाकार ने अपनी गुरु-परम्परा^{१४} दी है, जो इस प्रकार है :



(पार्श्वनाथचरित के रचनाकार)

यद्यपि रचनाकार ने अपनी इस कृति में रचनाकाल का उल्लेख नहीं किया है, फिर भी विभिन्न साक्ष्यों के आधार पर इसे वि० सं० की १४ वीं शती के प्रथम चरण की कृति माना जा सकता है।

८. समरादित्यसंक्षेप - यह आचार्य हरिभद्रसूरि द्वारा रचित समराइच्चकहा (प्राकृत भाषामय) का संस्कृत भाषा में रचित छंदोबद्धसार है जिसे चन्द्रगच्छीय कनकप्रभसूरि के विद्वान् शिष्य प्रद्युम्नसूरि ने वि० सं० १३२४/ईस्वी सन् १२५८ में रचा है। प्रद्युम्नसूरि ने अनेक ग्रन्थों का संशोधन किया। कृति के अन्त में इन्होंने अपनी गुरु-परम्परा और रचनाकाल आदि का विवरण दिया है,^{१५} जो इस प्रकार है :



में समरादित्यसंक्षेप के रचनाकार)

वि० सं० १००५/ई० सन् ९४९ में रचित मुनिपतिचरित के कर्ता जम्बूनाग और वि० सं० १०२५/ ई० सन् ९६९ में रची गयी जिनशतक के रचनाकार जम्बूकवि भी स्वयं को चन्द्रगच्छीय ही बतलाते^{१६} हैं। किन्तु इन्होंने अपनी कृतियों की प्रशस्तियों में अपनी गुरु-परम्परा का उल्लेख नहीं किया है। क्या ये दोनों (जम्बूनाग और जम्बूकवि) एक ही व्यक्ति हैं या अलग-अलग ! इस सम्बन्ध में पर्याप्त साक्ष्यों के अभाव में कुछ भी कह पाना कठिन है, किन्तु चन्द्रकुल से सम्बद्ध प्राचीन साहित्यिक साक्ष्य होने से ये महत्त्वपूर्ण माने जा सकते हैं।

इसी प्रकार चन्द्रगच्छीय किन्ही उदयप्रभसूरि द्वारा रचित शीलवतीकथा नामक कृति भी मिलती है,^{१७} परन्तु इसके रचनाकाल, और ग्रन्थकार की गुरु-परम्परा के बारे में कोई जानकारी प्राप्त नहीं होती। इस कृति की वि० सं० १४००/ईस्वी सन् १३४४ में लिपिबद्ध की गयी एक प्रति मिली है।

(ख) पुस्तक प्रशस्तियां अथवा प्रतिलिपि प्रशस्तियां

१. योगशास्त्रवृत्ति की पुस्तकप्रशस्ति - कलिकालसर्वज्ञ आचार्य हेमचंद्र द्वारा रची गयी योगशास्त्रवृत्ति की वि० सं० १२९२ / ईस्वी सन् १२३६ में लिपिबद्ध की गयी एक प्रति शांतिनाथ जैन भंडार, खंभात में संरक्षित है जिसके प्रतिलेखन प्रशस्ति^{१८} में चन्द्रगच्छीय मुनिजनों की गुर्वावली दी गयी है, जो इस प्रकार है :

|

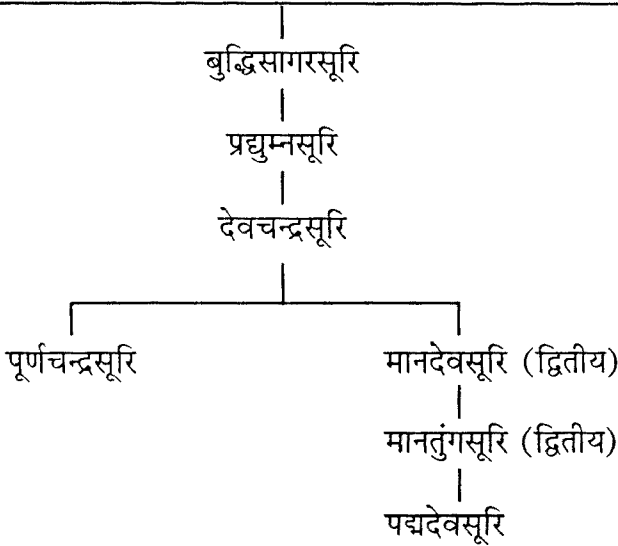
?

|

मानदेवसूरि (प्रथम)

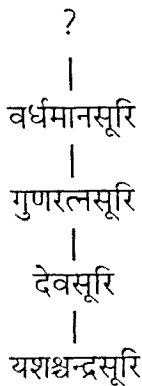
|

मानतुंगसूरि (प्रथम)



(वि० सं० १२९२ / ईस्वी सन् १२३६ में लिखी
गयी योगशास्त्रवृत्ति की दाताप्रशस्ति में उल्लिखित)

२. आवश्यकसूत्र की पुस्तक प्रशस्ति - चन्द्रगच्छीय यशश्चन्द्रसूरि की प्रेरणा से वि० सं० १२९२/ ई० सन् १२३६ में एक श्रावक द्वारा लिपिबद्ध करायी गयी आवश्यकसूत्र की प्रतिलिपि की प्रशस्ति^{१९} में चंद्रगच्छीय उक्त आचार्य की गुरु-परम्परा दी गयी है, जो इस प्रकार है :



(इनकी प्रेरणा से वि० सं०
१२९२/ई० सन् १२३६ में

आवश्यक सूत्र की

प्रतिलिपि की गयी)

३. उत्तराध्ययनसूत्र की पुस्तक प्रशस्ति - चन्द्रगच्छीय रत्नाकरसूरि ने वि० सं० १३०८ / ईस्वी सन् १२५२ में उत्तराध्ययनसूत्र की प्रतिलिपि की। इसकी प्रशस्ति^{२०} में उन्होंने अपने गच्छ की लम्बी गुर्वावली दी है, जो निम्नानुसार है :

?
|
नन्नसूरि
|
वादिसूरि
|
सर्वदेवसूरि
|
प्रद्युम्नसूरि
|
भद्रेश्वरसूरि
|
देवभद्रसूरि
|
सिद्धसेनसूरि
|
यशोदेवसूरि
|
मानदेवसूरि
|
रत्नप्रभसूरि
|
देवप्रभसूरि
|

रत्नाकरसूरि (वि० सं० १३०८ / ई० सन्
१२५२ में उत्तराध्ययनसूत्र
के प्रतिलिपिकर्ता)

४. पिण्डविशुद्धिसावचूरि की पुस्तक प्रशस्ति - वि० सं० १४१०/ ईस्वी सन् १३५४ में देवकुलपाटक में किन्हीं आनन्दरत्नगणि के परोपकारार्थ उक्त ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गयी। यह बात उक्त प्रति की प्रशस्ति^{३१} से ज्ञात होती है। इस प्रशस्ति में चन्द्रगच्छ के नायक सोमसुन्दरसूरि, उनके शिष्य साधुराजगणि आदि का उल्लेख है।

?
|
सोमसुन्दरसूरि
|
साधुराजगणि
|
साधुराजगणिशिष्य (?)

५. युगप्रधानयंत्र की प्रतिलिपिप्रशस्ति - देवेन्द्रसूरि द्वारा प्रणीत युगप्रधानयंत्र की एक प्रति वि० सं० १४१३/ईस्वी सन् १३५७ में चन्द्रगच्छीय कीर्तिभुवन द्वारा लिपिबद्ध की गयी। इसकी प्रशस्ति^{३२} में प्रतिलिपिकार ने अपनी गुरु-परम्परा का उल्लेख किया है, जो इस प्रकार है :

?
|
चन्द्रगच्छीय सोमतिलकसूरि
|
उपाध्याय हंसभुवनगणि
|
कीर्तिभुवन (वि० सं० १४१३/ईस्वी सन्
१३५७ में युगप्रधानयंत्र
के प्रतिलिपिकार)

६. प्रशमरतिप्रकरणवृत्ति की प्रतिलिपि प्रशस्ति - संघवीपाड़ा भंडार पाटन में संरक्षित और वि० सं० १४९८/ईस्वी सन् १४४१ में लिखी गयी उक्त कृति की प्रतिलिपि प्रशस्ति^{२३} में चन्द्रगच्छीय मुनिजनों की एक छोटी गुर्वावली मिलती है, जो निम्नानुसार है :

?

|

चन्द्रगच्छीय पूर्णचन्द्रसूरि

|

हेमहंससूरि

|

हेमसारगणि

|

हेममेरुगणि (वि० सं० १४९८/ई० सन् १४४१
में प्रशमरतिप्रकरणवृत्ति के
प्रतिलिपिकार)

उक्त प्रशस्ति से यह भी पता चलता है कि प्रतिलिपिकार ने उक्त ग्रन्थ के त्रुटित अंश को भी पूर्ण किया था ।

७. जीवाभिगमसूत्र की प्रतिलिपि प्रशस्ति - चन्द्रगच्छीय वाचनाचार्य संयमहंस ने वि० सं० १६०५/ई० सन् १५४९ में उक्त ग्रन्थ की प्रतिलिपि की, जिसकी प्रशस्ति^{२४} में उन्होंने अपनी गुरु-परम्परा निम्नानुसार दी है :

?

|

वादी चक्रचूड़ामणि जिनप्रभसूरि

|

जिनतिलकसूरि

राजहंस उपाध्याय

वाचनाचार्य संयमहंस (वि० सं० १६०५/

ई० सन् १५४९ में

जीवाभिगमसूत्र के

प्रतिलिपिकार)

उक्त सभी साहित्यिक साक्ष्यों में उल्लिखित चन्द्रकुल (चन्द्रगच्छ) की छोटी - बड़ी गुर्वावलियों से अनेक मुनिजनों के नामों का पता चलता है, परन्तु इनमें से दो-तीन गुर्वावलियों को छोड़कर अन्य सभी गुर्वावलियों के परस्पर समायोजित न हो पाने के कारण इस गच्छ की गुरु - परम्परा की एक अविच्छिन्न तालिका को संगठित कर पाना असम्भव सा लगता है।

(ग) अभिलेखीय साक्ष्य

चन्द्रकुल (चन्द्रगच्छ) से सम्बद्ध अभिलेखीय साक्ष्यों का विवरण निम्नानुसार है। जैसा कि लेख के प्रारम्भ में कहा जा चुका है। अकोटा से प्राप्त कुछ धातुप्रतिमाओं पर उत्कीर्ण अभिलेखों में भी इस कुल का उल्लेख मिलता है। प्राध्यापक उमाकांत पी० शाह ने इनका काल प्रतिमाशास्त्रीय अध्ययन और लिपि के आधार पर ईस्वी सन् की छठी शताब्दी से ईस्वी सन् की १० वीं शताब्दी तक निर्धारित किया है। इनका विवरण इस प्रकार है :

अकोटा से प्राप्त चन्द्रकुल का उल्लेख करनेवाला प्रथम लेख जीवन्तस्वामी की प्रतिमा पर उत्कीर्ण है। शाह^{२५} महोदय ने इसकी वाचना निम्नानुसार दी है :

१. ॐ देवधर्मोऽयं जीवन्तसामी

२. प्रतिमा चद्र (चन्द्र) कुलिकस्य

३. नागीस्वरी श्राविकस्या

प्रतिमाशास्त्रीय अध्ययन के आधार पर उन्होंने इस लेख को ईस्वी सन् की छठी शताब्दी के मध्य का माना है।

चन्द्रकुल का उल्लेख करनेवाला द्वितीय अभिलेखीय साक्ष्य भी वहीं से प्राप्त एक जिनप्रतिमा पर उत्कीर्ण है। शाह ने इसे ई० सन् ६०० से ६४० के मध्य का बतलाया है। लेख का मूलपाठ निम्नानुसार^{२६} है :

१. ॐ देवधमय (धर्मोयं) । चद (न्द्र) कुलिकस्य ॥

९. सिंहजि श्रा (व) स्य ।

अकोटा से ही प्राप्त इसी काल की पार्श्वनाथ की एक प्रतिमा पर भी इस कुल का उल्लेख मिलता है। शाह^{२७} ने इस लेख का पाठ दिया है, जो इस प्रकार है :

१. देवधर्मोयं चन्द्रकुले दुर्गि

२. णि श्राविकया रथवसति

३. काया

अकोटा से प्राप्त पार्श्वनाथ की एक अष्टतीर्थी धातु प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख में भी इस कुल का उल्लेख मिलता है। उन्होंने इस लेख को प्रतिमाशास्त्रीय अध्ययन के आधार पर ई० सन् की १० वीं शती के अंतिम चरण और ११ वीं शती के प्रथम चरण के बीच का माना है।^{२८} लेख का मूलपाठ इस प्रकार है :

ॐ चन्द्रकुले मोढगच्छेनिन्नट श्रावकस्य

इस लेख के आधार पर यह कहा जा सकता है कि मोढगच्छ भी चन्द्रकुल की ही एक शाखा के रूप में अस्तित्व में आया।

यद्यपि उक्त चारों प्रतिमालेखों में चन्द्रकुल के किसी आचार्य या मुनि का उल्लेख नहीं मिलता, फिर भी उनसे इस कुल की प्राचीनता सिद्ध होती है।

चन्द्रगच्छीय मुनिजनों द्वारा प्रतिष्ठापित कुछ जिन प्रतिमायें प्राप्त हुई हैं। इन पर वि० सं० १०३२ वि० सं० १५५२ तक के लेख उत्कीर्ण हैं। इनका विवरण इस प्रकार है :

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१.	१०३२	-	शीलगुणसूरि	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	श्री कुमारसिंह हाल नं० ४६, इण्डियन मिरर स्ट्रीट, कलकत्ता	पूरनचन्द नाहर, संपा. जैनलेख- संग्रह भाग १, लेखांक ३८६
२.	११८२	ज्येष्ठ वदि ६ बुधवार	चक्रेश्वरसूरि	परिकर की गादी का लेख	जैन मन्दिर, देरणा	मुनि जयन्तविजय, संपा० अर्बुदाचल- प्रदक्षिणाजैनलेख- संदोह (आबू-भाग ५) लेखांक ६३६
३.	१२२६	आषाढ़ सुदि ९	षण्डगसूरि	महावीर की प्रतिमा का लेख	गणधर की देवकुलिका,	मुनि कांतिसागर- संपा०

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
		गुरुवार			जिनेन्द्र टूंक, शत्रुञ्जय	शत्रुञ्जयवैभव, लेखांक ६
४.	१२३५	वैशाख सुदि ३ बुधवार	पूर्णभद्रसूरि	पार्श्वनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण खंडित लेख	श्वेताम्बर जैनमंदिर, सम्मत्तशिखर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २ लेखांक १६८८
५.	१२३९	चैत्र सुदी ५ गुरुवार	श्री चन्द्रसूरि के पट्टधर पूर्णभद्रसूरि	दीवाल पर उत्कीर्ण लेख	तोपखाना, जालौर	मुनि जिनविजय, संपा० प्राचीनजैन- लेखसंग्रह, भाग २, लेखांक ३५१ एवं नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ८९९

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
६.	१२५८	ज्येष्ठ सुदि १० रविवार	देवभद्रसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १०३४
७.	१२७२	ज्येष्ठ वदि २ रविवार	शांतिप्रभसूरि के पट्टधर हरिप्रभसूरि	महावीर की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैन मंदिर, शीयालवेट, काठियावाड़	जिनविजय, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ५४७
८.	१२७२	ज्येष्ठ वदि २ रविवार	"	"	जैन मंदिर, शीयालवेट काठियावाड़	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १७७७
९.	१२७२	श्रावण सुदि १ बुधवार	देवसूरि	पाषाण खण्ड पर उत्कीर्ण लेख	वडाली	प्राचीनलेखसंग्रह भाग १, लेखांक ३३

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१०.	१२७९	माघ सुदि २ गुरुवार	श्रीचन्द्रसूरि	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ मुख्य बावन जिनालय, मातर	बुद्धिसागर - संपा० जैनधातुप्रतिमा- लेखसंग्रह, भाग २, लेखांक ५२०
११.	१२८६	फाल्गुन सुदि २ रविवार	मलयचंद्रसूरि के पट्टधर समंतभद्रसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	विमलवसही, आबू	मुनि जयन्तविजय - संपा० अर्बुदप्राचीन- जैनलेखसंदेह, (आबू, भाग - २) लेखांक ११२ एवं मुनि कल्याणविजय- लेखक - प्रबन्धपारिजात, लेखांक ८२

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
						तथा मुनि जिनविजय, पूर्वोक्त, लेखांक १८२
१२.	१२९३	फाल्गुन सुदि ११ शनिवार	समुद्रघोषसूरि के पट्टधर महेन्द्रसूरि	धातुकी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर	अगरचन्द्र नाहटा - संपा० बीकानेर- जैनलेखसंग्रह, लेखांक १३२
१३.	१३००	वैशाख वदि ११ बुधवार	हरिप्रभसूरि के पट्टधर यशोभद्रसूरि	मल्लिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैन मंदिर, शीयालवेट, काठियावाड़	जिनविजय पूर्वोक्त, लेखांक ५४५ एवं नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ११७८

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१४.	१३०१	फाल्गुण सुदि ४ गुरुवार	पद्मप्रभसूरि	तीर्थंकर की धातु प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि जिनालय, चिन्तामणिशेरी, राधनपुर	मुनि विशालविजय- संपा० राधनपुर- प्रतिमालेखसंग्रह लेखांक ३२
१५.	१३०१	फाल्गुण सुदि ५	मुनिचन्द्रसूरि के पट्टधर नेमिचन्द्रसूरि	धातु की चौबीसी जिनप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पद्मप्रभजिनालय, कडाकोटडी, खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ५९४
१६.	१३१०	वैशाख वदि ५ गुरुवार	परमानन्दसूरि के पट्टधर रत्नप्रभसूरि	स्तम्भ निर्माण का उल्लेख	जैन मंदिर, आरासणा	मुनि जयन्तविजय, पूर्वोक्त, आबू, भाग ५, लेखांक २४, मुनि विशालविजय-

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
						आरासणातीर्थ लेखांक १२, एवं मुनि जिनविजय, पूर्वोक्त, लेखांक २८०
१७.	१३१५	फाल्गुन वदि ७ शनिवार	यशोभद्रसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, शीयालवेट, काठियावाड़	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १७७९ एवं मुनि जिनविजय, पूर्वोक्त, लेखांक ५४६

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ साम्भल्लेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१८.	१३३१	ज्येष्ठ सुदि १ बुधवार	पद्मप्रभसूरि के पट्टधर गुणाकरसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, वल्लभविहार, पालिताना	मुनि कांतिसागर- संपा० शत्रुंजयवैभव, लेखांक २२
१९.	१३३१ (२)	वैशाख सुदि ३ रविवार	...सूरि के पट्टधर रत्नप्रभसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, गीपटी, खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ७०२
२०.	१३३२	ज्येष्ठ सुदि १३ बुधवार	पद्मप्रभसूरि के पट्टधर गुणाकरसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १७९
२१.	१३४४	वैशाख सुदि १०	गुणाकरसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, माणिक चौक, खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १९६

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२२.	१३५६	चैत्र वदि ११ रविवार	"	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	सीमंधर स्वामी का जिनालय, खारवाड़ा	वही, भाग २, लेखांक १०७३
२३.	१५५२	माघ वदि १२ बुधवार	वीरदेवसूरि	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	गौडी पार्श्वनाथ जिनालय, गौडी पार्श्वनाथ खड़की, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक ३१४

महामात्य तेजपाल द्वारा वि० सं० १२९८ / ई० सन् १२४२ में तीर्थाधिराज शत्रुञ्जय पर आयोजित श्वेताम्बर श्रमण संघ के सम्मेलन में अन्यान्य गच्छों के आचार्यों एवं मुनिजनों के साथ - साथ नवाङ्गवृत्तिकार अभयदेवसूरि की परम्परा में हुए छत्राउला (?) देवप्रभसूरि के शिष्य पद्मप्रभसूरि के सम्मिलित होने का भी उल्लेख मिलता है।^{१९} यद्यपि वहां यह नहीं बतलाया गया है कि देवप्रभसूरि और उनके शिष्य पद्मप्रभसूरि किस गच्छ के थे; किन्तु उन्हें स्पष्ट रूप से नवाङ्गवृत्तिकार अभयदेवसूरि की परम्परा का बतलाया गया है। नवाङ्गवृत्तिकार अभयदेवसूरि चन्द्रकुल के सुविख्यात आचार्य रहे हैं, अतः उनकी परम्परा में परवर्ती काल में होने वाले देवप्रभसूरि और पद्मप्रभसूरि भी चन्द्रकुल (चन्द्रगच्छ) से ही सम्बद्ध माने जा सकते हैं। यद्यपि इनका किन्ही समकालीन साक्ष्यों में कोई उल्लेख नहीं मिलता, किन्तु चन्द्रगच्छ से सम्बद्ध वि० सं० १३३१-१३३२-१३४४ और १३५७ के प्रतिमालेखों में (जिनका इसी निबन्ध में पीछे उल्लेख आ चुका है) प्रतिमाप्रतिष्ठापक आचार्य गुणाकरसूरि के गुरु पद्मप्रभसूरि का नाम मिलता है जिन्हें उपरोक्त पद्मप्रभसूरि से अभिन्न माना जा सकता है। गुणाकरसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित सबसे प्राचीन प्रतिमा वि० सं० १३३१ की है। इस समय तक वे अपने गुरु के पट्टधर बन चुके थे। अतः वह सुनिश्चित है कि इस समय तक पद्मप्रभसूरि दिवंगत हो चुके थे और वि० सं० १२९८ में जब उन्होंने उक्त सम्मेलन में भाग लिया था, प्रौढावस्था में ही रहे होंगे।

इस प्रकार उक्त अभिलेखीय साक्ष्यों से भी इस गच्छ के विभिन्न मुनिजनों के नाम ज्ञात होते हैं किन्तु साहित्यिक साक्ष्यों की भांति इनके आधार पर भी चंद्रगच्छीय मुनिजनों की गुरु-परम्परा की किसी तालिका को संगठित करना कठिन है।

साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों के अध्ययन के आधार पर जहां विभिन्न गच्छों की गुरु-परम्परा की लम्बी तालिकायें निर्मित हो जाती हैं और उनके इतिहास का स्वरूप स्पष्ट होने लगता है वहीं बड़ी संख्या में

प्राप्त उक्त सभी साक्ष्यों के आधार पर भी चंद्रकुल (चंद्रगच्छ) के मुनिजनों की गुरु-परम्परा की संयुक्त तालिका बना पाना कठिन है। सम्भवतः इसका कारण यही प्रतीत होता है कि इस प्राचीन गच्छ की अनेक शाखायें थीं और समय-समय पर उन शाखाओं से नूतन गच्छों का उद्भव और विकास होता रहा, फिर भी कुछ शाखायें अलग-अलग रहते हुए भी स्वयं को चन्द्रगच्छीय ही कहती रहीं और वि० सं० की १७ वीं शती के प्रथम दशक तक इस गच्छ का स्वतन्त्र अस्तित्व प्रमाणित होता है। इसके पश्चात् इस गच्छ का उल्लेख न मिलने से यह अनुमान व्यक्त किया जा सकता है कि इस गच्छ के अनुयायी मुनिजन किन्हीं अन्य गच्छों में (सम्भवतः खरतरगच्छ, तपागच्छ अथवा अंचलगच्छ, जो चन्द्रकुल से ही उद्भूत हुए हैं) में सम्मिलित हो गये होंगे।

इस गच्छ के प्रमुख आचार्यों और ग्रन्थकारों का विवरण इस प्रकार है :

१. धनेश्वरसूरि - ये चन्द्रकुल के आचार्य वर्धमानसूरि (जिन्होंने चौलुक्यनरेश दुर्लभराज (वि० सं० १०६५-१०८०/ ई० सन् १००९-१०२४) की राजसभा में चैत्यवासियों को शास्त्रार्थ में पराजित किया था) के प्रशिष्य तथा जिनेश्वरसूरि और बुद्धिसागरसूरि के शिष्य थे। आचार्य पद की प्राप्ति के पूर्व इनका नाम जिनभद्रगणि था। जैसा कि इस निबन्ध के प्रारम्भ में ही कहा जा चुका है इन्होंने वि० सं० १०९५ / ई० सन् १०३९ में चन्द्रावती नगरी में सुरसुन्दरीचरित की रचना की।^{३०} यह कृति प्राकृत भाषा में रची गयी है। इसकी प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि साध्वी कल्याणमति के आदेश पर उन्होंने इसकी रचना की। इनके द्वारा रचित किन्हीं अन्य कृतियों का उल्लेख नहीं मिलता।

२. जिनचन्द्रसूरि - ये भी पूर्वोक्त आचार्य वर्धमानसूरि के प्रशिष्य और जिनेश्वरसूरि एवं बुद्धिसागरसूरि के शिष्य थे। नवाङ्गवृत्तिकार अभयदेवसूरि इनके गुरु-भ्राता थे जिनके अनुरोध पर इन्होंने वि० सं०

११२५/ ईस्वी सन् १०६९ में **संवेगरंगशाला** की रचना की।^{३१} ग्रन्थ की प्रशस्ति में इन्होंने अपने गुरु जिनेश्वरसूरि एवं बुद्धिसागरसूरि की प्रशंसा की है।

३. अभयदेवसूरि – जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है ये चन्द्रकुल के आचार्य जिनेश्वरसूरि और बुद्धिसागरसूरि के शिष्य थे। इन्होंने जैन आगम ग्रंथों में सर्वप्रधान ११ अंग सूत्रों में से ९ अंग सूत्रों पर संस्कृत भाषा में टीकायें लिखीं। इन्हें श्वेताम्बर परम्परा के प्रायः सभी गच्छों के न केवल समकालीन विद्वानों ने बल्कि परिवर्ती काल के विद्वानों ने भी बड़ी श्रद्धा के साथ प्रमाणभूत एवं तथ्यवादी आचार्य के रूप में स्वीकृत किया है और इनके वचनों को सदैव आप्त वाक्य की कोटि में रखा है। जिन चैत्यवासी मुनिजनों का जिनेश्वरसूरि ने प्रबल विरोध किया था, उन्हीं में से एक पक्ष के अग्रगण्य एवं राज्यमान्य और बहुश्रुत द्रोणाचार्य (निर्वृत्तिकुलीन) ने अपनी प्रौढ पण्डित परिषद के साथ अभयदेवसूरि द्वारा रची गयी वृत्तियों का बड़े ही सौहार्द के साथ आद्योपरांत संशोधन करते हुए इनके प्रति सौजन्य प्रदर्शित किया है।^{३२} अभयदेवसूरि ने वि० सं० ११२०/ ई० सन् १०६४ में **स्थानाङ्ग, समवायाङ्ग और ज्ञातृधर्मकथा** की वृत्तियां अणहिलपुरपत्तन में समाप्त कीं तथा जैन आगमों में सर्वप्रधान और बृहदपरिमाण **भगवतीसूत्र** की व्याख्या वि० सं० ११२८ / ई० सन् १०७२ में पूर्ण की। इनके द्वारा रची गयी अन्य टीकाओं का रचनाकाल ज्ञात नहीं है। उक्त टीकाओं के अतिरिक्त **प्रज्ञापना तृतीय पद संग्रहणी, पंचाशकवृत्ति, जयतिहुअणस्तोत्र, पंचनिर्ग्रन्थी और सप्ततिकाभाष्य** भी इन्हीं की कृतियां हैं। **प्रभावकचरित** के अनुसार पाटण में चौलुक्य नरेश कर्ण (वि० सं० ११२१-४९ / ईस्वी सन् १०६५-९३) के शासनकाल में इनका स्वर्गवास हुआ।^{३३} विभिन्न पट्टावलियों में इनके स्वर्गवास का समय वि० सं० ११३५ / ईस्वी सन् १०७९ दिया गया है और पाटण के स्थान पर कपटवज में इनका स्वर्गवास होना बतलाया गया है।^{३४}

४. **श्रीचन्द्रसूरि** - श्वेताम्बर श्रमण परम्परा में श्रीचन्द्रसूरि नामक कई मुनिजन हो चुके हैं। विवेच्य श्रीचंद्रसूरि चंद्रकुल के आचार्य सर्वदेवसूरि के संतानीय जयसिंहसूरि के प्रशिष्य और देवेन्द्रसूरि के शिष्य तथा चौलुक्यनरेश जयसिंह सिद्धराज (वि० सं० ११५०-९८ / ई० सन् १०९४-४२) और कुमारपाल (वि० सं० ११९९-१२२८ / ई० सन् ११४३-७२) के समसामयिक थे। जैसा कि लेख के प्रारम्भ में ही कहा जा चुका है इन्होंने वि० सं० १२१४ / ईस्वी सन् ११५८ में प्राकृत भाषा में ८१२७ श्लोक परिमाण **सणकुमारचरिय (सनत्कुमारचरित)** की रचना की। यह कृति अणहिलपुरपाटण में श्रेष्ठी सोमेश्वर के अनुरोध पर रची गयी। चतुर्थ चक्रवर्ती सनत्कुमार के जीवन पर प्राकृत भाषा में रची गयी यह सबसे बड़ी रचना है। कृति के प्रारम्भ में रचनाकार ने हरिभद्रसूरि, सिद्धमहाकवि, अभयदेवसूरि, धनपाल, देवचंद्रसूरि, शान्तिसूरि, मुनिचन्द्रसूरि, देवभद्रसूरि और मलधारी हेमचन्द्रसूरि की कृतियों का स्मरण करते हुए उनकी प्रशंसा की है।^{३५} इनके द्वारा रचित किन्हीं अन्य कृतियों का उल्लेख नहीं मिलता और न ही इनके बारे में अन्य कोई जानकारी ही मिल पाती है।

५. **बालचन्द्रसूरि** - ये चंद्रगच्छीय हरिभद्रसूरि के पट्टधर तथा महामात्य वस्तुपाल - तेजपाल के समकालीन थे। जैसा कि इस निबन्ध के प्रारम्भिक पृष्ठों में कहा गया है इन्होंने महामात्य वस्तुपाल के पुत्र जैत्रसिंह की प्रार्थना पर **वसन्तविलासमहाकाव्य** की रचना की। इस कृति में वस्तुपाल के उपनाम वसन्तपाल के नाम से उसकी जीवनी लिखी गयी है। इस कृति में रचनाकाल नहीं दिया गया है, किन्तु वस्तुपाल की मृत्यु की तिथि वि० सं० १२९६/ ईस्वी सन् १२४० दी गयी है जिससे स्पष्ट है कि उक्त तिथि के पश्चात् ही इसकी रचना हुई थी। इन्होंने कवि आसड़ द्वारा रचित **उपदेशकन्दली** और **विवेकमंजरी** पर वृत्तियां लिखीं। **करुणावज्रायुध** नामक एकांकी नाटक भी इन्हीं की कृति है। **वसन्तविलास** के विपरीत इन्होंने उक्त कृतियों की प्रशस्तियों में अपनी लम्बी गुर्वावली

दी है किन्तु रचनाकाल का उल्लेख नहीं किया है। उपदेशकन्दलीवृत्ति की वि० सं० १२९६/ई० सन् १२४० में लिखी गयी एक प्रति पाटन के ग्रन्थभंडार में संरक्षित है।^{३६} इससे यह सुनिश्चित है कि उक्त तिथि के पूर्व यह वृत्ति लिखी जा चुकी थी। इसका संशोधन बृहद्गच्छीय पद्मसूरि ने किया था। विवेकमंजरीवृत्ति का संशोधन नागेन्द्रगच्छीय आचार्य विजयसेनसूरि और उपरोक्त पद्मसूरि ने किया था। यह बात उक्त कृति की प्रशस्ति से ज्ञात होती है। नागेन्द्रगच्छीय आचार्य विजयसेनसूरि का स्वर्गवास वि० सं० १३०१ / ई० सन् १२४५ में हुआ माना जाता है, अतः यह स्पष्ट है कि उक्त तिथि के पूर्व ही विवेकमंजरीवृत्ति की रचना हो चुकी थी। उक्त दोनों वृत्तियों की प्रशस्तियों से यह भी ज्ञात होता है कि आसड़ के पुत्र जैत्रसिंह की प्रार्थना पर उनकी रचना की गयी।^{३७}

उपदेशकंदली की प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि यह कृति चंद्रगच्छीय देवेन्द्रसूरि के प्रशिष्य और भद्रेश्वरसूरि के शिष्य अभयदेवसूरि के अनुरोध पर रची गयी। यही अभयदेवसूरि बालचंद्रसूरि के प्रगुरु थे, यह बात उपदेशकन्दलीवृत्ति की प्रशस्ति से ज्ञात होती है।

६. विनयचन्द्रसूरि - विनयचंद्रसूरि नामधारी मुनि द्वारा रची गयी कई कृतियां मिलती है। यथा मल्लिनाथचरित, मुनिसुव्रतचरित, पार्श्वनाथचरित, कालकाचार्यकथा, दीपावलीकल्प, नेमिनाथचउपड़, उपदेशमालाकथानकछप्पय, कल्पनिरुक्त, काव्यशिक्षा (कविशिक्षा) आदि। पूर्वकथित पार्श्वनाथचरित की प्रशस्ति में हम देख चुके हैं कि ये चन्द्रगच्छीय रविप्रभसूरि के शिष्य थे।^{३८} जब कि मल्लिनाथचरित की प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि इसके रचनाकार विजयचन्द्रसूरि रत्नप्रभसूरि के प्रशिष्य और प्रद्युम्नसूरि के शिष्य थे।^{३९} सद्गत प्राध्यापक श्री गुलाबचंद्र चौधरी ने कालकाचार्यकथा के रचनाकार विनयचन्द्रसूरि को रत्नसिंहसूरि का शिष्य बतलाया है।^{४०} इस प्रकार यह स्पष्ट है कि उक्त ग्रन्थों के रचनाकार विनयचन्द्रसूरि नामधारी ग्रन्थकार अलग अलग व्यक्ति हैं।

कालकाचार्यकथा के रचनाकार विनयचंद्रसूरि तपागच्छ के थे। इन्होंने वि० सं० १३२५ / ईस्वी सन् १२६९ में पर्युषणाकल्प पर निरुक्त की रचना की।^{४१} बारहव्रतरास (वि० सं० १३३८/ ई० सन् १२८२) और नेमिनाथचतुष्पदिका भी इन्हीं की कृतियां हैं।^{४२}

प्राध्यापक चौधरी ने पार्श्वनाथचरित के रचनाकार विनयचंद्रसूरि का परिचय देते समय उन्हें उक्त सभी कृतियों का रचयिता बतलाया है,^{४३} जो न केवल भ्रामक है बल्कि सत्य से पर है। बाद में लिखे गये कुछ ग्रंथों में भी उक्त त्रुटिपूर्ण विवरण को अक्षरशः दुहराया गया है।^{४४} वस्तुतः एक ही समय में एक ही नाम वाले एक से अधिक ग्रन्थकारों के हो जाने तथा उनके द्वारा रचनाकाल आदि का स्पष्ट उल्लेख न होने से ऐसा भ्रम उत्पन्न हो जाना सामान्य बात है किंतु मूल साक्ष्यों के आधार पर इसका निराकरण भी सम्भव है।

७. प्रद्युम्नसूरि - ये चंद्रगच्छीय कनकप्रभसूरि के शिष्य थे। जैसा कि इस निबन्ध के प्रारम्भिक पृष्ठों में ही कहा जा चुका है इन्होंने वि० सं० १३२४ / ई० सन् १२६८ में समरादित्यसंक्षेप की संस्कृत भाषा में रचना की। इसके अतिरिक्त इन्होंने वि० सं० १३२८ / ई० सन् १२७२ में प्रवज्याविधानटीका की भी रचना की।^{४५} इन्होंने उदयप्रभसूरि, मुनिदेवसूरि, विनयचंद्रसूरि, प्रभाचंद्रसूरि आदि ग्रन्थकारों की कृतियों का संशोधन भी किया।

संदर्भ सूची :

१. प्रभावकचरित संपा० मुनि जिनविजय, सिंधी जैन ग्रन्थमाला, बम्बई विविध-गच्छीयपट्टावलीसंग्रह संपा० मुनि जिनविजय, सिंधी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक ५३, बम्बई १९६१ ईस्वी सन्, पृष्ठ ६१, १७८ आदि.
२. U. P. Shah - Akota Bronzes, State Board for Historical Records and Ancient Monuments Archaeological Series, No. 1, Bombay 1959 A. D. Pp. 28, 39, 66

३. Ibid P. 28

४. बृहद्गच्छीय आचार्य वादिदेवसूरि के शिष्य रत्नप्रभसूरि द्वारा रचित उपदेशमालाप्रकरणवृत्ति (रचनाकाल वि० सं० १२३८/ ईस्वी सन् ११८२) की प्रशस्ति.

Muni Punyavijaya - *Catalogue of Palm-Leaf Mss in The Shanti Natha Jaina Bhandar, Combay*, G. O. S. No. 149, Baroda 1966 A. D., Pp. 284-286.

तपागच्छीय मुनिसुन्दरसूरि द्वारा रचित गुर्वावली (रचनाकाल वि० सं० १४६६ / ई० सन् १४१९)

तपागच्छीय आचार्य हीरविजयसूरि के शिष्य धर्मसागरसूरि द्वारा रचित तपागच्छपट्टावली (रचनाकाल वि० सं० १६४८ / ई० सन् १५९२) ।

बृहद्गच्छीय मुनिमाल द्वारा रचित बृहद्गच्छगुर्वावली (रचनाकाल वि० सं० १७५१ / ई० सन् १६९५)

५. राजगच्छ का संक्षिप्त इतिहास इसी पुस्तक में यथास्थान प्रकाशित है ।

६. । आसि सिरिबद्धमाणो पवड्डुमामो गुण-सिरीए ॥ २४० ॥

.....
एणो ताण जिमेसर-सूरी सूरुव्व उक्कड-पयावो ।

तस्स सिरि-बुद्धिसागर-सूरी य सहोयरो वीओ ॥ २४५ ॥

.....
तडरुह-अवसडू महीरुहोह-उम्मूलणम्मि सुसमत्था ।

अज्झकाय-पवर-तित्था पंचगंधी नई पवरा ॥ २४८ ॥

तेसि सीस-वरो धणेसर-मुणी एयं कहं पायडं,

चड्डावलि-पुरी ठिओ से-गुरुणो आणाए पाटंतरा ।

कासी विक्कम-वच्छरम्मि ए गए वाणंक-सुन्नोडुपे,

मासे भदूवए गुरुम्मि कसिणे वीया धणिट्ठा-दिणे ॥ २४९ ॥

सुरसुंदरीचरिय, संपा० मुनिश्री राजविजय, जैन विविध साहित्य ग्रंथमाला, ग्रन्थांक १, वाराणसी १९१६ ईस्वी, ग्रन्थकार की प्रशस्ति पृ० २८५-२८६.

७. कालेणं संभूओ भयवं सिरिवद्वमाणमुणिवसभो ।

निप्पडिमपसमलच्छीविच्छङ्खाखंडभंडारो ॥

ववहारनिच्छयनय व्व दव्वभावत्थय व्व धम्मस्स ।

परमुन्नइजणगा तस्स दोण्णि सिस्सा समुप्पण्णा ॥

पढमो सिरिसूरिजिणेसरो त्ति सूरे व्व जम्मि उइयम्मि ।

होत्था पहावहारो दूरं तेयस्सिचक्कस्स ॥

अज्ज वि य जस्स हरहासहंसगोरं गुणाण पब्भारं ।

सुमरंता भव्वा उव्वहंति रोमंचमंगेसु ॥

बीओ उण विरइयनिउणपवरवागरणपमुहबहुसत्थो ।

नामेण बुद्धिसागरसूरि त्ति अहेसि जयपयडो ॥

तेसि पयपंकउच्छंगसंगसपत्तपरममाहणो ।

सिस्सो पढमो जिणचंदसूरिनामो समुप्पन्नो ॥

अन्नो य पुन्निमाससहरो व्व निव्ववियभव्वकुमुयवणो ।

सिरिअभयदेवसूरि त्ति पत्तकित्ती परं भुवणे ॥

.....

छत्तावल्लिपुरीए जज्जयसुयपासणागभवणम्मि ।

विक्कमनिवकालाओ समइक्कंतेसु वरिसाण ॥

एक्कारससु सएसुं पणुवीसासमहिएसु निप्फत्ति ।

संपत्ता एसाऽऽराहण त्ति फुडपायडपयत्था ॥

Muni Punyavijaya - Ed. *New Catalogue of Sanskrit and Prakrit Manuscripts; Jesalmer Collection*, L. D. Series No. 36, Ahmedabad 1972 A. D., P- 88.

८. एकस्तयोः सूरिवरो जिनेश्वरः, ख्यातस्तथाऽन्यो मुनि बुद्धिसागरः ।

तयोर्विनेयेन विबुद्धिनाऽप्यलं, वृत्तिः कृतैषाभयदेवसूरिणा ॥ ५ ॥

.....

अष्टाविंशतियुक्ते वर्षसहस्रे शतेन चाभ्यधिके ।

अणहिलपाटकनगरे कृतेयमच्छुप्तधनिवसतौ ॥ १५ ॥

अष्टादशसहस्ताणि षट् शतान्यथ षोडश ।

इत्येवं मानमेतस्यां श्लोकमानेन निश्चितम् ॥ १६ ॥

- H. R. Kapadia - *Descriptive Catalogue of the Government Collections of Manuscripts deposited at the Bhandarkar Oriental Research Institute*, Volume XVII, Part I, Poona - 1935, A. D. Pp. 87-88.
९. Mohanlal Mehta and K. R. Chandra - *Prakrit Proper Names, Vol. I Part II*, L. D. Serties No. 37. Ahmedabad - 1972, Pp. 750-751.
१०. मोहनलाल दलीचंद देसाई - जैन साहित्यनो संक्षिप्त इतिहास, बम्बई १९३२ ईस्वी, पृ० २७७.
- हीरालाल रसिकलाल कापडिया - पाइय भाषा अने साहित्य
११. Muni Punyavijaya - Ed. *Catalogue of Palm-Leaf Mss in the Shantinatha Jaina Bhandar, Cambay*, Volume II, G.O.S. No. 149, Baroda 1966 A. D.Pp. 67-70.
१२. C.D. Dalal *A Descriptive Catalogue of Manuscripts in the Jaina Bhandars at Pattan*, Vol. I. G.O.S. No. LXXVI. Baroda - 1937. A. D., Pp. 331-333.
१३. समाश्रितो यः शरणं क्षमाभृद्गणेन कर्माशनिपातभीत्या ।
 अवारपारश्रियमादधानः स चंद्रगच्छोऽस्ति भुवि प्रसिद्धः ॥ १ ॥
 भव्यारविन्दप्रतिबोधहेतुरखण्डवृत्तः प्रतिषिद्धदोषः ।
 श्रयन्नपूर्वेन्दुतुलामिह श्रीभद्रेश्वरो नाम बभूव सूरिः ॥ २ ॥
 तत्पपट्पूर्वाचलचण्डरोचिरजायत श्रीहरिभद्रसूरिः ।
 मुदं न कस्मै रहितं विकृत्या तपश्च चित्तं च तनोति यस्य ॥ ३ ॥
 श्रीमानथाजायत शांतिसूरिर्यतः समुद्रादिव शिष्य मेघाः ।
 ज्ञानामृतं प्राप्य शुभोपदेशवृष्ट्या व्यधुः कस्य मनो न शस्यम् ? ॥ ४ ॥
 ततो बभूवाभयदेवसूरिर्यदीयवाणी गुणरत्नहृद्या ।
 मेधाभरेन्दूल्लसिता विभाति वेलेव मध्यस्थजिनागमाब्धे ॥ ५ ॥
 प्रसन्नचन्द्रोऽथ बभूव सूरिर्वक्तुं गुणान्यस्य नहि क्षमोऽभूत् ।
 सहस्रवक्त्रोऽपि भुजङ्गराजस्ततो हियेवैष रसातलेऽगात् ॥ ६ ॥
 अथाजनि श्रीमुनिरत्नसूरिः स्वबुद्धिनिर्द्धृतसुरेन्द्रसूरिः ।
 रत्नन्ति शास्त्राण्यखिलानि यस्य स्थिरोन्मते मानसरोहणाद्रौ ॥ ७ ॥
 श्रीचन्द्रसूरिः सुगुरुस्ततोऽभूत्प्रसन्नतालङ्कृतमस्तदोषम् ।

चित्तं च वाक्यं च वपुश्च यस्य कं न प्रमोदोत्पुलकं करोति ? ॥ ८ ॥

सूरिर्यशोदेव इति प्रसिद्धस्ततोऽभवद्यत्पदपङ्कजस्य ।

रजोभिरालिङ्कितमौलयोऽपि चित्रं पवित्राः प्रणता भवन्ति ॥ ९ ॥

तत्पाणिपद्मोल्लसितप्रतिष्ठः श्रचिन्द्रसूरिप्रभुशिष्यलेशः ।

देवेन्द्रसूरिः किमपीति सारोद्धारं चकारोपमितेः कथायाः ॥ १० ॥

.....
श्रीविक्रमादित्यनरेन्द्रकालादष्टानवत्यर्यमसंख्यवर्षे (१२९८) ।

पुष्यावर्कभृत्कार्तिककृष्णष्टयां सन्पूर्णतामेष समाससाद ॥ १४ ॥

उपमितिभवप्रपञ्चकथासारोद्धार - संपा० संशोधक - पंन्यास मानविजय-
कान्तिविजय, आचार्यदेवश्रीमद्विजयकमलसूरि-जैन ग्रन्थमाला-ग्रन्थांक १४, पाटण
वि० सं० २००६, प्रशस्ति पृ० १९३.

१४. गुलाबचन्द्र चौधरी - जैन साहित्य का बृहद् इतिहास, भाग ६, पार्श्वनाथ विद्याश्रम
ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक २०, पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी, १९७३ ई० पृ०
१२१-१२३.

१५. P. Peterson - *Fourth Report of Operation in Search of Sanskrit
Mss in the Bombay Circle*, Bombay 1894 A.D. No. 1361, P.
123-124.

१६. गुलाबचन्द्र चौधरी, पूर्वोक्त, पृ० २९६-२९७

१७. वही, पृष्ठ ३५३.

१८. Muni Punyavijaya - *Catalogue of Palm-leaf Mss in the Shanti
Natha Jaina Bhandar, Combay*, Part II, Pp. 257-258.

अमृतलाल मगनलाल शाह - संपा० श्री प्रशस्तिसंग्रह, प्रकाशक : श्री देशविरति
धर्मारामधक समाज, अहमदाबाद, वि० सं० १९९३, खंड १, पृष्ठ ५, क्रमांक ९ ।

१९. C. D. Dalal - *Ibid*, Pp 361-363.

२०. मुनि जिनविजय, पूर्वोक्त, पृष्ठ ३०-३२.

मुनि पुण्यविजय को उक्त प्रशस्ति खंडित रूप में प्राप्त हुई, अतः उन्होंने उसे उसी
रूप में प्रकाशित किया है.

Catalouge of Palm-leaf Mss in the Jaina Bhandar Combay,
Part I, Pp. 112-118.

२१. संवत् १४१० वर्षे आषाढ वदि द्वितीया दिने अलेखि आनन्दरत्नगणिना परोपकाराय देवकुलपाटक महानगरे ॥
श्रीमच्चंद्रगच्छनायकपुरंदर श्रीसोमसुंदरसूरितत् शिष्योपाध्याय श्री साधुराजगणि-
शिष्यपरमाणुना ॥
शुभं भवतु श्रीश्रमणसंघस्य ॥
श्रीपिण्डविशुद्धि (सावचूरि) की पुस्तक प्रशस्ति, श्री अमृतलाल मगनलाल शाह, पूर्वोक्त, भाग २, पृष्ठ २, प्रशस्ति क्रमांक ७.
२२. इति श्री भद्रबाहुप्रणीत दुखमाप्राभृततश्चतुरधिकद्विशहस्रयुगप्रधानस्वरूपं सुखावबोधनार्थं श्रीदेवेन्द्रसूरिणा यंत्रपत्रे न्यासीचक्रे श्रीचंद्रगच्छे प्रद्योतनाभ श्रीसोमतिलकसूरि-
स्तेषामुपाध्यायश्रीहंसभवनगणिप्रसादतः श्रीशिष्य श्रीकीर्तिभुवनेन श्रीमति स्तंभनकपुरे विक्रमांत संवत् विश्वमनु १४१३ वर्षे लिखितं श्रीपद्मपत्तने श्रीवासुपूज्यप्रसत्तेः । वही, भाग २, पृष्ठ ३, प्रशस्ति क्रमांक ८.
२३. मुनि जिनविजय - संपा० जैन पुस्तकप्रज्ञस्तिग्रह, पृष्ठ १४८. प्रशस्ति क्रमांक ३९७.
२४. श्री अमृतलाल मगनलाल शाह, पूर्वोक्त, भाग २, पृष्ठ १०४, प्रशस्ति क्रमांक ३८२.
२५. U.P. Shah - *Akota Bronzes*, Pp. 27-28.
२६. Ibid, Pp 39-40.
२७. Ibid, Pp 39-40.
२८. Ibid, Pp 60.
२९. नवाङ्गवृत्तिकारश्रीअभयदेवसूरिसंताने छत्राउलाश्रीदेवप्रभसूरिशिष्यश्रीपद्मप्रभसूरि ।
.....
U. P. Shah - "A Forgotten Chapter in the History of Shvetambara Jaina Church" *Journal of the Asiatic Society of Bombay*, Vol. 30, Part I, 1955 A. D., Pp. 100-113.
३०. द्रष्टव्य-संदर्भ क्रमांक ६.
३१. संदर्भ क्रमांक ७.
३२. मोहनलाल दलीचन्द देसाई - जैन साहित्यनो संक्षिप्त इतिहास, पृष्ठ २१६-२१७.
३३. "अभयदेवसूरिप्रबन्ध" प्रभावकचरित, संपा० मुनि जिनविजय, पृष्ठ १६१-१६६.
३४. मोहनलाल मेहता, पूर्वोक्त, पृष्ठ ३९८.

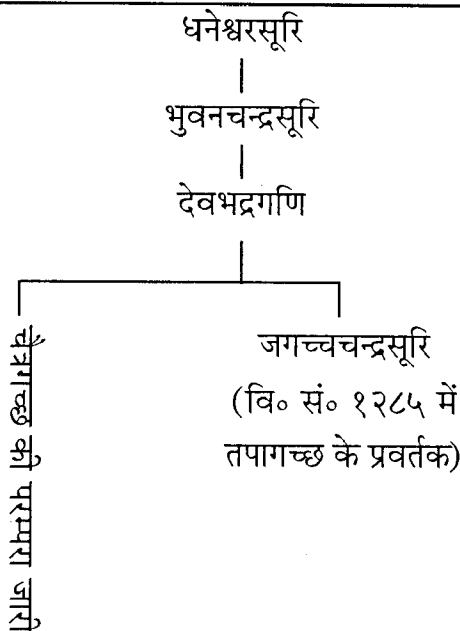
“बृहत्पोषालिकपट्टावली” में इनका स्वर्गवास काल वि० सं० ११३९ दिया गया है।
केचिदेकोनचत्वारिंशदधिकैकादशशते ११३९ नवांगवृत्तिकृत श्रीअभयदेवसूरिः
स्वर्गभाक्।

३५. लालचन्द भगवानदास गांधी - ऐतिहासिकलेखसंग्रह, श्री सयाजी साहित्यमाला, पुष्प ३३५, बड़ौदरा १९६३ ईस्वी, पृ० ११४.
३६. द्रष्टव्य, संदर्भ क्रमांक १२.
३७. भोगीलाल सांडेसरा - महामात्य वस्तुपाल का साहित्यमंडल और संस्कृत साहित्य में उनकी देन, सम्मति प्रकाशन नं० १५, जैन संस्कृति संशोधक मंडल, वाराणसी १९५९ ईस्वी, पृष्ठ १०६-१०९.
३८. द्रष्टव्य-संदर्भ क्रमांक १४.
३९. *Jinaratankosha*, P. 303.
४०. जैन साहित्य का बृहद् इतिहास, भाग ६, पृष्ठ २११.
- ४१-४२. मोहनलाल दलीचंद देसाई - जैन गूर्जरकविओ, नवीन संस्करण, संपा० डॉ० जयन्त कोठारी, महावीर जैन विद्यालय, मुम्बई १९८६ ई० पृष्ठ १२-१३.
४३. जैन साहित्य का बृहद् इतिहास, भाग ६, पृष्ठ १२२-१२३.
४४. जयकुमार जैन - पार्श्वनाथचरित का समीक्षात्मक अध्ययन, मुजफ्फरनगर १९८७ ईस्वी, पृष्ठ ५६-५७.
४५. *Jinaratnakosha*, P. 272.

चैत्रगच्छ का संक्षिप्त इतिहास

प्राक् मध्ययुगीन और मध्ययुगीन श्वेताम्बर चैत्यवासी गच्छों में चैत्रगच्छ भी एक था। चैत्रपुर (संभवतः चित्तौड़) से इस गच्छ की उत्पत्ति मानी जाती है।^१ यह गच्छ कब और किस कारण से अस्तित्व में आया, इस बारे में कोई जानकारी नहीं मिलती है। साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों में इस गच्छ के कई नाम मिलते हैं, यथा चैत्रगच्छ, चित्रवालगच्छ, चैत्रवालगच्छ, चित्रपल्लीगच्छ, चित्रगच्छ आदि। धनेश्वरसूरि इस गच्छ के आदिम आचार्य माने जाते हैं। इनके पट्टधर भुवनचन्द्रसूरि हुए, जिनके प्रशिष्य और देवभद्रसूरि के शिष्य जगच्चन्द्रसूरि से वि० सं० १२८५ / ई० सन् १२२९ में तपागच्छ का प्रादुर्भाव हुआ^२। देवभद्रसूरि के अन्य शिष्यों से चैत्रगच्छ की परम्परा अविच्छिन्न रूप से लम्बे समय तक चलती रही। चित्तौड़ के निकट स्थित घाघसा एवं चीरवा नामक स्थानों से प्राप्त वि० सं० १३२२ एवं वि०सं० १३३० के ऐतिहासिक महत्त्व के शिलालेखों के रचनाकार धनेश्वरसूरि भी इसी गच्छ के थे।

चैत्रगच्छ के इतिहास के अध्ययन के लिए साहित्यिक और अभिलेखीय दोनों प्रकार के साक्ष्य उपलब्ध हैं। साहित्यिक साक्ष्यों के अन्तर्गत इस गच्छ से सम्बद्ध मात्र कुछ ग्रन्थ एवं पुस्तक प्रशस्तियां मिलती हैं। इस गच्छ की कोई पट्टावली भी नहीं मिलती है, किन्तु तपागच्छ के चैत्रगच्छ से ही उद्भूत होने के कारण तपागच्छीय आचार्यों की विभिन्न प्राचीन कृतियों की प्रशस्तियों एवं तपागच्छ की विभिन्न पट्टावलियों में चैत्रगच्छ के प्रारम्भिक आचार्यों का उल्लेख मिलता है^३, जो इस प्रकार है :-



चैत्रगच्छ का उल्लेख करनेवाला सबसे प्राचीन साक्ष्य है वि०सं० १२२५ आषाढ़ वदि ९ को प्रतिष्ठापित चन्द्रप्रभ की प्रतिमा के परिकर पर उत्कीर्ण लेख, जो खंडित रूप में प्राचीन देवास राज्य के रिंगणोद (बिंबणोद) नामक कस्बे में खुदाई में प्राप्त हुआ है। सुप्रसिद्ध विद्वान् स्व० आचार्य विजययतीन्द्रसूरिजी ने इस लेख की वाचना दी है जो इस प्रकार है^४ :

संवत् १२२५ वर्ष आषाढ़ वदि ९ रवौ श्रीमालीय सा० लोहडागंज सा० वच्च हीरू पुत्रेण पाल्हा प्रावासा बोहित्थेन श्रीचन्द्रप्रभबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीचैत्रकगच्छे श्रीगुणचन्द्रसूरिशिष्यैः श्रीरविप्रभसूरिभिः । भद्रमस्तु संघस्य ।

यदि सूरिजी की उक्त वाचना को सही मानें तो इसे चैत्रगच्छ का अब तक उपलब्ध सबसे प्राचीन साक्ष्य माना जा सकता है ।

धनेश्वरसूरि और उनके शिष्य भुवनचन्द्रसूरि तथा उक्त परिकर लेख में उल्लिखित गुणचन्द्रसूरि और उनके शिष्य रविप्रभसूरि के बीच किस

प्रकार का सम्बन्ध था, इस बारे में कोई भी जानकारी उपलब्ध नहीं है।

विभिन्न अभिलेखीय एवं साहित्यिक साक्ष्यों से इस गच्छ की कई शाखाओं जैसे भर्तृपुरीयशाखा, धारणपद्रीयशाखा, चतुर्दशीपक्षशाखा, चन्द्रसामीयशाखा, सलषणपुराशाखा, कम्बोइयाशाखा, अष्टापदशाखा, सार्दूलशाखा आदि का भी पता चलता है।

अध्ययन की सुविधा के लिए सर्वप्रथम साहित्यिक साक्ष्यों और तत्पश्चात् अभिलेखीय साक्ष्यों का विवरण प्रस्तुत है-

चैत्रगच्छ से सम्बद्ध उपलब्ध सबसे प्राचीन साहित्यिक साक्ष्य है वि० सं० १४७५ में मेवाड़ में चित्रित कल्पसूत्र की प्रशस्ति। अगरचन्दजी नाहटा ने इसका मूल पाठ दिया है, जो इस प्रकार है^५ :

संवत् १४७५ वर्षे चैत्र सुदि प्रतिपदां तिथे । निशानाथदिने श्रीमत मेदपाट देशे सोमेश्वर ग्रामे । अश्विनी नक्षत्रे मेषराशिस्थिते चन्द्रे । विष्कंभयोगे श्रीमत् चित्रवालगच्छे श्रीवीरचन्द्रसूरिशिष्येण धनसारेण कल्पपुस्तिका आत्मवाचनार्थं लिखापितः । लिखितः वाचनाचार्येण शीलसुन्दरेण । श्री श्री श्री शुभं भवतु ।

इसके बाद आगे की दो लाईनों पर सफेदा फेर दिया गया है जिससे पीछे वाला लेख पूरा पढ़ा नहीं जा सका, पर उसके अंतिम उल्लेख से स्पष्ट है कि जैसलमेर में जयसुन्दर के शिष्य तिलकरंग को पंचमी तप के उद्यापन में यह प्रति भेंट की गयी थी।

उक्त प्रशस्ति के अनुसार चैत्रगच्छीय वीरचन्द्रसूरि के शिष्य धनसार मुनि ने अपने अध्ययन के लिए वाचनाचार्य शीलसुन्दर से वि० सं० १४७५ चैत्र सुदि ११ को उक्त ग्रन्थ की प्रतिलिपि करायी।

चैत्रगच्छीय वीरचन्द्रसूरि

|

धनसारमुनि (वि० सं० १४७५ में स्व पठनार्थ

वीरचन्द्रसूरि के शिष्य धनसारमुनि और प्रतिलिपिकार वाचनाचार्य शीलसुन्दर में परस्पर क्या सम्बन्ध था, इस बारे में उक्त प्रशस्ति से कोई जानकारी नहीं प्राप्त होती, संभवतः वे भी चैत्रगच्छीय ही रहे होंगे। ठीक यही बात जयसुन्दर के शिष्य तिलकरंग, जिन्हें पंचमी उद्यापन के अवसर पर जैसलमेर में उक्त प्रति भेंट की गयी थी, के बारे में भी कही जा सकती है।

जैसा कि अभिलेखीय साक्ष्यों के अन्तर्गत आगे हम देखेंगे कि वीरचन्द्रसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित ४ सलेख जिन प्रतिमायें मिलती हैं, जो कि वि० सं० १४५८, १४६०, १४६९ एवं १४७० की हैं। इन्हें समसामयिकता, नाम साम्य एवं गच्छ साम्य को देखते हुए वि० सं० १४७५ में चित्रित कल्पसूत्र की प्रशस्ति में उल्लिखित धनसार मुनि के गुरु वीरचन्द्रसरि से अभिन्न मानने में कोई बाधा दिखाई नहीं देती।

चैत्रगच्छ से सम्बद्ध दूसरा साहित्य साक्ष्य है सम्यक्त्वकौमुदी की प्रशस्ति। चैत्रगच्छीय आचार्य गुणाकरसूरि ने वि० सं० १५०४ / ई० सन् १४४८ में उक्त ग्रन्थ की रचना की। यद्यपि इसकी प्रशस्ति^६ में उन्होंने न तो अपने गुरु और न ही अपनी गुरु-परम्परा के किसी आचार्य का नामोल्लेख किया है, किन्तु चैत्रगच्छ से सम्बद्ध प्राचीन प्रशस्ति होने से यह महत्त्वपूर्ण है।

गुणाकरसूरि की दूसरी कृति है वि० सं० १५२४ / ई० सन् १४६८ में रचित भक्तामरस्तवव्याख्या। इसकी प्रशस्ति^७ से ज्ञात होता है कि चैत्रगच्छीय आचार्य धनेश्वरसूरि की मूल परम्परा में गुणाकरसूरि हुए, जिन्होंने उक्त कृति की रचना की। वि० सं० १५५४ / ई० सन् १४९८ में लिपिबद्ध की गयी भक्तामरस्तवव्याख्या की एक प्रति मुनि पुण्यविजयजी के संग्रह में उपलब्ध है, जिसकी दाताप्रशस्ति में चैत्रगच्छीय मुनि चारुचन्द्र का उल्लेख है।

चैत्रगच्छ से सम्बद्ध अगला साहित्यिक साक्ष्य इसके ८० वर्ष पश्चात् का है। यह वि० सं० १६०४ में प्रतिलिपि की गयी मेघदूत की प्रतिलेखन प्रशस्ति है, जो आज श्री जैन सं० ज्ञान भंडार, पाटन में संरक्षित है। श्री अमृतलाल मगनलाल शाह ने इस प्रशस्ति का मूलपाठ दिया है, जो इस प्रकार है—

सं० १६०४ वर्षे वैशाख सुदि २ भूमवासरे श्री चैत्रगच्छे भ० श्री ६ नयकीर्तिसूरि सूरिन्द्रान तत् शिष्यमु० विनयकीर्तिलिखितं स्ववाचनाय, चित्रांगददुर्ग मध्ये ॥ श्रीरस्तु ॥ श्री ॥

अर्थात् चैत्रगच्छीय नयकीर्तिसूरि के शिष्य विनयकीर्ति ने वि० सं० १६०४ वैशाख सुदि २ मंगलवार को चित्रांगददुर्ग (चित्तौड़गढ़) में स्वपठनार्थ मेघदूत की प्रतिलिपि की।

श्री प्रशस्तिसंग्रह, भाग २, प्रशस्ति क्रमांक ३७३, पृष्ठ १०२.

चैत्रगच्छ से सम्बद्ध अगला साहित्यिक साक्ष्य इसके २० वर्ष पश्चात् अर्थात् वि० सं० १६२४ में लिपिबद्ध की गयी लघुक्षेत्रसमास की प्रतिलेखन प्रशस्ति का है। यह प्रति अद्यावधि नि० वि० जी० मणि पुस्तकालय - चाणस्मा में संरक्षित है। श्री अमृतलाल मगनलाल शाह ने इस प्रशस्ति की भी वाचना दी है, जो इस प्रकार है—

इति क्षेत्रसमास प्रकरणं समाप्तमेति ॥ श्री ॥ संवत् १६२४ वर्षे माघ वदि १२ मंदवासरे ॥ श्री चैत्रगच्छे भ० ॥ श्रीः ५ विनयचंद्रसूरि ॥ वाचनाचार्य वा० श्री श्री ५ अभयचंद्र तत् शिष्य मुनि अमरचंद्रेण लिखितं ॥ श्री वालीसादेशे श्री वोहिया शुभस्थाने वालीसा श्री कान्हजी विजयराज्ये ॥ श्री रस्तु ॥ कल्याणं ॥ छ ॥ शुभं भवतु ॥ श्रीः ॥ छ ॥ श्रीः ॥

श्रीप्रशस्तिसंग्रह, भाग २, प्रशस्ति क्रमांक ४५८, पृष्ठ १२०.

अर्थात् चैत्रगच्छीय विनयचन्द्रसूरि के समय वाचनाचार्य अभयचन्द्र के शिष्य अमरचन्द्र ने वि० सं० १६२४ माघ वदि १२ को लघुक्षेत्रसमास

की प्रतिलिपि की। आचार्य विनयचंद्रसूरि और वाचनाचार्य अभयचन्द्र के बीच गुरुभ्राता अथवा गुरु-शिष्य का सम्बन्ध था, यह बात उक्त प्रशस्ति से स्पष्ट नहीं होता।

दशवैकालिकसूत्र की वि० सं० १७६८ / ई० सन् १७१२ में लिखी गयी एक प्रति की दाताप्रशस्ति^९ में चैत्रगच्छ की देवशाखा का उल्लेख है। यह प्रति उक्त शाखा के आचार्य रत्नदेवसूरि के पट्टधर सौभाग्यदेवसूरि की परम्परा के मुनि बेलजी के पठनार्थ लिखी गयी थी। चैत्रगच्छ से सम्बद्ध कुल यही साहित्यिक साक्ष्य प्राप्त होते हैं।

ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण घाघसा^{१०} के वि० सं० १३२२ एवं चीरवा^{१०} के वि० सं० १३३० के शिलालेखों के रचनाकार रत्नप्रभसूरि भी चैत्रगच्छ से ही सम्बद्ध थे। उक्त लेख यद्यपि जैन धर्म से सम्बद्ध नहीं है, किन्तु इनमें मेवाड़ के गुहिल शासकों - पद्मसिंह, जैत्रसिंह और समरसिंह की उपलब्धियों का वर्णन है। इन लेखों के रचनाकार चैत्रगच्छीय रत्नप्रभसूरि द्वारा लेख के अन्त में अपनी गुरु-परम्परा, गच्छ का नाम, लेख का समय आदि का सुन्दर विवरण दिया गया है जो इस प्रकार है-

भद्रेश्वरसूरि

|

देवभद्रसूरि

|

सिद्धसेनसूरि

|

जिनेश्वरसूरि

|

विजयसिंहसूरि

|

भुवनचन्द्रसूरि

रत्नप्रभसूरि

(वि० सं० १३२२ के घाघसा
एवं वि० सं० १३३० के चीरवा
के शिलालेखों के रचनाकार)

तपागच्छीय प्राचीन ग्रन्थप्रशस्तियों एवं पट्टावलियों में उल्लिखित चैत्रगच्छीय धनेश्वरसूरि, भुवनचन्द्रसूरि, देवभद्रसूरि, जगच्चन्द्रसूरि आदि से घाघसा एवं चीरवा अभिलेखों में उल्लिखित चैत्रगच्छीय रत्नप्रभसूरि और उनके पूर्ववर्ती मुनिजनों का क्या सम्बन्ध था, इस बारे में प्रमाणों के अभाव में कुछ भी कह पाना कठिन है।

चैत्रगच्छ से सम्बद्ध दो जैन लेख चित्तौड़ से प्राप्त हुए हैं। इनमें से एक लेख चैत्रगच्छ की मूलशाखा और दूसरी भर्तृपुरीयशाखा से सम्बद्ध है। त्रिपुटी महाराज^{१९} ने प्रथम लेख की वाचना इस प्रकार दी है :

“---कार्तिक सुदि १४ चैत्रगच्छे रोहणाचलचिंतामणि--- सा मणिभद्र सा० नेमिभ्यां सह वंडाजितायाः सं राजन श्रीभुवनचन्द्रसूरिशिष्यस्य विद्वत्तया सुहृत्तया व रंजितं श्रीगुर्जरराज श्रीमेदपाट प्रभु प्रभृति क्षितिपतिमानितस्य श्री (३) xxx लघुपुत्र देदासहितेन स्वपितुरामित्य प्रथमपुत्रस्य वर्मनसिंहस्य पूर्वप्रतिष्ठित श्रीसीमंधरस्वामी श्रीयुगमंधरस्वामी”

उक्त लेख में उल्लिखित भुवनचन्द्रसूरि और उनके शिष्य (नाम अज्ञात) को घाघसा और चीरवा के लेखों में उल्लिखित भुवनचन्द्रसूरि और उनके विद्वान् शिष्य एवं लेख के रचयिता रत्नप्रभसूरि से समीकृत किया जा सकता है और इस स्थिति में उक्त लेख का काल भी वि० सं० १३२२ - १३३० के आसपास माना जा सकता है।

चैत्रगच्छ से सम्बद्ध प्रतिमालेखों का विवरण इस प्रकार है :

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१.	१२६५	तिथि विहीन	पद्मदेवसूरि	पार्श्वनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, (नाहटों में) बीकानेर	अगरचन्द नाहटा, संपा० बीकानेर- जैनलेखसंग्रह, लेखांक १४८०
२.	१२७३	फाल्गुन वदि २ रविवार	धर्मसिंहसूरि	गुरुमूर्ति पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिपार्श्वनाथ जिनालय, सादड़ी (राज०)	अरविन्दकुमारसिंह, “चिन्तामणि पार्श्वनाथ मंदिर के तीन जैन प्रतिमा लेख” पं० दलसुखभाई मालवणिया अभिनन्दन ग्रन्थ, पृष्ठ १७२-७३

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
३.	१२८८	आषाढ़ सुदि १० शुक्रवार	--सूरि		चिन्तामणि पार्श्वनाथ- जिनालय बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १२६
४.	१३००	माघ वदि २	हरिचन्द्रसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, थराद	दौलतसिंह लोढा- संपा० श्रीप्रतिमा- लेखसंग्रह, लेखांक
५.	१३१२	वैशाख वदि	यशोदेवसूरि के पट्टधर देवेन्द्रसूरि	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिजी मंदिर, चिन्तामणि शेरी, राधनपुर	मुनि विशालविजय, संपा० राधनपुर- प्रतिमालेख- संग्रह, लेखांक ३६

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
६.	१३१२	माघ वदि ५ बुधवार	देवेन्द्रसूरि के पट्टधर धर्मदेवसूरि	चन्द्रप्रभ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिजी, का मंदिर बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १५३
७.	१३२०	फाल्गुन सुदि १२	रविप्रभसूरि	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, (कोचरों में) बीकानेर	वही, लेखांक १६२०
८.	१३२१	चैत्र सुदि ३ शुक्रवार	शालिभद्रसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	अनुपूर्तिलेख, आबू	मुनि जयन्ताविजय, संपा० अर्बुद- प्राचीनजैनलेख- संदोह, लेखांक ४६२

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
९.	१३२१	फाल्गुन सुदि	आमदेवसूरि	शांतिनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	बावन जिनालय, करेड़ा, मेवाड़	पूरनचन्द नाहर, संपा० जैनलेख- संग्रह, भाग २, लेखांक १९२१
१०.	१३२६	चैत्र वदि १२ शुक्रवार	शालिभद्रसूरि के शिष्य धर्मचन्द्रसूरि	शांतिनाथ की धातु-प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ देरासर, लाडोल	बुद्धिसागरसूरि, संपा० जैनधातु- प्रतिमालेखसंग्रह, भाग १, लेखांक ४६२
११.	१३२६	चैत्र वदि १२ शुक्रवार	”	अजितनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ देरासर, लाडोल	वही, भाग १, लेखांक ४६३

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१२.	१३२६	..वदि ३ बुधवार	पद्मप्रभसूरि	जिनप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त लेखांक १६८
१३.	१३२७	फाल्गुन सुदि १२	अजितसिंहसूरि के संतानीय कनकप्रभसूरि	जिनप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग ३, लेखांक २२२९
१४.	१३३१	तिथि विहीन	-----	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १७८
१५.	१३३२ (?)	वैशाख सुदि ११ रविवार	देवेन्द्रसूरि के संतानीय धर्मदेवसूरि	चतुर्विंशति पट्ट पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक १८३
१६.	१३३३	आषाढ़ सुदि २	देवाणंदसूरि	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, शांतिनाथ पोल, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १२९७

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१७.	१३३३	माघ सुदि १	देवचन्द्रसूरि के पट्टधर अमरचन्द्रसूरि	स्तम्भ लेख	जैन मंदिर, रत्नपुर, मारवाड़	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १३५
१८.	१३३४	वैशाख सुदि ५ गुरुवार	भट्टेश्वरसूरि के शिष्य नरचन्द्रसूरि	जिनप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पंचायती मंदिर, जयपुर	विनयसागर, संपा० प्रतिष्ठा लेखसंग्रह, भाग-१, लेखांक ८६
१९.	१३३४	वैशाख सुदि ५ गुरुवार	देवभद्रसूरि के के संतानीय पं० सोमचन्द्र	कायोत्सर्ग जिनप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैन मंदिर, तिवारी, सिरोही	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक २०९०
२०.	१३३५	चैत्र वदि ५ रविवार	पद्मचन्द्रसूरि के पट्टधर शालिभद्रसूरि	शालिभद्रसूरि की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ देरासर, लाडोल	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १ लेखांक ४५६

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
			के शिष्य रविचन्द्रसूरि और धर्मचन्द्रसूरि			
२१.	१३३९	तिथि विहीन	धर्मदेवसूरि	नेमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीर जिनालय, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग ३, लेखांक २४१६
२२.	१३४०	ज्येष्ठ सुदि १३ रविवार	देवप्रभसूरि के संतानीय अमरभद्रसूरि के पट्टधर अजितदेवसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	सुपार्श्वनाथ का बड़ा पंचायती जैन मंदिर जयपुर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १ लेखांक ११३४

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२३.	१३४...?	... ५ रविवार	रत्नप्रभसूरि के पद्मप्रभसूरि	पार्श्वनाथ की धातु- प्रतिमा का लेख	नवखंडा पार्श्वनाथ जिनालय, भोंयरापाडो, खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ८७९
२४.	१३५२	फाल्गुन सुदि १ बुधवार	गुणचन्द्रसूरि	वासूपूज्य की धातुप्रतिमा का लेख	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर	आचार्य विजय धर्मसूरि, संपा० प्राचीनलेखसंग्रह लेखांक ५० एवं नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १०४१
२५.	१३५४	माघ वदि ५	धर्मदेवसूरि	पार्श्वनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, माणिक चौक, खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ८२६

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२६.	१३५८ (?)	वैशाख सुदि ६	रत्नसिंहसूरि	धातु प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक २८१
२७.	१३६१	तिथि विहीन	वर्धमानसूरि के शिष्य जयसेन उपाध्याय	स्तम्भ लेख	लूणवसही, आबू	मुनि जयन्तविजय, पूर्वोक्त, लेखांक ३८४
२८.	१३६९	तिथि विहीन	आमदेवसूरि	महावीर की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक २४४
२९.	१३६९	फाल्गुन सुदि ९ सोमवार	अजितदेवसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	प्राचीन जैन मंदिर, लाल बाग, मुम्बई	मुनि कान्तिसागर, संपा० जैनधातु- प्रतिमालेख, लेखांक २३

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
३०.	१३७१	आषाढ़ सुदि ३ गुरुवार	श्री उद...?	महावीर की धातु प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, भावरी ग्राम, सिरौही	मुनि जयन्तविजय, संपा० अर्बुदाचल- प्रदक्षिणाजैन- लेखसंदोह, लेखांक ५२४
३१.	१३७३	वैशाख सुदि ७ सोमवार	पद्मदेवसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मन्दिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक २५३
३२.	१३७८	वैशाख सुदि ६ बुधवार	रत्नसिंहसूरि	जिन प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	"	वही, लेखांक २७६
३३.	१३७८	ज्येष्ठ	हेमप्रभसूरि के	सुमतिनाथ की	विमलवसही, आबू	मुनि जयन्तविजय,

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
		वदि ९ सोमवार	शिष्य रामचन्द्रसूरि	प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख		संपा० अर्बुद- प्राचीनजैनलेख- संदोह, लेखांक १३९ एवं मुनि जिनविजय, संपा० प्राचीनजैन- लेखसंग्रह भाग २, लेखांक २०२
३४.	१३८९	वैशाख सुदि १	धम्मदेवसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग ३ लेखांक २४९
३५.	१३८६	माघ वदि २ सोमवार	पद्मदेवसूरि के पट्टधर मानदेवसूरि	शान्तिनाथ की धातुप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, जानीशेरी, बडोदरा स्तम्भन पार्श्वनाथ	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १५०

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
३६.	१३८७	माघ वदि ९ शुक्रवार	”	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	स्तम्भन पार्श्वनाथ जिनालय, खारवाड़ा, खंभात	वही, भाग २, लेखांक १०४१
३७.	१३...?	फाल्गुन सुदि ८	मानदेवसूरि	”	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ३८१
३८.	१३८८	मार्गशीर्ष सुदि ९ शनिवार	मदनसूरि के पट्टधर धर्मसिंहसूरि	महावीर की धातु की प्रतिमा का लेख	वही	वही, लेखांक ३२६
३९.	१३८८	वैशाख वदि २ सोमवार	हरिचंद्रसूरि	शान्तिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	जैन देरासर, कोलवडा	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ६५९
४०.	१३८५	तिथि- विहीन	आमदेवसूरि	”	चन्द्रप्रभ जिनालय, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग ३, लेखांक २२५५

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
४०. अ	१३९१	चैत्र वदि ७	मानदेवसूरि	पद्मदेवसूरि के शिष्य भीमा की मूर्ति पर उत्कीर्ण लेख	शत्रुञ्जय	मधुसूदन ढांकी और लक्ष्मण भोजक “शत्रुञ्जयगिरिना केटलाक अप्रकट प्रतिमालेखों” सम्बोधि, वर्ष ७, अंक १-४, लेखांक २३
४१.	१३९१	माघ सुदि ६ रविवार	हरिप्रभसूरि के शिष्य धर्मदेवसूरि	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, बडोदरा	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ४९
४२.	१३९२	माघ	पद्मदेवसूरि के	नमिनाथ की धातु	सीमंधरस्वामी का	वही, भाग २

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
	(३)	वदि ११ शुक्रवार	शिष्य मानदेवसूरि	की प्रतिमा का लेख	मंदिर, खारवाडो, खंभात	लेखांक १०६८
४३.	१३९६	माघ वदि २ सोमवार	मानदेवसूरि	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ देरासर, देवसानो पाडो, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक १०९३
४४.	१३९७	माघ... १....	”	”	शांतिनाथ जिनालय, छाणी, बडोदरा	वही, भाग २, लेखांक २५६
४५.	१४०५	वैशाख सुदि २	धर्मदेवसूरि	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ देरासर, कनासा पाडो, पाटण	वही, भाग १, लेखांक ३५७
४६.	१४०८	वैशाख	पद्मदेवसूरि के	शांतिनाथ की	शीतलनाथ जिनालय,	वही, भाग २,

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
		सुदि ५ गुरुवार	पट्टधर मानदेवसूरि	धातुप्रतिमा का लेख	कुंभारपाडो, खंभात	लेखांक ६५०
४७.	१४१७	ज्येष्ठ सुदि ९ गुरुवार	मानदेवसूरि	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ देरासर, कनासा पाडो, पाटण	वही, भाग १, लेखांक ३२४
४८.	१४२२	वैशाख सुदि १२ बुधवार	मुनिरत्नसूरि	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ४४९
४९.	१४२४	आषाढ़ सुदि ६ गुरुवार	धर्मदेवसूरि	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	वही	वही, लेखांक ४७०
५०.	१४३०	आषाढ़	धर्मदेवसूरि	शांतिनाथ की	संभवनाथ देरासर,	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
		सुदि ६ गुरुवार		धातु की प्रतिमा का लेख	पादरा	भाग २, लेखांक १४
५०.अ.	१४३२	फाल्गुन सुदि २ शुक्रवार	गुणाकरसूरि के शिष्य रत्नभसूरि की प्रतिमा के प्रतिष्ठापक उनके शिष्य गुणसमुद्रसूरि	गुरु-प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख		मधुसूदन ढांकी और लक्ष्मण भोजक, “शत्रुंजयगिरिना केटलाक अप्रकट प्रतिमालेखो” सम्बोधि, जिल्द ७, अंक १-४ लेखांक २७
५१.	१४३५	माघ	गुणदेवसूरि	पार्श्वनाथ की	चिन्तामणि जिनालय,	नाहटा, पूर्वोक्त,

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
		वदि १३ सोमवार		धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	बीकानेर	लेखांक ५१६
५२.	१४४६	वैशाख वदि .	देवचन्द्रसूरि के पट्टधर पार्श्वचन्द्रसूरि	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ मुख्य बावन जिनालय, मातर	बुद्धिसागरसूरी, पूर्वोक्त, भाग २,
५३.	१४५१	ज्येष्ठ सुदि ४ रविवार	पासदेवसूरि	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, ऊंझा	वही, भाग १, लेखांक १५५
५४.	१४५८	फाल्गुन वदि १ शुक्रवार	वीरचन्द्रसूरि	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ५८५
५५.	१४६६	वैशाख	धर्मदेवसूरि के	शांतिनाथ की	संभवनाथ जिनालय,	बुद्धिसागर,

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
		सुदि ३ सोमवार	पट्टधर पार्श्वचन्द्रसूरि	धातु की प्रतिमा का लेख	बोलपीपलो, खंभात	पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ११३३
५६.	१४६६	मार्गशीर्ष सुदि १० बुधवार	वीरचन्द्रसूरि	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ३२९
५६.अ.	१४६९	माघ सुदि ९ रविवार	वीरचन्द्रसूरि	संभवनाथ की एकतीर्थी प्रतिमा का लेख	पुरातत्त्व संग्रहालय, सिरोही	सोहनलाल पटनी, अर्बुदपरिमंडल की जैनधातु प्रतिमायें, लेखांक १०५, पृ. ६४-६५
५६.ब.	१४७०	तिथि	वीरचन्द्रसूरि	आदिनाथ की	वही	वही,

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
		विहीन		एकतीर्थी प्रतिमा का लेख		लेखांक १०७ पृ० ६५
५७.	१४७४	फाल्गुन सुदि ९ सोमवार	पार्श्वचन्द्रसूरि के शिष्य मलयचन्द्रसूरि	वही	धर्मनाथ देरासर, उपलो गभारो, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरी, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १११३
५८.	१४७७	वैशाख सुदि ५	गुणदेवसूरि	अनन्तनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ देरासर, छाणी, बड़ोदरा	वही, भाग २, लेखांक २६७
५९.	१४७७	वैशाख सुदि ५	गुणदेवसूरि	शांतिनाथ की धातु की चौबीसी	सहस्रफणा पार्श्वनाथ जिनालय,	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त,

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
				प्रतिमा का लेख	बम्बावाली शेरी, राधनपुर	लेखांक १००
६०.	(१४) ७८	वैशाख सुदि ६ सोमवार	जयानन्दसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	अनुपूर्तिलेख, आबू	अर्बुदप्राचीन- जैनलेखसंदोह, लेखांक ६६०
६१.	१४८४	वैशाख सुदि ११ रविवार	जिनदत्त (देव) सूरि	धातु की चौबीसी जिनप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	कल्याण पार्श्वनाथ देरासर, बीसनगर	बुद्धिसागरसूरी, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ५३४
६२.	१४८७	मार्गशीर्ष सुदि ९ शुक्रवार	जिनदेवसूरि	श्रेयांसनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	मुनिसुव्रतनाथ जिनालय, खारवाडो, खंभात	वही, भाग २, लेखांक १०२५
६३.	१४९३	माघ	धनदेवसूरि	पार्श्वनाथ की	आदिनाथ जिनालय,	नाहटा, पूर्वोक्त,

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
		सुदि ८ शनिवार		धातु की प्रतिमा का लेख	राजलेदेसर	लेखांक २३४७
६४.	१४९९	कार्तिक सुदि १५ गुरुवार	...तिलकसूरि	धर्मनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	वीरजिनालय, बीकानेर	वही, लेखांक १३४१
६५.	१४९९	माघ सुदि ६ सोमवार	मुनितिलकसूरि के पट्टधर गुणाकरसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, सेठों की हवेली के पास, उदयपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २ लेखांक १९०१
६६.	१४९९	फाल्गुन वदि २ गुरुवार	जयानन्दसूरि, मुनितिलकसूरि, गुणाकरसूरि	मुनिसुव्रत की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, सरदारशहर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक २३८४
६७.	१५००	वैशाख	श्री सूरि	शांतिनाथ की	शांतिनाथ जिनालय,	मुनि विशालविजय,

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
		सुदि ५ गुरुवार		धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	कडुवामत की शेरी, राधनपुर	पूर्वोक्त, लेखांक १३२
६८.	१५०१	माघ सुदि १०	सुमतिसूरि, गुणाकरसूरि सोमवार	चन्द्रप्रभ की चौबीसी प्रतिमा	पंचायती मंदिर, जयपुर का लेख	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग - १ लेखांक ३४६
६९.	१५०१	फाल्गुन सुदि १३ शनिवार	मुनितिलकसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	वही	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ११४५
७०.	१५०३	मार्गशीर्ष वदि १०	„	संभवनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ-जिनालय, रतलाम	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १ लेखांक ३७०
७१.	१५०३	मार्गसिर	मलयचन्द्रसूरि	सुमतिनाथ	चन्द्रप्रभ जिनालय,	नाहर, पूर्वोक्त,

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
		सुदि ६			जैसलमेर	भाग ३, लेखांक २३२०
७२.	१५०४	माघ सुदि ५ रविवार	गुणाकरसूरि के सानिध्य में मुनितिलकसूरि	श्रेयांसनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ९०४
७३.	१५०५	माघ वदि ७	मुनितिलकसूरि	मुनिसुव्रत की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, रतलाम	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ३९७
७४.	१५०६	माघ वदि ३ गुरुवार	„	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ९००
७५.	१५०६	माघ	„	धर्मनाथ की	अस्पष्ट	नाहर, पूर्वोक्त,

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्वाम्यलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
		सुदि ५		प्रतिमा का लेख		भाग १, लेखांक २१३
७६.	१५०७	भाद्रपद सुदि १३ शुक्रवार	गुणदेवसूरि के संतानीय जिनदेवसूरि	सुविधिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, पायधुनी, मुम्बई	मुनि कान्तिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १०६
७७.	१५०७	माघ सुदि ५ गुरुवार	मुनितिलकसूरि	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	बावन जिनालय, पेथापुर	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ७०४
७८.	१५०८	वैशाख सुदि ५ सोमवार	“	धर्मनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, पटना(बिहार)	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक २७७
७९.	१५०८	वैशाख	“	श्रेयांसनाथ की	गौड़ी पार्श्वनाथ	मुनि कान्तिसागर,

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
		सुदि ५ सोमवार		धातु की प्रतिमा का लेख	जिनालय, पायधुनी, मुम्बई	पूर्वोक्त, लेखांक १११
८०.	१५०८	मार्गशीर्ष वदि २ बुधवार	मुक्तावि....सूरि	आदिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	पंचायती मंदिर, जयपुर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ४३४
८१.	१५०८	मार्गशीर्ष सुदि ३ शुक्रवार	गुणदेवसूरि के के संतानीय जिनदेवसूरि	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, बोटाड	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक २३५
८२.	१५०९	माघ वदि ९ मंगलवार	वीरदेवसूरि के पट्टधर पासदेवसूरि	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, चांदवाड, नासिक	मुनि कान्तिसागर, पूर्वोक्त, लेखांक ११५
८३.	१५११	ज्येष्ठ वदि ९	गुणदेवसूरि के संतानीय जिनदेवसूरि	कुन्धुनाथ की धातु की पंचतीर्थी	नेमिनाथ जिनालय, सेठ की शेरी,	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त,

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
		रविवार	के पट्टधर रत्नदेवसूरि	प्रतिमा का लेख	राधनपुर	लेखांक १७६
८४.	१५१२	वैशाख वदि ३	"	विमलनाथ की धातु की चौबीसी	शांतिनाथ देरासर, वीसनगर	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग १,
८५.	१५१२	शुक्रवार पौष वदि ५	मुनितिलकसूरि	प्रतिमा का लेख शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चौमुख शांतिनाथ देरासर, अहमदाबाद	लेखांक ५०४ वही, भाग १, लेखांक ८९५
८६.	१५१३	वैशाख वदि ५ शनिवार	गुणदेवसूरि के संतानीय रत्नदेवसूरि	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	कल्याण पार्श्वनाथ देरासर, मामा की पोल, बड़ोदरा	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ३२
८७.	१५१३	वैशाख सुदि ५ शुक्रवार	मुनितिलकसूरि के पट्टधर गुणाकरसूरि	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, नागौर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ५०५

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
८८.	१५१३	माघ वदि ५	गुणाकरसूरि	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १७५
८९.	१५१३	माघ वदि ५ रविवार	”	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	धर्मनाथ जिनालय, बड़ा बाजार, कलकत्ता	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १०१
९०.	१५१५	ज्येष्ठ सुदि ५	रामदेवसूरि	कुन्धुनाथ की प्रतिमा का लेख	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर	वही, भाग २, लेखांक १०९०
९१.	१५१५	मार्गशीर्ष वदि ११	मुनितिलकसूरि पट्टधर गुणाकरसूरि	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १८५
९२.	१५१७	माघ वदि १२ गुरुवार	”	श्रेयांसनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	वही,	वही, लेखांक १००३

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
९३.	१५१९	आषाढ वदि ९ शनिवार	”	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, अलवर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ९९२
९४.	१५११	पौष वदि १३ मंगलवार	श्रीसूरि	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	संभवनाथ देरासर झवेरीवाड, अहमदाबाद	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ८६४
९५.	१५२३	वैशाख वदि ४ गुरुवार	गुणदेवसूरि के पट्टधर रत्नदेवसूरि	कुशुनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	शंखेश्वरपार्श्वनाथ- देरासर, वीरमगाम	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १५०५
९६.	१५२४	वैशाख सुदि ३ सोमवार	...	मुनिसुव्रत की धातु की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, शेखनो पाडो, अहमदाबाद	वही, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १०१९

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
९७.	१५२४	वैशाख सुदि ६ गुरुवार	रामचन्द्रसूरि	कुन्धुनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, भरुच	वही, भाग २, लेखांक ३१२
९८.	१५२५	ज्येष्ठ सुदि ५ बुधवार	गुणदेवसूरि के संतानीय जिनदेवसूरि	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	बालावसही, शत्रुंजय	मुनि कान्तिसागर, शत्रुञ्जयवैभव, लेखांक १८७
९९.	१५२७	ज्येष्ठ वदि ४ बुधवार	सोमकीर्तिसूरि?	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १२२६
१००.	१५२७	आषाढ़ सुदि १३ रविवार	सोमकीर्तिसूरि के पट्टधर चारुचन्द्रसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १०९४

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१०१.	१५२७	माघ सुदि ९ बुधवार	साधुकीर्तिसूरि, चारुचन्द्रसूरि	धर्मनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १०५४
१०२.	१५२८	चैत्र वदि १० गुरुवार	ज्ञानदेवसूरि	शांतिनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	गौड़ी पार्श्वनाथ जिनालय, गौड़ीजी की खड़की, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक २५७
१०३.	१५२९	माघ वदि ६ रविवार	सोमकीर्तिसूरि	चन्द्रप्रभ की प्रतिमा का लेख	पंचायती जैन मंदिर, मिर्जापुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ४३२
१०४.	१५३१	फाल्गुन सुदि ८ शनिवार	सोमकीर्तिसूरि के पट्टधर वीरचन्द्रसूरि	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर	वही, भाग २, लेखांक १०९६

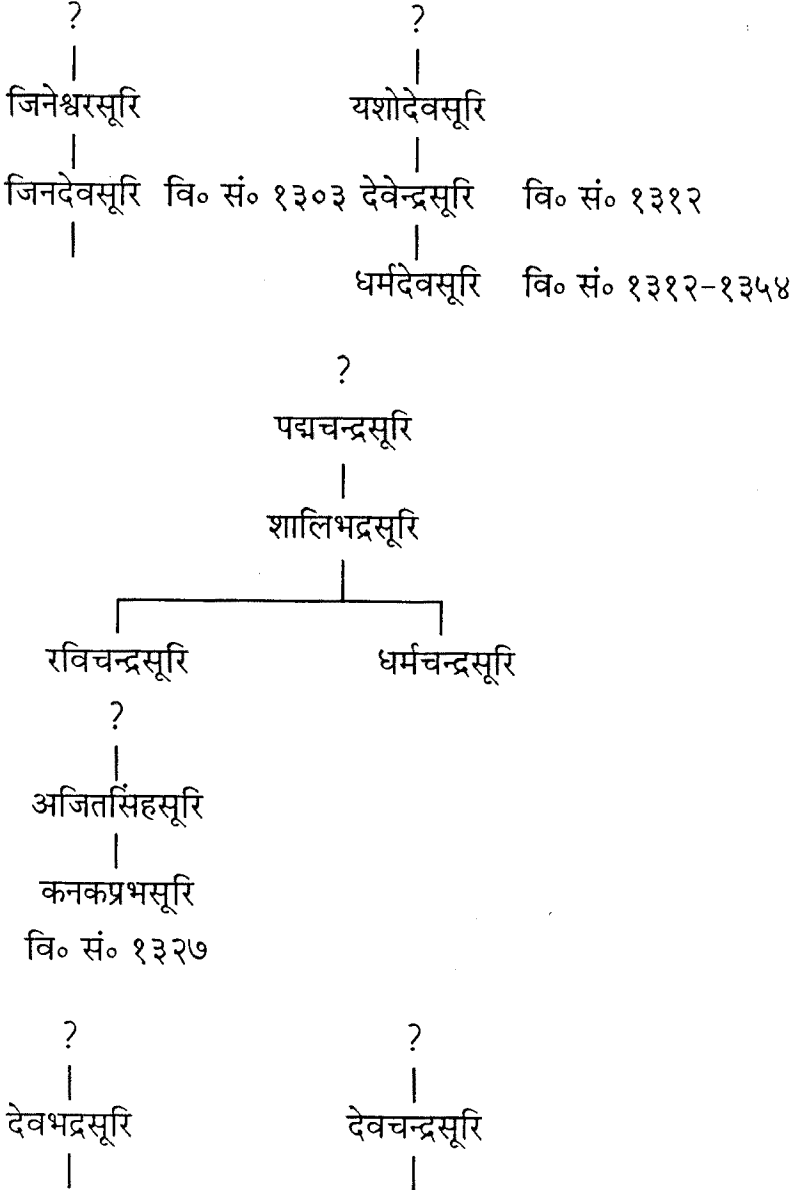
क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१०५.	१५३४	वैशाख वदि १३ सोमवार	सोमकीर्तिसूरि के पट्टधर वारवैन्द्र (वीरचन्द्र) सूरि	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, भद्रावती	मुनि कान्तिसागर, जैनधातुप्रतिमा- लेख, भाग १, लेखांक २२७
१०६.	१५४७	ज्येष्ठ वदि ४ मंगलवार	सोमकीर्तिसूरि के पट्टधर चारुचन्द्रसूरि	धर्मनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	संभवनाथ देरासर, झवेरीवाड, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरी, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ८४२
१०७.	१५३८	वैशाख वदि ५ बुधवार	रत्नदेवसूरि के पट्टधर अमरदेवसूरि	चन्द्रप्रभ की धातु की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ का बड़ा चैत्य, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त, लेखांक २१३
१०८.	१५४०	मार्गशीर्ष सुदि ५	सोमकीर्तिसूरि के पट्टधर चारुचन्द्रसूरि	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा का लेख	विमलनाथ जिनालय, कोचरों का चौक, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १५८३

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१०९.	१५४२	वैशाख सुदि ९	सोमकीर्तिसूरि	आदिनाथ की पाषाण की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, हनुमानगढ़, बीकानेर	वही, लेखांक २५३६
११०.	१५४३	वैशाख वदि १० शुक्रवार	सोमदेवसूरि	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ देरासर, अहमदाबाद	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ९१९
१११.	१५४८	कार्तिक सुदि ११ गुरुवार	”	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर पंजाबी धर्मशाला, पालिताना	शत्रुञ्जयवैभव, लेखांक २४३
११२.	१५४८	कार्तिक सुदि ११ गुरुवार	”	चन्द्रप्रभ की प्रतिमा का लेख	बड़ा मंदिर, पालिताना	वही, लेखांक २४१ एवं नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ३७६

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
११३.	१५५९	माघ सुदि १०	भुवनकीर्तिसूरि	श्रेयांसनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिना., बासा, सिहोरी	अर्बुदाचल- प्रदक्षिणाजैन- लेखसंदोह, लेखांक ५५३
११४.	१५५६	वैशाख सुदि ७	भुवनकीर्तिसूरि	अजितनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १३६८
११५.	१५५८	माघ सुदि ५ बुधवार	गुणदेवसूरि के संतानीय रत्नदेवसूरि	चन्द्रप्रभ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ देरासर, ऊंझा	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक २१३
११६.	१५७९	तिथि विहीन	वीरदेवसूरि के पट्टधर पासदेवसूरि	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	संभवनाथ देरासर, कड़ी	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ७३७

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
११७.	१५९१	वैशाख वदि २ सोमवार	वीरचन्द्रसूरि	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ देरासर, देवसा पाडो, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक १०८२
११८.	१५९१	वैशाख वदि २ सोमवार	”	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	अजितनाथ जिना, शेखपाडो, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक १००२
११९.	१५९१	वैशाख वदि ६	विजयदेवसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	कपड़वज का मंदिर, शत्रुञ्जय	शत्रुञ्जयवैभव, लेखांक २८५

अभिलेखीय साक्ष्यों की पूर्वोक्त सूची से यद्यपि चैत्रगच्छीय अनेक मुनिजनों के नाम ज्ञात होते हैं, किन्तु उनमें से कुछ के पूर्वापर सम्बन्ध ही ज्ञात हो पाते हैं, जो इस प्रकार हैं:



सोमचन्द्रसूरि

अमरप्रभसूरि

वि० सं० १३३४

अजितदेवसूरि वि० सं० १३३३ - १३६९

?

?

हेमप्रभसूरि

रत्नप्रभसूरि

रामचन्द्रसूरि वि० सं० १३७८ पद्मप्रभसूरि वि० सं० १३२४-१३४...?

?

?

पद्मदेवसूरि वि० सं० १३७३ मदनसूरि

मानदेवसूरि

धर्मसिंहसूरि

(वि० सं० १३८६-१४१७) (वि० सं० १३८८)

?

?

हरिप्रभसूरि

देवचन्द्रसूरि

धर्मदेवसूरि

पार्श्वचन्द्रसूरि

(वि० सं० १३९१ - १४३०) (वि० सं० १४४९)

पार्श्वचन्द्रसूरि (वि० सं० १४४६-१४६६)

मलयचन्द्रसूरि (वि० सं० १४७४-१५०३)

?

?

गुणदेवसूरि

जयानन्दसूरि

(वि० सं० १५३५ - १५७७)

|
जिनदेवसूरि|
मुनितिलकसूरि

(वि० सं० १५०७-१५०८) (वि. सं. १५०१-१५०८)

|
रत्नदेवसूरि|
गुणाकरसूरि

(वि० सं० १५११ - १५५८)(वि० सं० १४९९-१५१९)

?

|
वीरदेवसूरि|
पासदेव (पार्श्वदेव) सूरि

(वि० सं० १५०९)

?

|
सोमकीर्तिसूरि|
चारुचन्द्रसूरि|
वीरचन्द्रसूरि

(वि० सं० १५२७ - १५४०) (वि० सं० १५३१ - १५३४)

परन्तु इन सबको मिला कर भी चैत्रगच्छीय मुनिजनों की गुरु-शिष्य परम्परा की नामावली की अविच्छिन्न तालिका का पुनर्गठन कर पाना कठिन है।

जैसा कि पीछे हम देख चुके हैं साहित्यिक साक्ष्यों के अन्तर्गत सम्यक्त्वकौमुदी (रचनाकाल वि० सं० १५०४ / ई० सन् १४४८) और

भक्तामरस्तवव्याख्या (रचनाकाल वि० सं० १५२४ / ई० सन् १४६८) के कर्ता चैत्रगच्छीय गुणाकरसूरि का नाम आ चुका है। किन्तु वे किसके शिष्य थे, यह बात उक्त साक्ष्य से ज्ञात नहीं होता। अभिलेखीय साक्ष्यों में जयानन्दसूरि के पट्टधर मुनितिलकसूरि (वि० सं० १५०१-१५०८, प्रतिमालेख) के शिष्य गुणाकरसूरि (वि० सं० १४९९ - १५१९, प्रतिमालेख) का उल्लेख मिलता है। अतः समसामयिकता के आधार पर मुनितिलकसूरि के पट्टधर गुणाकरसूरि को सम्यक्त्वकौमुदी आदि के कर्ता गुणाकरसूरि से अभिन्न माना जा सकता है।

?

जयानन्दसूरि

|

मुनितिलकसूरि (वि० सं० १५०१ - १५०८) प्रतिमालेख

|

गुणाकरसूरि (वि० सं० १४९९ - १५१९) प्रतिमालेख

(वि० सं० १५०४ / ई० सन् १४४८ में

सम्यक्त्वकौमुदी और वि. सं.

१५३४/ई० सन् १४६८ में

भक्तामरस्तवव्याख्या के रचनाकार)

ठीक इसी प्रकार चैत्रगच्छीय सोमकीर्तिसूरि के शिष्य चारुचन्द्रसूरि (वि० सं० १५२७-१५४०, प्रतिमालेख) और वि० सं० १५५४ / ई० सन् १४९८ में प्रतिलिपि की गयी भक्तामरस्तवव्याख्या की दाताप्रशस्ति में उल्लिखित चैत्रगच्छीय चारुचन्द्रसूरि एक ही व्यक्ति मालूम पड़ते हैं :

?

|

सोमकीर्तिसूरि

(वि० सं० १५२७-१५४२, प्रतिमालेख)

चारुचन्द्रसूरि	वीरचन्द्रसूरि
(वि०सं० १५२७ - १५४०, प्रतिमालेख)	(वि०सं० १५३१-१५३४, प्रतिमालेख)
(वि० सं० १५५४/ई० सन् १४९८ में लिपिबद्ध की गयी भक्तामरस्तवव्याख्या की दाता प्रशस्ति में उल्लिखित)	

चैत्रगच्छ की शाखायें

जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है, साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों से चैत्रगच्छ की कई शाखाओं का पता चलता है। इनका अलग-अलग विवरण इस प्रकार है :

१. भर्तृपुरीयशाखा : जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट है, चैत्रगच्छ की इस शाखा का नामकरण भर्तृपुर (वर्तमान भटेवर, राजस्थान) नामक स्थान से हुआ प्रतीत होता है। इस शाखा से सम्बद्ध चार लेख मिले हैं, प्रथम लेख वि० सं० १३०३ का है और करेड़ा से प्राप्त हुआ है। द्वितीय लेख वि० सं० १३३४ / ई० सन् १२७८ का है और चित्तौड़ से प्राप्त हुआ है। तृतीय लेख वि० सं० १३३८ का है। चतुर्थ लेख... १४ का है, अर्थात् इसके प्रथम दो अंक नष्ट हो गये हैं। श्री पूरनचन्द नाहर और विजयधर्मसूरि ने वि० सं० १३०३ / ई० सन् १२४७ के लेख की वाचना इस प्रकार दी है^{१२} :

“संवत् १३०३ वर्षे चैत्र वदि ४ सोमदिने श्रीचैत्रगच्छे श्रीभद्रेश्वरसंताने भर्तृपुरीयवत्स श्रे० भीम अर्जुन कडवट श्रे० चूडा पुत्र श्रे० वयजा धांधल पासड उदाविभिः कुटुंबसमेतैः ... प्रतिमा कारिता प्रति० श्री जिनेश्वरसूरिशिष्यैः श्रीजिनदेवसूरिभिः ॥”

तीर्थङ्कर की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्रतिष्ठास्थान - पार्श्वनाथ जिनालय, करेड़ा

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है भर्तृपुरीय शाखा से सम्बद्ध द्वितीय लेख वि० सं० १३३५ / ई० सन् १२७८ का है, जो चित्तौड़ से प्राप्त हुआ है।^{१३} यह अभिलेख श्याम पार्श्वनाथ के मंदिर में लगा था जो मंदिर नष्ट हो जाने से चित्तौड़ के प्राचीन महलों के एक चौक में गौरीशंकर हीराचंद ओझा को गड़ा हुआ मिला। उन्होंने इसे उदयपुर संग्राहलय में सुरक्षित रखवा दिया^{१४}। संस्कृत भाषा में लिपिबद्ध इस लेख में ५ पंक्तियां हैं। डॉ० गोपीनाथ शर्मा के अनुसार यह लेख ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस लेख के अनुसार चैत्रगच्छ की भर्तृपुरीय शाखा के आचार्य (अभिलेख का मूलपाठ उपलब्ध न हो पाने के कारण इनका नाम ज्ञात न हो सका) के उपदेश से रावल तेजसिंह की रानी जयतल्लदेवी ने चित्तौड़ में श्याम पार्श्वनाथ का मंदिर बनवाया। इस लेख से यह भी ज्ञात होता है कि इसी जिनालय के पिछले भाग की भूमि महारावल समरसिंह ने चैत्यालय और मंदिर के व्यय के लिये दान में दिया था। यह लेख वि० सं० १३३५ वैशाख सुदि ५ गुरुवार का है। एक शैव शासक की रानी द्वारा एक जैन आचार्य के उपदेश से जिनालय का निर्माण कराना और उसी वंश के दूसरे शासक द्वारा उक्त जिनालय और उससे सम्बद्ध उपाश्रय के लिये भूमि दान में देना उस समय के शासकों द्वारा पालन किये जा रहे धार्मिक सहिष्णुता की नीति का अनुपम उदाहरण है। इस लेख से यह भी ज्ञात होता है कि उस काल में विभिन्न नगरों के व्यापारिक संगठनों से प्राप्त कर का कुछ भाग धार्मिक कार्यों में भी लगाया जाता था।

भर्तृपुरीय शाखा से सम्बद्ध तृतीय लेख वि० सं० १३३८ / ई० सन् १२८२ का है, जो शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण है। मुनि जयन्तविजयजी^{१५} ने इस लेख की वाचना इस प्रकार दी है :

“संवत् १३३८ श्री चैत्रगच्छे भर्तृपुरीय सा० खुनिया भा० होली पु० हरपा केशव वाण रावण बेल पु० नरसिंह खीमड हरिचंदेण निजपूर्वजपित्रोः श्रेयार्थं श्रीशांतिनार्थबिब का० श्रीवर्धमानसूरिभिः ॥”

शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

अनुपूर्ति लेख, आबू

इस शाखा से सम्बद्ध चतुर्थ लेख वि० सं० xx१४ का है। यह चित्तौड़ से प्राप्त हुआ है। त्रिपुटी महाराज ने इसकी वचना इस प्रकार दी है^{१६} :

“संवत् xx१४ वर्षे मार्गसुदि ३ श्री चैत्रपुरीयगच्छे श्रीबुडागणि भतृपुर महादुर्ग श्री गुहिलपुत्रवि xxx हार श्रीबडादेव आदिजिन वाभांग दक्षिणाभिमुखद्वारगुफायां कलिं श्रुतदेवीनां चतु xxलानां चतुर्णां विनायकानां पादुकाघटितसहसाकारसहिता श्रीदेवी चित्तोडरी मूर्ति xx श्रीभ्र(भ)तृगच्छीय महाप्रभावक श्रीआम्रदेवसूरिभिः xxxश्री सा० सामासु सा० हरपालेन श्रेयसे पुण्योपार्जना x व्यधियते।”

यद्यपि इस लेख के प्रथम दो अंक नष्ट हो गये हैं, फिर भी लेख की भाषा शैली पर राजस्थानी भाषा के प्रभाव को देखते हुए इसे १६वीं शती के प्रारम्भ अर्थात् वि० सं० १५१४ का माना जा सकता है।

भर्तृपुरीय शाखा से सम्बद्ध उक्त लेखों से यद्यपि कई मुनिजनों के नाम ज्ञात होते हैं, किन्तु उनके आधार पर इस शाखा के मुनिजनों की गुरु-परम्परा की कोई लम्बी तालिका नहीं बन पाती है।

२. थारणपट्टीय शाखा - यद्यपि प्रतिमालेखों में ‘धारणपट्टीय’ नाम मिलता है, जो संभवतः थारणपट्टीय होना चाहिए। इस शाखा से सम्बद्ध २५ प्रतिमालेख प्राप्त हुए हैं, जो वि० सं० १४०० से वि० सं० १५८२ तक के हैं। इनका विवरण इस प्रकार है :

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१.	१४००	तिथिनष्ट	राजदेवसूरि	शांतिनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	धर्मनाथ जिनालय, उपलो गभारो, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १०१९
२.	१४५७	आषाढ़ सुदि ५ गुरुवार	पासदेवसूरि	श्रेयांसनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	संभवनाथ देरासर, झवेरीवाड़, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक ८६६
३.	१५०६	पौष वदि ६	विजयदेवसूरि	सुविधिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, पादरा	वही, भाग २, लेखांक ५
४.	१५०७	वैशाख वदि ११ सोमवार	लक्ष्मीदेवसूरि	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	अजितनाथ जिनालय, शेखनो पाडो, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक १९८

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
५.	१५०७	वैशाख वदि ११ सोमवार	”	कुन्धुनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, मांडल	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक २३०
६.	१५११	माघ सुदि ५	”	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ चैत्य, थराद	दौलतसिंह लोढ़ा, पूर्वोक्त, लेखांक ६७
७.	१५१३	पौष वदि ५ रविवार	”	नमिनाथ का धातुप्रतिमा का लेख	आदिनाथ देरासर जामनगर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक २८४
८.	१५१३	पौष वदि ५ रविवार	”	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर चैत्य, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त, लेखांक १७

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
९.	१५१३	पौष वदि ५ रविवार	"	"	"	वही, लेखांक ३
१०.	१५१७	ज्येष्ठ सुदि ५	"	कुन्धुनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	जैन देरासर, महुवा	विजयधर्मसूत्र, पूर्वोक्त, लेखांक ३
११.	१५१७	ज्येष्ठ सुदि	"	सुमतिनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, भानीपोल, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त लेखांक २१२
१२.	१२१७	पौष वदि ५ गुरुवार	"	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	मोतीसा की टूंक, शत्रुञ्जय	शत्रुञ्जयवैभव, लेखांक १५१

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१३.	१२१७	पौष वदि ५ गुरुवार	"	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ देरासर, अहमदाबाद	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १०३१
१४.	१२१७	पौष वदि ५ गुरुवार	"	कुन्धुनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, सुल्तानपुरा, बड़ोदरा	वही, भाग २, लेखांक ११९
१५.	१५१७	माघ सुदि १०	"	धर्मनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	नेमिनाथ जिना. सेठ की शेरी, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक २०७
१६.	१५२२	तिथि विहीन	"	धर्मनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ देरासर, जामनगर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ३६६

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१७.	१५२४	चैत्र वदि ५	”	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ चैत्य,	लोढा, पूर्वोक्त, लेखांक १५५
१८.	१५२७	कार्तिक वदि २ शनिवार	ज्ञानदेवसूरि	नमिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिना., लिंबडीपाड़ा, पाटन	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक २८४
१९.	१५२८	चैत्र वदि १ गुरुवार	”	धर्मनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ देरासर, जामनगर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ४१४
२०.	१५२८	पौष वदि ३ सोमवार	”	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ चैत्य, थराद	लोढा, पूर्वोक्त, लेखांक ३७

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२१.	१५२८	तिथि विहीन	”	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, जानीशेरी, बड़ोदरा	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग २, लेखांक १५३
२२.	१५३०	पौष... रविवार	लक्ष्मीदेवसूरि के पट्टधर ज्ञानदेवसूरि	शीतलनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	नेमिनाथ जिना. शेठ की शेरी, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक २६८
२३.	१५३२	वैशाख वदि १० शुक्रवार	सोमदेवसूरि	नमिनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख		अगरचन्द नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १८१८
२४.	१५५४	तिथि विहीन	”	नमिनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ देरासर, कडी	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ६४१

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२५.	१५८२	वैशाख सुदि १० शुक्रवार	विजयदेवसूरि	नमिनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, लुआण, थराद	लोढ़ा पूर्वोक्त, लेखांक ३६७

अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर धारणपट्टीय (थारापट्टीय) शाखा के मुनिजनों की तालिका इस प्रकार बनती है :

?
|
लक्ष्मीदेवसूरि (वि० सं० १५०७-१५२८) १४ प्रतिमालेख
|
ज्ञानदेवसूरि (वि० सं० १५२७-१५३०) ५ प्रतिमालेख

?
|
राजदेवसूरि (वि० सं० १४००) १ प्रतिमालेख
|
पासदेवसूरि (वि० सं० १४५७) १ प्रतिमालेख
|
विजयदेवसूरि (वि० सं० १५०६) १ प्रतिमालेख
|
सोमदेवसूरि (वि० सं० १५३२-१५५४) २ प्रतिमालेख
|
विजयदेवसूरि (वि० सं० १५८२) १ प्रतिमालेख

३. चतुर्दशीपक्ष - चैत्रगच्छ की इस शाखा का केवल एक लेख मिला है, जो वि० सं० १५०६ का है। आचार्य बुद्धिसागरसूरि^{१७} ने इस लेख की वाचना इस प्रकार दी है :

“संवत् १५०६ वर्षे माघ सुदि १३ रवौ श्रीश्रीमालज्ञातीयसा. मेलाभा० करमादेसुत श्रीरंग भा० अमरी स्वश्रेयोहेतवे श्रीश्रीचन्द्रप्रभनाथ-मुख्यचतुर्विंशतिपट्टः कारितः चतुर्दशीपक्षे चैत्रगच्छे श्रीगुणदेवसूरिसंताने श्रीजिनदेवसूरिभिः प्रतिष्ठितः शुभं भवतु ॥”

प्रतिष्ठास्थान - श्री अमीझरा पार्श्वनाथ जिनालय, जीरारवाडो, खंभात

४. चंद्रसामीयशाखा - चैत्रगच्छ की इस शाखा से सम्बद्ध कई लेख मिले हैं, जो वि० सं० १५१० से वि० सं० १५४७ तक के हैं। इन सभी लेखों में मलयचन्द्रसूरि के पट्टधर लक्ष्मीसागरसूरि का प्रतिमाप्रतिष्ठापक के रूप में उल्लेख है। इनका विवरण इस प्रकार है :

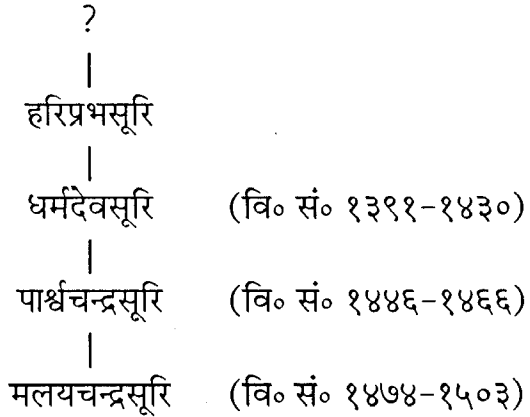
क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१.	१५१०	माघ सुदि ५ शुक्रवार	मलयचन्द्रसूरि के पट्टधर लक्ष्मीसागरसूरि	चन्द्रप्रभ की धातु की प्रतिमा का लेख	महावीर जिना० भोंयराशेरी, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक १६३
२.	१५१८	पौष वदि १३ मंगलवार	”	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	कुंथुनाथ जिना०, मांडवीपोल, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १४५
३.	१५२०	चैत्र वदि ८ शुक्रवार	”	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, भानीपोल, राधनपुर	विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक २२६ एवं विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ३४६

क्रमांक	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
४.	१५२०	चैत्र वदि ८ शुक्रवार	लक्ष्मीसागरसूरि	संभवनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	अजितनाथ जिना. भोंयराशेरी, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक २२८
५.	१५२०	पौष वदि १३ मंगलवार	"	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, कोबा, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ७६९
६.	१५२०	पौष वदि १३ मंगलवार	"	"	जगवल्लभ पार्श्वनाथ देरासर, नीशापोल, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक १११६
७.	१५२१	माघ सुदि १ गुरुवार	"	"	चौमुखजी, देरासर, ईडर	वही, भाग, १, लेखांक १४५७

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
८.	१५२१	माघ सुदि १३(?) गुरुवार	”	सुपार्श्वनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	जगवल्लभ पार्श्वनाथ देरासर, नीशापोल, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ११५५
९.	१५२२	कार्तिक सुदि २ गुरुवार	”	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, डभोई	वही, भाग १, लेखांक १५
१०.	१५२९	ज्येष्ठ वदि १ शुक्रवार	”	कुन्धुनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, पायधुनी, मुम्बई	मुनि कान्तिसागर, पूर्वोक्त, लेखांक २१०
११.	१५२९	ज्येष्ठ सुदि ५ सोमवार	”	शीतलनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, भानी पोल, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक २८०

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१२.	१५३४	कार्तिक सुदि १३ रविवार	"	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	सुपार्श्वनाथ का बड़ा पंचायती मंदिर, जयपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ११६३
१३.	१५३४	"	"	"	गौड़ी पार्श्वनाथ जिनालय, पालिताना	मुनि कांतिसागर, संपा० शत्रुञ्जयवैभव, लेखांक २१६
१४.	१५३६	ज्येष्ठ सुदि ७ मंगलवार	"	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	पंचायती मंदिर, सराफाबाजार, लस्कर, ग्वालियर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १४१०
१५.	१५४७	माघ सुदि १३ रविवार	"	श्रेयांसनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चौमुख शांतिनाथ देरासर, अमहदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ८८४

जैसा कि इस लेख के प्रारम्भ में हम देख चुके हैं अभिलेखीय साक्ष्यों द्वारा चैत्रगच्छीय मलयचन्द्रसूरि की गुरु-परंपरा इस प्रकार निश्चित होती है :



समसामयिकता के आधार पर पार्श्वचन्द्रसूरि के शिष्य मलयचन्द्रसूरि और चैत्रगच्छ की चन्द्रसामीय शाखा के लक्ष्मीसागरसूरि के गुरु मलयचन्द्रसूरि को एक ही व्यक्ति माना जा सकता है। लक्ष्मीसागरसूरि के पश्चात् इस शाखा का कोई उल्लेख नहीं मिलता, अतः यह कहा जा सकता है कि उनके बाद इस शाखा का अस्तित्व समाप्त हो गया होगा। चैत्रगच्छ की यह शाखा चन्द्रसामीय क्यों कहलायी, इस सम्बन्ध में हमें कोई सूचना प्राप्त नहीं होती।

५. **सलषणपुराशाखा** - इस शाखा से सम्बन्ध केवल दो प्रतिमायें मिली हैं, जो वि० सं० १५३० / ई० सन् १४७४ में एक ही तिथि में, एक ही मुहूर्त में और एक ही आचार्य द्वारा प्रतिष्ठापित हुई हैं। ये प्रतिष्ठापक आचार्य हैं चैत्रगच्छीय सलषणपुराशाखा के आचार्य ज्ञानदेवसूरि। आचार्य विजयधर्मसूरि^{१८} ने इन लेखों की वाचना इस प्रकार दी है :

संवत् १५३० वर्षे पो (पौ) ष वदि ६ रवौ श्रीश्री मालज्ञातीय श्रे० देपाल भा० हरपू सुत भूमाकेन भा० माल्हणदे हेदान (नि)मित्तं सुसुवसहितेन

स्वये (श्रे) यस (से) श्रीवासुपूज्यबिंबं क० (का०) श्री चे (चै) त्रगच्छे (च्छे)
श्रीज्ञानदेवसूरिभिः प्रतिष्ठित (ष्ठितं) त... न्य० गाम....

वासुपूज्य की धातुप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्रतिष्ठा स्थान - आदिनाथ जिनालय, जामनगर

॥ संवत् १५३० वर्षे पौष वदि ६ रवौ श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० गेला भा०
पूरी सू० रत्नाकेन भा० रूपिणि द्वि० भा० कीरूसहितेन स्वपितृपूर्वजन् (नि)
मितं (तं) आत्मश्रेयोर्थ श्रीवासुपूज्यबिंबं का० प्र० चैत्रगच्छे सलषणपुरा भ०
श्रीज्ञानदेवसूरिभिः ॥

वासुपूज्य की धातुप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्रतिष्ठास्थान - आदिनाथ जिनालय, जामनगर

चैत्रगच्छीय धारणपद्रीय (थारापद्रीय) शाखा के लक्ष्मीसागरसूरि के
शिष्य ज्ञानदेवसूरि (वि०सं० १५२७-१५३०, प्रतिमालेख) का उल्लेख मिलता
है। ये दोनों ज्ञानदेवसूरि एक ही व्यक्ति हैं या अलग-अलग, इस सम्बन्ध
में निश्चयात्मक रूप से कुछ भी कह पाना कठिन है।

६-७. कम्बोइयाशाखा और अष्टापदशाखा - राजगच्छपट्टवली^{१९}

(रचनाकार, अज्ञात, रचनाकाल वि० सं० की १६वीं शती का अंतिम
चरण) में चैत्रगच्छ की इन दो शाखाओं का उल्लेख है, परन्तु किन्हीं अन्य
साक्ष्यों से उक्त शाखाओं के बारे में जानकारी प्राप्त नहीं हो पाती।

८. शार्दूलशाखा - चैत्रगच्छ की इस शाखा का एकमात्र लेख वि०
सं० १६८६/ ई० सन् १६३० का है।^{२०} इस लेख में राजगच्छ के एक अन्वय
के रूप में चैत्रगच्छ की उक्त शाखा का उल्लेख है। इस शाखा के सम्बन्ध में
अन्यत्र किसी भी प्रकार का कोई विवरण अनुपलब्ध है।

९. देवशाखा - जैसा कि पूर्व में हम देख चुके हैं, दशवैकालिक
सूत्र की वि० सं० १७६८/ ई० सन् १७१२ की प्रतिलिपित प्रशस्ति में
चैत्रगच्छ की देवशाखा का उल्लेख है।^{२१} इस शाखा के प्रवर्तक कौन थे,

यह कब अस्तित्व में आयी, इस बारे में कोई विवरण प्राप्त नहीं होता। चैत्रगच्छ तथा उसकी किसी शाखा का उल्लेख करनेवाला अंतिम साक्ष्य होने से महत्वपूर्ण है।

ऐसा प्रतीत होता है कि भर्तृपुर (भटेवर), थारापद्र (थराद) और सलषणपुर में चैत्रगच्छ के उपाश्रय बन जाने पर वहां क चैत्रगच्छीय आचार्यों के साथ उक्त स्थानवाचक विशेषण जोड़ा जाने लगा होगा। इनमें से सलषणपुरा शाखा का अस्तित्व तो अल्पकाल में ही समाप्त हो गया किन्तु भर्तृपुरीय और थारापद्रीयशाखा का लगभग २०० वर्षों तक अस्तित्व बना रहा।

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि यह गच्छ ईस्वी सन् की १२वीं शती के प्रारम्भ में अस्तित्व में आया और १८वीं शती के प्रथम चरण तक विद्यमान रहा। लगभग ६०० वर्षों के लम्बे इतिहास में इस गच्छ के मुनिजनों ने (गुणाकरसूरि, चारुचन्द्रसूरि आदि को छोड़कर) न तो स्वयं कोई ग्रन्थ लिखा और न ही किन्हीं ग्रन्थों की प्रतिलिपि करायी, बल्कि प्रतिमा प्रतिष्ठापक के रूप अपनी भूमिका निभाते रहे। धनेश्वरसूरि, भुवनचन्द्रसूरि, देवभद्रसूरि और जगच्चन्द्रसूरि तथा रत्नप्रभसूरि (घाघसा और चीरवा अभिलेखों के रचनाकार) को छोड़कर इस गच्छ में ऐसा कोई प्रभावक आचार्य भी नहीं हुआ, जो श्वेताम्बर श्रमण परम्परा में विशिष्ट स्थान प्राप्त कर सकता। ई० सन् की १८वीं शताब्दी के प्रथम चरण के बाद इस गच्छ से सम्बद्ध साक्ष्यों के अभाव से यह सुनिश्चित है कि इस समय के बाद इस गच्छ का स्वतंत्र अस्तित्व समाप्त हो गया होगा और इस गच्छ अनुयायी किन्हीं अन्य गच्छों में सम्मिलित हो गये होंगे।

संदर्भ सूची :

१. P.K. Gode, "References to Caitragaccha in Inscriptions and Literature", *Studies in Indian Literary History*, Vol. I, Singhi Jain Series, No. 37, Bombay 1953 A.D. p. 5.

अगरचन्द नाहटा, “जैन श्रमणों के गच्छों पर संक्षिप्त प्रकाश”, यतीन्द्रसूरि-अभिनन्दनग्रन्थ (आहोरे १९५८ ई०) पृष्ठ १४७ पर श्री नाहटा द्वारा उद्धृत बुद्धिसागरसूरि का मत । मुनि कान्तिसागर, शत्रुञ्जयवैभव (कुशल संस्थान, जयपुर १९९० ई०) पृष्ठ २३९.

- २-३. तपागच्छीय देवेन्द्रसूरि कृत श्राद्धदिनकृत्यप्रकरण की प्रशस्ति, **Muni Punyavijaya - Catalogue of Palm Leaf Manuscripts in the Shantinatha Jain Bhadara, Cambay** (G.O.S. No. 149, Part II, Baroda 1966 A.D.) Pp. 263-265.

तपागच्छीय क्षेमकीर्तिसूरि कृत बृहत्कल्पसूत्रवृत्ति (रचनाकाल वि० सं० १३२२ / ई० सन् १२५६) की प्रशस्ति

C. D. Dalal - *A Descriptive Catalogue of Manuscripts in the Jain Bhandars at Pattan*, (G.O.S. No. LXXVI, Baroda) 1937 A.D. Pp. 354-356.

तपागच्छीय विभिन्न पट्टावलियों के संदर्भ में द्रष्टव्य

त्रिपुटी महाराज संपा० पट्टावलीसमुच्चय भाग १-२ (चारित्र स्मारक ग्रन्थमाला, ग्रन्थाङ्क २२ एवं ४४, अहमदाबाद १९३३-१९५० ई०)

मुनि जिनविजय - संपा० विविधगच्छीयपट्टावलीसंग्रह सिंधी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थाङ्क ५३, बम्बई १९६१ ई०;

मुनि कल्याणविजय गणि. संपा० पट्टावलीपरागसंग्रह, (कल्याणविजय शास्त्र संग्रह समिति, जालोर १९६६ ई०)

शिवप्रसाद, तपागच्छ का इतिहास, वाराणसी २००० ई०, पृष्ठ ४२-४३.

४. यतीन्द्रविहारदिग्दर्शन, भाग ४, लेखांक ४९, पृ० १४६.
५. अगरचन्द नाहटा, “मेवाड़ में चित्रित कल्पसूत्र की एक विशिष्ट प्रति” श्रमण, वर्ष २८, अंक ८, जून १९७७ ई०, पृ० २४-२६.
६. कस्तूरचंद कासलीवाल, संपा० प्रशस्तिसंग्रह (आमेर शास्त्र भंडार में संरक्षित ग्रन्थों की ग्रन्थ तथा लेखक प्रशस्तियों का संग्रह), जयपुर १९५० ई०, प्रशस्ति क्रमांक ५०, पृष्ठ ६४. A. P. Shah - *Catalogue of Sanskrit and Prakrit Mss Muni Shri Punyavijayaji's, Collection* (L.D. Series No. 2, Ahmedabad - 1963 A.D.) Part I, Pp. 131, No. 2554.
७. Ibid, Part I, P. 93, No. 1464.

८. Ibid, Part I, P. 83, No. 1018.
९. घाघसा चित्तौड़ के निकट एक ग्राम है। इस ग्राम में एक प्राचीन बावड़ी में यह शिलालेख लगा हुआ था। गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने इसे वहां से हटाकर अजमेर संग्रहालय में सुरक्षित रखवा दिया है।
इस लेख में २८ पंक्तियां और ३३ श्लोक हैं। यह लेख वि० सं० १३२२ कार्तिक सुदि १ रविवार का है।
गौरीशंकर ओझा, उदयपुर राज्य का इतिहास, भाग १, पृ० २७०, मूल ग्रन्थ उपलब्ध न होने से यह संदर्भ P.K. Gode, Ibid, pp. 12 तथा गोपीनाथ शर्मा - राजस्थान के इतिहास के स्रोत, पृ० १०८ के आधार पर दिया गया है।
१०. चीरवा नामक ग्राम उदयपुर से ८ मील उत्तर में स्थित है। यहां के एक विष्णु मंदिर में यह शिलालेख लगा हुआ है। **एपिग्राफिया इंडिका**, जिल्द १२, पृ० २८५-२९२ पर इस लेख का मूल पाठ प्रकाशित है। इस लेख में कुल ५१ श्लोक और ३६ पंक्तियां हैं। चैत्रगच्छीय आचार्यों की नामावली से सम्बद्ध पंक्तियां इस प्रकार हैं :
श्रीचैत्रगच्छगगने तारकबुधकविकलावतां निलये ।
श्रीभद्रेश्वरसूरिगुरुदृगान्निष्कवर्णांगः ॥ ४५ ॥
श्रीदेवभद्रसूरिस्तदनु श्रीसिंहसेनसूरिरथ ।
अजनि जिनेश्वरसूरिस्तच्चिष्यो विजयसिंहसूरिश्च ॥ ४६ ॥
श्रीभुवनचंद्रसूरिस्तत्पट्टेभूद्भूतदंभमलः ।
श्रीरत्नप्रभसूरिस्तम्यः विनेयोस्ति मुनिरत्नं ॥ ४७ ॥
११. त्रिपुटी महाराज - जैनतीर्थो नो इतिहास (श्री चारित्र स्मारक ग्रन्थमाला, अहमदाबाद १९४९ ई०) पृष्ठ ३८५ और आगे।
१२. पूरनचन्द्र नाहर, संपा० जैनलेखसंग्रह, भाग २, कलकत्ता १९२७ ई०, लेखांक १९४९ तथा विजयधर्मसूरि - संग्राहक - प्राचीनलेखसंग्रह, (यशोविजय जैन ग्रन्थमाला, भावनगर १९२९ ईस्वी) लेखांक ३९.
१३. गोपीनाथ शर्मा, राजस्थान के इतिहास के स्रोत, पृ० ११४-१५.
१४. गौरीशंकर हीराचंद ओझा, उदयपुर राज्य का इतिहास, भाग १, पृ० १७५-१७६. उद्धृत, गोपीनाथ शर्मा, पूर्वोक्त, पृष्ठ ११४.

१५. मुनि जयन्तविजय - संपा० अर्बुदप्राचीनजैनलेखसंदोह (विजयधर्मसूरि जैन ग्रन्थमाला, पुष्प ४०, छोटा सराफा, उज्जैन वि० सं० १९९४) लेखांक ५३५.
१६. त्रिपुटी महाराज - जैन तीर्थोन्नो इतिहास, पृष्ठ ३८५ और आगे.
१७. आचार्य बुद्धिसागरसूरि, संपा०, जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह, भाग २, (श्री अध्यात्म ज्ञान प्रसारक मंडल, पादरा ई० सन् १९२४) लेखांक ७५४.
१८. आचार्य विजयधर्मसूरि - पूर्वोक्त, लेखांक ४२८-४२९.
१९. मुनि जिनविजय - विविधगच्छीयपट्टावलीसंग्रह, पृष्ठ ५७-७१.
२०. मुनि जिनविजय - संपा० प्राचीनजैनलेखसंग्रह, भाग २, (जैन आत्मानंदसभा, भावनगर १९२१ ई०) लेखांक ३९८, पूरनचन्द नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखाङ्क ८३०.
२१. द्रष्टव्य - पादटिप्पणी, क्रमाङ्क ८.

जालिहरगच्छ का संक्षिप्त इतिहास

विद्याधरकुल (बाद में विद्याधरगच्छ) की द्वितीय शाखा जालिहर (प्राचीन जाल्योधर) नामक स्थान से सम्बद्ध होने के कारण जालिहरगच्छ / जाल्योधरगच्छ के नाम से विख्यात हुई। यह गच्छ कब और किस कारण से अस्तित्व में आया ? इस गच्छ के पुरातन आचार्य कौन थे, इस बारे में सूचना अनुपलब्ध है। यद्यपि इस गच्छ के इतिहास के अध्ययन के लिये साहित्यिक साक्ष्यों के अन्तर्गत मात्र दो प्रशस्तियां तथा अभिलेखीय साक्ष्यों के अन्तर्गत कुल ८ प्रतिमालेख ही उपलब्ध हैं, तथापि उनमें इस गच्छ के इतिहास पर प्रकाश डालने के लिये पर्याप्त विवरण संग्रहीत हैं। यहां उन्हीं साक्ष्यों के विवेचन के आधार पर इस गच्छ के इतिहास पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन की सुविधा हेतु सर्वप्रथम साहित्यिक साक्ष्यों, तत्पश्चात् अभिलेखीय साक्ष्यों का विवरण एवं विवेचन किया गया है -

साहित्यिक साक्ष्य

१. नन्दिपददुर्गवृत्ति^१ — इस रचना की वि० सं० १२२६ / ई० सन् ११६९ की एक प्रति जैसलमैर के ग्रन्थभंडार में संरक्षित है। इस प्रति की दाताप्रशस्ति से ज्ञात होता है कि जालिहरगच्छीय बालचन्द्रसूरि के शिष्य गुणभद्रसूरी की प्रेरणा से यह प्रतिलिपि लिखी गयी।

जालिहरगच्छीय बालचन्द्रसूरि

|
गुणभद्रसूरि

[वि० सं० १२२६ / ई० सन्
११६९ में इनकी प्रेरणा से

नन्दिपददुर्गवृत्ति की
प्रतिलिपि की गयी]

२. पद्मप्रभचरित^१ — जालिहरगच्छीय देवप्रभसूरि ने वि० सं० १२५४/ ई० सन् ११९८ में प्राकृत भाषा में इस महत्त्वपूर्ण कृति की रचना की। कृति के अन्त में प्रशस्ति के अन्तर्गत उन्होंने अपनी गुरु-परम्परा का विस्तृत वर्णन किया है, जो इस गच्छ के इतिहास के अध्ययन की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इस प्रशस्ति में उल्लिखित गुरु-परम्परा इस प्रकार है —

बालचन्द्रसूरि

|

गुणभद्रसूरि

|

सर्वाणंदसूरि

|

धर्मघोषसूरि

|

देवसूरि

[वि० सं० १२५४/ई० सन्
११९८ में पद्मप्रभचरित
के रचनाकार]

अभिलेखीय साक्ष्य — जैसा कि प्रारम्भ में ही कहा गया है, जालिहरगच्छ से सम्बद्ध ८ प्रतिमालेख मिलते हैं। इनमें से सर्वप्रथम अभिलेख वि० सं० १२१३/ ई० सन् ११५७ का है। लेख इस प्रकार है —

सं० [०] १२१३ वैशाख वदि ५ जोराउद्रग्रामे श्रीवीसिवदेव्या
श्रीजाल्योधरगच्छे ॥

प्रतिष्ठास्थान — जैन मंदिर, अजारी

मुनि जयन्तविजय — अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेखसंदोह, लेखांक ४०८।

यद्यपि उक्त लेख में जालिहरगच्छ के किसी आचार्य का उल्लेख नहीं है, फिर भी इस गच्छ का उल्लेख करने वाला सर्वप्रथम साक्ष्य होने के कारण यह महत्त्वपूर्ण माना जा सकता है।

इस गच्छ से सम्बद्ध द्वितीय लेख वि० सं० १२९६/ ई० सन् १२४० का है, जो भगवान् नेमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण है।^३ इस लेख में जालिहरगच्छीय देवसूरि के शिष्य हरिभद्रसूरि का प्रतिमा प्रतिष्ठापक आचार्य के रूप में उल्लेख है।

देवसूरि

|

हरिभद्रसूरि

[वि० सं० १२९६/ई० सन्
१२४० में नेमिनाथ

की प्रतिमा के प्रतिष्ठापक]

जालिहरगच्छ से सम्बद्ध तृतीय लेख वि० सं० १३३१/ ई० सन् १२७५ का है। यह लेख सलखणपुर स्थित जिनालय में प्रतिष्ठापित पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण है।^४ इस लेख में प्रतिमाप्रतिष्ठापक आचार्य के रूप में हरिप्रभसूरि का उल्लेख है।

आचार्य हरिप्रभसूरि द्वारा वि० सं० १३४९/ ई० सन् १२९३ और वि० सं० १३५९/ ई० सन् १३०३ में प्रतिष्ठापित एक-एक जिनप्रतिमायें मिली हैं, जो क्रमशः सलखणपुर^५ ओर घोघा^६ के जिनालयों में आज संरक्षित है। वि० सं० १३४९/ ई० सन् १२९३ के लेख में प्रतिष्ठापक आचार्य हरिप्रभसूरि की गुरु-परम्परा दी गयी है, जो इस प्रकार है —

देवसूरि

|

हरिभद्रसूरि

|

हरिप्रभसूरि

[वि० सं० १३४९/ ई० सन्

१२९३ में महावीर स्वामी

की प्रतिमा के प्रतिष्ठापक]

जालिहरगच्छ से सम्बद्ध छठा अभिलेख वि० सम्वत् की चौदहवीं शती के अन्तिम दशक का है। लेख का एक अंक नष्ट हो गया है, शेष ३ अंक स्पष्ट पढ़े जा सके हैं। आचार्य विजयधर्मसूरि^९ ने इस लेख की वाचना इस प्रकार दी है —

स (सं)० १३९— वैशाख शुदी (दि) ३ मोढवंशे श्रे० पाजान्वये व्य० देवा सुत व्य० मुंजालभार्याये (यर्या) व्य० रत्नदिव्या आत्मश्रेयोई (ऽ)र्थ श्रीनेमिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठी (ष्ठि) तं श्रीजाल्योद्धरगच्छे श्रीसर्वाणंदसु (सू) री (रि) संताने श्रीदेवसूरी (रि) पट्टभूषणमणिप्रभु श्रीहरी (रि) भद्रसूरी (रि) शिष्ये (?) सुविहितनामधेयभट्टारकश्रीचंद्रसिंहसूरी (रि) पट्ट (ट्टा) लंकरण श्रीविबुधप्रभसूरीणां श्रीपाजाब (व) सहीकायां भद्रं भवतु।

इस लेख में जाल्योद्धरगच्छ के आचार्य विबुधप्रभसूरि की विस्तृत गुरुपरम्परा दी गयी है, जो इस प्रकार है—

सर्वाणंदसूरि

|

देवसूरी

|

हरिभद्रसूरि

|

चन्द्रसूरि

|

विबुधप्रभसूरि

[वि० सं० १३९.....? में
नेमिनाथ की प्रतिमा के
प्रतिष्ठापक]

जालिहरगच्छ से सम्बद्ध सातवां अभिलेख वि० सं० १४२३/ ई० सन् १३६७ का है, जो चौमुखी देरासर, अहमदाबाद में प्रतिष्ठापित भगवान् शान्तिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण है।^१ इस लेख में इस गच्छ के आचार्य ललितप्रभसूरि का प्रतिमा प्रतिष्ठापक के रूप में उल्लेख है।

जालिहरगच्छ से सम्बद्ध एक अन्य अभिलेख^१ भी मिला है, परन्तु उसमें न तो प्रतिमा के प्रतिष्ठापना की मिति/तिथि का उल्लेख है और न ही प्रतिमा के प्रतिष्ठापक आचार्य का; अतः यह लेख महत्त्वहीन कहा जा सकता है।

साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर जालिहरगच्छीय मुनिजनों की गुरुपरम्परा की एक तालिका निर्मित होती है, जो इस प्रकार है—

बालचन्द्रसूरि

|

गुणभद्रसूरि

|

|

सर्वणंदसूरि

|

धर्मधोषसूरि

|

देवसूरि

|

|

हरिभद्रसूरि

|

[नंदिपददुर्गवृत्ति की वि०

सं० १२२६ की प्रति में

उल्लिखित]

[पार्श्वनाथचरित-वर्तमान में

अनुपलब्ध के रचनाकार]

[वि० सं० १२५४/ई० सन्

११९८ में पद्मप्रभचरित के

रचनाकार]

हरिप्रभसूरि

[वि० सं० १३३९-५९]

प्रतिमालेख

चन्द्रसूरि

विबुधप्रभसूरि

[वि० सं० १३९३ प्रतिमालेख]

?

|

|

|

|

ललितप्रभसूरि

[वि० सं० १४२३/ ई० सन्

१३६७] प्रतिमा लेख

उक्त साक्ष्यों के आधार पर विक्रम की तेरहवीं शती के प्रारम्भ से १५वीं शती के प्रथमचरण तक इस गच्छ का अस्तित्व सिद्ध होता है। जहां अन्य गच्छों से सम्बद्ध साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्य प्रचुरता से उपलब्ध होते हैं, वहीं इस गच्छ से सम्बद्ध साक्ष्यों की विरलता को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि अन्य गच्छों की अपेक्षा इस गच्छ के मुनिजनों और श्रावकों की संख्या अल्प थी। १५वीं शती के द्वितीय चरण से इस गच्छ से सम्बद्ध कोई भी साक्ष्य नहीं मिला है, अतः यह माना जा सकता है कि इस गच्छ के मुनिजन और उपासक किन्हीं अन्य गच्छ में सम्मिलित हो गये होंगे।

संदर्भ सूची

१. संवत् १२२६ वर्षे द्वितीय श्रावण शुदि ३ सोमऽद्येह मंडलीवास्तव्य श्रीजाल्योधरगच्छे मोदवंशे श्रावकश्रीसदेवसुतेन ले० पल्हणेन लिखिता । लिखापिता च गुणभद्रसूरिभिः ॥

सकलभवुनप्रकाशनभानुश्रीहेमचन्द्रसुगुरूणाम् ।

स्थापयिताऽऽसीद् भाण्डागारिकसोमारकसुश्राद्धः ॥१॥

मरुदेवागर्भजया तत्सुतया सीमिकाह्वया क्रीत्वा ।

नन्द्यध्ययनसुविवरणटिप्पितपुस्तकमिदमुदारम् ॥२॥

मुनिबालचन्द्रशिष्यश्रीमरदगुणभद्रसूरिसुगुरुभ्यः ।

दत्तमुपलभ्य एवं फलममलं ज्ञानदानस्य ॥३॥

**Muni Punyavijaya-Catalogue of Sanskrit & Prakrit MSS :
Jesalmer Collection**, (Ahmedabad 1972) No. 76 P. 25.

2. C. D. Dalal, – **Descriptive Catalogue of Manuscripts in
Jaina Bhandars at Pattan** (Baroda- 1937) pp. 210-213.
३. कान्तिलाल फूलचन्द सोमपुरा, “घोघाना अप्रकट प्रतिमा लेखो” श्री महावीर जैन
विद्यालय सुवर्णमहोत्सव अंक, (बम्बई १९६२ ई०), भाग १, पृ० १११-११७.
४. मुनि जिनविजय – संपा०-प्राचीनजैनलेखसंग्रह, भाग २, (भावनगर १९२१ ई०),
लेखांक ४८३.
५. प्राचीनजैनलेखसंग्रह, लेखांक ४८४.
६. सोमपुरा, पूर्वोक्त.
७. विजयधर्मसूरि – संपा० प्राचीनलेखसंग्रह, (भावनगर १९२७ ई०), लेखांक ६७.
८. वही, लेखांक ७६.
९. विनयसागर – संपा०-प्रतिष्ठा लेखसंग्रह, भाग १, (कोटा १९५३ ई०), लेखांक
२३.

जीरापल्लीगच्छ का संक्षिप्त इतिहास

निर्ग्रन्थ परम्परा के श्वेताम्बर आम्नाय के अन्तर्गत चन्द्रकुल से उद्भूत गच्छों में बृहद्गच्छ या वडगच्छ का महत्त्वपूर्ण स्थान है। पूर्णिमागच्छ, आगमिकगच्छ, अंचलगच्छ, पिप्पलगच्छ आदि बृहद्गच्छ से ही अस्तित्व में आये हैं। बृहद्गच्छगुर्वावली^१ [रचनाकाल - विक्रम सम्वत् की १६वीं शताब्दी] के अनुसार बृहद्गच्छ से उद्भूत पच्चीस शाखा गच्छों में जीरापल्लीगच्छ भी एक है।

जैसा कि इसके अभिधान से स्पष्ट होता है जीरापल्ली^२ [राजस्थान प्रान्त के सिरोही जिले में आबू के निकट अवस्थित जीरावला ग्राम] नामक स्थान से यह गच्छ अस्तित्व में आया प्रतीत होता है। बृहद्गच्छीय देवचन्द्रसूरि के प्रशिष्य और जिनचन्द्रसूरि के शिष्य रामचन्द्रसूरि इस गच्छ के प्रवर्तक माने जा सकते हैं। इस गच्छ में वीरसिंहसूरि, वीरचन्द्रसूरि, शालिभद्रसूरि, वीरभद्रसूरि, उदयरत्नसूरि, उदयचन्द्रसूरि, रामकलशसूरि, देवसुन्दरसूरि, सागरचन्द्रसूरि आदि कई मुनिजन हो चुके हैं।

इस गच्छ से सम्बद्ध साहित्यिक और अभिलेखीय दोनों प्रकार के साक्ष्य मिलते हैं जो सब मिलकर विक्रम सम्वत् की १५वीं शताब्दी से लेकर विक्रम सम्वत् की १७वीं शताब्दी के प्रथम दशक तक के हैं। किन्तु जहाँ अभिलेखीय साक्ष्य वि० सं० १४०६ से लेकर विक्रम सम्वत् १५७६ तक के हैं एवं उनकी संख्या भी तीस के लगभग है, वहीं साहित्यिक साक्ष्यों की संख्या मात्र दो है। चूँकि उत्तरकालीन अनेक चैत्यवासी मुनिजन प्रायः पाठन-पाठन से दूर रहते हुए स्वयं को चैत्यों की देखरेख और जिन प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा आदि कार्यों में ही व्यस्त रखते थे। अतः

ऐसे गच्छों से सम्बद्ध साहित्यिक साक्ष्यों का कम होना स्वाभाविक है। यहां उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर इस गच्छ के इतिहास की एक झलक प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

साहित्यिक साक्ष्यों की तुलना में अभिलेखीय साक्ष्यों का प्राचीनतर होने और संख्या की दृष्टि से अधिक होने के साथ अध्ययन की सुविधा आदि को नज़र में रखते हुए सर्वप्रथम इनका और तत्पश्चात् साहित्यिक साक्ष्यों का विवरण दिया जा रहा है:

जीरापल्लीगच्छ का उल्लेख करने वाला सर्वप्रथम लेख इस गच्छ के आदिम आचार्य रामचन्द्रसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण है। वर्तमान में यह प्रतिमा शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर में संरक्षित है। श्री पूरनचन्द नाहर ने इसकी वाचना दी है, जो इस प्रकार है :

सं. १४०६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ९ रवौ सा..... कुटुम्ब श्रेयोर्थ श्री आदिनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं जीरापल्लीयैः श्रीरामचन्द्रसूरिभिः ॥

जैनलेखसंग्रह, भाग- २, लेखांक १०४९

इस गच्छ का उल्लेख करने वाला द्वितीय लेख वि० सं० १४११ का है जो जीरावाला स्थित जिनालय में पार्श्वनाथ की देवकुलिका पर उत्कीर्ण है। मुनि जयन्तविजय ने इसकी वाचना दी है, जो निम्नानुसार है :

सं० १४११ वर्षे चैत्र वादि ६ बुधे अनुराधा नक्षत्रे बृहद्गच्छीय श्रीदेवचन्द्रसूरीणां पट्टे श्रीजिनचन्द्रसूरीणां तपोवन तपोधन तपस्वीकरपरिवृतानां श्रीपार्श्वनाथस्य देवकुलिका जीरापल्लीयैः श्रीरामचन्द्रसूरिभिः कारिता छः ॥

अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेखसंदोह, लेखांक ११९

इस गच्छ से सम्बद्ध अन्य लेखों का विवरण इस प्रकार है :

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१.	१४१३	फाल्गुन सुदि १३	देवचन्द्रसूरि के पट्टधर जिनचन्द्रसूरि के पट्टधर रामचन्द्रसूरि	पार्श्वनाथ की देवकुलिका पर उत्कीर्ण लेख	देवकुलिका संख्या ४८, जीरावला तीर्थ	मुनि जयन्तविजय, संपा०, अर्बुदाचल प्रदक्षिणाजैन- लेखसंदोह, लेखांक १२० एवं दौलतसिंह लोढा, श्रीप्रतिमालेख- संग्रह, लेखांक ३०९
२.	१४२९	माघ वदि ७	वीरचन्द्रसूरि	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, वडनगर	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखांक ५४०

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
३.	१४३५	माघ वदि १२ सोमवार	वीरसिंहसूरि के पट्टधर वीरचन्द्रसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीर चैत्य के अंतर्गत आदिनाथ चैत्य, थराद	लोढा, पूर्वोक्त, लेखांक ९९
४.	१४३८	ज्येष्ठ वदि ४	"	धातु की जिनप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि जी का मन्दिर, बीकानेर	अगरचन्द नाहटा, संपा० बीकानेर जैनलेखसंग्रह, लेखांक ५३२
५.	१४४०	पौष सुदि ११ बुधवार	वीर(चन्द्र)सूरि के शिष्य शालिभद्रसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	गौडीपार्श्वनाथ जिनालय, बडोदरा	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक २४१
६.	१४४२	वैशाख सुदि १५	"	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि जी का मन्दिर, बीकानेर,	अगरचंद नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ५४

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
७.	१४४९	वैशाख सुदि ६ बुधवार	"	पद्मप्रभ की प्रतिमा का लेख	अनुपूर्तिलेख, आबू	मुनि जयन्तविजय, पूर्वोक्त, लेखांक ६०३
८.	१४५३	वैशाख सुदि ३ सोमवार	"	चौबीसी जिन प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीर चैत्य के अंतर्गत आदिनाथ चैत्य, थराद	दौलत सिंह लोढ़ा, पूर्वोक्त, लेखांक ६२
९.	१४५३	— —	"	महावीर की धातुप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणी जी का मन्दिर बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ५६३
१०.	१४६२	तिथि विहीन	"	पार्श्वनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	धर्मनाथ जिनालय, मडार	मुनि जयन्तविजय, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ७४

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
११.	१४६८	वैशाख वदि ३ शुक्रवार	”	श्रेयांसनाथ की पंचतीर्थों प्रतिमा का लेख	नवखण्डा पार्श्वनाथ जिनालय, भोंयरापाडो, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, संपा० जैनधातु- प्रतिमालेखसंग्रह, भाग- २, लेखांक ८७४
१२.	१४७२	वैशाख सुदि १२	”	शातिनाथ की प्रतिमा का लेख	भंडारस्थ धातु प्रतिमा, पालिताणा	विजयधर्मसूरि, संपा० प्राचीनलेखसंग्रह, लेखांक १११
१३.	१४७७	वैशाख?	”	महावीर की धातुप्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ मुख्य बावनजिनालय, मातर	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग- २, लेखांक ४६१
१४.	१४८१	वैशाख सुदि १५ बुधवार	”	पार्श्वनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	चिन्तामणीजी का मन्दिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ७०७

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१५.	१४८३	वैशाख सुदि ५ गुरुवार	„	चन्द्रप्रभ की धातुप्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, नरसिंहजी की पोल, बडोदरा	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १३०
१६.	१४८३	माघ वदि ५ सोमवार	„	वासुपुज्य की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, साथां	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक २४५
१७.	१५०८	ज्येष्ठ सुदि १० सोमवार	उदयचन्द्रसूरि	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	विमलनाथ चैत्य, मोटी शेरी, धराद	लोढा, पूर्वोक्त, लेखांक २५६
१८.	१५०९	वैशाख	आचार्य का नाम मिट गया है।	सुविधिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, राधनपुर	मुनि विशालविजय, संपा० राधनपुर- प्रतिमालेखसंग्रह, लेखांक १६१

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१९.	१५१५	फाल्गुन सुदि ५ गुरुवार	उदयचन्द्रसूरि	कुशुनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	संभवनाथ जिनालय, अमरेली	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ३०३
२०.	१५२०	माघ वदि ७ रविवार	उदयचन्द्रसूरि के शिष्य सागरचन्द्रसूरि	विमलनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	अजितनाथ जिनालय, शेख पाडो, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त भाग-१, लेखांक १०१५
२१.	१५२७	माघ वदि ७ रविवार	शालिभद्रसूरि के पट्टधर उदयचन्द्रसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, लखनऊ	पूरनचन्द नाहर, संपा०, जैनलेख- संग्रह, भाग-२, लेखांक १५०६
२२.	१५२७	"	"	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	वीरचैत्य अंतर्गत आदिनाथ चैत्य, थराद	लोढा, पूर्वोक्त, लेखांक १३८

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२३.	१५३२	वैशाख वदि ५ रविवार	”	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मन्दिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १०७२
२४.	१५४९	ज्येष्ठ वदि १ शुक्रवार	उदयचन्द्रसूरि के पट्टधर देवरत्नसूरि	पार्श्वनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, सांगानेर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ८५५
२५.	१५५२	माघ वदि २ रविवार	देवरत्नसूरि	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, शांतिनाथ पोल, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग- १, लेखांक १३२३
२६.	१५६०	वैशाख सुदि ३ बुधवार	”	मुनिसुव्रत की प्रतिमा का लेख	जैन मन्दिर, राजनगर	साराभाई नवाब- “राजनगरना जिनमन्दिरोंमां सचवायेलां

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
						ऐतिहासिक अवशेषो” जैनसत्यप्रकाश, वर्ष ९, अंक ८, लेखांक ३६
२७.	१५७२	वैशाख सुदि ३ शनिवार	”	शांतिनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मन्दिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ११३६

जैसा की पीछे हम देख चुके हैं वि० सं० १४०६ के प्रतिमालेख में प्रतिमा- प्रतिष्ठापक के रूप में रामचन्द्रसूरि का तो उल्लेख है, परन्तु उनके गुरु आदि का नाम उक्त लेख से ज्ञात नहीं होता, वहीं दूसरी ओर वि० सं० १४११ और वि० सं० १४१३ के अभिलेखों से स्पष्ट रूप से उनके गुरु और प्रगुरु तथा उनके गच्छ का भी नाम मालूम हो जाता है। चूँकि ये इस गच्छ [जीरापल्लीगच्छ] से सम्बद्ध प्राचीनतम साक्ष्य हैं अतः यह माना जा सकता है कि रामचन्द्रसूरि के समय से ही बडगच्छ की एक शाखा के रूप में जीरापल्लीगच्छ के अस्तित्व में आने की नींव पड़ चुकी थी और शीघ्र ही एक स्वतन्त्र गच्छ के रूप में स्थापित हो गया। इस आधार पर रामचन्द्रसूरि को इस गच्छ का पुरातन आचार्य माना जा सकता है। अभिलेखीय साक्ष्यों से रामचन्द्रसूरि के अतिरिक्त वीरसिंहसूरि, वीरचन्द्रसूरि, शीलभद्रसूरि, वीरभद्रसूरि, उदयरत्नसूरि, उदयचन्द्रसूरि, सागरचन्द्रसूरि, देवरत्नसूरि आदि के नामों के साथ-साथ उनके पूर्वापर सम्बन्धों का भी उल्लेख मिल जाता है, जो इस प्रकार है:

१. वीरसिंहसूरि के पट्टधर वीरचन्द्रसूरि [वि० सं० १४२९-३८]
२. वीरचन्द्रसूरि के पट्टधर शालिभद्रसूरि [वि० सं० १४४०-८३]
३. शालिभद्रसूरि के प्रथम शिष्य वीरभद्रसूरि [वि० सं० १४६८]
४. शालिभद्रसूरि के द्वितीय शिष्य उदयरत्नसूरि [वि० सं० १४८३]
५. शालिभद्रसूरि के तृतीय शिष्य उदयचन्द्रसूरि [वि० सं० १५०८-१५२७]
६. उदयचन्द्रसूरि के प्रथम शिष्य सागरचन्द्रसूरि [वि० सं० १५२०-१५३२]
७. उदयचन्द्रसूरि के द्वितीय शिष्य देवरत्नसूरि [वि० सं० १५४९-१५७२]

उक्त आधार पर जीरापल्लीगच्छ के मुनिजनों के गुरु- शिष्य परम्परा की एक तालिका पुनर्गठित की जा सकती है, जो इस प्रकार है :

वडगच्छीय देवचन्द्रसूरि

जिनचन्द्रसूरि

रामचन्द्रसूरि

[वि० सं० १४११ और १४१३
में जीरापल्ली तीर्थ पर दो
देवकुलिकाओं के निर्माता]

?

वीरसिंहसूरि

वीरचन्द्रसूरि

[वि० सं० १४२९-१४३८]

शालीभद्रसूरि

[वि० सं० १४४०-१४८३]

वीरभद्रसूरि

[वि० सं० १४६८]

उदयरत्नसूरि

[वि० सं० १४८३]

उदयचन्द्रसूरि

[वि० सं० १५०८-१५२७]

सागरचन्द्रसूरि

[वि० सं० १५२०-१५३२]

देवरत्नसूरि

[वि० सं० १५४९-१५७२]

जैसा कि लेख के प्रारम्भ में कहा जा चुका है इस गच्छ से सम्बद्ध मात्र दो साहित्यिक साक्ष्य मिलते हैं। इनमें से प्रथम है रामकलशसूरि के शिष्य देवसुन्दरसूरि द्वारा रचित कयवन्नाचौपाई^३। इसकी प्रशस्ति में

रचनाकार ने केवल अपने गुरु और रचनाकाल तथा गच्छ आदि का ही उल्लेख किया है, जो इस प्रकार है :

संवत पनर चोराण सार, मागसर वदि सातमि गुरुवार ।
 पूष्य नक्षत्र हूंतो सिध जोग, कयवन्नानी कथानो भोग ॥
 श्रीजीराउल्लिगच्छ गुरु जयवंत, श्री श्रीरामकलशसूरि गुणवंत ।
 वाचक देवसुन्दर पभणंति, भणइ गुणइ ते सूख लहंति ॥

इनके द्वारा रची गई एक अन्य कृति भी मिलती है जिसका नाम है **आषाढभूतिसज्जाय**^४ (रचनाकाल वि० सं० १५८७) ।

वि० सं० १६०२ में लिखी गयी तपागच्छीय **श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्रवृत्ति** की प्रतिलिपि की प्रशस्ति^५ में भी इस गच्छ का उल्लेख है:

इति श्री तपग० श्राद्ध प्रतिक्रमण..... वृत्तौ शेषाधिकारः पंचमः ।
 समाप्ता चेयमर्थदीपिकानाम्नी श्राद्धप्रतिक्रमणटीका । ग्रन्थाग्रन्थ ६६४४ ॥
 श्री सं० १६०२ श्रावण सुदि ५ रवौ श्रीजीराउल्लिगच्छे लिखितं कीकी
 जाउरनगरे श्रीविजयहर्षगणि शिष्य रंगविजयनी प्रति भंडारी मूकी ।

कयवन्नाचौपाई के रचनाकार देवसुन्दरसूरि के गुरु रामकलशसूरि किसके शिष्य थे । अभिलेखीय साक्ष्यों में उल्लिखित सागरचन्द्रसूरि, देवरत्नसूरि आदि से उनका क्या सम्बन्ध था, प्रमाणों के अभाव में यह ज्ञात नहीं होता । ठीक यही बात **श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्र** की वि० सं० १६०२ में प्रतिलिपि करने वाले जीरापल्लीगच्छीय रंगविजय और उनके गुरु विजयहर्षगणि के बारे में कही जा सकती है, फिर भी उक्त साहित्यिक साक्ष्यों से वि० सम्वत् की १७वीं शताब्दी के प्रथम दशक तक इस गच्छ का स्वतन्त्र अस्तित्व सिद्ध होता है । इसके बाद इस गच्छ से सम्बद्ध कोई साक्ष्य न मिलने से यह अनुमान व्यक्त किया जा सकता है कि इस समय तक इस गच्छ के अनुयायी श्रमण किन्ही प्रभावशाली गच्छों विशेषकर तपागच्छ में

सम्मिलित हो गये होंगे। यद्यपि त्रिपुटीमहाराज^६ ने वि० सं० १६५१ में इस गच्छ के किन्ही देवानन्दसूरि के पट्टधर सोमसुन्दरसूरि के विद्यमान होने का उल्लेख किया है, परन्तु अपने उक्त कथन का कोई आधार या सन्दर्भ नहीं दिया है, अतः इसे स्वीकार कर पाना कठिन है।

सन्दर्भ सूची

१. मुनि जिनविजय, संपा० विविधगच्छीयपट्टावलीसंग्रह, सिंधी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक ५३, बम्बई १९६९ ई० सन्, पृष्ठ ५२-५५.
२. मुनि जयन्तविजय, अर्बुदाचलप्रदक्षिणा, यशोविजय जैन ग्रन्थमाला, भावनगर १९४८ ईस्वी सन्, पृष्ठ ८७-९७.
- ३-४. मोहनलाल दलीचन्द देसाई, जैनगूर्जरकविओ, भाग-१, नवीन संस्करण, संपा० डॉ. जयन्त कोठारी, बम्बई, १९८६ ईस्वी सन्, पृष्ठ ३३३.
५. अमृतलाल मगनलाल शाह, संपा०, श्रीप्रशस्तिसंग्रह, अहमदाबाद वि० सं० १९९३, भाग- २, प्रशस्ति क्रमांक ३६६ पृष्ठ १००.
६. त्रिपुटी महाराज, जैन परम्परानो इतिहास, भाग- २, श्री चारित्र स्मारक ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक ५४, अहमदाबाद १९६० ईस्वी सन्, पृष्ठ ५९९.

थारापद्रगच्छ का संक्षिप्त इतिहास

प्राक् मध्ययुगीन एवं मध्यकालीन निर्ग्रन्थदर्शन के श्वेताम्बर आम्नाय के गच्छों में थारापद्रगच्छ का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा। थारापद्र नामक स्थान (वर्तमान थराद, बनासकांठा मण्डल, उत्तर गुजरात) से इस गच्छ का प्रादुर्भाव हुआ था। थारापद्रगच्छ के ११वीं शताब्दी के प्रारम्भ के आचार्य पूर्णभद्रसूरि ने चंद्रकुल के वटेश्वर क्षमाश्रमण को अपना पूर्वज बतलाया है, किन्तु इस गच्छ के प्रवर्तक कौन थे, यह गच्छ कब अस्तित्व में आया, इस बारे में उन्होने कुछ नहीं कहा है। इस गच्छ में वादिवेताल शांतिसूरि, शालिभद्र अपरनाम शीलभद्रसूरि 'प्रथम', शांतिभद्रसूरि, पूर्णभद्रसूरि, शालिभद्रसूरि 'द्वितीय', नमिसाधु आदि कई प्रभावक एवं विद्वान् आचार्य हुए।

थारापद्रगच्छ का उल्लेख करने वाला सर्वप्रथम अभिलेखीय साक्ष्य है वि० सं० १०८४ / ई० सं० १०२८ का रामसेन के आदिनाथ जिनालय स्थित प्रतिमाविहीन परिकर का लेख। पं० अम्बालाल शाह^१ ने उक्त लेख की वाचना इस प्रकार दी है :

“अनुवर्तमानतीर्थप्रणायकाद वर्धमान जिनवृषभात् ।

शिष्य क्रमानुयातो जातो वज्रस्तदुपमानः ॥१॥

तच्छाखायां जात [:] स्थानीय कुलोदभूतो महामहिमः ।

चन्दकुलोद्भवस्ततो वटेश्वराख्यः क्रमबलः ॥२॥

थीरापद्रोद्भूतस्तस्माद् गच्छोऽत्र सर्वदिक्ख्यातः ।

शुद्धाच्छयशोणिकरैर्धवलितदिक चक्रवालोऽस्ति ॥३॥

तस्मिन् भूरिषु सूरिषु देवत्वमुपागतेषु विद्वत्सु ।

जातो ज्येष्ठाचार्यस्तस्याच्छ्रीशांतिभद्राख्य ॥४॥

तस्माच्च सर्वदेवः सिद्धान्तमहोदधिः सदागाहः ।

तस्माच्च शालिभद्रो भद्रनिधिर्गच्छगतबुद्धि ॥५॥

श्रीशांतिभद्रसूरौ वज्रपतिजा [ता] पूर्णभद्राख्यः ।

रधुसेना [भिधाने] स्ति..... बुद्धीन् ॥६॥

[व्यधा] पयादिदं बिंबं नाभिसूनोर्महात्मनः ।

लक्ष्म्याश्चंचलतां ज्ञात्वा जीवतव्यं विशेषतः ॥७॥

मंगलं महाश्री ॥ संवत् १०८४ चैत्र पौर्णमास्याम् ॥”

साधारणतया प्रतिमा लेखों में प्रतिमाप्रतिष्ठापक आचार्य या मुनि की परम्परा के एक या दो पूर्वाचार्यों का उल्लेख मिलता है, किन्तु इस लेख में थारापद्रगच्छ के सूरिवरों की लम्बी सूची दी गई है, जो इस प्रकार है :

वटेश्वर

|

ज्येष्ठाचार्य

|

शांतिभद्रसूरि (प्रथम)

|

सिद्धान्तमहोदधि सर्वदेवसूरि

|

शालिभद्रसूरि (प्रथम)

|

शांतिभद्रसूरि (द्वितीय)

|

पूर्णभद्रसूरि

(वि० सं० १०८४ / ई० सन्
१०२८ में रामसेन स्थित)

जिनालय में उपर्युक्त प्रतिमा
के प्रतिष्ठापक)

थारापद्रगच्छ से सम्बद्ध कालक्रम में द्वितीय प्रमाण है वि० सं० १११०/ ई० सं० १०५४ में आचार्य पूर्णभद्रसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित अजितनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख । वर्तमान में यह प्रतिमा अहमदाबाद में झवेरीवाड़ के एक जिनालय में है । मेहता^२ ने लेख की वाचना इस प्रकार की है :

थारापद्रपुरीयगच्छगनोद्योतक भास्वानभूत्
सूरिः सागरसीम विश्रुतगुणः श्री शालिभद्राभिधः ।
तच्छिष्य समजन्यज्ञानवृजिनासंगः सतामग्रणीः सूरिः
सर्वगुणोत्करैकवसतिः श्री पूर्णभद्राह्वयः ॥

तस्य श्री शालिभद्रप्रभु रत्नमकृतोच्चैः पदपुण्यमूर्तिः
विद्वच्चूडामणोः स्वेशसि (शि) विस (श) दयशो
व्यानशेवस्व विश्वम् ।

स्थाने तस्यापि सूरिः समजनि भुवनेऽनन्यसाधारणानां
लीलागारं गुणानामनुपम महिमा पूर्णभद्राभिधानः ॥

श्री शालिसूरिनिजगुरुपुण्यार्थमिदं विधापित तेन ।
अजितजिनबिंबमतुलं नंदतु रघुसेन जिनभु (भ) वने ॥

संवत् १११० चैत्र सुदि १३

इस लेख में प्रतिमा प्रतिष्ठापक आचार्य पूर्णभद्रसूरि का शालिभद्रसूरि के पट्टधर के रूप में उल्लेख है । लेख से ज्ञात होता है की यह प्रतिमा भी रामसेन स्थित राजा रघुसेन द्वारा निर्मित जिनालय में ही स्थापित की गयी थी । इस लेख^३ के अनुसार गुर्वावली इस प्रकार है :

शालिभद्रसूरि

|

पूर्णभद्रसूरि

(वि० सं० १११० / ई० स०

१०५४ में राजा रघुसेन

द्वारा निर्मित जिनालय में

प्रतिमा प्रतिष्ठापक)

साहित्य स्त्रोतों में देखा जाये तो थारापद्रगच्छ के नमिसाधु द्वारा प्रणीत दो कृतियाँ मिली हैं :

१. षडावश्यकसूत्रवृत्ति^४ (रचनाकाल वि० सं० ११२२ / ई० स० १०६५)

२. काव्यालंकारटिप्पन^५ (रचनाकाल वि० सं० ११२५ / ई० स० १०६८)

उक्त रचनाओं की प्रशस्तियों में ग्रन्थकार ने स्वयं को थारापद्रगच्छीय शालिभद्रसूरि का शिष्य बतलाया है ।

शालिभद्रसूरि

|

नमिसाधु

(षडावश्यकसूत्रवृत्ति एवं

काव्यालंकारटिप्पन

के प्रणेता)

इसी गच्छ के शालिभद्रसूरि अभिधानधारक एक और आचार्य ने वि० सं० ११३९ / ई० स० १०८३ में सटीकबृहत्संग्रहणीप्रकरण^६ की रचना की । इसकी प्रशस्ति में उन्होंने अपनी गुर्वावली इस प्रकार दी है —

शालिभद्रसूरि

|

पूर्णभद्रसूरि

|

शालिभद्रसूरि

(वि० सं० ११३९ / ई० स०

१०८३ में सटीक

बृहत्संग्रहणीप्रकरण के रचनाकार)

रामसेन के उपरकथित लेख में उल्लिखित पूर्णभद्रसूरि तथा सटीकबृहत्संग्रहणीप्रकरण के कर्ता शालिभद्रसूरि के गुरु पूर्णभद्रसूरि सम्भवतः एक ही व्यक्ति हैं। रामसेन के उपर्युक्त लेख की मिति वि० सं० १११० तथा बृ० सं० प्र० की रचनामिति वि० सं० ११३९ के बीच २८ वर्षों का ही अन्तर है। इसमें भी यह संभावना बलवत्तर होती है। ठीक इसी तरह वि० सं० ११२२ और वि० सं० ११२५ में क्रमशः षडावश्यकसूत्रवृत्ति और काव्यालंकारटिप्पन रचने वाले नमिसाधु के गुरु शालिभद्रसूरि भी उपर्युक्त बृ० सं० प्र० के कर्ता शालिभद्रसूरि से अभिन्न जान पड़ते हैं।

इसी गच्छ में वादिवेताल शांतिसूरि नामक एक प्रभावक एवं विद्वान् आचार्य हुए हैं। इनकी पांच कृतियां उपलब्ध हुई हैं, यथा :

१- उत्तराध्ययनसूत्र पर लिखी गयी पाइयटीका अपरनाम शिष्यहिताटीका

२- जीवविचारप्रकरण

३- चैत्यवन्दनमहाभाष्य

४- बृहद्शान्तिस्तव

५- जिनस्नात्रविधि

इनमें पाइयटीका और बृहद्शान्तिस्तव अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। पाइयटीका की प्रशस्ति^९ में टीकाकार ने थारापद्रगच्छ को चन्द्रकुल से समुद्भूत माना है, किन्तु रचना की तिथि एवं अपनी गुरु-परम्परा के बारे में वे मौन रहे हैं।

अपनी अन्य कृतियों की प्रशस्तियों में भी शांतिसूरि ने अपनी गुरु-परम्परा एवं रचनाकाल का कोई उल्लेख नहीं किया है।

राजगच्छीय आचार्य प्रभाचन्द्रसूरि द्वारा रचित **प्रभावकचरित**^६ (रचनाकाल वि० सं० १३३४/ ई० सं० १२७८) में वादिवेताल शान्तिसूरि का जीवनपरिचय प्राप्त होता है। उसके अनुसार इनके गुरु का नाम विजयसिंहसूरि था और परमार नरेश भोज (ई० सं० १०१०-१०५५) की सभा में उन्होंने वादियों को परास्त किया और वादिवेताल की उपाधि से विभूषित हुए। महाकवि धनपाल की **तिलकमञ्जरी** का भी इन्होंने संशोधन किया था। **प्रभावकचरित** के अनुसार वि० सं० १०९६/ ई० सं० १०४० में इन्होंने सल्लेखना द्वारा उज्जयन्तगिरि पर अपना शरीर त्याग दिया।

अब शान्तिसूरि तथा उनके गुरु विजयसिंहसूरि का थारापद्रगच्छीय मुनिजनों की पूर्वप्रदर्शित तालिका के साथ समन्वय बाकी रह जाता है। इस सम्बन्ध में इस गच्छ के सम्बद्ध प्रतिमालेखों से प्राप्त मुनिराजों की नामावली से हमें महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। यद्यपि ये लेख १४वीं से १६वीं शती तक के हैं और उनकी संख्या भी स्वल्प ही है, फिर भी उनसे ज्ञात होता है, कि थारापद्रगच्छ की इस शाखा में सर्वदेवसूरि, विजयसिंहसूरि और शान्तिसूरि इन तीन पट्टधर आचार्यों के नामों की पुनरावृत्ति होती रही है।

विजयसिंहसूरि और वादिवेताल शान्तिसूरि का आपस में गुरु-शिष्य का सम्बन्ध तो हमें **प्रभावकचरित** से ज्ञात हो चुका है, अतः विजयसिंहसूरि के गुरु सर्वदेवसूरि नामके आचार्य रहे होंगे, ऐसा मानने में कोई आपत्ति नहीं। इस प्रकार अन्य उत्तरकालीन प्रतिमालेखों के आधार पर थारापद्रगच्छ के इस शाखा की गुरु-शिष्य की निम्न प्रकार से तालिका बन सकती है :

(सर्वदेवसूरि)

↓
विजयसिंहसूरि
↓

वादिवेताल शांतिसूरि (वि० सं० १०९६/ ई०
 सन् १०४०में स्वर्गवास)
 उत्तराध्ययनसूत्रपाइयटीका,
 बृहदशान्तिस्तव,
 जीवविचारप्रकरण,
 चैत्यवन्दनमहाभाष्य आदि
 के कर्ता

(सर्वदेवसूरि)

(विजयसिंहसूरि)

(शांतिसूरि)

(सर्वदेवसूरि)

(विजयसिंहसूरि)

शांतिसूरि

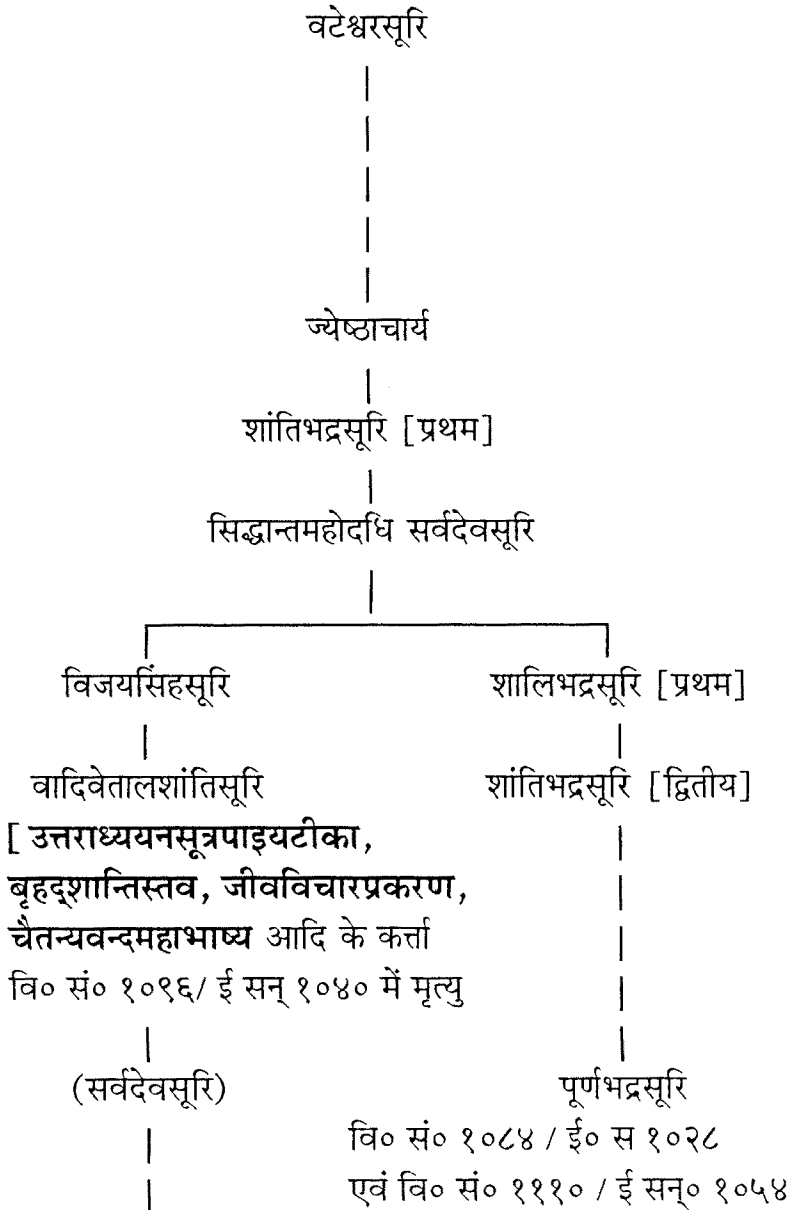
(इनके अनुयायी श्रावक
 यशश्चन्द्र ने वि० सं० १२५९ /
 ई० सन् १२०३ में पार्श्वनाथ
 की धातु प्रतिमा बनवायी)
 (वि० सं० १२८८/ ई० सन्
 १२३२) प्रतिमालेख
 (महामात्य वस्तुपाल द्वारा
 वि० सं० १२९८/ ई० सन्
 १२४२ में शत्रुञ्जयमहातीर्थ

(सर्वदेवसूरि)

	पर उत्कीर्ण कराये गये
	शिलालेख में उल्लिखित
	थारापद्रगच्छीय सर्वदेवसूरि
	संभवतः यही सर्वदेवसूरि हो
	सकते हैं)
विजयसिंहसूरि	(वि० सं० १३१५/ ई० सन्
	१२५९) प्रतिमालेख
सर्वदेवसूरि	(वि० सं० १४५० / ई० सन्
	१३९४) प्रतिमालेख
(विजयसिंहसूरि)	(प्रतिमालेख अनुपलब्ध)
शांतिसूरि	(वि० सं० १४७९-१४८३ /
	ई० सन् १४२३-१४२७)
	प्रतिमालेख
(सर्वदेवसूरि)	(प्रतिमालेख अनुपलब्ध)
विजयसिंहसूरि	(वि० सं० १५०१-१५१६ /
	ई० सन् १४४५-१४६०)
	प्रतिमालेख
शांतिसूरि	(वि० सं० १५२७-१५३२ /
	ई० सन् १४७१-१४७६)
	प्रतिमालेख

रामसेन के वि० सं० १०८४/ ई० सन् १०२८ के परिकरलेख में थारापद्रगच्छ के आचार्यों की जो गुरु-परम्परा मिलती है, उसमें सिद्धान्तमहोदधि सर्वदेवसूरि का भी नाम मिलता है। समसामयिकता और

नामसाम्य के आधार पर इन्हें वादिवेताल शान्तिसूरि के प्रगुरु सर्वदेवसूरि से अभिन्न माना जा सकता है। इस प्रकार थारापद्रगच्छ के मुनिजनों के गुरु-परम्परा के एक नवीन तालिका बनती है, जो इस प्रकार है :-



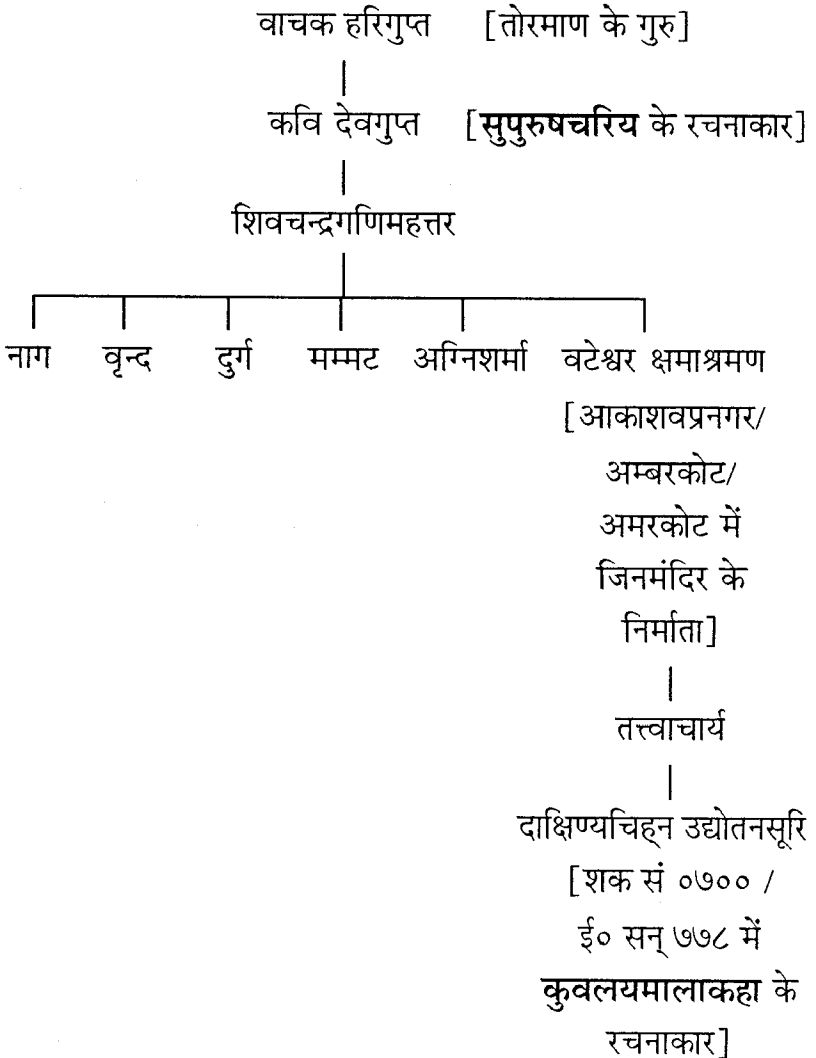
	में रामसेन स्थित जिनालय में प्रतिमा प्रतिष्ठापक
(विजयसिंहसूरि)	शालिभद्रसूरि [द्वितीय] वि० सं० ११३९/ ई० सन् १०८३ में सटीकबृहत्संग्रणीप्रकरण के रचनाकर्ता
शांतिसूरि	नामिसाधु [वि० सं० ११२२/ ई० सन् १०६५ में षडावश्यसूत्रवृत्ति एवं वि० सं० ११२५ / ई० सन् १०६८ में काव्यालंकारटिप्पन के रचनाकार]
(सर्वदेवसूरि)	
(विजयसिंहसूरि)	
(शांतिसूरि)	[इनके अनुयायी श्रावक यशचन्द्र ने वि० सं० १२५९/ ई० सन् १२०३ में पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा बनवायी] [वि० सं० १२८८ / ई० सन् १२३२] प्रतिमालेख [महामात्य वस्तुपाल द्वारा वि० सं० १२९८ / ई० सन् १२४२ में शत्रुञ्जय महातीर्थ पर उत्कीर्ण कराये गये शिलालेख में उल्लिखित सर्वदेवसूरि
सर्वदेवसूरि	

	संभवतः यही हैं]
विजयसिंहसूरि	[वि० सं० १३१५ / ई० सन् १२५९]
	प्रतिमालेख
सर्वदेवसूरि	[वि० सं० १४५० / ई० सन् १३९४]
	प्रतिमालेख
विजयसिंहसूरि	[प्रतिमालेख अनुपलब्ध]
शांतिसूरि	[वि० सं० १४७९-१४८३/ ई० सन्
	१४२३-१४२७] प्रतिमालेख
सर्वदेवसूरि	[प्रतिमालेख अनुपलब्ध]
विजयसिंहसूरि	[वि० सं० १५०१-१५१६ / ई० सन्
	१४४५-१४६०] प्रतिमालेख]
शांतिसूरि	[वि० सं० १५२७-१५३२ /
	ई० सन् १४७१-१४७७] प्रतिमालेख]

थारापद्रगच्छीय गुरु-शिष्य परम्परा की पूर्वप्रदर्शित तालिकाओं में सर्वप्रथम आचार्य वटेश्वर का नाम आता है। उनके कई पीढ़ियों बाद ही ज्येष्ठाचार्य से इस गच्छ की अविच्छिन्न परम्परा प्रारम्भ होती है। अब हमारे समाने यह प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या श्वेताम्बर सम्प्रदाय में वटेश्वर नामक कोई आचार्य हुए हैं ? यदि हुए हैं तो कब हुए हैं ?

दाक्षिण्यचिह्न उद्योतनसूरि ने कुवलयमालाकहा [रचनाकाल शक सं० ७०० / ई० सन् ७७८] की प्रशस्ति^१ में अपनी गुरु-परम्परा की नामावली दी है, इसमें सर्वप्रथम वाचक हरिगुप्त का नाम आता है, जो तोरराय (हूणराज तोरमाण) के गुरु थे। उनके पट्टधर कवि देवगुप्त हुए, जिन्होंने सुपुरुषचरिय अपरनाम त्रिपुरुषचरिय की रचना की। देवगुप्त

के शिष्य शिवचन्द्रगणिमहत्तर हुए, जिनके नाग, वृन्द, दुर्ग, मम्मट, अग्निशर्मा और वटेश्वर ये ६ शिष्य थे। वटेश्वर क्षमाश्रमण ने आकाशवप्रनगर [अम्बरकोट/ अमरकोट] में जिनमंदिर का निर्माण कराया। वटेश्वर के शिष्य तत्त्वाचार्य हुए। कुवलयमालाकहा के रचनाकार दाक्षिण्यचिह्न उद्योतनसूरि इन्हीं तत्त्वाचार्य के शिष्य थे। इस बात को प्रस्तुत तालिका से भली-भांति समझा जा सकता है :



कृष्णर्षिगच्छ के आचार्य जयसिंहसूरि ने वि० सं० ९१५ / ई० स० ८५९ में धर्मोपदेशमालाविवरण की रचना की। इसकी प्रशस्ति^{१०} में उन्होंने वटेश्वर क्षमाश्रमण को अपना पूर्वज बतलाते हुए अपनी गुरु-परम्परा का परिचय इस प्रकार दिया है -

वटेश्वर क्षमाश्रमण

|

तत्त्वाचार्य

|

यक्षमहत्तर

|

कृष्णर्षि

|

जयसिंहसूरि

[वि० सं० ९१५ / ई० सन् ८५९ में

धर्मोपदेशमालाविवरण के रचनाकार]

उक्त दोनों प्रशस्तियों की गुरु-परम्परा की तालिकाओं के समायोजन से उद्योतनसूरि और जयसिंहसूरि की गुरु-परम्परा की जो संयुक्त तालिका बनती है, वह इस प्रकार है :

वाचक हरिगुप्त

[किसी वैराग्यप्रधान कृति के कर्ता, तोरमाण के गुरु, मृत्यु प्रायः ई० सन् ५२९]

|

|

|

कवि देवगुप्तसूरि

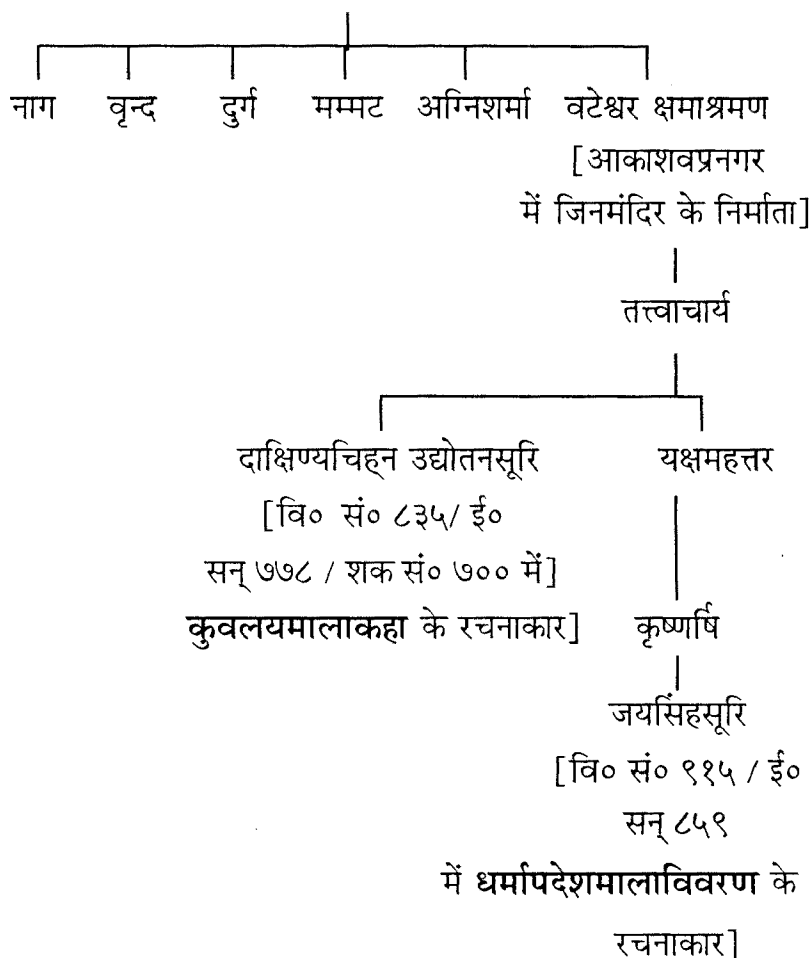
[सुपुरुषचरिय के रचनाकार]

|

शिवचन्द्रगणिमहत्तर

[भिल्लमाल में स्थिरवास]

|



उक्त आधार पर वटेश्वर क्षमाश्रमण का समय प्रायः ई० सन् ६७५-७२५ के बीच मान सकते हैं। चूंकि वे अपने समय के एक प्रभावक आचार्य रहें होंगे, अतः ११ वीं शती के प्रारम्भ में थारापद्रगच्छीय पूर्णभद्रसूरि द्वारा उन्हें अपने पूर्वज के रूप में स्मरण करना यही सूचित करता है कि वटेश्वर क्षमाश्रमण के ही किसी शिष्य की परम्परा आगे चलकर थारापद्रगच्छ के नाम से प्रसिद्ध हुई, जिसमें बाद में प्रायः ५वीं पीढ़ी के करीब ज्येष्ठाचार्यादि हुए होंगे।

थारापद्रगच्छ से सम्बद्ध अभिलेखीय साक्ष्यों का वर्गीकरण - १. प्रतिमालेख,
२, शिलालेख

इसमें जिनप्रतिमालेखों को दो भागों में बांटा जा सकता है -

- क. थारापद्रगच्छीय मुनिजनों द्वारा प्रतिष्ठापित जिनप्रतिमायें एवं उन पर उत्कीर्ण लेखों का विवरण
- ख. थारापद्रगच्छीय मुनिजनों की प्रेरणा से इस गच्छ के श्रावकों द्वारा प्रतिष्ठापित जिनप्रतिमायें एवं उन पर उत्कीर्ण लेखों का विवरण :

१. प्रतिमालेख

क- थारापद्रगच्छीय मुनिजनो द्वारा प्रतिष्ठापित जिनप्रतिमायें एवं उन पर उत्कीर्ण लेखों का विवरण

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१.	१०८४	चैत्र पूर्णिमा	शांतिभद्रसूरि के पट्टधर पूर्णभद्रसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा के परिकर का लेख	आदिनाथ जिनालय, रामसेन (उत्तर गुजरात)	अम्बालाल प्रेमचंद शाह, जैनतीर्थसर्व- संग्रह, खंड १, भाग १, पृष्ठ ३९
२.	१११०	चैत्र सुदि १३	शालिभद्रसूरि के पट्टधर पूर्णभद्रसूरि	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	अजितनाथ जिनालय, झवेरीवाड़, अहमदाबाद	N. C. Mehta, "A Mediaeval Jain Image of Ajitanath", <i>Indian Antiquary</i> , Vol. LVI, 1927, P. 72-74

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
३.	[११] १२	फाल्गुन वदि ९ सोमवार	शालिभद्रसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ, जिनालय, माणेकचौक, खंभात	जैनधातुप्रतिमा- लेखसंग्रह, भाग- २, संपा० बुद्धिसागर, लेखाङ्क १०१२
४.	११५७	वैशाख सुदि १०	"	सुपार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, रांतेज	प्राचीनजैनलेख- संग्रह, भाग- २, संपा० मुनि जिनविजय, लेखाङ्क ४६६
५.	११५७	"	"	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	"	वही, लेखाङ्क ४६७

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
६.	१२६४	आषाढ़ सुदि ५		महावीर की प्रतिमा लेख	मोतीसा का मंदिर, रतलाम	प्रतिष्ठालेखसंग्रह, भाग १, संपा० विनयसागर, लेखाङ्क- ४८
७.	१३०४	वैशाख सुदि १०	पुरुषोत्तमसूरि	चौबीसी जिनप्रतिमा का लेख	धर्मनाथ जिनालय, माणेकचौक, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखाङ्क ९५५
८.	१३०९	चैत्र वदि ९ शुक्रवार	मदनचन्द्रसूरि	धातु की जिनप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिजी मंदिर, खंभात	वही, भाग २, लेखाङ्क ५४९
९.	१३१५	वैशाख सुदि ११	विजयसिंहसूरि	जिनप्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, खंभात	वही, भाग २, लेखाङ्क ७३५

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१०.	-	 दि ४ शुक्रवार	पूर्णचन्द्रसूरि	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ३८५
११.	१४४०	पौष सुदि १२ शुक्रवार	शीलभद्रसूरि के उपदेश से श्रीसूरि	संभवनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ जिनालय, रतलाम	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखाङ्क १६६
१२.	१४५०	माघ वदि ९ सोमवार	सर्वदेवसूरि	वासुपुज्य की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	संभवाथ जिनालय, राधनपुर	राधनपुरप्रतिमा- लेखसंग्रह, संपा० मुनि विशालविजय, लेखाङ्क ८२
१३.	१४७९	चैत्र वदि २ गुरुवार	शांतिसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, थराद,	श्रीप्रतिमालेख- संग्रह, दौलतसिंह लोढा, लेखाङ्क २०६

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१४.	१४८३	ज्येष्ठ सुदि ९ मंगलवार	"	"	शांतिनाथ चैत्य, सुथार सेरी, थराद	वही, लेखाङ्क २६८
१५.	१५०१	पौष वदि ६ बुधवार	सर्वदेवसूरि के पट्टधर विजयसिंहसूरि	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, थराद	वही, लेखाङ्क ६५
१६.	१५०५	वैशाख सुदि ३ शुक्रवार	विजयसिंहसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा लेख	, "	वही, लेखाङ्क १४२
१७.	१५१२	ज्येष्ठ सूदि ५ रविवार	"	आदिनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	विमलनाथ चैत्य देसाईसेरी, थराद	वही, लेखाङ्क २२९

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१८.	१५१६	पौष वदि ५ गुरुवार	"	श्रेयांसनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, धराद,	वही लेखाङ्क ६१
१९.	१५२७	कार्तिक वदि ५ सोमवार	विजयसिंहसूरि के पट्टधर शांतिसूरि	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	"	वही, लेखाङ्क १६५
२०.	१५३२	वैशाख सुदि १३ शनिवार	शांतिसूरि	"	"	वही, लेखाङ्क १७२
२१.	१५३३	कार्तिक सुदि ५ गुरुवार	विजयसिंहसूरि के पट्टधर शांतिसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	शेठ केशरीमल का देरासर, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग ३, लेखाङ्क २४६४

ख. - थारापद्रगच्छीय मुनिजनों की प्रेरणा से इस गच्छ के श्रावकों द्वारा प्रतिष्ठापित जिनप्रतिमायें एवं उन पर उत्कीर्ण लेखों का विवरण

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१.	१११८	-	-	विमलवसही, आबू	प्राचीनजैनलेखसंग्रह, भाग २, सं० मुनि जिनविजय, लेखाङ्क १५४ एवं अर्बुदप्राचीनजैनलेखसंदोह, (आबू, भाग २, सं० मुनि जयन्तविजय, लेखांक ६३
२.	११२६	-	पार्श्वनाथ की पीतल की प्रतिमा का लेख	-	“राष्ट्रीय संग्रहालय की कतिपयधातु प्रतिमायें” अगरचन्द नाहटा, जैन सन्देश शोधाङ्क, भाग ४१, वर्ष ४२, पृष्ठ २४२-२४६

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
३.	११३१	-	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	विमलवसही, आबू	मुनि जयन्तविजय, पूर्वोक्त, लेखांक ७४
४.	११३१	मार्ग० सुदि १०	जिन प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अजितनाथ जिनालय, सिराही	प्रतिष्ठालेखसंग्रह, भाग १, लेखांक ९
५.	११६१	-	शीतलनाथ की प्रतिमाका लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, आरासणा	मुनि जिनविजय, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक २९७
६.	११९१	मार्ग० वदि ५	एकतीर्थी जिनप्रतिमा का	अनुपूर्तिलेख, आबू	मुनि जयन्तविजय, पूर्वोक्त, लेखांक ५१०
७.	१२१०	फाल्गुन सुदि ११	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, नांदिया	अर्बूदाचलप्रदक्षिणाजैनलेखसंदोह, आबू, भाग ५, लेखांक ४५४

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
८.	१२३४	माघ सुदि १० बुधवार	महावीर की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, सिरोही	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ३६
९.	१२५१	तिथि विहीन	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	अगरचंद नाहटा, पूर्वोक्त लेखांक १०३
१०.	१२५९	ज्येष्ठ सुदि १५	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, कटाकोटडी, खंभात	जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह, भाग २, संपा० बुद्धिसागर, लेखांक ६०९
११.	१२५९	ज्येष्ठ सुदि ३	धातु की जिनप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, माणकचौक, खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग- २ लेखांक ९२८

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१२.	१२९४	वैशाख सुदि	जिनप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १३३
१३.	१३३४	माघ सुदि १० रविवार	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, शंखेश्वर	जिनविजय, पूर्वोक्त, भाग २ लेखांक ४९८

२. शिलालेख

- (i) महामात्य वस्तुपाल द्वारा शत्रुञ्जय महातीर्थ पर उत्कीर्ण कराये गये शिलालेख की प्राचीन नकल में अन्य गच्छों के आचार्यों के साथ साथ थारापद्रगच्छ के आचार्य सर्वदेवसूरि और पूर्णभद्रसूरि का भी उल्लेख है।

लेख के मूलपाठ के लिये द्रष्टव्य - U. P. Shah - "A Forgotten Chapter in The History of Shwetambara Jaina Church" *JASB* Vol. 30, Part I, 1955, Pp - 100- 113.

- (ii) वि० सं० १३३३ का शिलालेख, जिसमें चाहमान नरेश चाचिगदेव के राज्य में स्थित महावीर जिनालय को थारापद्रगच्छ के आचार्य पूर्णभद्रसूरि के उपदेश से दान देने का उल्लेख है।

द्रष्टव्य- प्राचीनजैनलेखसंग्रह, भाग २, सं० मुनि जिनविजय, लेखांक ४०२.

घोघाकी जैन प्रतिमा निधि की दो जिन प्रतिमायें इस गच्छ से सम्बन्ध हैं। इन पर वि० सं० १२५९ और वि० सं० १५१४ के लेख उत्कीर्ण हैं, किन्तु इनके मूलपाठ हमें प्राप्त नहीं हो सके हैं, अतः इनके सम्बन्ध में विशेष विवरण दे पाना कठिन है।

संदर्भ- मधूसुदन ढांकी और हरिशंकर शास्त्री, "घोघानो जैन प्रतिमा निधि", फार्बस गुजराती सभा त्रैमासिक, जनवरी-मार्च अंक, ई० सं० १९६५.

संदर्भ सूची :-

१. अम्बालाल प्रेमचन्द्र शाह, जैनतीर्थसर्वसंग्रह, भाग १, खंड १, अहमदाबाद १९५३, पृ० ३९.
२. N. C. Mehta, "A Medieval Jaina Image of Ajitnath", *Indian Antiquary*, Vol LVI, 1927, Pp. 72-74.
३. *Ibid.* Pp. 73-74.

४. Muni Punyavijaya, *New Catalogue of Sanskrit and Prakrit Manuscripts: Jesalmer Collection*, L. D. series No. 36, Ahmedabad 1972, Pp. 43.
H. D. Velankar - *Jinaratnakosha*, Government Oriental Series, class C No 4, Pune 1944, P- 37.
५. Muni. Punyavijaya, *Ibid.*, P- 140.
६. *Ibid.*, Pp- 69-70.
७. Muni Punyavijaya, *Catalogue of Sanskrit and Prakrit Mss in the Shanti Natha Jaina Bhandar, Cambay*, G. O. S. Vol 135, 149 part I, II, Baroda 1961-1966, Pp- 109-112.
८. “वादिवेताल शांतिसूरिचरितम्”, प्रभावकचरित, सं० मुनि जिनविजय, सिंधी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थाङ्क १३, बम्बई १९४१, पृ० १३३-१३७.
९. कुवलयमालाकहा, सं० आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्ये, सिंधी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थाङ्क ४५, बम्बई १९५९, पृ० २८२-२८४; एवं अपभ्रंशकाव्यत्रयी, सं० पं० लालचन्द भगवानदास गांधी, गायकवाड़ प्राच्य ग्रन्थमाला, ग्रन्थाङ्क ३७, द्वितीय संस्करण, बडोदरा १९६७, भूमिका, पृ० ९०-९१.
१०. धर्मोपदेशमालाविवरण, सं०- पं० लालचन्द भगवानदास गांधी, सिंधी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थाङ्क २८, बम्बई १९५९, पृ० २२८-२३०.

धर्मघोषगच्छ का संक्षिप्त इतिहास

पूर्वमध्ययुग में श्वेताम्बर परम्परा में चन्द्रकुल का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। इस कुल से समय-समय पर अनेक शाखायें और प्रशाखायें निकलीं जो विभिन्न गच्छों के रूप में अस्तित्व में आयीं। ई० सन् की दसवीं शताब्दी के आस-पास चन्द्रगच्छ की एक शाखा राजगच्छ के नाम से प्रसिद्ध हुई। इस गच्छ में अभयदेवसूरि, वादीन्द्र धर्मघोषसूरि आदि प्रखर विद्वान् एवं प्रभावक आचार्य हुए। वादीन्द्र धर्मघोषसूरि की शिष्य-सन्तति धर्मघोषगच्छ के नाम से विख्यात हुई। इस गच्छ में कई प्रभावक सूरिवर हुए हैं, जिन्होंने लगभग ५०० वर्षों तक अपनी साहित्योपासना, तीर्थोद्धार, नूतन जिनालयों के निर्माण एवं जिनप्रतिमाओं की प्रतिष्ठा आदि द्वारा मध्ययुग में श्वेताम्बर श्रमण परम्परा को चिरस्थायित्व प्रदान करने में बहुमूल्य योगदान दिया।

धर्मघोषगच्छ के इतिहास के अध्ययन के स्रोत के रूप में साहित्यिक और अभिलेखीय दोनों प्रकार के साक्ष्य उपलब्ध हैं। साहित्यिक साक्ष्यों में ग्रन्थ प्रशस्तियों तथा प्रतिलिपि प्रशस्तियों के साथ-साथ राजगच्छ की पट्टावली में भी इस गच्छ की चर्चा है। अभिलेखीय साक्ष्यों के अन्तर्गत वि० सं० १३०३ से वि० सं० १६९१ तक के लगभग २०० ऐसे अभिलेख मिले हैं जो तीर्थङ्कर प्रतिमाओं तथा जिनालयों के स्तंभ आदि पर उत्कीर्ण हैं और जिनमें इस गच्छ का उल्लेख है। इनका अलग अलग विवरण इस प्रकार है—

साहित्यिक साक्ष्य — साहित्यिक साक्ष्यों के अन्तर्गत मूल प्रशस्तियां तथा प्रतिलिपि प्रशस्तियां प्रमुख हैं। मूल प्रशस्तियां ग्रन्थकर्ता द्वारा रचना

के अन्त में लिखी गयी होती हैं। इनमें ग्रन्थकार की गुरु-परम्परा का उल्लेख होता है।

अध्ययन की सुविधा के लिये सर्वप्रथम ग्रन्थ प्रशस्तियों, तत्पश्चात् अभिलेखीय साक्ष्यों और अन्त में मूल ग्रन्थ के प्रतिलेखन की दाताप्रशस्तियों एवं पट्टावली से प्राप्त विवरणों का विवेचन प्रस्तुत किया गया है —

धर्मघोषगच्छीय आचार्यों के रचनाओं की प्रशस्तियों का विवरण

१- आगमिकवस्तुविचारसारप्रकरणवृत्ति^१— आगमिकवस्तु-विचारसारप्रकरण खरतरगच्छीय आचार्य जिनवल्लभसूरि की प्रसिद्ध कृति है। इस पर ग्रन्थकार के शिष्य रामदेव गणि; बृहद्गच्छीय आचार्य हरिभद्रसूरि तथा धर्मघोषगच्छीय यशोभद्रसूरि द्वारा रचित वृत्तियां उपलब्ध होती हैं। यशोभद्रसूरि ने वृत्ति के अन्त में अपनी गुरु-परम्परा का उल्लेख किया है, जो इस प्रकार है

शीलभद्रसूरि

|

वादीन्द्रधर्मघोषसूरि

|

यशोभद्रसूरि [वृत्तिकार]

२- धर्मघोषसूरिस्तुति^२ — यह ३३ पद्यों की एक लघु रचना है, जिसके रचयिता धर्मघोषगच्छीय रविप्रभसूरि हैं। इन्होंने इस रचना में अपने गुरु का नामोल्लेख तो नहीं किया है, परन्तु इनके शिष्य उदयप्रभसूरि ने अपनी रचना प्रवचनसारोद्धार की विषमपदव्याख्या की प्रशस्ति^३ में अपने गुरु के रूप में इनका उल्लेख किया है। इस प्रशस्ति में प्राप्त गुर्वावली इस प्रकार है —

शालिभद्रसूरि

|

धर्मघोषसूरि

|

यशोभद्रसूरि

|

रविप्रभसूरि (धर्मघोषसूरिस्तुति के कर्ता)

|

उदयप्रभसूरि (व्याख्याकार)

३- विचारसारविवरण^४ — ९०० गाथाओं की इस रचना के कर्ता धर्मघोषगच्छीय प्रद्युम्नसूरि हैं। रचना के अन्त में उन्होंने अपनी गुरु-परम्परा का उल्लेख किया है, जो इस प्रकार है —

धर्मघोषसूरि

|

देवप्रभसूरि

|

प्रद्युम्नसूरि (रचनाकार)

४- कल्पसूत्रटिप्पणक^५ — यह धर्मघोषगच्छीय पृथ्वीचन्द्रसूरि की रचना है। रचना के अन्त में रचनाकार ने प्रशस्ति के अन्तर्गत अपनी गुर्वावली का उल्लेख तो किया है, परन्तु ग्रन्थ के रचनाकाल का कोई निर्देश नहीं किया है। इनका काल वि० सं० की १३ वीं शताब्दी के द्वितीय चरण के आस-पास माना जा सकता है। कल्पसूत्रटिप्पणक की वि० सं० १३८४ की एक प्रति पाटन के ग्रन्थ भंडार में संग्रहीत है। इसकी प्रशस्ति में ग्रन्थकार द्वारा उल्लिखित अपनी गुरु-परम्परा इस प्रकार है —

शीलभद्रसूरि

|

धर्मघोषसूरि

|

यशोभद्रसूरि

|

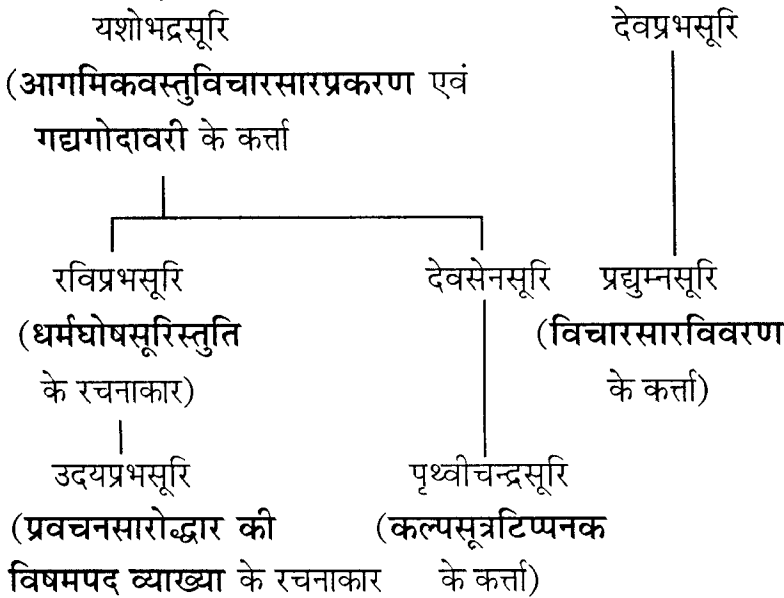
देवसेनसूरि

पृथ्वीचन्द्रसूरि (कल्पसूत्रटिप्पनक के कर्ता)

उक्त प्रशस्तियों के आधार पर धर्मघोषगच्छीय आचार्यों की जो गुर्वावली निर्मित होती है, वह इस प्रकार है —

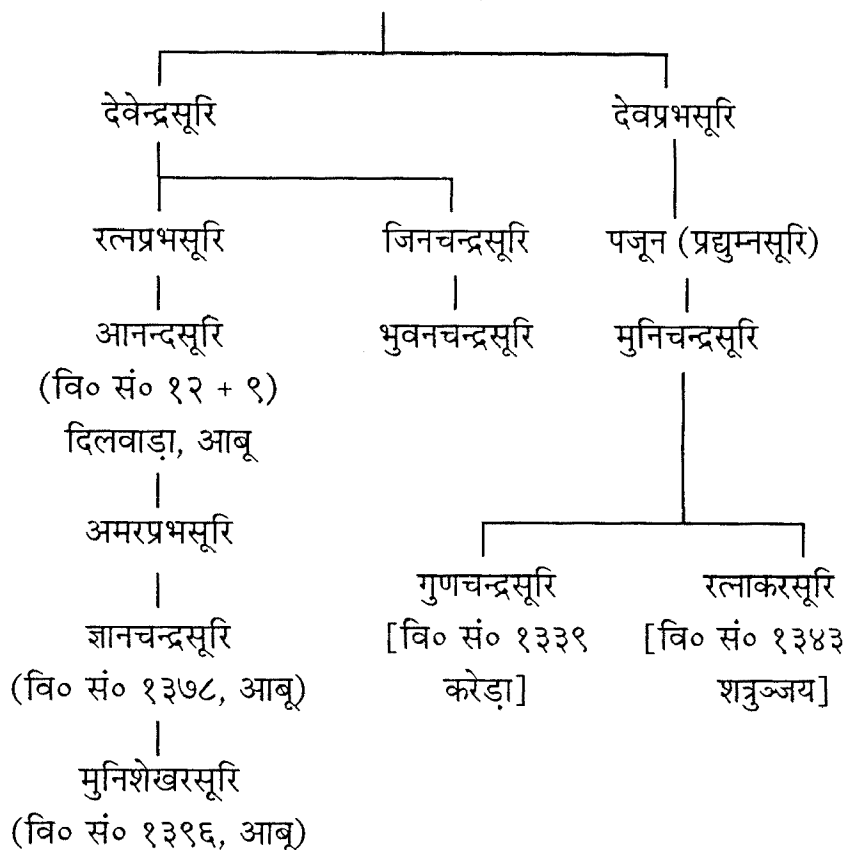
शीलभद्रसूरि

वादीन्द्र धर्मघोषसूरि



प्रो० एम० ए० ढांकी^६ ने तारङ्गा^७ के वि० सं० १३०४-१३०५; करेड़ा^८ के वि० सं० १३३९; शत्रुञ्जय^९ के वि० सं० १३४३ एवं आबू^{१०} के वि० सं० १३९६ के प्रतिमा लेखों में उल्लिखित आचार्यों की नामावली के आधार पर धर्मघोषगच्छीय आचार्यों की एक तालिका तैयार की है जो इस प्रकार है — तालिका-२

वादीन्द्र धर्मघोषसूरि



धर्मघोषगच्छीय आचार्य अमरप्रभसूरि के शिष्य ज्ञानचन्द्रसूरि^{११} द्वारा वि० सं० १३७४ से १३९६ के मध्य प्रतिष्ठापित कुछ जिन प्रतिमायें आबू स्थित विमलवसही तथा लूणवसही में विद्यमान हैं। इनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है —

वि० सं० १३७४	वैशाख सुदि ४ बुधवार	(१ प्रतिमालेख)
वि० सं० १३७८	ज्येष्ठ वदि ९ सोमवार	(२ प्रतिमालेख)
वि० सं० १३७८	वैशाख वदि ९	(३ प्रतिमालेख)
वि० सं० १३७८	तिथिविहीन	(१३ प्रतिमालेख)

वि० सं० १३७९	ज्येष्ठ सुदि ९ शुक्रवार ^{१२}	(१ प्रतिमालेख)
वि० सं० १३८९	तिथिविहीन	(१ प्रतिमालेख)
वि० सं० १३९४	तिथिविहीन	(१३ प्रतिमालेख)
वि० सं० १३९६	वैशाखसुदि ८	(१ प्रतिमालेख)
मिति/ तिथि विहीन		(३ प्रतिमालेख)

धर्मघोषगच्छीय आचार्यों द्वारा प्रतिष्ठापित तीर्थङ्कर प्रतिमाओं में १५वीं-१६वीं शती की प्रतिमाओं की संख्या सर्वाधिक है। यह तथ्य उन प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेखों से ज्ञात होता है। इन लेखों में यद्यपि इस गच्छ के अनेक आचार्यों का नामोल्लेख आया है, तथापि उनमें से कुछ आचार्यों के पूर्वापर सम्बन्ध ही निश्चित हो सके हैं। इनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है —

१- ज्ञानचन्द्रसूरि के पट्टधर सागरचन्द्रसूरि- सागरचन्द्रसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित ८ प्रतिमा लेख अद्यावधि उपलब्ध हैं, जो वि० सं० १४२६ से वि० सं० १४६३ तक के हैं।

२- सोमचन्द्रसूरि के पट्टधर देवचन्द्रसूरि- वि० सं० १४२२ का १ प्रतिमालेख

३- सोमचन्द्रसूरि के पट्टधर मलयचन्द्रसूरि

मलयचन्द्रसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित ४ लेखयुक्त प्रतिमायें आज उपलब्ध हैं जो वि० सं० १४५९ से वि० सं० १४६५ तक की हैं।

४- मलयचन्द्रसूरि के पट्टधर पद्मशेखरसूरि

पद्मशेखरसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित १९ प्रतिमायें आज उपलब्ध हैं जो वि० सं० १४७४-१४९२ तक की हैं।

५- मलयचन्द्रसूरि के शिष्य विजयचन्द्रसूरि

विजयचन्द्रसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित १ प्रतिमा उपलब्ध है जो वि० सं० १४८३ की है।

६- मलयचन्द्र के शिष्य महीतिलकसूरि

महीतिलकसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित १२ प्रतिमायें उपलब्ध हुई हैं, इनकी कालावधि वि० सं० १४८३ से वि० सं० १५१९ है।

७- पद्मशेखरसूरि के पट्टधर विजयचन्द्रसूरि

पद्मशेखरसूरि के पट्टधर विजयचन्द्रसूरि द्वारा वि० सं० १४८३ से वि० सं० १५०४ के मध्य प्रतिष्ठापित १७ प्रतिमायें आज उपलब्ध हैं।

८- महीतिलकसूरि के पट्टधर विजयप्रभसूरि

विजयप्रभसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित २ प्रतिमायें उपलब्ध हैं जिनपर वि० सं० १५०९ का लेख उत्कीर्ण है।

९- विजयचन्द्रसूरि के पट्टधर पद्माणंदसूरि

पद्माणंदसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित ३१ प्रतिमायें आज उपलब्ध हैं जो वि० सं० १५०५ से वि० सं० १५३७ के मध्य की हैं।

१०- विजयचन्द्रसूरि के शिष्य साधुरत्नसूरि

साधुरत्नसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित २३ प्रतिमायें अद्यावधि उपलब्ध हैं जो वि० सं० १५०८ से १५३२ तक की हैं।

११- पद्माणंदसूरि के पट्टधर गुणसुन्दरसूरि

गुणसुन्दरसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित केवल १ प्रतिमा मिली है। यह प्रतिमा भगवान् कुन्थुनाथ की है। प्रतिमा पर वि० सं० १५२३ का लेख उत्कीर्ण है।

१२- पद्माणंदसूरि के (द्वितीय) पट्टधर नंदिवर्धनसूरि

नंदिवर्धनसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित १० प्रतिमायें मिली हैं जो वि० सं० १५५५ से वि० सं० १५७७ तक की हैं।

इन प्रतिमालेखों के आधार पर धर्मघोषगच्छ के आचार्यों की जो तालिका निर्मित होती है, वह इस प्रकार है —

तालिका संख्या ३

ज्ञानचन्द्रसूरि वि० १३७८-९४

सोमचन्द्रसूरि

मुनिशेखरसूरि

(वि० सं०

१३९६)

सागरचन्द्रसूरि

(वि० सं०

१४२६-

१४६३)

(के मध्य ८

प्रतिमालेख)

देवचन्द्रसूरि

(वि० सं०

१४२२

मलयचन्द्रसूरि

वि० सं०

१४५९-

१४६५

(४ प्रतिमा लेख)

पद्मशेखरसूरि

मुख्य पट्टधर

वि० सं० १४७४-१४९२

(१९ प्रतिमा लेख)

विजयचन्द्रसूरि

शिष्य पट्टधर

वि० सं०

१४८३-१५०४

(१८ प्रतिमा लेख)

महीतिलकसूरि

शिष्य पट्टधर

वि० सं० १४८३-

१५१९

(१२ प्रतिमा लेख)

पद्मानन्दसूरि

वि० सं०

१५०५-१५३७

(३१ प्रतिमा लेख)

साधुरत्नसूरि

वि० सं०

१५०८-१५३२

(२३ प्रतिमा लेख)

विजयप्रभसूरि

गुणसुन्दरसूरि

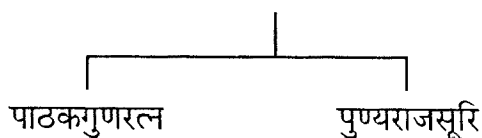
वि० सं० १५३२

(१ प्रतिमा लेख)

नंदिवर्धनसूरि

वि० सं० १५५५-

१५७७ (१० प्रतिमालेख)



पुस्तक प्रशस्तियाँ

१- कालकाचार्यकथा^{१३}

इस रचना की वि० सं० १३४४ की एक प्रति पाटन के जैन ग्रन्थ भंडार में सुरक्षित है। इसे धर्मघोषगच्छीय आचार्य अमरप्रभसूरि के उपदेश से सोमसिंह नामक श्रावक ने लिपिबद्ध कराया था। इसकी प्रशस्ति में अमरप्रभसूरि की गुरु-परम्परा का उल्लेख मिलता है जो इस प्रकार है —

शीलभद्रसूरि

धर्मघोषसूरि

आनन्दसूरि

अमरप्रभसूरि

(वि० सं० १३४४ में इनके उपदेश से कलकाचार्यकथा की प्रतिलिपि तैयार की गयी)

२- लघुक्षेत्रसमासवृत्ति^{१४}

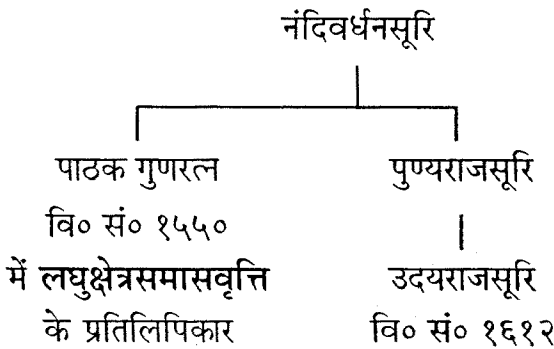
यह रत्नशेखरसूरि की रचना है। इसकी वि० सं० १५५० में धर्मघोषगच्छीय मुनि नन्दिवर्धनसूरि के शिष्य पाठक गुणरत्न द्वारा लिपिबद्ध की गयी एक प्रति मुनिश्रीपुण्यविजय जी के संग्रह में सुरक्षित है।

नंदिवर्धनसूरि के शिष्य पाठक गुणरत्न का उल्लेख करनेवाला एक मात्र साक्ष्य होने से इस प्रशस्ति का विशिष्ट महत्त्व है ।

३- कल्पसूत्र^{१५} — इस पुस्तक की मुनिराज श्री पुण्यविजयजी के संग्रह में एक प्रति सुरक्षित है । यह प्रति मुनि उदयरज के वाचनार्थ लिखवायी गयी । यह बात इसकी दाता प्रशस्ति से ज्ञात होती है । इस प्रशस्ति की विशेषता यह है कि इसमें धर्मघोषगच्छीय आचार्य पद्माणंदसूरि और नंदिवर्धनसूरि को राजगच्छीय कहा गया है । जैसा कि प्रारम्भ में ही कहा जा चुका है धर्मघोषगच्छ का राजगच्छ की एक शाखा के रूप में ही उदय हुआ । १७ वीं शताब्दी में दोनों ही गच्छों का पूर्व प्रभाव समाप्तप्राय हो चुका था और उनका अलग-अलग स्वतन्त्र अस्तित्व भी नाम मात्र का ही रहा होगा । ऐसी स्थिति में एक समकालीन लिपिकार अथवा मुनि द्वारा उन्हें राजगच्छीय कहना अस्वाभाविक नहीं लगता ।

अंतिम दोनों दाताप्रशस्तियों से जो गुर्वावली निर्मित होती है, वह इस प्रकार है —

तालिका-४



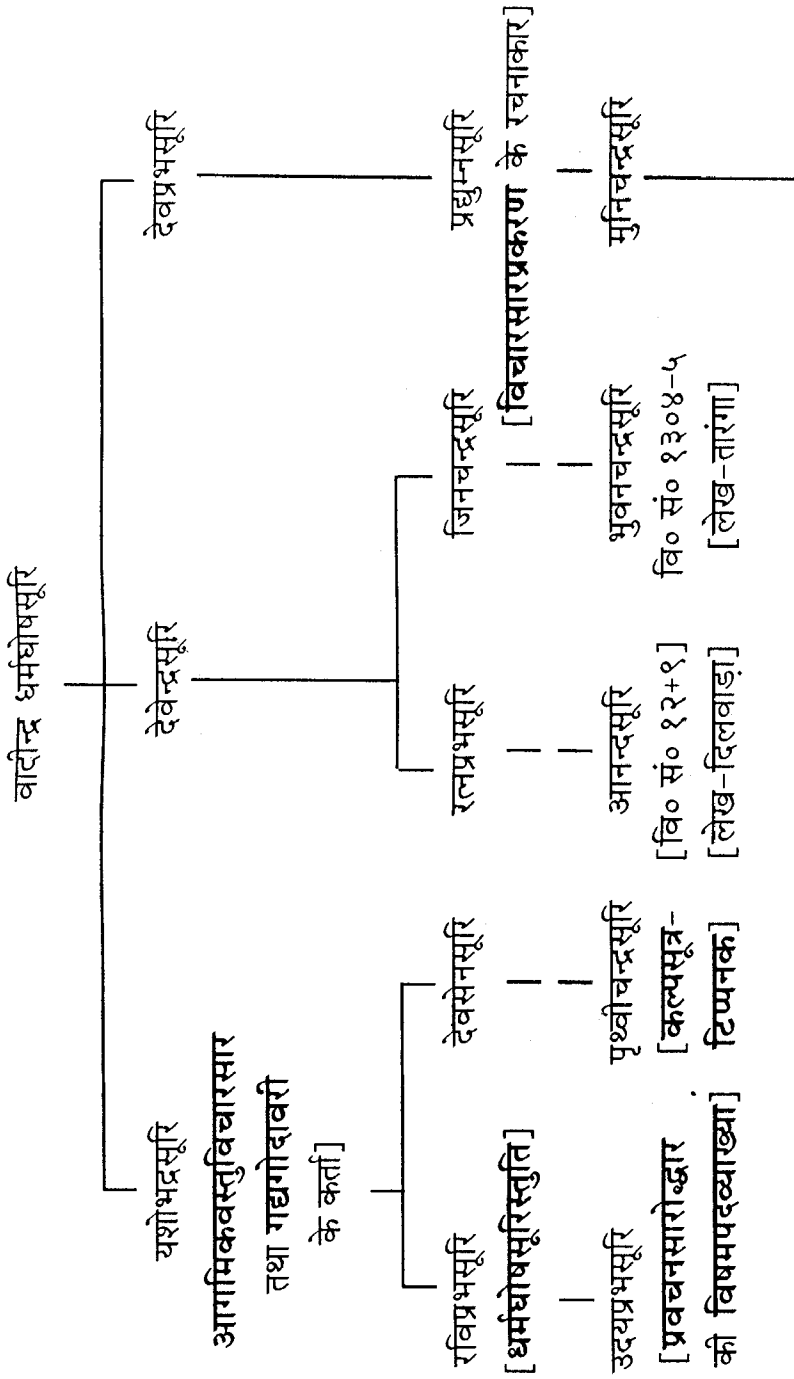
पूर्व प्रदर्शित तालिका संख्या ३ के सम्बन्ध में उल्लेखनीय तथ्य यह है कि इसमें एक ओर मलयचन्द्रसूरि के गुरु सोमचन्द्रसूरि का उल्लेख है, परन्तु सोमचन्द्रसूरि के गुरु कौन थे ? यह हमें ज्ञात नहीं होता । दूसरी ओर इस तालिका से यह भी ज्ञात होता है कि ज्ञानचन्द्रसूरि के शिष्य

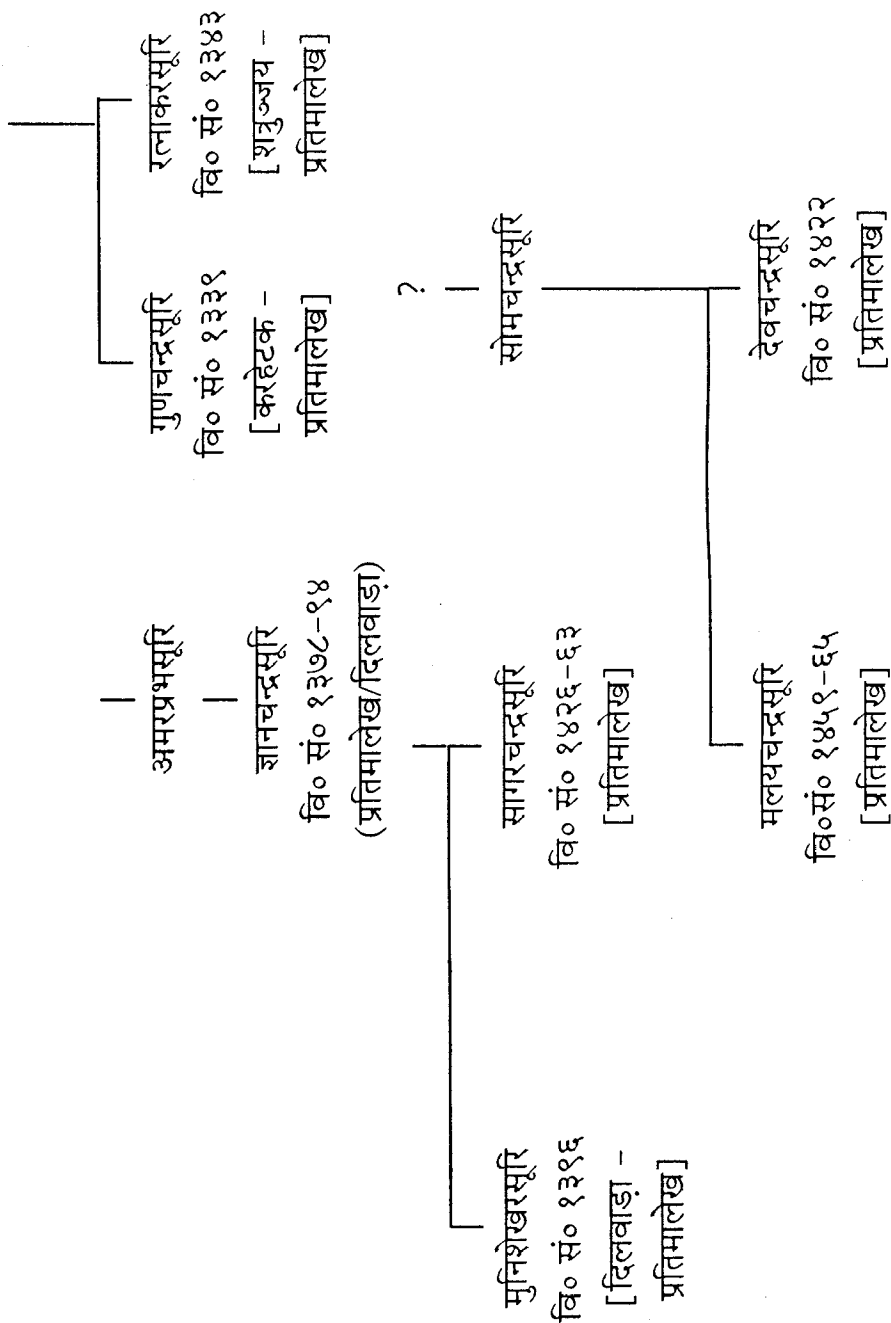
सागरचन्द्रसूरि के पश्चात् उनकी शिष्य संतति के बारे में अभिलेखीय साक्ष्य मौन हैं। क्या सागरचन्द्रसूरि की शिष्य सन्तति आगे नहीं चली? ये दो ऐसे प्रश्न हैं, जिनके उत्तर के लिये हमें अन्यत्र प्रयास करना होगा।

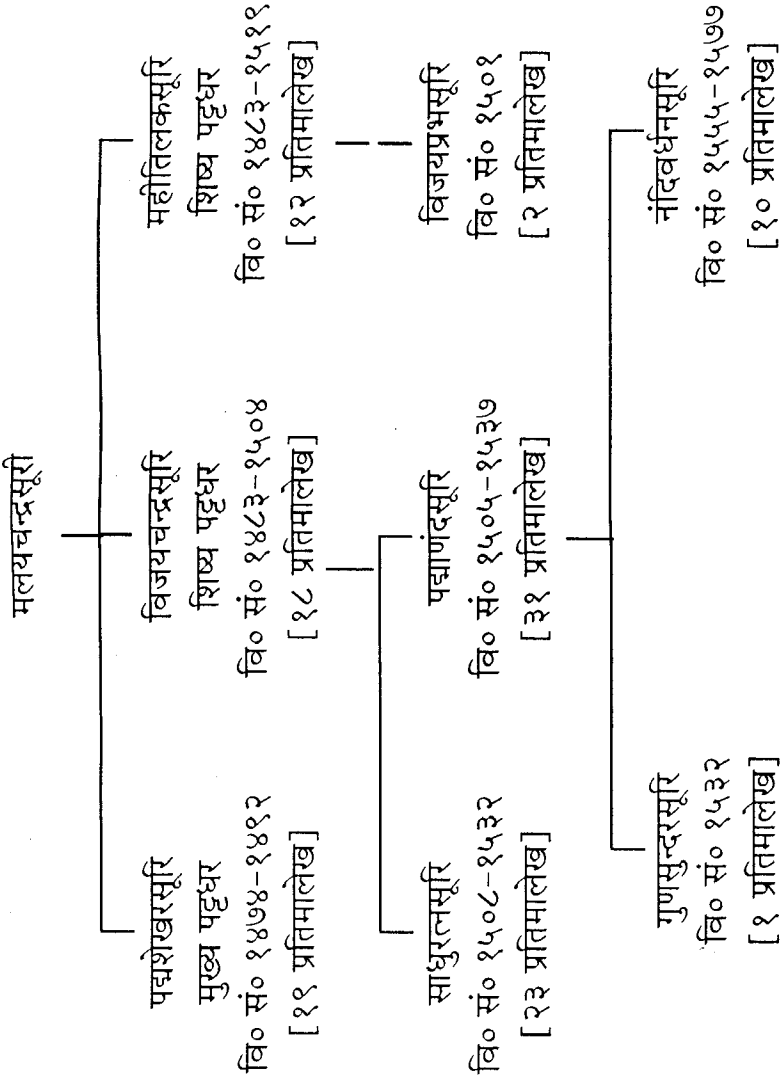
जैसा कि पहले कहा जा चुका है, धर्मघोषगच्छ के इतिहास के अध्ययन के लिये साहित्यिक साक्ष्यों के अन्तर्गत एक पट्टावली भी उपलब्ध है, वह है एक अज्ञात लेखक द्वारा १६ वीं शती के अन्तिम चरण के आस-पास लिखी गयी **राजगच्छीयपट्टावली**^{१६}। इसमें न केवल राजगच्छीय आचार्यों अपितु इस गच्छ की शाखा धर्मघोषगच्छ के आचार्यों—ज्ञानचन्द्रसूरि, सागरचन्द्रसूरि, मलयचन्द्रसूरि, पद्मशेखरसूरि आदि का भी उल्लेख है।^{१७} पूर्व प्रदर्शित तालिका २ और ३ में भी उक्त आचार्यों का नामोल्लेख है, अतः इस पट्टावली की प्रामाणिकता असंदिग्ध है।

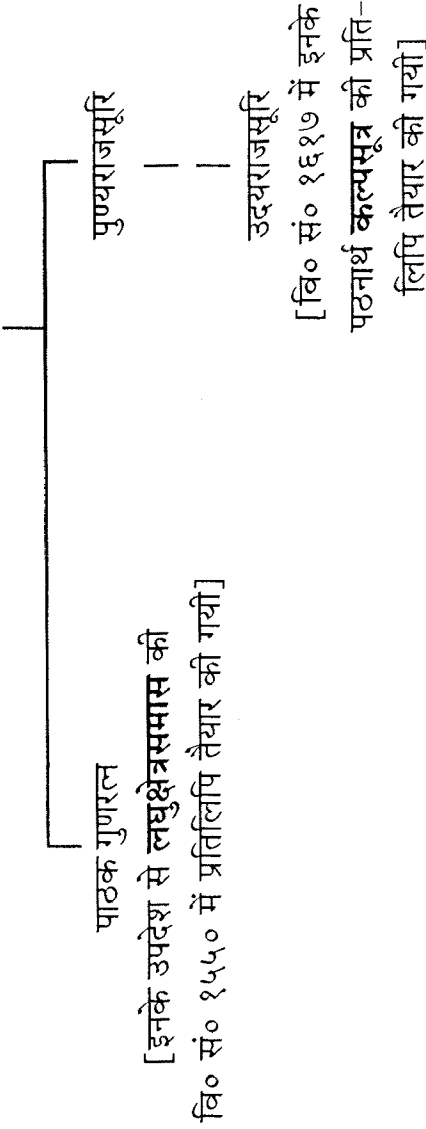
राजगच्छीयपट्टावली^{१८} में सागरचन्द्रसूरि के पट्टधर के रूप में मलयचन्द्रसूरि का उल्लेख है, जब कि पूर्व में सोमचन्द्रसूरि के पट्टधर के रूप में मलयचन्द्रसूरि का नाम आया है।^{१९} ऐसा प्रतीत होता है कि मलयचन्द्रसूरि के दीक्षागुरु सोमचन्द्रसूरि थे एवं सागरचन्द्रसूरि ने उन्हें अपने पट्ट पर प्रतिष्ठित किया। जहाँ तक सोमचन्द्रसूरि और सागरचन्द्रसूरि का प्रश्न है, वे परस्पर गुरुभ्राता हो सकते हैं क्योंकि किसी आचार्य द्वारा अपने उत्तराधिकारी के रूप में स्वदीक्षित योग्य शिष्य के अभाव में अपने गुरुभ्राता के शिष्य को अपना पट्टधर बनाना अस्वाभाविक नहीं है।

उक्त चारों तालिकाओं में दर्शित गुर्वावलियों को परस्पर समायोजित करने से धर्मघोषगच्छीय आचार्यों का एक विस्तृत विद्यावंशवृक्ष तैयार हो जाता है, जो इस प्रकार है —









धर्मधोषगच्छीय आचार्यों द्वारा प्रतिष्ठापित तीर्थंकरप्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेखों का विवरण						
क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१.	१३०४	द्वितीय ज्येष्ठ सुदि ९ सोमवार	जिनचन्द्रसूरि के शिष्य भुवनचन्द्रसूरि	अजितनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अजितनाथ जिनालय, तारंगा	सम्बोधि, जिल्द ७, पृ० १३-२५
२.	१३०५	आषाढ़ सुदि ७ शुक्रवार	धर्मधोषसूरि के पट्टधर देवेन्द्रसूरि के पट्टशिष्य जिनचन्द्रसूरि के पट्टशिष्य भुवनचन्द्रसूरि	अजितनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अजितनाथ जिनालय, तारंगा	वही
३.	१३०९	—	आनन्दसूरि	विमलवसही, देहरी नं० १२, नमिनाथ की	विमलवसही, आबू	मुनि कल्याणविजय प्रबन्धपारिजात, पृ० ३४३-३४५,

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
				प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख		लेखाङ्क २९
४.	१३३९	फाल्गुन सुदि ८ बुधवार	मुनिचन्द्रसूरि के पट्टधर गुणचन्द्रसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बावनजिनालय, कोड़ा	नाहट, पूर्वोक्त, जैनलेखसंग्रह, भाग २, लेखांक १९५२
५.	१३७४	वैशाख सुदि ४ बुधवार	ज्ञानचन्द्रसूरि	शान्तिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अनुपूर्ति लेख	मुनि जयन्तविजय, अर्बुदप्राचीनजैन लेखसंदोह, लेखांक ५४४
६.	१३७८	वैशाख वदि ९ सोमवार	“	सुविधिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	विमलवसही, आबू	वही, भाग २, लेखांक १३३

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
७.	१३७८	वैशाख वदि ९	”	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक ७५
८.	१३७८	वैशाख वदि ९	”	तीर्थङ्कर की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक ८१
९.	१३७८	वैशाख वदि ९	”	वही	वही	वही, लेखांक ८३
१०.	१३७८	ज्येष्ठ सुदि ९ सोमवार	”	गुरु प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक १

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
११.	१३७८	ज्येष्ठ वदि ९ सोमवार	"	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक ४
१२.	"	तिथि विहीन	"	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	वही	वही, लेखांक ६५
१३.	"	"	"	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	वही	वही, लेखांक ६९
१४.	"	"	"	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	वही	वही, लेखांक ११६
१५.	"	"	"	अनन्तनाथ की प्रतिमा का लेख	वही	वही, लेखांक १२०
१६.	"	"	"	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	वही	वही, लेखांक १२८

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१७.	"	"	"	--	वही	वही, लेखांक १६२
१८.	"	"	"	महावीर प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक २०
१९.	"	"	"	--	वही	वही, लेखांक २६
२०.	"	"	"	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक ३१
२१.	"	"	"	--	वही,	वही, लेखांक ३२

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२२.	"	"	"	— —	वही	वही, लेखांक ३६
२३.	"	"	"	अभिनन्दनस्वामी की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक ३७
२४.	१३८९	"	"	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक १२
२५.	१३९४	"	"	नेमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक ५७
२६.	१३९४	"	"	जिनप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक ४४

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२७.	"	"	"	महावीर स्वामी की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक ४१
२८.	"	"	"	नेमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक १०५
२९.	"	"	"	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक १०७
३०.	"	"	"	जिनप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक १२७

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
३१.	"	"	"	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक १३८
३२.	"	"	"	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुविधिनाथ मंदिर, पित्तलहर, आबू	वही, लेखांक ४३८
३३.	"	"	"	जिनप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक ७९
३४.	"	"	"	शीतलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक १६८

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
३५.	"	"	"	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक ७७
३६.	"	"	"	नेमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	लूवणसही, आबू	वही, लेखांक २५२
३७.	"	"	"	वासुपूज्यस्वामी की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	विमलवसही, आबू	वही, लेखांक ६७
३८.	१३९६	वैशाख सुदि ८	"	—	वही	वही, लेखांक ९१

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
३९.	१३१९	"	"	पुण्डरीकस्वामी की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुविधिनाथ मंदिर पित्तलहर, आबू	वही, लेखांक ४३२
४०.	१३१७	माघ सुदि १० शनिवार	मानतुंगसूरि के शिष्य हंसराजसूरि	महावीरस्वामी की धातुप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, मेहसाणा	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त लेखांक ६५
४१.	१४१३	ज्येष्ठ सुदि ७ शुक्रवार	गुणभद्रसूरि के शिष्य सर्वानंदसूरि	शान्तिनाथ की चौबीसी का लेख	चिन्तामणिजी का, मंदिर, बीकानेर	अगरचन्द नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ४३२
४२.	१४१५	तिथि विहीन	"	चन्द्रप्रभ की धातुप्रतिमा का लेख	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ७४

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
४३.	१४१५	आषाढ़ वदि १३	सर्वाणंदसूरि	चन्द्रप्रभ की धातुप्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	अगरचन्द नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ४३६
४४.	१४२२	चैत्र सुदि १२	सोमचन्द्रसूरि के शिष्य देवचन्द्रसूरि	शीतलनाथ की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय जैसलमेर	पूरनचन्द नाहर, पूर्वोक्त, भाग ३, लेखांक २२७१
४५.	१४२३	माघ सुदि ८ रविवार	महेन्द्रसूरि के पट्टधर शीलभद्रसूरि	शीतलनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	अगरचन्द नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ४५२
४६.	१४२६	वैशाख सुदि ९ रविवार	ज्ञानचन्द्रसूरि के शिष्य सागरचन्द्रसूरि	चन्द्रप्रभ की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, बीकानेर	वही लेखांक १६४८

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
४७.	१४३०	फाल्गुन सुदि १०	सागरचन्द्रसूरि	पंचतीर्थी का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	वही, लेखांक ४९६
४८.	१४३२	वैशाख वदि ११ सोमवार	”	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	अनुपूर्ति लेख, आबू	मुनि जयन्तविजय, पूर्वोक्त, लेखांक ५८७
४९.	१४३२	माघ सुदि ८ रविवार	महेन्द्रसूरि के पट्टधर शीलभद्रसूरि	शीतलनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नदटा, पूर्वोक्त, लेखांक ५००
५०.	१४३४	—	सागरचन्द्रसूरि	शान्तिनाथ की प्रतिमा का लेख	वही	वही, लेखांक ५१५
५१.	१४३४	वैशाख वदि २	वीरभद्रसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का	विमलनाथ जिनालय, सवाई माधोपुर	विनयसागर, संपा० प्रतिष्ठा-

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
				लेख		लेखसंग्रह, भाग १ लेखांक १६१
५२.	१४३५	माघ वदि १२ सोमवार	वीरभद्रसूरि	वासुपूज्यस्वामी की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ५१८
५३.	१४३८	ज्येष्ठ वदि ४	सागरचन्द्रसूरि	पार्श्वनाथ की पंचतीर्थी का लेख	वही	वही, लेखांक ५३३
५४.	१४३८	चैत्र सुदि १५ सोमवार	पद्मशेखरसूरि	शान्तिनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, नागौर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग- २ लेखांक १२३५
५५.	१४४०	फाल्गुन सुदि ८ सोमवार	ज्ञानचन्द्रसूरि के पट्टधर सागरचन्द्रसूरि	शान्तिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शान्तिनाथ जिनालय, राधनपुर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ८६

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
५६.	१४४२	— सुदि १०	सागरचन्द्रसूरि	चन्द्रप्रभस्वामी की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ८३२
५७.	१४४७	फाल्गुन सुदि ८ सोमवार	ज्ञानचन्द्रसूरि के पट्टधर सागरचन्द्रसूरि	शान्तिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर, राधनपुर	मुनिविशाल विजय संपा०- राधनपुर- प्रतिमालेखसंग्रह, लेखांक ८०
५८.	१४५५	—	सर्वाणंदसूरि	चन्द्रप्रभस्वामी की प्रतिमा का लेख	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १०६०
५९.	१४५९	ज्येष्ठ वदि १२ शनिवार	मलयचन्द्रसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	लौकागच्छीय जैन उपाश्रय, बालापुर, अकोला	बुद्धिसागरसूरि, संपा०- जैनधातु- प्रतिमालेखसंग्रह,

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
						भाग १, लेखांक ६०
६०.	१४६१	माघ सुदि १०	“	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ६०२
६१.	१४६१	माघ सुदि १०	“	शान्तिनाथ की प्रतिमा का लेख	लाला हजारीमल का घर देरासर, दिल्ली	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १८७६
६२.	१४६३	फाल्गुन सुदि ८	सागरचन्द्रसूरि	“	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त लेखांक ६०८
६३.	१५६५	वैशाख सुदि ३	सोमचन्द्रसूरि के शिष्य मलयचन्द्रसूरि	“	श्रीमालों का मंदिर, जयपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १२२० एवं विनयसागर,

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
६४.	१४७३	माघ सुदि ५	रत्नसागरसूरि	”	आदिनाथ जिनालय, भायखला, बम्बई	पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १८९ मुनि कान्तिसागर, संपा०- जैनधातु- प्रतिमालेख, लेखांक ७०
६५.	१४७३	ज्येष्ठ सुदि २ शुक्रवार	पद्मसिंहसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १०६४ एवं विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ११३

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
६६.	१४७४	फाल्गुन वदि २	मलयचन्द्रसूरि के पट्टधर पद्मशेखरसूरि	"	आदिनाथ जिनालय, नागौर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक १२३९ एवं विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक २१३
६७.	१४७४	मार्ग ?	पद्मशेखरसूरि	"	आदिनाथ जिनालय, पूना	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ११४
६८.	१४७७	माघ सुदि ६ गुरुवार	पद्मचन्द्रसूरि के पट्टधर महेन्द्रसूरि	चन्द्रप्रभस्वामी की प्रतिमा का लेख	चित्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ६८९

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
६९.	१४७८	चैत्र सुदि १५ सोमवार	मलयचन्द्रसूरि के पट्टधर पद्मशेखरसूरि	शान्तिनाथ की प्रतिमा का लेख	बड़ा मंदिर, नागौर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक २१९
७०.	१४८०	फाल्गुन वदि १० बुधवार	पद्मशेखरसूरि	चन्द्रप्रभस्वामी की प्रतिमा का लेख	अनुपूर्ति लेख आबू	मुनि जयन्तविजय, पूर्वोक्त, लेखांक ६१८
७१.	१४८१	वैशाख सुदि ३ रविवार	जयशेखरसूरि	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	संभवनाथ जिनालय, अजमेर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक २३०
७२.	१४८२	वैशाख वदि ८	पद्मशेखरसूरि	शान्तिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ७०९
७३.	"	"	"	नमिनाथ की प्रतिमा का लेख	"	वही, लेखांक ७१०

क्रमाङ्क.	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
७४.	"	"	"	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	महावीरस्वामी का मंदिर, सांगानेर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक २३३
७५.	"	"	"	मुनिसुव्रत की प्रतिमा का लेख	माणिकसागरजी का मंदिर, कोटा	वही, लेखांक २३४
७६.	१४८३	वैशाख सुदि	मलयचन्द्रसूरि के पट्टधर पद्मशेखरसूरि	शान्तिनाथ की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, सांगानेर	वही, लेखांक २४३
७७.	१४८३	भाद्रपद वदि ७ गुरुवार	मलयचन्द्रसूरि के पट्टधर विजयचन्द्रसूरि	पार्श्वनाथ जिनालय का शिखर बनवाने का उल्लेख	जैनमंदिर, थराद	दौलतसिंह लोढा, संपा०-श्रीप्रतिमा- लेखसंग्रह, लेखांक २९० एवं मुनि जयन्तविजय

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
						संपा० अर्बुदाचल- प्रदक्षिणाजैन- लेखसंदोह, लेखांक १४०
७८.	१४८३	वैशाख सुदि ३ मंगलवार	पद्मशेखरसूरि	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	विमलवसही, आबू	मुनि जयन्तविजय, पूर्वोक्त, लेखांक ७५
७९.	१४८३	मार्गशीर्ष सुदि ५ सोमवार	महीतिलकसूरि	पद्मप्रभ की प्रतिमा का लेख	माणिकसागरजी का मंदिर, कोटा	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक २४४
८०.	१४८५	ज्येष्ठ सुदि १३ सोमवार	पद्मशेखरसूरि	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	महावीरस्वामी का जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १३५८

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्वाम्यलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
८१.	१४८५	ज्येष्ठ सुदि १३ सोमवार	पद्मशेखरसूरि	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	शान्तिनाथ जिनालय, नमकमण्डी, आगरा	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १४९१
८२.	१४८५	ज्येष्ठ सुदि १३	मलयचन्द्रसूरि के पट्टधर पद्मशेखरसूरि	वही	वही	वही, भाग २, लेखांक १४९१
८३.	१४८६	ज्येष्ठ सुदि १३ सोमवार	महीतिलकसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	नया मंदिर, जयपुर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक २६० एवं नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ११८०

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
८४.	१४८७	आषाढ सुदि ९	पद्मशेखरसूरि	मुनिसुव्रतस्वामी की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ७३६
८५.	१४८७	श्रावण वदि ५ रविवार	”	वासुपूज्यस्वामी की पंचतीर्थी का लेख	विमलनाथ जिनालय, सवाई माधोपुर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक २६६
८६.	१४९१	ज्येष्ठ वदि ८ रविवार	मलयचन्द्रसूरि के पट्टधर पद्मशेखरसूरि	सुविधिनाथ की चौबीसी का लेख	जैन मंदिर, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ७४२
८७.	१४९२	मार्गशिरष वदि ४ गुरुवार	पद्मशेखरसूरि	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	संभवनाथ जिनालय, अजमेर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक २९१

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
८८.	१४९३	वैशाख सुदि ५ बुधवार	"	चन्द्रप्रभ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ७६६
८९.	१४९३	वैशाख सुदि ५ बुधवार	"	वासुपूज्य स्वामी की चौबीसी प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय बीकानेर	वही, लेखांक १६४७
९०.	१४९३	पौष वदि १ शनिवार	विजयचन्द्रसूरि	कुन्थुनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, नाहटों की गवाड़, बीकानेर	वही, लेखांक १८२९
९१.	१४९३	वैशाख सुदि ५ बुधवार	विजयचन्द्रसूरि (पद्मशेखरसूरि के पट्टधर)	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त, लेखांक ९८

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१२.	१४९४	वैशाख सुदि	विजयचन्द्रसूरि	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ७७४
१३.	१४९५	ज्येष्ठ सुदि १३ सोमवार	वि.....?	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ मंदिर नौहर, बीकानेर	वही, लेखांक २४८५
१४.	१४९५	ज्येष्ठ सुदि १४ बुधवार	विजयचन्द्रसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक
१५.	१४९५	फाल्गुन वदि ... रविवार	"	"	चन्द्रप्रभ जिनालय, कालू, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त लेखांक २५१३

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
९६.	१४९५	पौष वदि १ रविवार	"	चन्द्रप्रभ की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय बीकानेर	वही, लेखांक १३३८
९७.	१४९५	फाल्गुन वदि रविवार	पद्मशेखरसूरि के पट्टधर विजयचन्द्रसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, कालू, बीकानेर	वही, लेखांक २५१३
९८.	१४९६	वैशाख सुदि १२	महीतिलकसूरि	"	चन्द्रप्रभ जिनालय जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग ३, लेखांक २३११
९९.	१४९६	फाल्गुन वदि १० रविवार	विजयचन्द्रसूरि	मुनिसुब्रतनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त लेखांक ७९१

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१००.	१४९७	माघ सुदि ८ सोमवार	"	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	"	वही, लेखांक ७९१
१०१.	१४९७	चैत्र सुदि १५	पद्मसूरिशिष्य मुनिपद्मसागर	—	विमलवसही, आबू	मुनि जयन्तविजय, पूर्वोक्त, लेखांक १६९
१०२.	१४९८	माघ सुदि ५ गुरुवार	विजयचन्द्रसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ८०३
१०३.	१४९८	फाल्गुन वदि २	विजयचन्द्रसूरि	वासुपूज्यस्वामी की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, हीराबाड़ी, नागौर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग- २, लेखांक १२४७ एवं विनयसागर,

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
						पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ३२७
१०४.	१४९९	फाल्गुन वदि १३	महेन्द्रसूरि	चन्द्रप्रभस्वामी की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ८१०
१०५.	१५०१	फाल्गुन वदि १३ गुरुवार	विजयचन्द्रसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	शीतलनाथ जिनालय, मेवाड़	नाहर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक १०७९
१०६.	१५०१	माघ सुदि १० सोमवार	विजयप्रभसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	विमलनाथ जिनालय, सवाईमाधोपुर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ३५२
१०७.	१५०१	माघ सुदि १०	महीतिलकसूरि के शिष्य	पद्मप्रभ की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, आमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २,

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
		सोमवार	विजयप्रभसूरि			लेखांक ११४४ एवं विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ३४८
१०८.	१५०१	फाल्गुन सुदि १३ शनिवार	पद्मशेखरसूरि के पट्टधर विजयचन्द्रसूरि	अभिनन्दनस्वामी की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, रतलाम	वही भाग १, लेखांक ३५३
१०९.	१५०३	ज्येष्ठ सुदि ११	"	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ८६६
११०.	१५०३	"	"	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, बोहारनटोला, लखनऊ	नाहर, पूर्वोक्त, भाग- २, लेखांक १५४७

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१११.	१५०३	माघ सुदि ५	महीतिलकसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, नमकमंडी, आगरा	वही पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १४९२
११२.	१५०४	मार्गसिर सुदि ५	पूर्णचन्द्रसूरि के पट्टधर महेन्द्रसूरि	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ८८३
११३.	१५०४	फाल्गुन सुदि ११ गुरुवार	विजयचन्द्रसूरि	वासुपूज्यस्वामी की प्रतिमा का लेख	पंचायती जैन मंदिर, लस्कर, ग्वालियर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १३९९
११४.	१५०५	वैशाख सुदि ५ बुधवार	महीतिलकसूरि	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	विमलनाथ जिनालय, सवाईमाधोपुर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ३८९

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
११५.	१५०५	पौष सुदि १५	विनयचन्द्रसूरि के पट्टधर पद्मानन्दसूरि	अरनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, वैदों का चौक, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १२०७
११६.	१५०५	"	पूर्णचन्द्रसूरि के पट्टधर महेन्द्रसूरि	चन्द्रप्रभ की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, मद्रास	नाहर, पूर्वोक्त, भाग- २, लेखांक २०६८
११७.	१५०६	माघ सुदि ५ रविवार	विजयचन्द्रसूरि के पट्टधर साधुरत्नसूरि	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १०२
११८.	१५०६	माघ वदि ६	महीतिलकसूरि	वासुपूज्यस्वामी की प्रतिमा का लेख	"	वही, लेखांक १०१

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
११९.	१५०६	फाल्गुन वदि ५ सोमवार	विजयचन्दसूरि के पट्टधर साधुरत्नसूरि	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	खरतरगच्छीय आदिनाथ जिनालय, कोटा	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ४०९
१२०.	१५०६	वैशाख सुदि ६ शुक्रवार	"	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, जूनागढ़	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक २२४
१२१.	१५०६	माघ सुदि ५ रविवार	"	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ९०३
१२२.	१५०७	माघ सुदि १३ शुक्रवार	पद्मानंदसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	बड़ा मंदिर, नागौर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ४२२

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१२३.	१५०७	ज्येष्ठ सुदि १०	—	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, चूरू, राजस्थान	नाहर, पूर्वोक्त, भाग- २, लेखांक १३६०
१२४.	१५०८	आषाढ़ वदि २ सोमवार	विजयचन्द्र के शिष्य साधुरत्नसूरि	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १३२३
१२५.	१५०९	फाल्गुन वदि १० शनिवार	"	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, रतलाम	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ४४९
१२६.	१५०९	माघ वदि ५	पद्माणंदसूरि	"	वीर जिनालय, वैदों का चौक, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १२२२

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्वाम्यलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१२७.	१५०९	माघ वदि ५ रविवार	पद्मणंदसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	"	वही, लेखांक १२४०
१२८.	१५०९	ज्येष्ठ सुदि ५ रविवार	पद्मशेखरसूरि के पट्टधर विजयचन्द्र के शिष्य पद्मणोदयसूरि (पद्मणंदसूरि)	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, खेड़ा	बुद्धिसागरसूरि, संपा०- जैनधातु- प्रतिमालेखसंग्रह, भाग २, लेखांक ४३८
१२९.	१५११	माघ वदि ५	महीतिलकसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, लखनऊ	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १५३८

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१३०.	१५१२	वैशाख सुदि ३	पद्मशेखरसूरि के पट्टधर पद्माणंदसूरि	"	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १५६
१३१.	"	"	"	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	"	वही, लेखांक १५५
१३२.	१५१२	वैशाख सुदि ३	"	कुंथुनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ मंदिर, नौहर, बीकानेर	वही, लेखांक २४८६
१३३.	१५१२	वैशाख सुदि १०	विनयचंद्रसूरि के पट्टधर साधुरत्नसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १०९०
१३४.	१५१२	मार्गशीर्ष वदि २ सोमवार	"	अरनाथ की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, सांगानेर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ४८४

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१३५.	१५१२	ज्येष्ठ सुदि १	"	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय देवीकोट, जैसलमेर	नाहटा, पूर्वोक्त, भाग ३, लेखांक २५७९
१३६.	"	"	"	शीतलनाथ की प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ जिनालय, जयपुर	वही, भाग २, लेखांक १०८८
१३७.	१५१३	चैत्र सुदि ६ गुरुवार	"	"	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग- २, लेखांक १०८८ एवं विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक २८८
१३८.	१५१३	वैशाख सुदि ३	मंहीतिलकसूरि	शान्तिनाथ की प्रतिमा	गौड़ी पार्श्वनाथ जिनालय,	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १९३५

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
					गोगा दरवाजा, बीकानेर	
१३९.	१५१३	ज्येष्ठ वदि ११	पद्मशेखरसूरि के पट्टधर पद्माणंदसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	गौड़ी पार्श्वनाथ जिनलय, मोती कटरा, आगरा	नाहर, पूर्वोक्त, भाग- २, लेखांक १४७४
१४०.	१५१३	ज्येष्ठ वदि ११ गुरुवार	साधुरत्नसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर जिनलय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १३५३
१४१.	"	"	"	नभिनाथ की प्रतिमा लेख	आदिनाथ जिनलय, लूणकरणसर, बीकानेर	वही, लेखांक २४९५
१४२.	१५१३	आषाढ़ वदि ९ गुरुवार	पद्माणंदसूरि	चन्द्रप्रभ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	वही लेखांक १६९

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१४३.	१५१४	माघ सुदि १ शुक्रवार	विजयचन्द्रसूरि के पट्टधर साधुरत्नसूरि	अभिनन्दननाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक ८७५
१४४.	१५१५	ज्येष्ठ सुदि ५ सोमवार	पद्मशेखरसूरि के पट्टधर पद्माणंदसूरि	कुंथुनाथ की चौबीसी का लेख	महावीर जिनालय जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, लेखांक २४१२
१४५.	१५१५	मार्ग(?) सुदि १० गुरुवार	महीतिलकसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	गौड़ीजी भंडार, उदयपुर में संरक्षित	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक २९७
१४६.	१५१७	वैशाख सुदि ४ गुरुवार	पद्माणंदसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १०००

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१४७.	१५१७	माघ वदि ८ रविवार	विजयचन्द्रसूरि के पट्टधर साधुरत्नसूरि	"	"	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १००२
१४८.	१५१७	माघ सुदि १ शुक्रवार	"	शीतलनाथ की प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग- २, लेखांक १०६४
१४९.	१५१८	चैत्र सुदि ३	"	अभिनन्दनस्वामी की प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर, बडोदरा	वही, भाग- २, लेखांक ८०
१५०.	१५१८	"	"	"	जैनमंदिर, खंभात	वही, भाग- २, लेखांक १०४६

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१५१.	१५१८	वैशाख सुदि ४ रविवार	महीतिलकसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, भिनाय	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ५७७
१५२.	१५१८	मार्गशीर्ष सुदि १० शनिवार	रूपचन्द्रसूरि के पट्टधर पद्मशेखरसूरि के पट्टधर विजयचन्द्रसूरि के पट्टधर पद्मानंदसूरि	मूलनायक की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैन मंदिर, टोडारायसिंह	वही, लेखांक ५८१
१५३.	१५८ (१५१८)	माघ वदि ५ मंगलवार	साधुरत्नसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर, बडोदरा	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग- २, लेखांक १०९

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१५४.	१५१८	फाल्गुन वदि १ सोमवार	पद्माणंदसूरि	सुविधिनाथ की चौबीसी का लेख	जैनमंदिर, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त लेखांक २६९
१५५.	१५१९	वैशाख वदि ११ शुक्रवार	साधुरत्नसूरि	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, जामनगर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ३३५
१५६.	१५१९	वैशाख सुदि ३ शनिवार	महीतिलकसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, कोटा	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ५९०
१५७.	१५२०	वैशाख सुदि ९ सोमवार	विजयचन्द्रसूरि के पट्टधर साधुरत्नसूरि	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	पंचायती जैनमंदिर, लस्कर, ग्वालियर	नाहर, पूर्वोक्त भाग- २, लेखांक १३७७

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१५८.	१५२०	मार्गसिर सुदि ९	पद्मशेखरसूरि के पट्टधर पद्माणंदसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	अष्टापद जिनालय, जैसलमेर	वही, भाग- ३ लेखांक २१६६
१५९.	१५२०	मार्गसिर सुदि ९	"	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, जैसलमेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक २७४७
१६०.	१५२०	मार्गसिर सुदि ९ शनिवार	"	चन्द्रप्रभ की प्रतिमा का लेख	शान्तिनाथ जिनालय, भिंडी बाजार, बम्बई	मुनि कान्तिसागर, पूर्वोक्त, लेखांक १७६
१६१.	१५२१	ज्येष्ठ सुदि ९ सोमवार	"	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर, थराद	लोढा, पूर्वोक्त, लेखांक १२३

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१६२.	१५२१	आषाढ़ सुदि १० गुरुवार	पद्माणंदसूरि	शीतलनाथ की प्रतिमा का लेख	महावीरस्वामीजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १२५१
१६३.	१५२२	आषाढ़ सुदि ८	श्रीसाधु.....	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	नेमिनाथ जिनालय, मुर्शिदाबाद	नाहर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक १०१३
१६४.	१५२३	आषाढ़ सुदि ६ रविवार	पद्माणंदसूरि के पट्टधर गुणसुन्दरसूरि	कुन्थुनाथ की प्रतिमा का लेख	केशरियानाथ जिनालय, भिनाय	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ६२९
१६५.	१५२२	फाल्गुन वदि ११	धर्मसुन्दरसूरि के पट्टधर लक्ष्मीसागरसरि	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, भिनाय	वही, भाग १, लेखांक ६२२

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१६६.	१५२३	माघ वदि ११ गुरुवार	पद्मशेखरसूरि के पट्टधर पद्मानंदसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर, शाहपुर जिला, थाणा, महाराष्ट्र	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग- १, लेखांक १९०
१६७.	१५२४	मार्गशीर्ष सुदि १०	पद्मानंदसूरि	कुन्धुनाथ की प्रतिमा का लेख	चिंतामणि जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १०३८
१६८.	१५२५	वैशाख सुदि ६ सोमवार	विजयचन्द्रसूरि के पट्टधर साधुरत्नसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १०७५
१६९.	१५२५	ज्येष्ठ वदि १ गुरुवार	साधुरत्नसूरि	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	शान्तिनाथ जिनालय, चंदलाई	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ६८०
१७०.	१५२६	ज्येष्ठ वदि ८	शालिभद्रसूरि	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	शान्तिनाथ जिनालय, रतलाम	वही, भाग १, लेखांक ६८१

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१७१.	१५२७	माघ सुदि ३	पद्मानंदसूरि	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	विमलनाथ जिनालय, बेतोड़	वही, भाग १, लेखांक ६१८
१७२.	१५२७	मार्गसिर सुदि ५ शुक्रवार	विजयचन्द्रसूरि के पट्टधर श्री..... सूरि	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	पंचायती मंदिर, जयपुर	वही लेखांक ६८९
१७३.	१५२८	वैशाख वदि ५	पद्मानंदसूरि	"	शांतिनाथ जिनालय, नागौर	वही, भाग १, लेखांक ७०२
१७४.	१५२८	वैशाख वदि ५	"	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	वही	नाहर, पूर्वोक्त, भाग- २, लेखांक १३२६
१७५.	१५२९	वैशाख वदि ५	"	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	वही	नाहर, पूर्वोक्त, भाग- २, लेखांक १३२६

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१७६.	१५२९	माघ सुदि ५ रविवार	पद्मशेखरसूरि	शीतलनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १०६३
१७७.	१५२९	माघ सुदि ५ रविवार	पद्मशेखरसूरि के पट्टघर पद्मानंदसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	अजितनाथ जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १५३५
१७८.	१५२९	माघ सुदि ५ रविवार	"	कुन्धुनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, मेड़तासिटी	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ७१५
१७९.	१५३०	माघ सुदि १०	साधुरत्नसूरि	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, सांभर	वही, लेखांक ७२९
१८०.	१५३१	आषाढ सुदि २	पद्मशेखरसूरि के पट्टघर पद्मानंदसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, किशनगढ़	वही, लेखांक ७३५

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१८१.	१५३१	मार्गसिर वदि ९ बुधवार	लक्ष्मीसागरसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, मालपुरा	वही, लेखांक ७३७
१८२.	१५३२	ज्येष्ठ वदि ३ रविवार	साधुरत्नसूरि	"	जैन मन्दिर, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग- २, लेखांक ७२३
१८३.	१८३३	ज्येष्ठ वदि ११	पासरत्नसूरि के पट्टधर क्षेमरत्नसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	पंचायती मन्दिर, जयपुर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ७५८
१८४.	१५३३	मार्गशीर्ष सुदि ६ शुक्रवार	पद्मशेखरसूरि के पट्टधर पद्माणंदसूरि	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १५३३

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१८५.	१५३४	चैत्र वदि १० गुरुवार	—	मंदिर के रंगमंडप की दाहिने और द्वितीय स्तंभ पर उत्कीर्ण लेख	महावीर जिनालय, जीरावला	मुनि जयन्तविजय, आबू, भाग ५, लेखांक १७५
१८६.	१५३४	मार्गशीर्ष वदि ५	धर्मसुन्दरसूरि के पट्टधर लक्ष्मीसागरसूरि	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, नागौर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १३१८
१८७.	१५३५	माघ सुदि ९	लक्ष्मीसागरसूरि	कुंथुनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, रतलाम	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ७९३
१८८.	१५३५	मार्ग वदि १२	पद्मशेखरसूरि के पट्टधर पद्मानंदसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग- २, लेखांक १०९८ एवं

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ साम्भल्लेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
						विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ४५८
१८९.	१५३७	वैशाख सुदि ३	"	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	नवखंडा पार्श्वनाथ देरासर, भोंयरा पाडो, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग- २, लेखांक ८६८
१९०.	१५३७	माघ वदि १३ शुक्रवार	मानदेवसूरि	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय हैदराबाद	नाहर, पूर्वोक्त, भाग- २, लेखांक २०५३
१९१.	१५३८	मार्गसिर वदि ५	धर्मसुन्दरसूरि के लक्ष्मीसागरसूरि	"	बड़ा जिनालय, नागौर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ८१८

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१९२.	१५४३	मार्गसिर वदि २	पुण्यवर्धनसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, जालोर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग- २, लेखांक १०४
१९३.	१५७२	माघ वदि २ सोमवार	कमलप्रभसूरि के पट्टधर पुण्यवर्धनसूरि	वासुपूज्यस्वामी प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, वैदों का चौक, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १३७२
१९४.	१५५२	ज्येष्ठ सुदि १३ शुक्रवार	"	चन्द्रप्रभस्वामी की प्रतिमा का लेख	खरतरगच्छीय बड़ा मंदिर, कलकत्ता	मुनि कान्तिसागर, पूर्वोक्त, लेखांक २६३
१९५.	१५५४	माघ सुदि ५	पुण्यवर्धनसूरि	"	घर देरासर, झज्जू, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक २३२४

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्वाम्यलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१९६.	१५५५	चैत्र सुदि ११ सोमवार	नंदिवर्धनसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	अजितनाथ जिनालय, कोचरों का चौक, बीकानेर	वही, लेखांक १५५३
१९७.	१५५५	"	पद्मानंदसूरि के पट्टधर नंदिवर्धनसूरि	शान्तिनाथ की प्रतिमा का लेख	शीतलनाथ जिनालय, रिणी, तारानगर, बीकानेर	वही, लेखांक २४४३
१९८.	१५५७	आषाढ सुदि १०	"	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	संभवनाथ जिनालय, अजमेर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ९०४
१९९.	१५६२	वैशाख सुदि २	"	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	श्रेयांसनाथ जिनालय, हिण्डोन	वही, लेखांक ९१५

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२००.	१५६३	माघ सुदि १५	श्रुतसागरसूरि के पट्टधर लक्ष्मीसागरसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	बड़ा मन्दिर, नागौर	वही, लेखांक ९१७
२०१.	१५६९	वैशाख सुदि ६	नंदिवर्धनसूरि	शान्तिनाथ की प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ जिनालय, नागौर	वही, लेखाङ्क ९४२
२०२.	१५७०	माघ वदि १३ बुधवार	"	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	श्वे० जैनमंदिर, सम्मदशिखर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १६९३
२०३.	१५७०	आषाढ़ सुदि ५ बुधवार	"	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	घर देरासर, लखनऊ	वही, भाग २, लेखांक १६२०

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२०४.	१५७१	माघ वदि ५ शुक्रवार	पद्माणंदसूरि के पट्टधर नंदिवर्धनसूरि	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	अजितनाथ जिनालय, मालपुरा	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ९४७
२०५.	१५७३	आषाढ़ सुदि ९	—	—	श्री गंगा गोल्डेन जुबली म्यूजियम, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक २१५८
२०६.	१५७६	ज्येष्ठ सुदि ८ रविवार	पद्माणंदसूरि के पट्टधर नंदिवर्धनसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	बड़ा जिनालय, नागौर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ९५८
२०७.	१५७७	वैशाख सुदि ६	" धर नंदिवर्धनसूरि	शान्तिनाथ की प्रतिमा का लेख	चौसठियाजी का मंदिर, नागौर	वही, भाग १, लेखांक ९६४ एवं नाहर, पूर्वोक्त,

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
						भाग- २, लेखांक १३२१
२०८.	१५८७	फाल्गुन वदि ३ बुधवार	विजयचन्द्रसूरि के पट्टधर साधुरत्नसूरि	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर, बडोदरा	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १८१
२०९.	१५९९	फाल्गुन वदि १	महेन्द्रसूरि	चन्द्रप्रभ की प्रतिमा का लेख	शान्तिनाथ, जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ११४६
२१०.	१६९१	वैशाख सुदि १० गुरुवार	कल्याणसागरसूरि	मुनिसुव्रत की प्रतिमा का लेख	मुनिसुव्रत मालपुरा	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ८७

सन्दर्भ सूची :-

१. C. D. Dalal, - "A Descriptive Catalogue of Manuscripts in the Jain Bhandars at Pattan", (Baroda 1937 A.D.) Pp. 395-396.
२. वही, पृ० ३६६-३७०.
३. सपादलक्षक्षोणीशसमक्षं जितवादिनाम् ।
 श्रीधर्मघोषसूरीणां पट्टालंकारकारकाः ॥१॥
 त्रिवर्गपरिहारेण गद्यगोदावरीसृजः ।
 बभूवुर्भूरिसौभाग्याः श्रीयशोभद्रसूरयः ॥२॥
 स्व-परसमयज्ञानप्रतिप्रकृष्टजगज्जनाश्चतुरवचना मोदाधृष्टामरेशगुरुप्रभाः ।
 अभिनृपसभं गंगागौरप्रनर्तितकीर्त्तयस्तदनु महसः पात्रं जाता रविप्रभसूरयः ॥३॥
 एवं प्रवचनसारे तच्छिष्यलवश्चकार टिप्पनकम् ।
 श्रीउदयप्रभसूरिर्विषमपर्दारथावबोधाख्यम् ॥४॥
 A. P. Shah, Ed. *Catalogue of Sanskrit & Prakrit Manuscripts Muniraja Shree Punyavijay J is Collection*, Part I, No. 3324.
४. *Jinaratnakosha*, P. 353.
५. चंद्रकुलांबरशशिनश्चारित्रज्जीईसहस्रपत्रस्य ।
 श्रीशीलभद्रसूरेर्गुणरत्नमहोदधि(धेः) शिष्यः ॥
 अभवद् वादिमदहरः षट्कर्त्ताभोजबोधनदिनेशः ।
 श्री धर्मघोषसूरिर्बोधितशाकंभरीभूपः ॥
 चारित्रांभोधिशशी त्रिवर्गपरिहारजनितबुधहर्षः ।
 दर्शितविधिः शमनिधिः सिद्धांतमहोदधिप्रवरः ॥३॥
 बभूव श्रीयशोभद्रसूरिस्तच्छिष्यशेखरः ।
 तत्पादपद्ममधुपोभूत् श्रीदेवसेनगणिः ॥४॥
 टिप्पनकं पर्युषणाकल्पस्यालिखदवेक्ष्य शास्त्राणिः ।
 तच्छिष्य (त्पद्म) कमलमधुपः श्रीपृथ्वीचंद्रसूरिरिदं ॥५॥
 इह यद्यपि न स्वधिया विहितं किञ्चित् तथापि बुधवर्गैः ।

संशोध्यमधिकमूनं यद् भणितं स्वपरबोधाय ॥६॥

श्रीपर्युषणाकल्पटिप्पनकं ।

संवत् १३८४ वर्षे भाद्रवा शुदि १ शनौ अद्येह स्तंभतीर्थे वेलाकूले श्रीमदंचलगच्छे श्रीकल्पपुस्तिका तिलकप्रभागणिनीयोग्या महं० अजयसिंहेन लिखिता । मंगलं महाश्रीः । देहि विद्यां परमेश्वरि ! शिवमस्तु सर्वजगतः ।

C. D. Dalal, Ibid, P- 37.

६. एम. ए. ढांकी, लक्ष्मण भोजक - “शत्रुञ्जयगिरिना केटलाक अप्रकट लेखो” सम्बोधि, जिल्द VII, पृ० १३-२५.

७. वही

८. पूरनचन्द नाहर, - जैनलेखसंग्रह, भाग २, लेखाङ्क १९५२.

९. ढाकी और भोजक - पूर्वोक्त पृ० १२-२५.

१०. मुनि जयन्तविजय, अर्बुदप्राचीनजैनलेखसंदोह (आबू-भाग २), लेखांक ९१.

११. वही अनुक्रमणिका, पृ० ३५.

१२. मुनि जिनविजय-संपा०- प्राचीनजैनलेखसंग्रह, भाग २, लेखांक १३२.

१३. ऊकेशवंशे भुवनाभिरामे छायासमाश्वासितसत्त्वसार्था ।

शौराणकीयास्ति विशालशाखा साकारपत्रावलीराजमाना ॥

तत्राभवद् भवभयच्छिदुरार्हदंधिराजीवजीवितसदाशयराजहंसः ।

पूर्वः पुमान् गणहरिर्गणधारिसार - - - - -

[कनी] यान् थिरदेवस्य हरिदेवोस्ति बांधवः ।

हर्षदेवीभवाः पुत्रा नरसिंहादयोस्य च ॥

सहोदर्यः सप्तैत(?)स्य लष्मिणिधर्मकर्मठा ।

कर्मिणि हरिसणिश्च पुत्र्यस्तिस्त्रो गुणश्रियः ॥१६॥

अथ गुरुक्रमः

श्रीराजगच्छमुकुटोपमशीलद्रसूरेर्विनेयतिलकः किल धर्मसूरिः ।

दूर्वादिगर्वभरसिंधुरसिंहनादः श्रीविग्रहक्षितिपतेर्दलितप्रमादः ॥

आनन्दसूरिशिष्यश्रीअमरप्रभसूरितः ।

श्रुत्वोपदेशं कल्पस्य पुस्तिकां नूतनामिमां ॥११॥

उद्यमात् सोमसिंहस्य सपुण्यपुण्यहेतवे ।

अलेख्यच्छुभालेखां निजमातुर्गुणश्रियः ॥२०॥

यावच्चिरं धर्मधराधिराजः सेवाकृतां सुकृतिनां वितनोति लक्ष्मीं ।

मुनीन्द्रवृद्धैरिह वाच्यमाना तावन्मुदं यच्छतु पुस्तिकेयं ॥२१॥

Colophone :-

संवत् १३४४ वर्षे मार्ग० शुदि रवौ सोमसिंहेन लिखापिता ॥

C. D. Dalal, Ibid, p. 379.

१४. श्रीधर्मधोषगच्छे भट्टारक श्रीनंदिवर्धनसूरीणां शिष्यपाठकगुणरत्नोपदेशेन सं० पट्टा-
तत्पुत्र सं० पासा तत्पुत्रसं लाषण सं० ।

Shah, Ibid, Part I, No. 3038 P- 166.

१५. Shah, Ibid, Part I, No. 620., P- 51.

१६. मुनि जिनविजय — संपा० विविधगच्छीयपट्टावलीसंग्रह [प्रथम भाग]
[सिंधी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थाङ्क ५३, बम्बई १९६१ ई०] पृ० ५७-७१.

१७. जिनपतिमतचित्रोत्सर्पणाकेलिकारो ।

जयति कलियुगेऽस्मिन् गौतमो धर्मसूरिः ॥८४॥

प्रणाशयन्तो जडतान्धकारं विकासयन्तो भविकैरवाणि ।

श्रीज्ञानचन्द्रोत्तमसूरिराजपादाः प्रकामं जयिनो भवन्तु ॥८५॥

प्रबलवादिमतङ्गजमर्द्देन हरिरिवोन्नतवाक्यनखाङ्कुरे ।

य इह जैनमताभिधकानने सुशिवदः सुगुरुर्मुनिशेखरः ॥८६॥

वन्दामि तं सुगुरुसागरचन्द्रसूरिं यस्यामृतोपमवचांसि निशम्य सद्यः ।

के के न केल्हनृपप्रमुखा बभूवुः जैनेन्द्रधर्मरुचयो द्विजराजपुत्राः ॥८७॥

श्रीजैनशासनवनीनववारिवाहाः सद्देशनारसनिरस्तसुधाप्रवाहाः ।

विद्याकलागुणसुलब्धिमहानिधानाः श्रीसागरेन्दुगुरुवो गुरवो जयन्तु ॥८८॥

भूपालमालाप्रणतो निरीहः समग्रविद्यागुणलब्धिपात्रम् ।

सर्वत्र सत्कीर्तितपद्महस्तो मुदेऽस्तु नित्यं मलयेन्दुसूरिः ॥८९॥

श्रीराजगच्छाम्बुधिपूर्णचन्द्रः, समस्तविद्यापदमस्ततन्द्रः ।

प्रज्ञापराभूतसुरेन्द्रसूरिर्जीयाच्चिरं श्रीमलयेन्दुसूरिः ॥

विश्वोद्योतिशयः प्रतापविलसच्चन्द्रार्कसंशोभितो-

गुर्वानन्दनसौमनस्यकलितः सद्भद्रशालावनिः ॥९०॥

भूयान्मेरुरिव क्षमाभरधरो विख्यातनामा सतां ।

पूज्यः श्रीप्रभुपद्मशेखरगुरुः कल्याणदः शर्मणे ॥९१॥

“राजगच्छपट्टावली” विविधगच्छीयपट्टावलीसंग्रह, पृष्ठ ६९-७०

१८. “राजगच्छपट्टावली” गाथा ८८-८९.

१९. द्रष्टव्य-तालिका संख्या- ३.

नाणकीयगच्छ का संक्षिप्त इतिहास

श्वेताम्बर चैत्यवासी गच्छों में नाणकीयगच्छ का प्रमुख स्थान रहा है। जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट है अर्बुदमण्डल के अन्तर्गत नाणा नामक स्थान से यह गच्छ अस्तित्व में आया। इसके नाणगच्छ, नाणागच्छ, नाणावालगच्छ आदि नाम भी मिलते हैं। यह गच्छ वि० सं० की ११वीं शताब्दी के लगभग अस्तित्व में आया। शांतिसूरि इस गच्छ के पुरातन आचार्य माने जाते हैं। उनके बाद सिद्धसेनसूरि, धनेश्वरसूरि और महेन्द्रसूरि क्रमानुसार पट्टधर बने। इस गच्छ के पट्टधर आचार्यों के यही चार नाम पुनः पुनः मिलते हैं। चैत्यवासी गच्छों में प्रायः यही परम्परा मिलती है। ऐसा प्रतीत होता है कि गच्छ के प्रारम्भिक एवं प्रभावशाली आचार्यों के नाम उनके 'पट्ट' के रूप में रुढ़ हो जाते थे और उन पर प्रतिष्ठित होने वाले मुनि को आचार्यपद के साथ साथ उक्त 'पट्ट नाम' भी प्राप्त होता रहा।

नाणकीय गच्छ के इतिहास के अध्ययन के लिये साहित्यिक साक्ष्यों के अन्तर्गत मात्र दो ग्रन्थों के प्रतिलेखन की दाता प्रशस्तियाँ ही उपलब्ध हैं, इसके विपरीत अभिलेखीय साक्ष्यों के अन्तर्गत लगभग १४० प्रतिमालेख प्राप्त हुए हैं। दोनों साक्ष्यों की संख्या में इस विषमता को देखते हुए यह स्वीकार करना पड़ता है कि इस गच्छ के मुनिजन साहित्योपासना को छोड़कर चैत्यों, जिनमंदिरों और उपाश्रयों (वसतियों) की व्यवस्था एवं देख-रेख में ही अपना सम्पूर्ण समय व्यतीत करते रहे। श्रावकों को नूतन जिनालयों एवं तीर्थकर-प्रतिमाओं के निर्माण की प्रेरणा देना ही इनका

प्रधान कार्य था। विधिमार्गियों द्वारा चैत्यवास के प्रबल विरोध के बाद भी दीर्घकाल तक चैत्यवासियों का अस्तित्व बना रहना समाज पर इनके व्यापक प्रभाव का परिचायक है।

नाणकीयगच्छ से सम्बद्ध सबसे प्राचीन साहित्यिक साक्ष्य है वि० सं० १२७२ में लिखी गयी 'बृहत्संग्रहणीपुस्तिका' की दाताप्रशस्ति,^१ जिसमें गोसा नामक श्रावक की बहन पवइणी द्वारा नाणकीय गच्छ के जयदेव उपाध्याय को उक्त पुस्तिका की प्रतिलिपि अध्ययनार्थ भेंट में देने का उल्लेख है। शांतिसूरि, सिद्धसेनसूरि, धनेश्वरसूरि और महेन्द्रसूरि इन चार परम्परागत आचार्यों का इसमें नामोल्लेख भी नहीं है। नाणकीय गच्छ का सबसे प्राचीन साहित्यिक साक्ष्य होने के कारण इस प्रशस्ति का विशिष्ट महत्त्व है।

इस गच्छ से सम्बद्ध दूसरा और अब तक उपलब्ध अन्तिम साहित्यिक साक्ष्य है, 'षट्कर्मअवचूरि' के प्रतिलेखन की दाताप्रशस्ति,^२ जो वि० सं० १५९२ में पूर्ण की गयी है। लगभग १० पंक्तियों की इस प्रशस्ति में इस गच्छ के परम्परागत ४ आचार्यों का नाम प्राप्त होता है, इसी लिये इस प्रशस्ति को विशेष महत्त्वपूर्ण माना जा सकता है।

नाणकीय गच्छ के आचार्यों द्वारा प्रतिष्ठापित प्रतिमा लेखों का विस्तृत विवरण इस प्रकार है —

'संवत् ११०२ वीरेण कारिता श्रीमन्नाणकीय गच्छे'^३

जैसा कि हम पहले देख चुके हैं, नाणकीय गच्छ का उल्लेख करने वाला यह सबसे प्राचीन प्रतिमा लेख है, जो पीडवाड़ा स्थित जैनमंदिर में संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण है।

इस गच्छ से सम्बन्धित दूसरा लेख वि० सं० ११३३ का है,^४ जो पीडवाड़ा के उक्त जिनालय में एक खंडित प्रतिमा पर उत्कीर्ण है। लेख इस प्रकार है —

‘संवत् ११३३ नाणक गच्छे यशोदेवसुतेन वामदेवेन कारितः ।’

इस गच्छ से सम्बन्धित तृतीय लेख वि० सं० ११४१ का है, ‘जो इसी जिनालय में स्थित एक तीर्थकर प्रतिमा पर उत्कीर्ण है । लेख इस प्रकार है —

‘संवत् ११४१ श्रीनाणकीय गच्छे पालिसयुतेन धीरक स्त्रा(श्रा) वकेन श्रेयोर्थ कारिता ।’

इसी गच्छ का एक अन्य अभिलेख वि० सं० ११४२ का है, जो अहमदाबाद के सीमन्धर स्वामी के देरासर में स्थित महावीर की प्रतिमा पर उत्कीर्ण है, लेख इस प्रकार है —

‘सं० ११४३ श्रीनाणकीयगच्छे स्वसुवपद्मासुयचनतः श्राद्धैः श्रीवीरनार्थबिंबं चायणसुदेवऊलभदेवडमनि ॥’^६

जैसा कि हम ऊपर देख चुके हैं, इस गच्छ में सिद्धसेनसूरि घनेश्वरसूरि, महेन्द्रसूरि और शान्तिसूरि इन चार पट्टधर आचार्यों के नामों की ही पुनरावृत्ति होती है । इन परागत नामों का उल्लेख करनेवाला सर्वप्रथम लेख वि० सं० ११९८/ई० सन् ११४१ का है जो आबू के निकट मालणु नामक ग्राम में स्थित जिनालय के गूढ़ मंडप में उत्कीर्ण है । इस लेख में प्रतिमा प्रतिष्ठापक आचार्य के रूप में श्रीधनेश्वरसूरि का उल्लेख है । लेख इस प्रकार है^७ :

संवत् ११९८ वैशाख शुदि ३ छारा सुत भूणदेव भार्या वेल्ली पुत्रैः धणदेवर्जिदुश्च सहदेव जसधवलश्रावकैः । निजभग्नी महणी सुपुत्र जेसलप्रभृतिसहितः । श्रीनाणकगच्छ प्रति पड (?) सीपेरकस्थान-श्रीशान्तिनाथचैत्ये श्रीमहावीरबिंबं कारितं श्रेयोनिमित्तं श्रीधनेश्वराचार्यः प्रतिष्ठतमिति ॥

पीडवाड़ा के महावीर जिनालय के स्तम्भ पर वि० सं० १२०८ का एक लेख^८ उत्कीर्ण है । यह लेख भी इसी गच्छ से सम्बन्धित है, परन्तु

इसमें प्रतिमा प्रतिष्ठापक आचार्य का उल्लेख नहीं है। इसके पश्चात् वि० सं० १५९९ तक के प्रायः सभी प्रतिमा लेखोंमें प्रतिष्ठापक आचार्य का उल्लेख है। जिसकी संक्षिप्त तालिका इस प्रकार है —

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१.	१२१२	ज्येष्ठ सुदि १०	महेन्द्रसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैन मंदिर, अजारी	मुनि जयन्तविजय, आबू, भाग- ५ लेखांक ४०७
२.	१२१२	माघ सुदि १०	आचार्य का नाम नहीं है।	धातुप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चित्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	अगरचन्द नाहटा, संपा०- बीकानेर- जैनलेखसंग्रह, लेखांक ८१
३.	१२१७	ज्येष्ठ सुदि ९	महेन्द्रसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैन मंदिर, अजारी	आबू, भाग-५, लेखांक ४०९
४.	१२२२	ज्येष्ठ सुदि १० बुधवार	"	पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक ४१०

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
५.	१२२४	ज्येष्ठ सुदि ९ शुक्रवार	"	पार्श्वनाथ की धातुप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैन मंदिर, मालणु	वही, लेखांक ३२०
६.	१२३४	आषाढ़ वदि २	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम अनुपलब्ध	गूढ़ मंडप स्थित प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैन मंदिर, पीडवाड़ा	वही, लेखांक ३७३
७.	१२३४	आषाढ़ वदि ३	महेन्द्रसूरि	धातुप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैन मंदिर, अजारी	वही, लेखांक ४१२
८.	१२३५	फाल्गुन सुदि ७ गुरुवार	शांतिसूरि	दीवाल पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, बेलार	पूरनचन्द नाहर, संपा०- जैनलेख- संग्रह, भाग १, लेखांक ८६२

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
९.	१२३६	माघ सुदि १० बुधवार	"		जैन मंदिर, राणकपुर	जैनसत्यप्रकाश, जिल्द १८, अङ्क ४-५, लेखांक ९
१०.	१२३९	वैशाख सुदि ५ गुरुवार	"		चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त लेखांक १००
११.	१२४०	फाल्गुन सुदि २ बुधवार	"	परिकर का लेख	जैन मंदिर, नाणा	आबू, भाग ५, लेखांक ३४६
१२.	१२४३	वैशाख सुदि ६ बुधवार	वीरसूरी	परिकर के नीचे का लेख	जैन मंदिर, अजारी	आबू, भाग ५, लेखांक ४१५

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१३.	१२४८	वैशाख सुदि २ बुधवार	शांतिसूरी	चन्द्रप्रभ स्वामी की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, पाटण	बुद्धिसागरसूरी, संपा०-जैनधातु- प्रतिमालेखसंग्रह, भाग १, लेखांक २६२
१४.	१२५१	आषाढ वदि ५ गुरुवार		स्तंभ लेख	जैन मंदिर, उधमण	मुनि जिनविजय, संपा०- प्राचीन- जैनलेखसंग्रह, भाग २, लेखांक ४२८
१५.	१२६५	मित तिहीन	प्रतिष्ठयक का नाम उपलब्ध	वही	जैन मंदिर, बेलार	आबू, भाग ५, लेखांक ३३०

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१६.	१२..?		शांतिसूरि	दीवाल पर उत्कीर्ण लेख	जैन मन्दिर, अजारी	वही, लेखांक ४२५
१७.	१२६४	माघ सुदि २	शांतिसूरि के शिष्य	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	धर्मनाथ जिनालय, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ११११
१८.	१२६५	फाल्गुन वदि ७ गुरुवार	शांतिसूरि एवं गुणसमुद्रसूरि	महावीर स्वामी की प्रतिमा के परिकर पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, बेलार	मुनि जिनविजय, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ४०३ एवं आबू, भाग ५, लेखांक ३२७
१९.	१२६५	तिथि विहीन	आचार्य का नाम नहीं मिलता है।	शिलालेख	वही	मुनि जिनविजय पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ४०४

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२०.	१२६५	आषाढ़ सुदि ७ सोमवार	शांतिसूरि	पार्श्वनाथ पंचतीर्थी पर उत्कीर्ण लेख	जैन मन्दिर अजारी	आबू, भाग ५ लेखांक ४१८
२१.	१२६८	आषाढ़ वदि २ शुक्रवार	सिद्धसेनसूरि		वीर जिनालय, दीयाणा	जैनसत्यप्रकाश, वर्ष १४, अंक १, पृ० १३
२२.	१२६८	आषाढ़ वदि २ गुरुवार	"	जिनमातृपट्ट पर उत्कीर्ण लेख	वीर जिनालय, दीयाणा	आबू, भाग ५, लेखांक ४८९
२३.	१२६९	ज्येष्ठ सुदि २ बुधवार	"	धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	अगरचन्द नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ११०

नोट :- लेखांक २१ और २२ संभवतः एक ही लेख प्रतीत होते हैं ।

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२४.	१२७२	माघ सुदि १४ सोमवार	"	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	वही	वही, लेखांक ११२
२५.	१२८२	ज्येष्ठ सुदि ९ गुरुवार	"	धातु की जिनप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक १२१
२६.	१२८५	ज्येष्ठ सुदि ३ रविवार	आचार्य का नाम अनुपलब्ध	नेमिनाथ की धातुप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैन मन्दिर, लीच	विजयधर्मसूरि, संपा०, प्राचीन- लेखसंग्रह, लेखांक ३४
२७.	१२९३	ज्येष्ठ सुदि ६ गुरुवार	सिद्धसेनसूरि	धातु की जिनप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणीजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १३१

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
२८.	१३०८	फाल्गुन वदि ११ शुक्रवार	आचार्य का नाम नहीं मिलता है ।	स्तम्भ लेख	विमलवसही, आबू	मुनि जिनविजय, पूर्वोक्त, लेखांक २३१ तथा आबू, भाग २, लेखांक १८४
२९.	१३०८	ज्येष्ठ वदि...? गुरुवार	सिद्धसेनसूरि	प्रतिमालेख	जैन मन्दिर, अजारी	आबू, भाग ५ लेखांक ४२७
३०.	१३१३	माघ वदि प सोमवार	"	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	जैन मन्दिर, दरापरा	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक २५
३१.	१३१४	फाल्गुन सुदि १४	धनेश्वरसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, कोटा	विनयसागर, सम्पा०- प्रतिष्ठा-

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ साम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
						लेखसंग्रह, भाग १, लेखांक ६८
३२.	१३२३	माघ सुदि ५ बुधवार	धनेश्वरसूरि	दीवाल पर उत्कीर्ण अत्यन्त महत्त्वपूर्ण लेख	जैन मन्दिर तोपखाना, जालौर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ९०२
३३.	१३२९	ज्येष्ठ वदि ११	"	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग ३, लेखांक २२३०
३४.	१३२९	ज्येष्ठ सुदि ११ रविवार	"	पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमन्दिर, अजारी	आबू, भाग ५, लेखांक ४२९

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
३५.	१३३५	माघ सुदि १३	महेन्द्रसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा उत्कीर्ण लेख	लूणवसही, आबू	आबू, भाग २, लेखांक २५९
३६.	१३३९	फाल्गुन सुदि ८	"	महावीरस्वामी की प्रतिमा स्थापित करने का उल्लेख	अनुपूर्ति लेख, आबू	वही, लेखांक ५३६
३७.	१३३९	फाल्गुन सुदि ८	"		चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १९२
३८.	१३३९	फाल्गुन सुदि ८	"	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	मुनिसुव्रत जिनालय मालपुरा	जैनसत्यप्रकाश, वर्ष ६, पृ० ३७५-३८३, एवं विनयसागर,

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
						पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ८९
३९.	१३४१	तिथि विहीन	"	चौबीसी पर उत्कीर्ण लेख	जैन मन्दिर, रोहेड़ा (सिरोही)	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक २०८१ तथा आबू, भाग ५, लेखांक ५६४
४०.	१४४६	वैशाख सुदि २ बुधवार	"	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मन्दिर अंजार	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १७१९
४१.	१३४७ (?)	तिथि विहीन	शांतिसूरि	प्रतिमा स्थापना की चर्चा	चिन्तामणि जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक २०५

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
४२.	१३५४	ज्येष्ठ सुदि ६ शनिवार	"	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि जिनालय, बीकानेर	वही, लेखांक २१६
४३.	१३५६	आषाढ़ सुदि ३ रविवार	"	धातु प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, कोरटा, मारवाड़	जैनसत्यप्रकाश, वर्ष १, पृ० ३१०-११, लेखांक ९
४४.	१३७२	माघ वदि ५ सोमवार	सिद्धसेनसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त लेखांक २५१
४५.	१३७३	माघ वदि ५ सोमवार	"	वही	वही	वही, लेखांक २५९

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
४६.	१३७६	माघ वदि १२ बुधवार	"	वही	वही	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक २७१
४७.	१३७६	माघ वदि १२ बुधवार	"	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक २७०
४८.	१३७८	ज्येष्ठ वदि	"	जिनप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक २७८
४९.	१३८१	वैशाख वदि ३	"	शांतिनाथ की प्रतिमा की स्थापना का उल्लेख	वही	वही, लेखांक २८६

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
५०.	१३८२	ज्येष्ठ सुदि ९ गुरुवार	"	धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक २९४
५१.	१३८३	माघ वदि ५ सोमवार	"	पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही लेखांक २९६
५२.	१३८४	ज्येष्ठ वदि ११ सोमवार	"	आदिनाथ प्रतिमा का लेख	वही	वही, लेखांक २९८
५३.	१३८६	माघ वदि २	बुद्धिसागरसूरि	प्रतिमा लेख	सौदागर पोल का देरासर, अहमदाबाद	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ८७५

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
५४.	१३८६	माघ सुदि ९ सोमवार	सिद्धसेनसूरि	प्रतिमा स्थापना का उल्लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ३१४
५५.	१३८६	फाल्गुन वदि १ सोमवार	"	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	वही	वही, लेखांक ३१५
५६.	१३८८	वैशाख सुदि १५ रविवार	"	शांतिनाथ प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग-३ लेखांक २२५४
५७.	१३८९	ज्येष्ठ वदि ११ सोमवार	"	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ३३१

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
५८.	१३९१	फाल्गुन वदि ११ शनिवार	"	शांतिनाथ प्रतिमा का लेख	वही	वही, लेखांक ३४६
५९.	१३९३	फाल्गुन सुदि २ सोमवार	"	पार्श्वनाथ प्रतिमा का लेख	वही	वही, लेखांक ३५९
६०.	१३९४	चैत्र शुक्ल ३	"	पंचतीर्थी का लेख	खरतरगच्छीय उपाश्रय, किशनगढ़	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १३९
६१.	१३९४	माघ सुदि ५ शुक्रवार	शांतिसूरि	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	बड़ा जिनालय, नागौर	वही, लेखांक ३०१

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
६२.	१३९९	चैत्र सुदि शुक्रवार	सिद्धसेनसूरि	एकतीर्थी जिनप्रतिमा का लेख	अनुपूर्ति लेख आबू	आबू, भाग २, लेखांक ५६४
६३.	१४०५	फाल्गुन सुदि ९ शुक्रवार	शांतिसूरि	कुन्धुनाथ की पंचतीर्थी का लेख	शांतिनाथ जिनालय, नमक मंडी, आगरा	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १४८७
६४.	१४०८	वैशाख सुदि ५	धनेश्वरसूरि	आदिनाथ प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ४१८
६५.	१४०९	ज्येष्ठ सुदि १० सोमवार	"	चन्द्रप्रभ प्रतिमा का लेख	वही	वही, लेखांक ४२१

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
६६.	१४०९	फाल्गुन सुदि १० सोमवार	शांतिसूरि	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	वही	वही, लेखांक ४२३
६७.	१४१०	माघ वदि १ रविवार	धनेश्वरसूरि	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	विमलनाथ जिनालय, चौकसी पोल, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ७९३
६८.	१४२२	वैशाख सुदि १२ बुधवार	"	विमलनाथ की पंचतीर्थी का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त लेखांक ४५०
६९.	१४२३	फाल्गुन सुदि ९ सोमवार	"	पार्श्वनाथ प्रतिमा का लेख	वही	वही, लेखांक ४५५

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
७०.	१४२६	द्वितीय वैशाख सुदि १० रविवार	"	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	वही	वही लेखांक ४७८
७१.	१४२६	द्वितीय वैशाख सुदि .. सोमवार	"	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	वही	वही लेखांक ४७६
७२.	१४२६	वैशाख सुदि १० सोमवार	"	धातु प्रतिमा लेख	जैसलमेर	जैनसत्यप्रकाश, वर्ष ७, पृ० २११-२३
७३.	१४३३	आषाढ़ सुदि १०	"		पाटण	मुनि जिनविजय, पूर्वोक्त,

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
		बुधवार		सिद्धसेनसूरि की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख		भाग २, लेखांक ५३१
७४.	१४३४ (?)	वैशाख वदि बुधवार	"	चन्द्रप्रभ प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ५१२
७५.	१४३६	वैशाख वदि ११ सोमवार	महेन्द्रसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	वही	वही, लेखांक ५२१
७६.	१४४०	वैशाख सुदि शनिवार	"	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	अनुपूर्ति लेख, आबू	आबू, भाग २, लेखांक ५९८
७७.	१४५९	माघ	"	पद्मप्रभ पंचतीर्थी	चिन्तामणिजी का	नाहटा, पूर्वोक्त,

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ साम्भललेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
		सुदि १		का लेख	मंदिर, बीकानेर	लेखांक ५९४
७८.	१४६४	ज्येष्ठ वदि ४ शुक्रवार	"	आदिनाथ प्रतिमा का लेख	वही	वही, लेखांक ६०९
७९.	१४६५	वैशाख सुदि ३ गुरुवार	"	शान्तिनाथ प्रतिमा का लेख	वही	वही लेखांक ६१६
८०.	१४६९	माघ सुदि १	"	पद्मप्रभ पंचतीर्थी का लेख	वही	वही लेखांक ६४२
८१.	१४७३	ज्येष्ठ सुदि ३ बुधवार	शान्तिसूरि	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	वही	वही लेखांक ६६७

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
८२.	१४७३	ज्येष्ठ सुदि ३ बुधवार	"	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	वही	वही, लेखांक ६६८
८३.	१४७४	आषाढ सुदि ६ गुरुवार	धनेश्वरसूरि	शान्तिनाथ की प्रतिमा का लेख	वही	वही, लेखांक ६७२
८४.	१४७५		शातिसूरि		जैन मन्दिर राधनपुर	मुनि विशालविजय, सम्पा०- राधनपुर- प्रतिमालेखसंग्रह, लेखांक ९८
८५.	१४७६	वैशाख सुदि १० सोमवार	धनेश्वरसूरि	शान्तिनाथ की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग ३, लेखांक २२९१

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
८६.	१४७९	वैशाख वदि ४ शुक्रवार	शांतिसूरि	चन्द्रप्रभस्वामी की प्रतिमा का लेख	अजितनाथ जिनालय, शेख पाडो, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १०००
८७.	१४८५	वैशाख सुदि सोमवार	धनेश्वरसूरि	शान्तिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ७२७
८८.	१४८७	माघ वदि ५ शुक्रवार	शान्तिसूरि	कुंथुनाथ की प्रतिमा का लेख	वही	नाहटा, पूर्वोक्त लेखांक ७३७
८९.	१४८९	फाल्गुन वदि ५ सोमवार	"	अनन्तनाथ की प्रतिमा का लेख	वही	वही, लेखांक ७४६

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
९०.	१४९२	ज्येष्ठ वदि ११ शुक्रवार	"	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	वही	वही लेखांक ७६०
९१.	१४९३		"	प्रतिमा लेख	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ११११
९२.	१४९४	ज्येष्ठ सुदि २ शुक्रवार	"	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ७७५
९३.	१४९५	ज्येष्ठ सुदि १४ रविवार	"	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	वही	वही, लेखांक ७८४

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
९४.	१४९५	फाल्गुन वदि ९ रविवार	"	चन्द्रप्रभ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, (पांचू) बीकानेर	वही, लेखांक २२५९
९५.	१४९८	ज्येष्ठ सुदि २ सोमवार	"	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	वही, लेखांक ७९३
९६.	१४९९	ज्येष्ठ वदि ११ रविवार	"	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय अहमदाबाद	मुनि बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ९०७
९७.	१५०१	माघ सुदि १० सोमवार	"	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	सुपार्श्वनाथ का पंचायती बड़ा मन्दिर, जयपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २ लेखांक ११४३

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
९८.	१५०१	माघ सुदि १० सोमवार	"	आदिनाथ की प्रांतमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, ओमेर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ३४९
९९.	१५०४	माघ वदि ९ शनिवार	प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम अनुपलब्ध	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वचन्द्रगच्छ का उपाश्रय, जयपुर	वही, लेखांक ३८१
१००	१५०४	माघ सुदि २ शुक्रवार	शान्तिसूरि	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ८८५
१०१.	१५१५	माघ वदि ९ शनिवार	महेन्द्रसूरि के पट्टधर शान्तिसूरि	महावीर की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, नाणा	जिनविजय, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ४०९

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१०२.	१५१०	माघ सुदि १० शुक्रवार	शान्तिसूरि	नमिनाथ चौबीसी प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, करमदी	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ४६७
१०३.	१५११	आषाढ़ वदि ८	सिद्धसेनसूरि	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १४६
१०४.	१५१३	माघ वदि ९ गुरुवार	शान्तिसूरि के पट्टधर सिद्धसेनसूरि	शान्तिनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, जड़ाउ	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ५१९
१०५.	१५१६	वैशाख सुदि ५	सिद्धसेनसूरि के पट्टधर धनेश्वरसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, बोहारनहोला, लखनउ	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १५५२

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ सम्भालेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१०६.	१५२०	चैत्र वदि ८ शुक्रवार	धनेश्वरसूरि	सुविधिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, माणेकचौक, खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १०२१
१०७.	१५२०	वैशाख वदि २	"	शान्तिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, कड़ी	वही, भाग १, लेखांक ७२०
१०८.	१५२२	वैशाख सुदि ३ रविवार	"	कुन्थुनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १०२८
१०९.	१५२७	माघ वदि ७	"	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, अजमेर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ६१७

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
११०.	१५२७	ज्येष्ठ सुदि ३			मालपुरा	जैनसत्यप्रकाश, वर्ष ६, पृ० २७५-२८३
१११.	१५२७	वैशाख सुदि ३	धनेश्वरसूरि	धातु प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैन मंदिर, खंडप (मारवाड़)	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक २११०
११२.	१५२७	माघ वदि ७	"	शीतलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, जैसलमेर	वही, भाग ३, लेखांक २३४८
११३.	१५२८	आषाढ़ सुदि २ सोमवार	"	वही	राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक २६०

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
११४.	१५२८	माघ वदि ५ बुधवार	"	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ जिनालय, ओराण	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग - १, लेखांक ६१२
११५.	१५२९	अषाढ सुदि २ रविवार	"	पद्मप्रभ की पंचतीर्थी का लेख	जैनमंदिर, नथमलजी का कटरा, जयपुर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ७१३
११६.	१५३०	फाल्गुन सुदि १०	सिद्धसेनसूरि के पट्टधर धनेश्वरसूरि	धातु प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, मौकलेश्वर (मारवाड़)	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ११८७
११७.	१५३४	फाल्गुन सुदि ५ सोमवार	"	धर्मनाथ की पंचतीर्थी का लेख	बड़ा मंदिर, जयपुर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ७८३

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
११८.	१५३४	वैशाख वदि १० रविवार	"	संभवाथ की प्रतिमा का लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, बोलपीपलो, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १११२
११९.	१५३४	वैशाख सुदि ३ गुरुवार	"	पंचतीर्थी का लेख	जैन मंदिर, गुड़ा, सिरोही	नाहर, पूर्वोक्त, भाग- २, लेखांक २०८९
१२०.	१५३४	मार्गशिर वदि ५ सोमवार	"	नमिनाथ की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, सांगानेर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ७७९
१२१.	१५३५	पौष वदि १३ रविवार	"	आदिनाथ की धातु-प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, गीपटी, खंभात	मुनि कान्तिसागर, संपा० जैनधातु- प्रतिमालेख,

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
						भाग १, लेखांक २३३
१२२.	१५३५	पौष वदि १३ बुधवार	"		महावीर जिनालय, गीपटी, खंभात	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ७०५
१२३.	१५३५	माघ सुदि ५ गुरुवार	"	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, पाँचू, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक २२७३
१२४.	१५३६	फाल्गुन सुदि २ रविवार	"	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १९०९ एवं नाहर, पूर्वोक्त, भाग- २, लेखांक १३३९

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१२५.	१५३६	वैशाख सुदि ५ मंगलवार	"	कुन्धुनाथ की धातुप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	धर्मनाथ पंचायती, जैन मंदिर, बड़ा बाजार, कलकत्ता	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १०९
१२६.	१५३६	वैशाख सुदि ८ रविवार	"		खरतरगच्छीय बड़ा जिनालय, तुलापट्टी, कलकत्ता	मुनि कान्तिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक २३६
१२७.	१५३९	आषाढ़ सुदि २ रविवार	"	पद्मप्रभ पंचतीर्थी का लेख	पंचायती मन्दिर, जयपुर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ८१६
१२८.	१५४२	फाल्गुन वदि ७	"	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, आमेर	वही, भाग १, लेखांक ८३२

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्ताम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१२९.	१५४२	फाल्गुन वदि २	”	चन्द्रप्रभ की पंचतीर्थी का लेख	वही	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १२३१
१३०.	१५४३	मार्गशीर्ष सुदि २ सोमवार	”	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	चित्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ११०९
१३१.	१५४६	माघ वदि ८ सोमवार	श्री.....?	वासुपूज्य स्वामी की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, भिनाय	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ८४२
१३२.	१५४८	वैशाख सुदि ५	धनेश्वरसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, (नाहटों में) बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १८३४

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१३३.	१५५२	मार्गशिर सुदि २ रविवार	"	आदिनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, वीरमगाम	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १५००
१३४.	१५५३	माघ सुदि ६ सोमवार	"	धातुपंचतीर्थी का लेख	जैन मन्दिर, ब्राह्मणवाड़ा	आबू, भाग ५, लेखांक २९६
१३५.	१४५७	मार्गशिर सुदि ९ शुक्रवार	महेन्द्रसूरि	शांतिनाथ की पंचतीर्थी का लेख	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १०३१
१३६.	१५५९	आषाढ़ सुदि १० बुधवार	धनेश्वरसूरि के पट्टधर महेन्द्रसूरि	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, (नाहटों में) बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १८२०

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१३७.	१५६१	फाल्गुन सुदि ८	शांतिसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ जिनालय, रतलाम	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ११४
१३८.	१४६४	ज्येष्ठ सुदि ५ शुक्रवार	यशोभद्रसूरि के संतानीय शांतिसूरि	पंचतीर्थी का लेख	पद्मप्रभ जिनालय चूड़ी वाली गली, लखनऊ	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १५५६
१३९.	१५६६	फाल्गुन सुदि ३ सोमवार	शांतिसूरि	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, घोमावतों की पोल, नागौर	वही, भाग २, लेखांक १३२८
१४०.	१५६६	फाल्गुन सुदि ३ सोमवार	"	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, नागौर	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १३०

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१४१.	१५६६	फाल्गुन सुदि ३ सोमवार	"	सुविधिनाथ की पंचतीर्थी का लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, मालपुरा	वही, भाग १, लेखांक ९३२
१४२.	१५६७	वैशाख सुदि ४	"	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	खरतरगच्छीय आदिनाथ जिनालय, कोटा	वही, भाग १, लेखांक ९३४
१४३.	१५६९	ज्येष्ठ सुदि १२ शुक्रवार	श्रीभारुद्रसूरि(?)	शीतलनाथ चौबीसी प्रतिमा का लेख	श्रेयांसनाथ जिनालय, फतहशाह का पोल, अहमदाबाद	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १३६९
१४४.	१५७०	माघ सुदि ३ रविवार	महेन्द्रसूरि के पट्टधर शांतिसूरि	आदिनाथ पंचतीर्थी का लेख	खरतरगच्छीय उपाश्रय, किशनगढ़	विनयसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ९४३

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१४५.	१५७६	माघ सुदि ५ रविवार	शांतिसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक ३३१
१४६.	१५७६	आषाढ़ सुदि ९ रविवार	श्री.....?	पंचतीर्थी का लेख	जैनमंदिर, रोहेड़ा (सिरोही)	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक २०८७ एवं आबू, भाग-२, लेखांक ५९६
१४७.	१५७	१५७७	शांतिसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	सुपार्श्वनाथ जिनालय (नाहटो में) बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १७८०

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१४८.	१५८१	पौष सुदि ५ शुक्रवार	सिद्धसेनसूरि	सुविधिनाथ की पंचतीर्थी का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, जांगलू (बीकानेर)	वही, लेखांक २२५७
१४९.	१५८३	माघ सुदि ८ गुरुवार	"	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, पीपला शेरी, बड़ोदरा	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १६५
१५०.	१५८७		सिद्धरत्नसूरि	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय करबटीया	वही, भाग १, लेखांक ४८७
१५१.	१५९०	वैशाख	सिद्धसेनसूरि	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ११४४
१५२.	१५९५	माघ सुदि १२	"	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	अजितनाथ जिनालय, बीकानेर	वही, लेखांक १५५७

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ साम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१५३.	१५९९	माघ सुदि.... गुरुवार	महेन्द्रसूरि	प्रतिमा लेख	जैन देरासर, गेरीता	बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ६६८

अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर निर्मित नाणकीय गच्छ की गुर्वावली

वि० सं० ११०२	[सर्वप्रथम प्रतिमा लेख, जिसमें प्रतिष्ठापक आचार्य का नाम अनुपलब्ध है]
वि० सं० ११३३	
वि० सं० ११४१-११४३	
धनेश्वरसूरि [प्रथम]	वि० सं० ११९८
महेन्द्रसूरि [प्रथम]	वि० सं० १२१७-१२३४
शान्तिसूरि [प्रथम]	वि० सं० १२३५-१२६५
सिद्धसेनसूरि [प्रथम]	वि० सं० १२६८-१३१३
धनेश्वरसूरि [द्वितीय]	वि० सं० १३१४-१३२९
महेन्द्रसूरि [द्वितीय]	वि० सं० १३३५-१३४६
शान्तिसूरि [द्वितीय]	वि० सं० १३४७-१३५६
सिद्धसेनसूरि [द्वितीय]	वि० सं० १३७२-१३९९

धनेश्वरसूरि [तृतीय]	वि० सं० १४०९-१४३४
महेन्द्रसूरि [तृतीय]	वि० सं० १४३६-१४६९
शांतिसूरि [तृतीय]	वि० सं० १४६९-१४८७
सिद्धसेनसूरि [तृतीय]	वि० सं०? कोई प्रतिमा लेख उपलब्ध नहीं ।
धनेश्वरसूरि [चतुर्थ]	वि० सं० १४७४-१४८५
महेन्द्रसूरि [चतुर्थ]	वि० सं०? कोई प्रतिमा लेख उपलब्ध नहीं ।
शांतिसूरि [चतुर्थ]	वि० सं० १४९२-१५१०
सिद्धसेनसूरि [चतुर्थ]	वि० सं० १५११-१५१३
धनेश्वरसूरि [चतुर्थ]	वि० सं० १५१६-१५५३
महेन्द्रसूरि [पंचम]	वि० सं० १५५७-१५५९
शांतिसूरि [पंचम]	वि० सं० १५६१-१५७७
सिद्धसेनसूरि [पंचम]	वि० सं० १५८१-१५९५
धनेश्वरसूरि [षष्ठम्]	वि० सं०? कोई प्रतिमा लेख नहीं मिलता ।

महेन्द्रसूरि [षष्ठम्]

वि० सं० १५९९ [एकमात्र
प्रतिमा लेख एवं नाणकीय गच्छ
का उल्लेख करने वाला
अन्तिम साक्ष्य]

उक्त तालिका से स्पष्ट है कि यह गच्छ ११वीं शती के उत्तरार्ध में किसी समय अस्तित्व में आया और १६वीं शती तक विद्यमान रहा। इस प्रकार लगभग ४०० वर्षों तक यह गच्छ विद्यमान रहा। जैन साहित्य के विशाल भंडार में एक भी ऐसा ग्रन्थ नहीं है, जिसकी रचना का श्रेय इस गच्छ के किसी विद्वान् को दिया जा सके। यह थी इस गच्छ के अनुयायी मुनिजनों की विद्याभ्यास की स्थिति ! फिर भी इस गच्छ के मुनिजन लम्बे समय तक अपने अनुयायी श्रावकों को जिनालयों और जिनप्रतिमाओं के निर्माण की प्रेरणा देते हुए समाज के एक बड़े वर्ग पर अपना प्रभाव बनाये रखने में सफल रहे।

सन्दर्भ सूची :-

१. सं. १२७२ वर्ष चैत्र वदि ८ शनौ पुस्तिकेयं लिखितेति । श्री नाणकीयगच्छे हरीराह (हृतरौह) वास्तव्य गोसा भगिनी पवङ्गि श्रीजयदेवोपाध्यायपठनार्थं प्रकरणपुस्तिका दत्ता । *Descriptive Catalogue of Manuscripts in the Jaina Bhandaras at Pattan*, P. 176, जैनपुस्तक प्रशस्तिसंग्रह (संपा०- मुनि जिनविजय) पृ० ११५
२. सं० १५९२ वर्षे शाके १४५७ प्रवर्तमाने वैशाख शुक्लपक्षे तृतीया तिथौ रवौ वारे । मृगशिर नक्षत्रे । श्री मेड़तानगरे । राजाधिराज श्रीवीरमदेवराज्ये । श्रीओसवाल ज्ञातीय । श्रीऋषभगोत्रे । को० परिणथरे । भा० रयणादे पुत्र को० धरमसी । को० नेतसी को० भीमसी । षीमा हरचंद । को० नेतसी भार्या नायकदे । सूरंगी

पीहरनउ नाम सरूपां । को० श्री नेतस्यंघेन । श्रीनाणावालगच्छे मुनि श्री शांतिसूरि संताने भ० श्री सिद्धसेनसूरि श्री धनेसरसूरि श्री महेद्रसूरि श्री शांतिसूरि तत्पट्टे श्रीसिद्धसेणसूरि जयवंता वा० श्री भावसुन्दरेण प्रदत्तवान् । सुराणां पुण्यार्थं लिषापितवान् ॥ शुभं भवतु ॥

श्रीप्रशस्ति संग्रह : संपा० — अमृतलाल मगनलाल शाह (अहमदाबाद वि० सं० १९९३) भाग २, क्रमांक ३३४ पृ० ९३

३. मुनि जयन्तविजय- संपा० अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेखसंदोह (आबू, भाग- ५) लेखांक ३६७.
४. वही, लेखांक ३६८.
५. वही, लेखांक ३६९.
६. बुद्धिसागरसूरि - जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह, भाग-१, लेखांक ११७९.
७. मुनि जयन्तविजय- पूर्वोक्त, लेखांक ३१८.
८. वही, लेखांक ३७१.

Notes

जैन श्वेताम्बर
गच्छों का
संक्षिप्त इतिहास

KIRIT GRAPHICS
09898490091